सरस्वती

संस्कृत व्याकरण

द्वितीय खण्ड

पाठ्यक्रम

कक्षा 10

एक प्रश्न पत्र | समय : 3 घंटे | अंक : 100

खण्ड 'क' | अंक : 50

अंक विभाजन

1. व्याकरण | अंक

(क) समास—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्विगु, कर्मधारय, द्वन्द्व, बहुव्रीहि। 5

(ख) प्रत्यय 5

(i) कृदन्त—क्त्वा, तुमुन्, क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर्।

(ii) तद्धित्—मतुप्, इन, ठक्, त्व, तल्।

(iii) स्त्री प्रत्यय—टाप्, डीप्।

(ग) कारक—कारक तथा उपपद विभक्तियाँ। 5

(घ) अव्यय—शनैः, उच्चै, नीचैः, ह्यः, श्वः, तूष्णीम्, बहिः, वृथा, नक्तम्, विना, नाना, मृषा, पुरा, धिक्, अथ, मा। 5

(ङ) अशुद्धि-शोधन—
विभक्ति (लिंग, वचन, पुरुष तथा वाच्य विषयक)। 5

2. अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर। 10

अथवा

हिन्दी अथवा अंग्रेजी के सरल अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद।

3. संस्कृत में सरल वर्णनात्मक निबन्ध (लगभग 150 शब्दों में)। 15

संस्कृत-वन्दना

सरस-सुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया।
अमृतवाणी संस्कृतभाषा
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥1॥
कवि-कोकिल-वाल्मीकि-विरचिता
रामायण-रमणीय-कथा।
अतीव सरला मधुर-मञ्जुला
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥2॥
व्यास-विरचिता गणेश-लिखिता
महाभारते दिव्य-कथा।
कौरव-पाण्डव-सङ्गर-मथिता
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥3॥
कुरुक्षेत्र-समराङ्गण-गीता
विश्ववन्दिता भगवद्गीता।
अमृत-मधुरा कर्म-दीपिका
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥4॥

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्य-श्यामला मातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभीनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदा वरदा मातरम्
आष्टिकोटि-कण्ठ कलकल निनाद कराले
द्विअष्टिकोटि भुञ्जै धृत खरकरखाले
अबला कैनी माँ ऐतो बोले
बाहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदल तारिणी मातरम्
तुमि विद्या तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं ही प्राणाः शरीरे
बहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तामारड प्रतिज्ञा शीड़
मन्दिरे-मन्दिरे
त्व हि दुर्गा दशप्रहरणन्धारिणी
कमला कमल-दल विहारिणी
वाणी व्रिद्यादायिनी
नमामि कमलां अमलां अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्
शयामलां सरला सुस्मिता भूषितां धरणीं भरणीं मातरम् ।

विषय-सूची

क्र० सं०	अध्याय				पृष्ठ
1.	समास	...	...	...	1 - 24
2.	विविध प्रत्यय	...	...	...	25 - 48
3.	कारक तथा उपपद विभक्ति	...	...	...	49 - 64
4.	अव्यय	...	...	...	65 - 68
5.	अशुद्धि संशोधन	...	...	...	69 - 74
6.	रिक्त स्थान पूर्ति	...	...	...	75 - 81
7.	प्रश्नोत्तर विधि	...	...	...	82-101
8.	अनुवाद-विधि	...	...	...	102-135
9.	लघुनिबन्ध	...	...	...	136-180

1.	विद्यालयस्य, वार्षिकोत्सवः	...	...	136
2.	विज्ञानस्य चमत्काराः	...	...	137
3.	यद्यहं भारतस्य प्रधानमन्त्री स्याम्	...	...	138
4.	क्रीडा-प्रतियोगिता	...	...	138
5.	मम प्रियः कवि (वाल्मीकिः)	...	...	139
6.	मम प्रियं पुस्तकम् (रम्या रामायणी कथा)		...	140
7.	मम प्रियं पुस्तकम् (श्रीमद्-भगवद्गीता)	...	...	141
8.	वसन्तपञ्चमी (वसन्तोत्सवः)	...	...	141
9.	दीपावली	...	...	142
10.	स्वातन्त्र्यदिवसोत्सवः	...	...	143
11.	गणतन्त्रदिवसः	...	...	143
12.	मम विद्यालयः	...	...	144
13.	श्रीमती इन्दरा गान्धी	...	...	145
14.	भारतीया संस्कृतिः	...	...	146
15.	ग्राम्यजीवनम्	...	...	147
16.	मम प्रियः शिक्षकः	...	...	148
17.	मम जोवनस्य लक्ष्यम्	...	...	148
18.	संस्कृतभाषायाः गौरवम्	...	...	149
19.	मम प्रियः नेता	...	...	149
20.	व्यायामः	...	...	150
21.	विजया दशमी	...	...	151
22.	विद्यालयस्य सांस्कृतिकः कार्यक्रमः	...	...	152
23.	रूप्यकस्य आत्मकथा	...	...	152
24.	स्वप्न-वर्णनम्	...	...	153
25.	वर्षर्तुवर्णनम्	...	...	154
26.	वसन्तर्तुवर्णनम्	...	...	155

27. ग्रीष्म-वर्णनम् 155
28. विद्या 156
29. पर्वत-यात्रा (स्मरणीया यात्रा) 157
30. रेल-यात्रा 157
31. प्रिया क्रीडा (कबड्डी) 158
32. गृहोद्यानम् 159
33. अनुशासनम् 160
34. पर्यटनम् 160
35. परोपकारः 161
36. कुम्भपर्व 162
37. हिमालयः 163
38. गंगा 163
39. यमुना 164
40. भारतस्य राजधानी (कापि महानगरी) 165
41. महाकवि कालिदासः 166
42. स्मरणीया काऽपि घटना (जलौघः) 167
43. संत्संगतिः 167
44. सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात 168
45, ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः 169
46. प्रजातन्त्रम् 169
47. नौका-विहारः 170
48. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य 170
49. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी 171
50. स्त्री-शिक्षा 172
51. सहशिक्षा 172
52. वाष्पयान-दुर्घटना 173
53. लघूद्योग-प्रदर्शनी-पर्यवेक्षणम् 174
54. सदाचारः 174
55. प्रातःकालवर्णनम् 175
56. बालोत्सववर्णनम् 175
57. दूरदर्शनयन्त्रम् 176
58, पुस्तकालयः 177
59. होलिकोत्सवः 178
60. संघे शक्तिः कलौ युगे 178

प्रथम अध्याय

समास [COMPOUNDS]

लक्षण—परस्पर सम्बद्ध अर्थ वाले दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एक पद बनाने की प्रक्रिया, विधि या वृत्ति को **समास** कहते हैं। समास-प्रक्रिया द्वारा बने हुए एक पद को **समस्त पद** कहा जाता है। अर्थ बोध के लिए समस्तपद के शब्दों को पुनः अलग-अलग कर विभक्ति आदि लगाकर बतलाने की प्रक्रिया को **विग्रह** कहते हैं।

उदाहरण—राज्ञः, पुरुषः, दो परस्पर सम्बद्ध अर्थ वाले पद हैं। 'राज्ञः' का सम्बन्ध 'पुरुषः' से है तथा 'पुरुषः' का सम्बन्ध 'राज्ञः' से है। यह सम्बन्ध अर्थ की दृष्टि से होता है। अब दोनों पदों को मिलाकर एक समस्तपद 'राजपुरुषः' बनाया जा सकता है, जिसका वही अर्थ है जो 'राज्ञः पुरुषः' का अर्थ था। राजपुरुषः में प्रथम पद राज्ञः की षष्ठी विभक्ति का लोप हो गया है तथा मूल प्रातिपदिक राज (न्) शब्द शेष रह गया है। जब हम राजपुरुषः का विग्रह करेंगे तो पुनः राज (न्) शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति लगाकर राज्ञः शब्द बना दिया जायेगा तथा राजपुरुषः का विग्रह 'राज्ञः पुरुषः' होगा। परीक्षा में समस्त पद बनाने व विग्रह करने की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखकर दोनों प्रकार से प्रश्न पूछे जाते हैं।

विशेष—समास सदैव समर्थ पदों का ही होता है। यदि असमर्थ पदों में समास किया जाएगा तो 'असमर्थ पद विधि' दोष आ जाएगा। संस्कृत में संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय—ये सभी प्रकार के शब्द अन्य शब्दों से संयुक्त होने की ऐसी शक्ति रखते हैं जिनसे उनका एक ही शब्द बन जाए।

समास के भेद
(Types of Compounds)

समास के छः भेद होते हैं :

(क) अव्ययीभाव
(ख) तत्पुरुष
(ग) कर्मधारय
(घ) द्विगु
(ङ) द्वन्द्व
(च) बहुव्रीहि

समास में प्रायः दो पद होते हैं—पूर्वपद तथा उत्तरपद। यदि इन पदों में पूर्वपद प्रधान हो तो अव्ययीभाव समास होता है। यदि उत्तरपद प्रधान हो तो तत्पुरुष, द्विगु या कर्मधारय समास होता है। यदि पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों की समान रूप से प्रमुखता हो तो द्वन्द्व समास होता है तथा यदि पूर्वपद व उत्तरपद में से कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान हो तो बहुव्रीहि समास होता है।

(क) अव्ययीभाव समास
(Adverbial Compound)

अव्ययीभाव समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है तथा पूर्वपद अव्यय होता है। पूर्वपद तथा उत्तरपद को मिलाकर समस्तपद भी अव्यय बन जाता है तथा वह सदा नपुंसकलिंग, एकवचन में रहता है।

उदाहरण—'यथाशक्ति' समस्तपद है। इसमें 'यथा' पूर्वपद है तथा 'शक्ति' उत्तरपद है। 'यथा' अव्यय है तथा 'यथाशक्ति' भी अव्यय है तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन का रूप है। 'यथा' पद का अर्थ अनतिवृत्ति या अनतिक्रमण (अतिक्रमण या उल्लंघन न करना) समस्त पद 'यथाशक्ति' के अर्थ में 'शक्ति' पद के अर्थ की अपेक्षा प्रमुखता रखता है। अतः हम 'यथाशक्ति' को अव्ययीभाव समास का उदाहरण मानते हैं तथा इसका विग्रह शक्तिम् अनतिक्रम्य (शक्ति का उल्लंघन करके) करते हैं। 'यथाशक्ति परिश्रमं कुरु' वाक्य में शक्ति का उल्लंघन न करके, शक्ति की मर्यादा के अनुसार परिश्रम करने का आदेश है।

समस्त पद बनाने के नियम :

अव्ययीभाव समास बनाने के लिए संज्ञा शब्द में कुछ परिवर्तन किए जाते हैं :

(*i*) सभी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों को नपुंसकलिङ्ग एकवचन का रूप देने के लिए उनके साथ 'म्' जोड़ दिया जाता है। जैसे गजस्य समीपम् = उपगजम्, वृक्षस्य समीपम् = उपवृक्षम्, कृष्णस्य समीपम् = उपकृष्णम् इत्यादि।

(*ii*) दीर्घ स्वरान्त (आकारान्त, ईकारान्त तथा ऊकारान्त) शब्दों को ह्रस्व स्वरान्त (अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त) बना दिया जाता है। जैसे—गोपाः, तस्मिन् = अधिगोपम्, गंगायाः समीपम् = उपगंगम्, नद्याः समीपम् = उपनदि, वध्वाः समीपम् = उपवधु आदि। इन उदाहरणों में गोपा, गंगा को गोप व गंग, नदी को नदि तथा वधू को वधु कर दिया गया है।

(*iii*) नकरान्त संज्ञा पदों के अन्तिम 'न' का लोप हो जाता है। जैसे—राज्ञः समीपम् = उपराजम्, आत्मनि इति = अध्यात्मम्।

(*iv*) नदी, पौर्णमासी, आग्राहायणी तथा गिरि शब्दों के अन्तिम स्वरों को विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे—नद्याः समीपम् = उपनदि, उपनदम् ; पौर्णमास्याः समीपम् = उपपौर्णमासी, उपपौर्णमासम् ; आग्रहायण्याः समीपम् = उपाग्रहायणि, उपाग्रहायणम् ; गिरेः समीपम् = उपगिरि, उपगिरम्।

(*v*) कुछ हलन्त शब्दों (समित्, चर्मन् आदि) के अन्तिम व्यंजन में विकल्प से 'अ' जोड़ा जाता है। जैसे—समधिः समीपम् = उपसमित्, उपसमिधम्, गिरेः समीपम् = उपगिरि, उपगिरम्।

(*vi*) कुछ हलन्त शब्दों के अन्तिम व्यंजन में नित्य 'अ' जोड़ा जाता है। जैसे—अक्ष्णः योग्यम् = समक्षम् ; शरदः समीपम् = उपशरदम्।

विग्रह बनाने के नियम

विभक्ति, सामीप्य, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्द प्रादुर्भाव,

समास

पश्चाद्, यथा, आनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य तथा अन्त में से जिस अर्थ को ध्यान में रखकर समस्त पद में अधि, उप, सु, दुर्, निर्, अति, इति, अनु, प्रति, यथा, सम् आ आदि अव्ययों का प्रयोग किया जाता है, उसके अनुसार विग्रह वाक्य बनाया जाता है। जैसे—अधिगंगम् = गंगायाम् इति (गंगा में) ; उपनगरम् = नगरस्य समीपम् (नगर के पास) ; सुभारतम् = भारतानां समृद्धिः (भारत का एश्वय) ; दुर्यवनम् = यवनानां व्यृद्धिः (यवनों का ऐश्वर्य लोप) ; निर्जनम् = जनानाम् अभावः (लोगों का अभाव) ; अतियौवनम् = यौवनस्य अत्ययः (जवानी का बीतना) ; इतिरामम् = रामशब्दस्य प्रकाशः ; अनुविष्णु = विष्णोः पश्चात् (विष्णु के पीछे) ; अनुरूपम् = रूपस्य योग्यम् (रूप के योग्य) ; प्रत्येकम् = एकम् एकम् इति (हर एक) ; यथाबलम् = बलम् अनतिक्रम्य (बल के अनुसार) ; सहरि = हरेः सादृश्यम् (हरि सरीखा) इत्यादि।

अव्ययीभाव समास विशेषतः जिन-जिन अर्थों में प्रयुक्त होता है, वे पाणानिं व्याकरण में एक सूत्र में परिगणित किए गए हैं। वे 16 अर्थ हैं—विभक्ति, सामीप्य, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्द प्रादुर्भाव, पश्चाद्, यथा, अनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य तथा अन्त। इन सोलह अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास की अव्ययीभाव संज्ञा होती है। उदाहरण सहित विग्रह की विधि इस प्रकार है—

1. 'विभक्ति' के अर्थ में—सप्तमी विभक्ति (अधिकरण) के अर्थ में अधि अव्यय का प्रयोग होता है। यथा :

हरौ इति	अधिहरि	(हरि में)
आत्मनि इति	अध्यात्मम्	(आत्मा में)
वैकुण्ठे इति	अधिवैकुण्ठम्	(वैकुण्ठ में)
स्वर्गे इति	अधिस्वर्गम्	(स्वर्ग में)
गंगायाम् इति	अधिगंगम्	(गंगा में)
यमुनायाम् इति	अधियमुनम्	(यमुना में)

2. 'सामीप्य' अर्थ में 'उप' अव्यय का प्रयोग होता है। समीपता के अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः उपकृष्णम् आदि समस्त पदों का विग्रह करते समय संज्ञापद के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग करना अपेक्षित है। यथा—

उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	(कृष्ण के समीप)
उपगंगम्	गंगायाः समीपम्	(गंगा के समीप)
उपकूलम्	कूलस्य समीपम्	(कूल के समीप)
उपतटम्	तटस्य समीपम्	(तट के समीप)

समस्त पद बनाने के लिए उदाहरण :

दिशः समीपम्	उपदिशम्	(दिशा के पास)
गुरोः समीपम्	उपगुरु	(गुरु के पास)
गोः समीपम्	उपगु	(गौ के पास) (ओकार को उकार)

वध्वाः समीपम्	उपवधु	(वधू के पास)
गङ्गायाः समीपम्	उपगङ्गम्	(गंगा के पास)
यमुनायाः समीपम्	उपयमुनम्	(यमुना के पास)
गजस्य समीपम्	उपगजम्	(हाथी के पास)
नगरस्य समीपम्	उपनगरम्	(नगर के पास)
गृहस्य समीपम्	उपगृहम्	(घर के पास)
वृक्षस्य समीपम्	उपवृक्षम्	(वृक्ष के पास)
गिरेः समीपम्	उपगिरम्	(गिरि के पास)

3. 'समृद्धि' के अर्थ में 'सु' अव्यय का प्रयोग होता है। 'सु' उपसर्ग 'अच्छे' या 'समृद्ध' के अर्थ में आता है। जैसे–

पाञ्चालानाम् समृद्धिः	सुपाञ्चालम्	(पाञ्चाल देश का ऐश्वर्य)
मद्राणां समृद्धिः	सुमद्रम्	(मद्र देशवासियों की समृद्धि)
बंगानां समृद्धिः	सुबंगम्	(बंग का ऐश्वर्य)
भारतानां समृद्धिः	सुभारतम्	(भारत का ऐश्वर्य)

4. 'व्यृद्धि' (विगता ऋद्धिः–समृद्धि के चले जाने) के अर्थ में 'दुर्' अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे–

यवनानां व्यृद्धिः	दुर्यवनम्	(यवनों का ऐश्वर्य लोप)
हूणानां व्यृद्धिः	दुर्हूणम्	(हूणों का ऐश्वर्य लोप)
कुषाणानां व्यृद्धिः	दुर्कुषाणम्	(कुषाणों का ऐश्वर्य लोप)
शकानां व्यृद्धिः	दुर्शकम्	(शकों का ऐश्वर्य लोप)

5. 'अभाव' के अर्थ में 'निर्' उपसर्गों का प्रयोग होता है। जैसे–

जनानाम् अभावः	निर्जनम्	(जनरहित)
मक्षिकाणाम् अभावः	निर्मक्षिकम्	(मक्खियों से रहित)
विघ्नानाम् अभावः	निर्विघ्नम्	(विघ्नों से रहित)
कण्टकानाम् अभावः	निष्कण्टकम्	(काँटों से रहित)
मूलानाम् अभावः	निर्मूलम्	(मूल या जड़ से रहित)
मनुष्याणाम् अभावः	निर्मनुष्यम्	(मनुष्यों से रहित)
गोपानाम् अभावः	निर्गोपम्	(गोपों से रहित)

6. 'अत्यय' (नाश) के अर्थ में 'अति' उपसर्ग के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे–

यौवनस्य अत्ययः	अतियौवनम्	(जवानी का बीतना)
हिमस्य अत्ययः	अतिहिमम्	(हिम की समाप्ति)
वसन्तस्य अत्ययः	अतिवसन्तम्	(वसन्त की समाप्ति)
शिशिरस्य अत्ययः	अतिशिशिरम्	(शिशिर की समाप्ति)

7. 'असम्प्रति' (सम्प्रति न युज्यते अर्थात् अनौचित्यभाव) के अर्थ को बताने के लिए भी 'अति' उपसर्ग के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे–

निद्रां सम्प्रति न युज्यते	अतिनिद्रम्	(निद्रा का अनौचित्य)

पठनम् सम्प्रति न युज्यते	अतिपठनम्	(पठन का अनौचित्य)
भोजनम् सम्प्रति न युज्यते	अतिभोजनम्	(भोजन का अनौचित्य)
पानम् सम्प्रति न युज्यते	अतिपानम्	(पान का अनौचित्य)
हसनम् सम्प्रति न युज्यते	अतिहसनम्	(हँसने का अनौचित्य)

8. **'शब्दप्रादुर्भाव'** के अर्थ में 'इति' के साथ अव्ययीभाव समास होता है। शब्दप्रादुर्भाव से तात्पर्य शब्द की अभिव्यक्ति या शब्द का प्रकाशन है। जैसे—

हरिशब्दस्य प्रकाशः	इतिहरि	(हरि शब्द की अभिव्यक्ति)
भारतशब्दस्य प्रादुर्भावः	इतिभारतम्	(भारत शब्द की अभिव्यक्ति)
रामशब्दस्य प्रकाशः	इतिरामम्	(राम शब्द की अभिव्यक्ति)
कृष्णशब्दस्य प्रकाशः	इतिकृष्णम्	(कृष्ण शब्द की अभिव्यक्ति)

9. **'पश्चात्'** के अर्थ में अनु के साथ समास होता है। जैसे—

विष्णोः पश्चात्	अनुविष्णु	(विष्णु के पीछे)
रथस्य पश्चात्	अनुरथम्	(रथ के पीछे)
पुत्रस्य पश्चात्	अनुपुत्रम्	(पुत्र के पीछे)
लतायाः पश्चात्	अनुलतम्	(लता के पीछे)
गंगायाः पश्चात्	अनुगंगम्	(गंगा के पीछे)
शम्भोः पश्चात्	अनुशम्भु	(शम्भु के पीछे)

10. **'यथा'** के चार रूप हैं—योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति, सादृश्य।

(क) **योग्यता**—योग्यता के अर्थ में अनु के साथ समास होता है। जैसे—

रूपस्य योग्यम्	अनुरूपम्	(रूप के योग्य)
गुणानां योग्यम्	अनुगुणम्	(गुणों के योग्य)

(ख) वीप्सा (दोहराना) के अर्थ में प्रति अव्यय का संज्ञा शब्दों से समास होता है। जैसे—

अर्थम् अर्थम् इति	प्रत्यर्थम्	(हर एक अर्थ)
गृहम् गृहम् इति	प्रतिगृहम्	(घर-घर, हर घर)
एकम् एकम् इति	प्रत्येकम्	(एक-एक, हर एक)
अहनि अहनि इति	प्रत्यहम्	(हर रोज)
दिशि दिशि इति	प्रतिदिशम्	(दिशा-दिशा में)
नगरे नगरे इति	प्रतिनगरम्	(नगर-नगर में)
स्थाने स्थाने इति	प्रतिस्थानम्	(हर जगह)
दिने दिने इति	प्रतिदिनम्	(हर रोज)
क्षणे क्षणे इति	प्रतिक्षणम्	(हर क्षण)
वर्षे वर्षे इति	प्रतिवर्षम्	(हर वर्ष)

(ग) पदार्थ = अनतिवृत्ति या अनतिक्रम्य (अतिक्रमण या उल्लंघन न करने) के अर्थ में 'यथा' अव्यय के साथ सुबन्त पदों का समास होता है। जैसे—

शक्तिम् अनतिक्रम्य	यथाशक्ति	(शक्ति के अनुसार)
शास्त्रम् अनतिक्रम्य	यथाशास्त्रम्	(शास्त्र के अनुसार)
विधिम् अनतिक्रम्य	यथाविधि	(विधि के अनुसार)

इच्छाम् अनतिक्रम्य	यथेच्छम्	(इच्छा के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य	यथाबलम्	(बल के अनुसार)
सामर्थ्यम् अनतिक्रम्य	यथासामर्थ्यम्	(सामर्थ्य के अनुसार)
क्रमम् अनतिक्रम्य	यथाक्रमम्	(क्रम के अनुसार)

(घ) सादृश्य अर्थ में 'स' उपसर्ग के साथ समास होता है। जैसे—

हरेः सादृश्यम्	सहरि	(हरि सरीखा)

11. आनुपूर्व्य (क्रमशः) अर्थ को बताने वाले 'अनु' उपसर्ग के साथ संज्ञापदों का अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण इति	अनुज्येष्ठम्	(ज्येष्ठ के क्रम से)
कनिष्ठस्य आनुपूर्व्येण इति	अनुकनिष्ठम्	(कनिष्ठ के क्रम से)

12. यौगपद्य (युगपद् या एक साथ होना) अर्थ में 'सह' अव्यय के साथ सुबन्त पदों का समास होता है। जैसे—

चक्रेण युगपद्	सचक्रम्	(चक्र के साथ)

13. सादृश्य (समानता) के अर्थ में 'स' अव्यय के साथ सुबन्त पदों का अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—

हरेः सादृश्यम्	सहरि	(हरि के समान)
सख्याः सादृश्यम्	ससखि	(सखी के समान)

14. सम्पत्ति (सम्पदा) के अर्थ में भी 'स' अव्यय के साथ सुबन्त पदों का अव्ययीभाव समास होता है। जैसे—

क्षत्राणां सम्पत्तिः	सक्षत्रम्	(क्षात्र सम्पदा)
ब्रह्मणां सम्पत्तिः	सब्रह्म	(ब्रह्म सम्पदा)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) अर्थ में भी 'स' अव्यय के साथ सुबन्त पदों का समास होता है। जैसे—

तृणम् अपि अपरित्यज्य	सतृणम्	(तिनकों सहित)
बुसम् अपि अपरित्यज्य	सबुसम्	(भूसे से साथ)

16. अन्त (पर्यन्त) के अर्थ में भी 'सह' अव्यय का सुबन्त पदों के साथ समास होता है। जैसे—

अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	साग्नि	(अग्नि ग्रन्थ तक)

17. मर्यादा (सीमा) तथा अभिविधि (पूरी सीमा) के अर्थ में 'आ' अव्यय के साथ समास होता है। जैसे—

आ मुक्तेः	आमुक्ति	(मोक्ष-प्राप्ति तक)
आ पाटलिपुत्रात्	आपाटलिपुत्रम्	(पाटलिपुत्र तक)
जीवनम् यावत्	आजीवनम्	(जीवन-पर्यन्त)
समुद्रं यावत्	असामुद्रम्	(समुद्र-पर्यन्त)

18. प्रति, पर, सम् तथा अनु के साथ अक्षि का समास होता है। जैसे—

अक्ष्णः प्रति (अभिमुखम्)	प्रत्यक्षम्	(आँख के सामने)
अक्ष्णः परम्	परोक्षम्	(आँख से परे)

अक्ष्णः योग्यम्	समक्षम्	(आँख के सामने)
अक्ष्णः पश्चात्	अन्वक्षम्	(आँख के पीछे)

(ख) तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तरपद प्रधान होता है वह तत्पुरुष समास कहलाता है। यथा– राज्ञःपुरुषः = राजपुरुषः। यहाँ पर पुरुष (उत्तरपद) की प्रधानता है, अतः यह तत्पुरुष हुआ।

तत्पुरुष के भेद

तत्पुरुष के दो भेद हैं :

1. व्यधिकरण
2. समानाधिकरण अथवा कर्मधारय तथा द्विगु तत्पुरुष।

कर्मधारय तथा द्विगु तत्पुरुष को समास के मुख्य भेदों में भी मान लिया जाता है। अतः यहाँ केवल व्यधिकरण तत्पुरुष का ही विचार किया जायेगा।

व्यधिकरण तत्पुरुष के पुनः चार भेद हैं :

1. विभक्ति तत्पुरुष
2. अलुक् तत्पुरुष
3. नञ् तत्पुरुष
4. उपपद तत्पुरुष

1. विभक्ति तत्पुरुष

विभक्ति तत्पुरुष के पुनः छः भेद हैं। यथा–

द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष तथा सप्तमी तत्पुरुष।

द्वितीय तत्पुरुष

द्वितीया तत्पुरुष समास में, विग्रह पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में होता है तथा उत्तरपद में प्रायः निम्न पद रहते हैं :

श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न। जैसे–

रामं श्रितः	रामश्रितः	(राम का आश्रय लेने वाला)
कृष्णं श्रितः	कृष्णाश्रितः	(कृष्ण का आश्रय लेने वाला)
दुःखम् अतीतः	दुखातीतः	(दुःख परे गया हुआ)
शोकम् अतीतः	शोकातीतः	(शोक को पार कर चुका हुआ)
कष्टम् अतीतः	कष्टातीतः	(कष्ट को पार कर चुका हुआ)
जलं पतितः	जलपतितः	(जल में गिरा हुआ)
अनलं पतितः	अनलपतितः	(आग में गिरा हुआ)
नरकं पतितः	नरकपतितः	(नरक में गिरा हुआ)
गृहं गतः	गृहगतः	(घर पहुँचा हुआ)
ग्रामं गतः	ग्रामगतः	(गाँव में गया हुआ)
पुस्तकं गतः	पुस्तकगतः	(पुस्तक में आया हुआ)

मेघान् अत्यस्तः	मेघात्यस्तः	(बादलों के पार पहुँचा हुआ सूर्य)
धनं प्राप्तः	धन प्राप्तः, प्राप्तधनः वा	(धन प्राप्त किया हुआ)
सुखं प्राप्तः	मुखप्राप्तः	(सुख पाया हुआ)
जीविकाम् आपन्नः	जीविकापन्नः आपन्नजीविकः	(जीविका पाया हुआ)

उपर्युक्त उदाहरणों में प्राप्त, आपन्न शब्दों का प्रयोग समस्त पद में पहले भी होता है।

तृतीया तत्पुरुष

कर्त्ता और करण कारक में विद्यमान तृतीया विभिक्त वाले शब्द का समास कृदन्त शब्द के साथ होता है। जैसे—

सुखेन युक्तः	सुखयुक्तः	(सुख से युक्त)
हरिणा त्रातः	हरित्रातः	(हरि से रक्षा किया गया)
विद्यया हीनः	विद्याहीनः	(विद्या से रहित)
मदेन शून्यः	मदशून्यः	(मद से रहित)
नखैः भिन्नः	नखभिन्नः	(नखों से काटा हुआ)
दन्तैः दष्टः	दन्तदष्टः	(दाँत से काटा हुआ)
हस्ताभ्यां ताडितः	हस्तताडितः	(हाथों से पीटा हुआ)
परशुना छिन्नः	परशुछिन्नः	(परशु से काटा हुआ)
असिना छिन्नः	असिछिन्नः	(तलवार से काटा गया)
ईश्वरेण दत्तः	ईश्वरदत्तः	(ईश्वर से दिया हुआ)
देवेन दत्तः	देवदत्तः	(देव से दिया गया)
प्रभुणा दत्तः	प्रभुदत्तः	(प्रभु से दिया गया)
रामेण दत्तः	रामदत्तः	(राम से दिया गया)
रामेण हतः	रामहतः	(राम से मारा गया)
अहिना दष्टः	अहिदष्टः	(सर्प से डसा हुआ)

तृतीयान्त शब्दों का खण्ड, अर्थ, पूर्व, अवर, सदृश, सम, ऊन, विकल, कलह, निपुण, मिश्र, श्लक्षण आदि शब्दों से भी समास होता है। जैसे—

शंकुलया खण्डः	शंकुलाखण्डः	(सरौते से किया गया टुकड़ा)
परशुना खण्डः	परशुखण्डः	(कुल्हाड़े से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः	धान्यार्थः	(धान्य द्वारा प्राप्त धन)
व्यापारेण अर्थः	व्यापारार्थः	(व्यापार द्वारा प्राप्त धन)
मासेन पूर्वः	मासपूर्वः	(एक महीना पहले)
वर्षेण पूर्वः	वर्षपूर्वः	(एक वर्ष पहले)
दिवसेन पूर्वः	दिवसपूर्वः	(एक दिन पहले)
मासेन अवरः	मासावरः	(एक महीना छोटा)
वर्षेण अवरः	वर्षावरः	(एक वर्ष छोटा)

दिवसेन अवरः	दिवसावरः	(एक दिवस छोटा)
पित्रा सदृशः,समः वा	पितृसदशः,पितृसमः	(पिता के समान)
मात्रा सदृशः,समः वा	मातृसदृशः,मातृसमः	(माता के समान)
भ्राता सदृशः,समः वा	भ्रातृसदृशः,भ्रातृसमः	(भाई के समान)
मासेन ऊनम्	मासोनम्	(एक महीना कम)
माषेण ऊनम्	माषोनम्	(एक माशा कम)
एकेन ऊनम्	एकोनम्	(एक कम)
धान्येन विकलम्	धान्यविकलम्	(धान्य से हीन)
वाचा कलहः	वाक्कलहः	(वाणी से कलह)
वाचा युद्धम्	वाग्युद्धम्	(वाणी से युद्ध)
आचारेण निपुणः	आचारनिपुणः	(आचार से निपुण)
व्यवहारेण निपुणः	व्यवहारनिपुणः	(व्यवहार से निपुण)
व्यवहारेण कुशलः	व्यवहारकुशलः	(व्यवहार से कुशल)
आचारेण कुशलः	आचारकुशलः	(आचार से कुशल)
आचारेण श्लक्ष्णः	आचारश्लक्ष्णः	(आचार का पालन करने से कृश)
गुडेन मिश्रः	गुडमिश्रः	(गुड़ युक्त)
दध्ना ओदनः	दध्नोदनः	(दही-भात)
घर्षणेन श्लक्ष्णः	घर्षणश्लक्ष्णः	(घिसने से चिकना)
कुट्टनेन श्लक्ष्णम्	कुट्टनश्लक्ष्णम्	(कूटने से चिकना)

चतुर्थी तत्पुरुष

चतुर्थी विभक्ति वाले शब्दों का तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि के साथ समास होता है जैसे—

यूपाय दारु	यूपदारु	(यूप के लिए लकड़ी)
द्विजाय अजम्	द्विजार्थः (सूपः=दाल)	(ब्राह्मण के लिए दाल)
द्विजाय इदम्	द्विजार्थम् (पयः=खीर)	(ब्राह्मण के लिए खीर)
गवे हितम्	गोहितम्	(गाय के लिए हितकर)
कुण्डलाय हिरण्यम्	कुण्डलहिरण्यम्	(कुण्डल के लिए सोना)
द्विजाय इयम्	द्विजार्था (यवागूः=लाप्सी)	
पाकाय शाला	पाकशाला	(पकाने के लिए कमरा)
पाठाय शाला	पाठशाला	(पढ़ने के लिए भवन)
भूतेभ्यः बलिः	भूतबलिः	(भूतों के लिए अन्न)
गवे सुखम्	गोसुखम्	(गाय के लिए सुखदायक)
गवे रक्षितम्	गोरक्षितम्	(गाय के लिए बचाया हुआ)
पुत्राय रक्षितम्	पुत्ररक्षितम्	(पुत्र के लिए रखा हुआ)
घटाय मृत्तिका	घटमृत्तिका	(घड़े के लिए मिट्टी)
काकेभ्यः बलिः	काकबलिः	(कौओं के लिए अन्न)

पक्षिभ्यः बलिः	पक्षिबलिः	(पक्षियों के लिए बलि या भोजन)
मानवेभ्यः हितम्	मानवहितम्	(मानवों के लिए हितकारी)
अजाय सुखम्	अजासुखम्	(बकरी के लिए सुख)

पञ्चमी तत्पुरुष

पञ्चमी विभक्त्यन्त शब्दों का भयवाचक शब्दों (भयम्, भीतिः, भीः) के साथ तथा अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित, अपत्रस्त, च्युत, भ्रष्ट आदि शब्दों के साथ समास होता है। जैसे—

चौरात् भयम्	चौरभयम्	(चोर से भय)
वृकात् भीतिः	वृकभीतिः	(भेड़िये से भय)
व्याघ्रात् भीतिः	व्याघ्रभीतिः	(बाघ से भय)
स्तेनात् भीतिः	स्तेनभीतिः	(डाकू से भय)
दुष्टात् भीः	दुष्टभीः	(दुष्ट से भय)
दुःखात् अपेतः	दुःखापेतः	(दुःख से रहित)
सुखात् अपेतः	सुखापेतः	(सुख से वंचित)
कल्पनायाः अपोढः	कल्पनापोढः	(कल्पनारहित)
विचारेभ्यः अपोढः	विचारापोढः	(विचारों से शून्य)
दुःखात् मुक्तः	दुःखमुक्तः	(दुःख से छूटा हुआ)
संकटात् मुक्तः	संकटमुक्तः	(संकट से मुक्त)
चक्रात् मुक्तः	चक्रमुक्तः	(चक्र से मुक्त)
आकाशात् पतितः	आकाशपतितः	(आकाश से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	वृक्षपतितः	(पेड़ से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	स्वर्गपतितः	(स्वर्ग से गिरा हुआ)
गजात् पतितः	गजपतितः	(हाथी से गिरा हुआ)
अश्वात् पतितः	अश्वपतितः	(घोड़े से गिरा हुआ)
स्वर्गात् च्युतः	स्वर्गच्युतः	(स्वर्ग से गिरा हुआ)
पदात् च्युतः	पदच्युतः	(पद से हटाया हुआ)
मार्गात् भ्रष्टः	मार्गभ्रष्टः	(मार्ग से भटका हुआ)
पथात् भ्रष्टः	पथभ्रष्टः	(पथ से भटका हुआ)
तरंगेभ्यः अपत्रस्तः	तरंगापत्रस्तः	(लहरों से डरा हुआ)

षष्ठी तत्पुरुष

षष्ठी विभक्ति वाले शब्द का उत्तरपद के साथ समास होने से षष्ठी तत्पुरुष कहलाता है। जैसे—

देवानाम् आलयः	देवालयः, देवगृहम्	(देवों का घर)
विद्यायाः आलयः	विद्यालयः	(विद्या का स्थान)
हिमस्य आलयः	हिमालयः	(बर्फ का घर)
स्वर्णस्य पात्रम्	स्वर्णपात्रम्	(सोने का बरतन)
रजतस्य पात्रम्	रजतपात्रम्	(चाँदी का बरतन)

सुखस्य अनुभूतिः	सुखानुभूतिः	(सुख का अनुभव)
देवानां पूजकः	देवपूजकः	(देवों की पूजा करने वाला)
राज्ञां परिचारकः	राजपरिचारकः	(राजा का नौकर)
राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः	(राजा का आदमी)
वेदानाम् अध्यापकः	वेदाध्यापकः	(वेदों का अध्यापक)
भुवः भर्त्ता	भूभर्त्ता	(पृथ्वी का स्वामी)
पूर्व कायस्य	पूर्वकायः	(शरीर का पहला भाग)
अपरं कायस्य	अपरकायः	(शरीर का अगला भाग)
मध्यम् अह्णः	मध्याह्णः	(दिन का मध्य भाग)
पूर्वम् अह्णः	पूर्वाह्णः	(दिन का पूर्व भाग)
अपरम् अह्णः	अपराह्णः	(दिन का उत्तर भाग)
सायम् अह्णः	सायाह्णः	(दिन का सायं भाग)
पूर्व रात्रेः	पूर्वरात्रः	(रात्रि का पूर्व भाग)
मध्यम् रात्रेः	मध्यरात्रः	(रात का मध्य भाग)
विप्राणां याजकः	विप्रयाजकः	(विप्रों का याजक)
गुरुकुलस्य स्नातकः	गुरुकुलस्नातकः	(गुरुकुल का स्नातक)
अग्नेः होता	अग्निहोता	(अग्नि का होता)

सप्तमी तत्पुरुष

सप्तम्यन्त शब्दों का शौण्ड आदि शब्दों से समास होता है।

शौण्ड, प्रवीण = चतुर, धूर्त, कितव = मक्कार, संवीत = मुक्त, अन्तर = बीच का खाली समय, अधि = अधीन अर्थ में, पटु = चतुर, पण्डित = विद्वान्, कुशल = निपुण, चपल = चंचल, निपुण, सिद्ध, शुष्क (सूखा), पक्व (पका हुआ), बन्धः (प्रबन्ध) आदि सब शब्दों से सप्तमी तत्पुरुष समास होता है । जैसे—

अक्षेषु शौण्डः, पटुः	अक्षशौण्डः, अक्षपटुः	
क्रीडने धूर्तः, कितवः	क्रीडनधूर्तः, क्रीडनकितवः	
कर्मणि प्रवीणः, कुशलः	कर्मप्रवीणः, कर्मकुशलः	
वाचि पटुः	वाक्पटुः, अध्ययनपटुः	
शास्त्रेषु पण्डितः	शास्त्रपण्डितः	
न्याये पण्डितः	न्यायपण्डितः	
सभायां पण्डितः	सभापण्डितः	
ईश्वरे अधि	ईश्वराधीनः	
व्यवहारे चपलः	व्यवहारचपलः	
आतपे शुष्कः	आतपशुष्कः	(धूप में सूखा हुआ)
स्थाल्यां पक्वः	स्थालीपक्वः	(पतीली में पकाया हुआ)
ग्रामे सिद्धः	ग्रामसिद्धः	
चक्रे बन्धः	चक्रबन्धः	(छन्दोविशेष रचना)
पाशे बन्धः	पाशबन्धः	

2. अलुक् तत्पुरुष

विभक्ति लोप न होने पर अलुक् तत्पुरुष समास होता है।

1. द्वितीया अलुक् तत्पुरुष	दिवङ्गतः।
2 तृतीया अलुक् तत्पुरुष	जनुषान्धः (जन्म से अन्धा)
3. चतुर्थी अलुक् तत्पुरुष	आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्
4. पञ्चमी अलुक् तत्पुरुष	अन्तिकादागतः, दूरादागतः, कृच्छ्रादागतः अल्पान्मुक्तः, स्तोकान्मुक्तः।
5. षष्ठी अलुक् तत्पुरुष	वाचस्पतिः, पश्यतोहरः दास्याःपुत्रः
6. सप्तमी अलुक् तत्पुरुष	मध्येगुरुः, अन्तेगुरुः, कण्ठेकालः, खेचरः, सरसिजम्, युधिष्ठिरः, कर्णेजपः, गेहेशूरः आदि अलुक् सप्तमी तत्पुरुष के उदारहण हैं।

3. नञ् तत्पुरुष

निषेध के अर्थ को बताने के लिए नञ् शब्द का किसी भी शब्द के साथ समास हो जाता है। यदि उत्तर पद का प्रथम वर्ण व्यञ्जन हो तो 'नञ्' का 'अ' शेष रह जाता है। जैसे न (ञ्) + विद्या = अविद्या ।

यदि उत्तरपद का प्रथम वर्ण स्वर हो तो नञ् का 'अ' के पश्चात् न् जुड़कर 'अन्' हो जाता है। जैसे—न उचितुम् = अनुचितम्, असत्, असत्यम्, अविद्या, अनृतम्, अनश्वः तथा अनेकः आदि नञ् तत्पुरुष के उदाहरण हैं।

4. उपपद तत्पुरुष

जब समास में उत्तरपद क्रिया का बना हुआ हो तो वहाँ उपपद तत्पुरुष होता है। यह उत्तर पद तिङन्त का रूप नहीं होता। क्रिया से बने इस पद का सुबन्त उपपद से समास होता है। जैसे—

कुम्भं करोति इति	कुम्भकारः	(घड़े को बनाने वाला)
नगरं करोति इति	नगरकारः	(नगर को बनाने वाला)
स्वर्णं करोति इति	स्वर्णकारः	(सोने के आभूषण बनाने वाला)
सामं गायति इति	सामगः	(साज का गायन करने वाला)
धनं ददाति इति	धनदः	(धन देने वाला—कुबेर)
जलं ददाति इति	जलदः	(जल देने वाला—मेघ)
उदकं हरति इति	उदकहारः	(जल लाने वाला—कहार)
कं (जलं) हरित इति	कहारः	(जल लाने वाला—कहार)
उष्ण भुङ्क्ते इति	उष्णभोजी	(गरम खाने वाला)
विश्वं जयति इति	विश्वजित्	(विश्व को जीतने वाला)
इन्द्रं जयति इति	इन्द्रजित्	(इन्द्र को जीतने वाला)

(ग) कर्मधारय समास

कर्मधारय ऐसे समास को कहते हैं जिसमें सभी शब्दों का आधार एक ही हो। इसके विग्रह वाक्य में दोनों पदों में एक ही विभक्ति रहती है। इसमें पूर्वपद प्रायः विशेषण होता है और उत्तरपद विशेष्य । जैसे—

उत्तमाश्च ते जनाः	उत्तमजनाः	(उत्तम लोग)
कृष्णश्चासौ सर्पश्च	कृष्णसर्पः	(काला साँप)
नीलं च तद् उत्पलं च	नीलोत्पलम्	(नील कमल)
रक्त च तद् कमलं च	रक्तकमलम्	(लाल कमल)
पीतं च तद् अम्बर च	पीताम्बरम्	(पीला कपड़ा)
कोमलश्चासौ स्वरश्च	कोमलस्वरः	(कोमल स्वर)
महांश्चासौ पुरुषश्च	महापुरुषः	(बड़ा आदमी)
सुन्दरी च सा कन्या	सुन्दरकन्या	(सुन्दर लड़की)
दीर्घ च तद् नयनं च	दीर्घनयनम्	(बड़ी आँखें)
महांश्चासौ देवश्च	महादेवः	(बड़ा देवता)
मत्तश्चासौ गजेन्द्रश्च	मत्तगजेन्द्रः	(मस्त हाथी)
ताम्रं च तत् लोचनम्	ताम्रलोचनम्	(लाल आँखें)
दुष्टश्चासौ सर्पश्च	दुष्टसर्पः	(दुष्ट साँप)
बधिरश्चासौ लोकश्च	बधिरलोकः	(बहरा संसार)
सुन्दरश्चासौ पुरुषश्च	सुन्दरपुरुषः	(सुन्दर पुरुष)
श्वेतं च तत् उत्पलं च	श्वेतोत्पलम्	(सफेद कमल)
महांश्चासौ ऋषिश्च	महर्षिः	(महर्षि)
परमश्चासौ राजा च	परमराजः	(परम राजा)
पुण्यं च तद् अहः च	पुण्याहम्	(पुण्य दिवस)
कृष्णश्चासौ सखा च	कृष्णसखः	(कृष्ण मित्र)
कृष्ण च सा चर्तुदशी	कृष्णचतुर्दशी	(कृष्ण पक्ष की चौदस)
महती च सा प्रिया	महाप्रिया	(बहुत प्यारी)
सुकेशी च सा भार्या	सुकेशभार्या	(अच्छे बालों वाली पत्नी)
ब्राह्मणी च सा भार्या	ब्राह्मणभार्या	(ब्राह्मणी पत्नी)
क्षत्रिया च सा पत्नी	क्षत्रियपत्नी	(क्षत्रिया पत्नी)
शुद्रा च सा पत्नी	शूद्रपत्नी	(शुद्रा पत्नी)

यदि विशेषण-विशेष्य के स्थान पर पूर्वपद तथा उत्तरपद परस्पर उपमान-उपमेय या उपमेय-उपमान हों तो भी कर्मधारय समास होता है। जैसे—

विद्युत् इव चञ्चला	विद्युच्चञ्चला	(बिजली के समान चंचल)
शस्त्री इव श्यामा	शस्त्रीश्यामा	(शस्त्री के समान सांवली)
कुमुदः इव उज्ज्वला	कुमुदोज्ज्वला	(कुमद के समान उज्ज्वल)
चन्द्रः इव आह्लादकः	चन्द्राह्लादकः	(चन्द्रमा के समान आह्लादक)
घनः इव श्यामः	घनश्यामः	(बादल के समान सांवला)

नवनीतम् इव कोमलम्	नवनीतकोमलम्	(मक्खन के समान कोमल)
कमलम् इव मुखम्	कमलमुखम्	(कमल के समान मुख)
वानरः इव चञ्चलः	वानरचञ्चलः	(बन्दर के समान चंचल)
मुखं चन्द्रः इव	मुखचन्द्रः	(चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूलः इव	नरशार्दूलः	(सिंह के समान मनुष्य)
नरः कुंजरः इव	नरकुंजरः	(हाथी के समान मनुष्य)
पुरुषः ऋषभः इव	पुरुषर्षभः	(बैल के समान मनुष्य)
मुखं पद्म इव	मुखपद्म	(कमल के समान मुख)
अधरः पल्लवः इव	अधरपल्लवः	(पत्ते के समान होंठ)
पुरुषः वरहाः इव	पुरुषवराहः	(सूअर के समान मनुष्य)

कभी-कभी दोनों ही पद विशेषण होते हैं। जैसे—

शुक्लश्चासौ कृष्णश्च	शुक्लकृष्णः	(सफेद व काला)
शीतं चासौ उष्णञ्च	शीतोष्णम्	(ठंडा व गर्म)
कृष्णश्चासौ सारंगश्च	कृष्णसारंगः	(काला व चितकबरा)
तुल्यश्चासौ श्वेतश्च	तुल्यश्वेतः	
युवतिश्चासौ जरती च	युवजरती	(युवती व वृद्धा)
युवा चासौ पलितश्च	युवपलितः	(युवा तथा गंजा)
पूर्वं स्नातः पश्चादुनलिप्तः	स्नातानुलिप्तः	(नहा कर लेपन करके)
पूर्वं पीतः पश्चात् प्रतिबद्धः	पीतप्रतिबद्धः	(पहले पी कर बाद में बाँधा हुआ)

(घ) द्विगु समास

यदि कर्मधारय समास के पूर्वपद संख्यावाची हो तो वह द्विगु समास होता है। जैसे—

पञ्चनां गवां समाहारः	पञ्चगवम्	(पांच गौओं का समूह)
पञ्चानां रात्रीणां समाहारः	पञ्चरात्रम्	(पाँच रातों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्	(पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी	(पाँच वटों का समूह)
पञ्चानां मूलानां समाहारः	पञ्चमूली	(पाँच मूलों का समूह)
पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः	पञ्चग्रामम्	(पाँच ग्रामों का समूह)
पञ्चानां खट्वानां समाहारः	पञ्चखट्वा	(पाँच खाटों का समूह)
पञ्चानां तन्त्राणाम् समाहारः	पञ्चतन्त्रम्	(पाँच तन्त्रों का समूह)
चतुर्णा युगानां समाहारः	चतुर्युगम्	(चार युगों का समूह)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवनम्	(तीन भुवनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	(तीन लोकों का समूह).
अष्टानां अध्यायानाम् समाहारः	अष्टाध्यायी	(आठ अध्यायों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	सप्तशती	(सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानां दिनानां समाहारः	सप्तदिनम्	(सात दिनों का समूह)

सप्तानाम् अह्नां समाहारः	सप्ताहम्	(सात दिनों का समूह)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	शताब्दी	(सौ वर्ष का समूह)
सहस्राणां अब्दानां समाहारः	सहस्राब्दी	(हजार वर्ष का समूह)
दशानाम् अब्दानां समाहारः	दशाब्दी	(दस वर्ष का समूह)

(ङ) द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद की प्रधानता होती है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। द्वन्द्व के तीन भेद होते हैं :

(क) इतरेतर द्वन्द्व—जहाँ सभी पद प्रधान भी होते हैं तथा अपना अस्तित्व भी बनाए रखते हैं और अन्त में संख्या के अनुसार वचन होता है उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। जैसे—

माता च पिता च	मातापितरौ	(माता और पिता)
सीता च रामः च	सीतारामौ	(सीता और राम)
सूर्य च चन्द्रः च	सूर्यचन्द्रौ	(सूर्य और चन्द्रमा)
धर्म च अर्थः च कामः च मोक्षः च	धर्मार्थिकाममोक्षाः	(धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष)
कन्दः च मूलं च फलं च	कन्दमूलफलानि	(कन्द, मूल और फल)
पुत्रश्च कन्या च	पुत्रकन्ये	(पुत्र व कन्या)
कन्या च पुत्रश्च	कन्यापुत्रौ	(कन्या व पुत्र)
फलं च पुष्पं च तोयं च	फलपुष्पतोयानि	(फल, पुष्प व जल)
धनं च जनश्च यौवनं च	धनजनयौवनानि	(धन, जन व यौवन)
मयूरी च कुक्कुटश्च	मयूरीकुक्कुटौ	(मयूरी और मुर्गा)
होता च पोता च	होतापोतारौ	(होता व पोता)
पिता च पुत्रश्च	पितापुत्रौ	(पिता व पुत्र)
ईशश्च कृष्णश्च	ईशकृष्णौ	(ईश व कृष्ण)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	कृष्णार्जुनौ	(कृष्ण व अर्जुन)
हरिश्च हरश्च	हरिहरौ	(हरि और हर)
शिवश्च केशवश्च	शिवकेशवौ	(शिव और केशव)
हरिश्च हरश्च गुरुश्च	हरिहरगुरुवः	(हरि, हर व गुरु)
कुशश्च काशश्च	कुशकाशौ	(कुश और काश)
मुनिश्च मृगश्च	मुनिमृगौ	(मुनि और मृग)
राधा च कृष्णश्च	राधाकृष्णौ	(राधा और कृष्ण)
मित्रश्च वरुणश्च	मित्रावरुणौ	(मित्र और वरुण)
ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च वैश्यश्च	ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः	(ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र)

(ख) समाहार द्वन्द्व—इसमें प्रत्येक पद की प्रधानता नहीं होती, अपितु उससे एक सामूहिक अर्थ प्रकट होता है। यह समास सदा एकवचन और नपुंसकलिंग में रहता है। जैसे—

गावश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	गवाश्वम्	(गाय तथा घोड़े)
पुत्राश्च पौत्राश्च तेषां समाहारः	पुत्रपौत्रम्	(पुत्र व पौत्र)
उष्ट्रश्च खरश्च तयोः समाहारः	उष्ट्रखरम्	(ऊँट व गधे)
मांसश्च शोणितञ्च तयोः समाहारः	मांसशोणितम्	(मांस व रक्त)
पाणी च पादौ व एषां समाहारः	पाणिपादम्	(हाथ-पैर)
शिरश्च ग्रीवा च अनयोः समाहारः	शिरोग्रीवम्	(सिर-गरदन)
हस्तौ च मुखं च एषां समाहारः	हस्तमुखम्	(हाथ-मुँह)
मुखं च नासिका च अनयोः समाहारः	मुखनासिकम्	(मुख-नासिका)
भेरी च पटहश्च अनयोः समाहारः	भेरीपटहम्	(भेरी-बाजा)
मार्दङ्गिकश्च पाणविकश्च अनयोः समाहारः	मार्दङ्गिकपाणविकम्	(ढोल-मजीरा)
रथिकाश्च अश्वारोहाश्च एषां समाहारः	रथिकाश्वरोहम्	(रथी-घुड़सवार)
हस्तिनश्च अश्वाश्च एषां समाहारः	हस्त्यश्वम्	(हाथी-घोड़े)
शराश्च तूणीराश्च एषां समाहारः	शरतूणीरम्	(तीर-तरकश)
यूकाश्च लिक्षाश्च एषां समाहारः	यूकलिक्षम्	(लीख-जूएँ)
दंशाश्च मशकाश्च एषां समाहारः	दंशमशकम्	(मच्छर-बिच्छू)
अहिश्च नकुलश्च अनयोः समाहारः	अहिनकुलम्	(सांप-नेवला)
काकश्च उलूकश्च अनयोः समाहारः	काकोलूकम्	(कव्वा-उल्लू)
गौश्च व्याघ्रश्च अनयोः समाहारः	गोव्याघ्रम्	(गाय-बाघ)
मूषकश्च मार्जारश्च अनयोः समाहारः	मुषकमार्जारम्	(बिल्ली-चूहा)
गोधूमश्च चणकश्च अनयोः समाहारः	गोधूमचणकम्	(गोचनी)
वाक् च त्वक् च अनयोः समाहारः	वाक्त्वचम्	(वाणी-चमड़ी)
शीतं च उष्णं च अनयोः समाहारः	शीतोष्णम्, शीतोष्णं	(गर्म-ठण्डा)
सुखं च दुःखं च अनयोः समाहारः	सुखदुःखम्	(सुख-दुःख)
गंगा च शोणश्च अनयोः समाहारः	गंगाशोणम्	(गंगा-शोण)

(ग) एकशेष द्वन्द्व—जहाँ द्वन्द्व समास में केवल एक ही शब्द शेष रहे वहाँ एकशेष द्वन्द्व होता है। जैसे—

माता च पिता च	पितरौ	(मातापितरौ भी बनता है)
श्वश्रूश्च श्वशुरश्च	श्वशुरौ	(सास तथा ससुर)
भ्राता च स्वसा च	भ्रातरौ	(भाई और बहन)
पुत्रश्च दुहिता च	पुत्रौ	(बेटा और बेटी)
भ्राता च भगिनी च	भ्रातरौ	(भाई और बहन)
हंसी च हंसश्च	हंसौ	(हंसी और हंस)
कृष्णश्च कृष्णश्च	कृष्णौ	(कृष्ण और कृष्ण)
रामश्च रामश्च	रामौ	(राम और राम)
ब्राह्मणी च ब्राह्मणश्च	ब्राह्मणौ	(ब्राह्मणी और ब्राह्मण)
शूद्री च शूद्रश्च	शूद्रौ	(शूद्री और शूद्र)

अजा च अजश्च	अजौ	(बकरी और बकरा)
चटकश्च चटकश्च	चटकौ	(चिड़ा और चिड़िया)
कृष्णश्च कृष्णश्च कृष्णश्च	कृष्णाः	(कृष्ण, कृष्ण और कृष्ण)

(च) बहुव्रीहि समास

लक्षण—जिस समास में अन्य पद का अर्थ प्रधान हो, उस समास को बहुव्रीहि समास कहते हैं, अर्थात् जो पद बहुव्रीहि समास में हों उनके अर्थ का बोध न होकर किसी दूसरे ही अर्थ का बोध होता हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

उदाहरण—पीताम्बरः।

विग्रह—पीतम् अम्बरम् यस्य सः । अथवा, पीतानि अम्बराणि यस्य सः।

व्याख्या—पीताम्बरः समस्त पद है। यह पीतम् तथा अम्बरम् दो शब्दों से मिल कर बना है। पीताम्बरः का अर्थ है 'कृष्ण' । न तो पीतं (=पीला) शब्द का अर्थ कृष्ण है तथा न ही अम्बरम् (=वस्त्र) का अर्थ कृष्ण है। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है। कृष्ण को पीताम्बर इसलिए कहते हैं क्योंकि उनके पीले वस्त्र हैं।

शंका—क्या पीताम्बरः शब्द का अर्थ पीला वस्त्र नहीं किया जा सकता?

समाधान—पीताम्बरः शब्द पुंल्लिंग है तथा यह पुंल्लिंग अर्थ का ही वाचक हो सकता है। यदि पीला वस्त्र अर्थ करना हो तो पीताम्बरम् पद होना चाहिए क्योंकि 'वस्त्र' के अर्थ में अम्बरम् शब्द नपुंसकलिंग है।

बहुव्रीहि तथा तत्पुरुष में भेद

तत्पुरुष समास में दोनों पदों में से उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है तथा पूर्वपद उत्तरपद का विशेषण होता है। जैसे, पीताम्बरम् में तत्पुरुष समास है तथा उत्तरपद अम्बरम् का अर्थ (वस्त्र) प्रधान है एवं पूर्वपद पीतम् उत्तरपद अम्बरम् का विशेषण है। बहुव्रीहि समास में अन्य पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद एवं उत्तरपद मिलकर समस्त पद तीसरे पद का विशेषण हो जाता है। पीताम्बरः में कृष्णः पद प्रधान है तथा पीताम्बरः समस्त पद कृष्णः का विशेषण है।

एक ही समस्त पद तत्पुरुष भी हो सकता है तथा बहुव्रीहि भी हो सकता है। जैसे, लोकनाथः शब्द है। जब इसका अर्थ 'लोक का नाथ' (स्वामी) किया जायेगा तो यह तत्पुरुष समास होगा क्योंकि उस समय नाथः पद अर्थ की दृष्टि से प्रमुख है, किन्तु जब इसका अर्थ कोई ऐसा दरिद्र व्यक्ति किया जायेगा जिसके पालक सब लोग हैं तो यह बहुव्रीहि हो जायेगा क्योंकि वह दरिद्र व्यक्ति न लोक का अर्थ है तथा न नाथ का अर्थ है। तत्पुरुष की दृष्टि से लोकनाथः का विग्रह होगा 'लोकस्य नाथः' तथा बहुव्रीहि की दृष्टि से इसका विग्रह होगा लोकाः नाथाः यस्य सः (लोक हैं नाथ या पालक जिसके)।

इसी प्रकार एक वैदिक पद इन्द्रशत्रुः है। शत्रुः का अर्थ है मारने वाला (शातयिता शत्रुः)। इन्द्रशत्रुः का विग्रह यदि 'इन्द्रस्य शत्रुः' किया जाता है तो यह तत्पुरुष समास हो जायेगा तथा इसका अर्थ होगा ऐसा व्यक्ति जो इन्द्र को मारने वाला हो। इन्द्रशत्रुः को बहुव्रीहि मान लिया जाये तो इसका विग्रह होगा 'इन्द्रः शत्रुः यस्य सः' अर्थात् ऐसा व्यक्ति (वृत्रासुर) जिसका शत्रु (मारने वाला) इन्द्र है। वैदिक युग में उदात्त आदि स्वरों के प्रयोग-भेद से यह पता चल जाता था कि इस समस्त पद में तत्पुरुष

समास होना चाहिए या बहुव्रीहि समास होना चाहिए।

बहुव्रीहि समास के भेद :

बहुव्रीहि समास के सात भेद होते हैं :

1. समानाधिकरण बहुव्रीहि समास
2. व्यधिकरण बहुव्रीहि समास
3. तुल्ययोग बहुव्रीहि समास
4. व्यतिहार बहुव्रीहि समास
5. संख्योत्तरपद बहुव्रीहि समास
6. संख्योभयपद बहुव्रीहि समास
7. दिगन्त लक्षण बहुव्रीहि समास

1. **समानाधिकरण बहुव्रीहि समास**—जहाँ दोनों (पूर्वपद तथा उत्तरपद) पदों में समान विभक्ति हो उसे समानाधिकरण बहुव्रीहि कहते हैं। जैसे—

प्राप्तम् उदकम् यं सः	प्राप्तोदकः	(ग्रामः)
पीतम् अम्बरम् यस्य सः	पीताम्बरः	(कृष्णः)
महान् आशयः यस्य सः	महाशयः	(पुरुषः)
वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः	वीरपुरुषकः	(ग्रामः)
चित्रा गौः यस्य सः	चित्रगुः	(पुरुषः)
उद्गतः गन्धः यस्य सः	उद्गन्धिः	
पूतिः गन्धः यस्य सः	पूतगन्धिः	
शोभनः गन्धः यस्य सः	सुगन्धिः	
सुरभिः गन्धः यस्य सः	सुरभिगन्धिः	
रूपवती भार्या यस्य सः	रूपवद्भार्यः	
वैयाकरणी भार्या यस्य सः	वैयाकरणभार्यः	
सुष्ठु हृदयं यस्य सः	सुहृद्	(मित्रम्)
दुष्टं हृदयं यस्य सः	दुर्हृद्	(शत्रुः)
बह्व्यः नद्यः यस्मिन् सः	बहुनदीकः	(देशः)
सुन्दरी वधूः यस्य सः	सुन्दरवधूकः	(पुरुषः)
बहवः कर्त्तारः यस्मिन् सः	बहुकर्तृकः	(ग्रामः)
ईश्वरः कर्त्ता यस्य तत्	ईश्वरकर्तृकं	(जगत्)
व्यूढम् उरः यस्य सः	व्यूढोरस्कः	
प्रियः सर्पिः यस्य सः	प्रियसर्पिष्कः	(घृत प्रेमी)
द्वौ पुमांसौ यस्मिन् सः	द्विपुंस्कः	
द्वौ मूर्धानौ यस्यः स	द्विमूर्धः	(दो सिरा)
त्रयः मूर्धानः यस्य सः	त्रिमूर्धः	(तीन सिरा)
अन्तर् लोमानि यस्य सः	अन्तर्लोमः	
बहिर् लोमानि यस्य सः	बहिर्लोमः	
कल्याणः धर्मः यस्य सः	कल्याणधर्मा	

समानः धर्मः यस्यः सः	समानधर्मा	
अविद्यमानाः प्रजाः यस्य सः	अप्रजाः	
शोभना मेधा यस्य सः	सुमेधाः	
शोभनाः प्रजाः यस्य सः	सुप्रजाः	
दुष्टा मेधा यस्य सः	दुर्मेधाः	
दुष्टाः प्रजाः यस्य सः	दुष्प्रजाः	
शार्ङ्गं धनुः यस्य सः	शार्ङ्गधन्वा	
अधिज्यं धनुः यस्य सः	अधिज्यधन्वा	
उद्गतं काकुदं यस्य सः	उत्काकुत्	
विगतं काकुदं यस्य सः	विकाकुत्	
पूर्णं काकुद यस्य सः	पूर्णकाकुत्-द्	
बहवः दण्डिनः यस्य सा	बहुदण्डिका	(नगरी)
बहवः वाग्मिनः यस्यां सा	वहुवाग्मिका	(नगरी)
महत् यशः यस्य सः	महायशस्कः,	महायशाः
अन्यत् मनः यस्य सः	अन्यमनस्कः,	अन्यमनाः
बहवः मालाः यस्य सः	बहुमालकः,	बहुमालः
जितानि इन्द्रियाणि येन सः	जितेन्द्रियः	(पुरुषः)
उढः रथः येन सः	ऊढरथः	(अनड्वान्)
पराजिताः अरयः येन सः	पराजितारिः	(नृपः)
उपहृतः पशुः यस्मै सः	उपहृतपशुः	(रुद्रः)
निर्गत भय यस्मात् सः	निर्गतभयः,	निर्भयः (पुरुषः)
उद्धृतः ओदनः यस्याः सा	उद्धृतौदना	(स्थाली)
महान् अनुभावः यस्य सः	महानुभावः	(पुरुषः)
महान् आत्मा यस्य सः	महात्मा	(पुरुषः)
महत् मनः यस्य सः	महामनाः	
उदात्तं मनः यस्य सः	उदात्तमनाः	
यशः एव धनं यस्य सः	यशोधनः	
चत्वारि मुखानि यस्य सः	चतुर्मुखः	
दश आननानि यस्य सः	दशाननः	
पञ्च आननानि यस्य सः	पञ्चाननः	
चत्वारि आननानि यस्य सः	चतुराननः	
मृतः पुत्रः यस्य सः	मृतपुत्रः	
मृता भार्या यस्य सः	मृतभार्यः	
विगतः धवः यस्याः सा	विधवा	
शीताः अंशवः यस्य सः	शीतांशुः	
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः	लब्धप्रतिष्ठः	
शोभनाः दन्ताः यस्य सः	सुदन्त	

अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः	अपुत्रः
चन्द्रः इव मुखं यस्याः सा	चन्द्रमुखी
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा	मृगनयनी
गन्तुम् मनः यस्य सः	गन्तुमनाः
आरूढः वानरः यस्मिन् सः	आरूढवानरः
मृगस्य लोचने इवलोचने यस्याः सा	मृगलोचनी
दश वदनानि यस्य सः	दशवदनः
षट् आननानि यस्य सः	षडाननः
कमलम् आसनं यस्य सः	कमलासनः
दत्तं धनं येन सः	दत्तधनः
महद् बलं यस्य सः	महाबलः
मुग्धा मतिः यस्य सः	मुग्धमतिः
श्वेतानि अम्बराणियस्य सः	श्वेताम्बरः
आयते लोचने यस्याः सा	आयतलोचना
शुष्कं कण्ठं यस्य सः	शुष्ककण्ठः

2. व्यधिकरण बहुव्रीहि समास—जहाँ दोनों पदों में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ होती हैं उसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे—

पुण्ये मतिः यस्य सः	पुण्यमतिः
चन्द्रः मौलौ यस्य सः	चन्द्रमौलिः
खड्गं हस्ते यस्य सः	खड्गहस्तः
अस्त्रं पाणौ यस्य सः	अस्त्रपाणिः
चक्र पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः
घृतस्य गन्धः यस्मिन् सः	घृतगन्धिः
द्वौ पादौ यस्य सः	द्विपात्
धनुः पाणौ यस्य सः	धनुष्पाणिः
शशी शेखरे यस्य सः	शशिशेखरः
कण्ठे कालः यस्य सः	कण्ठकालः
पिनाकं पाणौ यस्य सः	पिनाकपाणिः
सूपस्य गन्धः यस्मिन् सः	सूपगन्धिः
व्याघ्रस्य इव पादौ यस्य सः	व्याघ्रपात्
शोभनौ पादौ यस्य सः	सुपात्

3. तुल्ययोग बहुव्रीहि समास—तुल्ययोग में तृतीयान्त पद का 'सह' के साथ समास होता है । जैसे—

विनयेन सह	सविनयम्
अनुजेन सह	सानुजः
पुत्रेण सह	सपुत्रः, सहपुत्रः (आशीर्वाद अर्थ में)

4. **व्यतिहार बहुव्रीहि समास**—समान रूप वाले सप्तमी विभक्त्यन्त शब्दों के ग्रहण विषय में तथा समान रूप वाले तृतीयान्त के प्रहरण विषय में (युद्धबोधक अर्थ में) समास होता है । जैसे—

केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	केशाकेशि
बाहुषु बाहुषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	बाहूबाहवि
दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्	दण्डादण्डि
मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्	मुष्टीमुष्टि
मुसलैः मुसलैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्	मुसलामुसलि
हस्तैः हस्तैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्	हस्ताहस्ति

5. **संख्योत्तरपद**, तथा 6. **संख्योभयपद बहुव्रीहि समास**—इस समास में संख्यावाचक अर्थ में संख्या शब्दों का अव्यय के साथ समास होता है अथवा दोनों पद संख्यावाचक होते हैं । जैसे—

संख्योत्तरपद

दशानां समीपे ये सन्ति ते	उपदशाः
विंशतेः आसन्नाः सन्ति ते	आसन्नविंशाः
चतुर्णां समीपे ये सन्ति ते	उपचतुराः
चत्वारिंशद्भ्यः अधिकाः	अधिकचत्वारिंशाः
त्रिंशतः अदूराः	अदूरत्रिंशाः

संख्योभयपद

द्वौ वा त्रयो वा	द्वित्राः
पञ्च वा षट् वा	पञ्चषाः
त्रयो वा चत्वारो वा	त्रिचतुराः
द्विः आवृत्ताः दश इति	द्विदशाः

7. **दिगन्तलक्षण बहुव्रीहि समास**—'दिशाओं के मध्य' अर्थ अभिप्रेत होने पर दिगन्तलक्षण बहुव्रीहि समास होता है । जैसे—

दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम्	दक्षिणपूर्वा
उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोऽन्तरालम्	उत्तरपूर्वा
ऐन्द्रयाश्च कौबेर्याश्चान्तरालं दिक्	ऐन्द्रकौबेरि।

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

परीक्षा में समास सम्बन्धी प्रश्न निम्न रूप में पूछा जाता है—

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच का अपेक्षानुसार विग्रह अथवा समास करते हुए समास का नाम बताइए—

(*i*) उपयमुनम्

(*ii*) त्रयाणां लोकानां समाहारः

(*iii*) उत्तमाश्च ते जनाः

(*iv*) विद्यालयः

(*v*) माता च पिता च

(*vi*) जितेन्द्रियः

(*vii*) अस्त्रं पाणौ यस्य सः

(*viii*) कृष्णसर्पः

इस प्रश्न में आठ उदाहरण दिये गये हैं जिनमें (*i*), (*iv*), (*vi*), (*viii*) समस्त पद हैं तथा उनका विग्रह करना है और समास का नाम बताना है तथा (*ii*), (*iii*), (*v*), (*vii*) विग्रह पदों का समस्तपद या समास बनाकर समास का नाम बताना है।

इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित रूप से देना है :

प्रश्न	उत्तर	
पद	समास/विग्रह	समास का नाम
(*i*) उपयमुनम्	यमुनायाः समीपम्	अव्ययीभाव
(*ii*) त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	द्विगु
(*iii*) उत्तमाश्च ते जनाः	उत्तमजनाः	कर्मधारय
(*iv*) विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	तत्पुरुष
(*v*) माता च पिता च	पितरौ, मातापितरौ	द्वन्द्व
(*vi*) जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि
(*vii*) अस्त्रं पाणौ यस्य सः	अस्त्रपाणिः	बहुव्रीहि
(*viii*) कृष्णसर्पः	कृष्णश्चासौ सर्पः	कर्मधारय

परीक्षाओं में पूछे गए कुछ और उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं, जिनमें अपेक्षानुसार समास या विग्रह करके समास का नाम बताना है :

(*i*) यथेष्टम्
(*ii*) सीताविरहितः
(*iii*) वेदान् वेत्ति इति
(*iv*) भिक्षायै अटनम्
(*v*) जीर्णं च तत् उद्यानम्
(*vi*) मृत्पिण्डमतिः
(*vii*) दश आननानि यस्य सः
(*viii*) कण्णभरणम्
(*ix*) यथाशक्ति
(*x*) शुभम् आननम् यस्याः सा
(*xi*) बुद्धेः प्रभावात्
(*xii*) उदारः च असौ जनः
(*xiii*) पितरौ
(*xiv*) भिक्षापात्रम्
(*xv*) प्रभूतं सलिलं यस्मिन् तत्
(*xvi*) राजपुत्रः
(*xvii*) विमलोदका
(*xviii*) अभिषेकस्य वेला
(*xix*) धनलुब्धः
(*xx*) घोरा आकृतिः यस्य सः
(*xxi*) प्रत्येकम्
(*xxii*) प्राणसंशयम्

इसमें (*i*), (*ii*), (*vi*), (*viii*), (*ix*), (*xiii*), (*xiv*), (*xvi*), (*xvii*), (*xix*), (*xxi*), (*xxii*) समस्त् पद हैं तथा शेष विग्रह हैं।

उपर्युक्त उदाहरण भी परीक्षाओं में पूछे गये हैं तथा इनका उत्तर क्रमानुसार नीचे दिया जा रहा है :

समस्त पद/विग्रह	विग्रह/समस्त पद	समास का नाम
(*i*) यथेष्टम्	इष्टम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव
(*ii*) सीताविरहितः	सीतया विरहितः	तत्पुरुष
(*iii*) वेदान् वेत्ति इति	वेदविद्	तत्पुरुष
(*iv*) भिक्षायै अटनम्	भिक्षाटनम्	तत्पुरुष
(*v*) जीर्णं च तत् उद्यानम्	जीर्णोद्यानम्	कर्मधारय
(*vi*) मृत्पिण्डमतिः	मृत्पिण्डः इव मतिः यस्य	बहुब्रीहि
(*vii*) दश आननानि यस्य	दशाननः	बहुब्रीही
(*viii*) कण्ठाभरणम्	कण्ठाय आभरणम्	तत्पुरुष
(*ix*) यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव
(*x*) शुभम् आननम् यस्याः सा	शुभानना	बहुब्रीही
(*xi*) बुद्धेः प्रभावात्	बुद्धि प्रभावात्	तत्पुरुष
(*xii*) उदारः च असौ जनः	उदारजनः	कर्मधारय
(*xiii*) पितरौ	माता च पिता च	द्वन्द्व
(*xiv*) भिक्षापात्रम्	भिक्षायाः पात्रम्	तत्पुरुष
(*xv*) प्रभूतं सलिलं यस्मिन् तत्	प्रभूतसलिलम्	बहुब्रीहि
(*xvi*) राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः	तत्पुरुष
(*xvii*) विमलोदका	विमलं उदकं यस्यां सा	बहुब्रीही
(*xviii*) अभिषेकस्य वेला	अभिषेकवेला	तत्पुरुष
(*xix*) धनलुब्धः	धनाय लुब्धः	तत्पुरुष
(*xx*) घोरा आकृतिः यस्य सः	घोराकृतिः	बहुब्रीही
(*xxi*) प्रत्येकम्	एकम् एकम्	अव्ययीभाव
(*xxii*) प्राणसंशयम्	प्राणानां संशयम्	तत्पुरुष

अभ्यास

1. **निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास के नाम भी बताइए :**

(क) सस्नेहम्, पीताम्बरः, दशाननः, प्रतिदिनम्, निर्मक्षिकम्, अधिहरि, कण्ठकालः।

(ख) अपुत्रः, मृगलोचनी, त्रिभुवनम्, पाकशाला, व्यवहारकुशलः।

(ग) विद्याहीनः, ग्रामगतः, स्वर्गपतितः, चौरभीतिः, पथभ्रष्टः।

(घ) पूर्वाह्णः, ईश्वराधीनः, कुम्भकारः, घनश्यामः, पुरुषर्षभः।

(ङ) शीतोष्णम्, नीलोत्पलम्, शूद्रपत्नी, त्रिलोकी, पञ्चतन्त्रम्।

2. नीचे लिखे पदों से समस्तपद बनाकर समास का नाम लिखें :

(क) ग्रामे सिद्धः, हरेः सादृश्यम्, अक्ष्णः परम्, शक्तिम्, अनतिक्रम्य, तृणमपि, अपरित्यज्य।

(ख) वाचा कलहः, कुण्डलाय हिरण्यम्, दुःखात् अपेतः, वृक्षात् पतितः, स्वर्णस्य पात्रम्।

(ग) रामश्च लक्ष्मणश्च, महांश्चासौ ऋषिश्च, नरः कुंजर इव, ताम्रं च तत् लोचनंम्, शोभनाः प्रजाः यस्य सः, महान् आत्मा यस्य सः।

(घ) पञ्च आननानि यस्य सः, प्राप्तम् उदक यं सः, ऊढः रथः येन सः, उदात्तं मनः यस्य सः।

3. नीचे लिखे पदों में अपेक्षानुसार समास या विग्रह करके समास का नाम बताइये।

दत्तधनः, जितेन्द्रियः, रूपवती भार्या यस्य सः, शीतोष्णम्, त्रयाणां लोकानां समाहारः।

□

द्वितीय अध्याय

विविध प्रत्यय

[MISCELLANEOUS SUFFIXES OR DERIVATIVES]

कृदन्त, तद्धित व स्त्री प्रत्यय

संस्कृत व्याकरण में किसी भी पद को बनाने के लिएँ प्रातिपदिक या धातु के बाद सुप् तथा तिङ् प्रत्यय लगाए जाते हैं। 'सुप्' प्रत्यय लगाने से संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण बनते हैं और 'तिङ्' प्रत्यय लगाने से क्रिया या आख्यात पद बनते हैं। सुप् तथा तिङ् प्रत्ययों के अतिरिक्त संस्कृत में निम्न तीन प्रकार के प्रत्ययों का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है :

(क) **कृत् प्रत्यय**—ये प्रत्यय भी 'तिङ्' के समान धातु से लगाये जाते हैं किन्तु ये प्रत्यय तिङ् प्रत्ययों से इस बात में भिन्न होते हैं कि तिङ् प्रत्यय लगाने पर आख्यात बनते हैं पर कृत् प्रत्यय लगाने पर कृदन्त बनते हैं जिनका संज्ञा, विशेषण तथा अव्यय आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे—'गम्' धातु से तिङ् प्रत्यय लगाकर 'गच्छति' आदि क्रिया रूप बनते हैं पर क्त्वा, तव्यत्, क्त, क्तवतु, तुमुन् तथा अनीयर् (कृत्) प्रत्यय लगाकर गत्वा, गन्तुम्, गतः, गतवान्, गन्तव्य तथा गमनीय आदि रूप बनते हैं। इनमें गत्वा तथा गन्तुम् अव्यय की तरह प्रयोग में आते हैं तथा गत, गतवान्, गन्तव्य और गमनीय का प्रयोग क्रिया के साथ-साथ विशेषण के रूप में भी होता है।

(ख) **तद्धित प्रत्यय**—संज्ञा शब्दों से विशेषण, विशेषण से संज्ञा अथवा अव्यय आदि बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं। ये प्रत्यय धातुओं को छोड़कर शेष सभी प्रकार के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि शब्दों के साथ लगाये जाते हैं। अतः कृदन्त प्रत्ययों से इनकी यही भिन्नता है। कृदन्त प्रत्यय तो मात्र धातु के साथ ही लगाये जाते हैं पर तद्धित प्रत्यय धातु के साथ न लगकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों के साथ लगते हैं। जैसे 'धन' संज्ञा शब्द से मतुप् (तद्धित) प्रत्यय लगकर 'धनवान्' विशेषण बनता है। इसी तरह 'धनवान्' विशेषण से पुनः 'त्व' या 'तल्' प्रत्यय लगकर 'धनवत्त्वम्' या 'धनवत्ता' आदि संज्ञा शब्द बनते हैं।

(ग) **स्त्री प्रत्यय**—पुंल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं। जैसे चपल (पुं॰) से टाप् (आ) स्त्री प्रत्यय लगाने पर चपला (स्त्री॰) शब्द बनता है। इसी तरह कर्तृ (पुं॰) से ङीप् (ई) प्रत्यय लगाने पर कर्त्री स्त्रीलिङ्ग शब्द बनता है। टाप्, ङीप् तथा ङीष् आदि प्रमुख स्त्री प्रत्यय हैं।

(क) कृत् प्रत्यय

(Verbal Suffixes)

धातुओं के साथ जिन प्रत्ययों के लगाने से संज्ञा, विशेषण या अव्यय बनते हैं उन

प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं तथा उनसे बनने वाले शब्दों को कृदन्त शब्द कहते हैं। जैसे कृ धातु से तव्य प्रत्यय लगाने से 'कर्त्तव्यम्' शब्द बना। इस उदाहरण में तव्य कृत् प्रत्यय है तथा उसके प्रयोग से निष्पन्न शब्द 'कर्त्तव्यम्' कृदन्त है।

मुख्य कृदन्त प्रत्यय निम्नलिखित हैं :

1. क्त्वा प्रत्यय (Gerunds)
2. तुमुन् प्रत्यय (Infinitives)
3. क्त प्रत्यय (Past Passive Participle)
4. क्तवतु प्रत्यय (Past Active Participle)
5. तव्यत् प्रत्यय (Potential Participle)
6. अनीयर् प्रत्यय (Potential Participle)

अब इन प्रत्ययों के प्रयोग पर विचार किया जायेगा :

1. क्त्वा प्रत्यय (Gerunds)

क्त्वा प्रत्यय पूर्वकालिक कृत् प्रत्यय है। इसका प्रयोग पूर्वकालिक क्रिया के रूप में होता है। जैसे—वह दूध पीकर स्कूल जाता है = सः दुग्धं पीत्वा विद्यालयं याति। इस वाक्य में पी कर (पीत्वा) पूर्वकालिक क्रिया है अतः पा धातु से क्त्वा पूर्वकालिक कृत् प्रत्यय लगाकर पीत्वा शब्द का प्रयोग किया गया है।

कुछ धातुओं के क्त्वान्त रूप निम्नलिखित हैं :

क्त्वा का त्वा शेष रह जाता है।

प्रसिद्ध धातुओं के क्त्वान्त रूप

वृध्	+	क्त्वा	=	वर्धित्वा	नम्	+	क्त्वा	=	नत्वा
वृत्	+	क्त्वा	=	वर्तित्वा	मन्	+	क्त्वा	=	मत्वा
पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	रुध्	+	क्त्वा	=	रुद्ध्वा
गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा	वह्	+	क्त्वा	=	ऊढ्वा
पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा	वस्	+	क्त्वा	=	उषित्वा
अद्	+	क्त्वा	=	जग्ध्वा	सिच्	+	क्त्वा	=	सिक्त्वा
त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा	स्पृश	+	क्त्वा	=	स्पृष्ट्वा
श्रु	+	क्त्वा	=	श्रुत्वा	भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा
दा	+	क्त्वा	=	दत्त्वा	रुद्	+	क्त्वा	=	रुदित्वा
स्था	+	क्त्वा	=	स्थात्वा	कथ्	+	क्त्वा	=	कथयित्वा
ज्ञा	+	क्त्वा	=	ज्ञात्वा	चुर्	+	क्त्वा	=	चोरयित्वा
इष्	+	क्त्वा	=	इष्ट्वा	ग्रह्	+	क्त्वा	=	गृहीत्वा
आप्	+	क्त्वा	=	आप्त्वा	दुह्	+	क्त्वा	=	दुग्ध्वा
अधि+इ	+	क्त्वा	=	अधीत्य	प्रच्छ्	+	क्त्वा	=	पृष्ट्वा
भुज्	+	क्त्वा	=	भुक्त्वा	शक्	+	क्त्वा	=	शक्त्वा
ह	+	क्त्वा	=	हत्वा	स्मृ	+	क्त्वा	=	स्मृत्वा
क्री	+	क्त्वा	=	क्रीत्वा	युज्	+	क्त्वा	=	युक्त्वा

चि	+	क्त्वा	=	चित्वा	अश्	+	क्त्वा	=	अशित्वा
भिद्	+	क्त्वा	=	भित्त्वा	पत्	+	क्त्वा	=	पतित्वा
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा	कम्प्	+	क्त्वा	=	कम्पित्वा
पच्	+	क्त्वा	=	पक्त्वा	नृत्	+	क्त्वा	=	नर्तित्वा
मन्	+	क्त्वा	=	मत्वा	जन्	+	क्त्वा	=	जनित्वा
मुच्	+	क्त्वा	=	मुक्त्वा	द्युत्	+	क्त्वा	=	द्युतित्वा
यज्	+	क्त्वा	=	इष्ट्वा	कुप्	+	क्त्वा	=	कुपित्वा
रूह्	+	क्त्वा	=	रूढ्वा	सू	+	क्त्वा	=	सूत्वा
सह्	+	क्त्वा	=	सहित्वा	भृ	+	क्त्वा	=	भृत्वा
वच्	+	क्त्वा	=	उक्त्वा	जागृ	+	क्त्वा	=	जागरित्वा
स्वप्	+	क्त्वा	=	सुपत्वा	ताड्	+	क्त्वा	=	ताडयित्वा
हन्	+	क्त्वा	=	हत्वा	धाव्	+	क्त्वा	=	धावित्वा
आस्	+	क्त्वा	=	आसित्वा	यत्	+	क्त्वा	=	यतित्वा
शास्	+	क्त्वा	=	शासित्वा, शिष्ट्वा	तुल्	+	क्त्वा	=	तोलयित्वा
रच्	+	क्त्वा	=	रचयित्वा	शी	+	क्त्वा	=	शयित्वा
√तड्	+	क्त्वा	=	ताडयित्वा	घ्रा	+	क्त्वा	=	घ्रात्वा
ग्रन्थ्	+	क्त्वा	=	गृहीत्वा	शिक्ष्	+	क्त्वा	=	शिक्षित्वा
हा	+	क्त्वा	=	हित्वा	वप्	+	क्त्वा	=	उप्त्वा
या	+	क्त्वा	=	यात्वा	स्ना	+	क्त्वा	=	स्नात्वा
जि	+	क्त्वा	=	जित्वा	क्षिप्	+	क्त्वा	=	क्षिप्त्वा
नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा	छिद्	+	क्त्वा	=	छित्वा
भुज्	+	क्त्वा	=	भुक्त्वा	दह्	+	क्त्वा	=	दग्ध्वा
कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा	दश्	+	क्त्वा	=	दष्ट्वा

2. तुमुन् प्रत्यय (Infinitives)

भविष्यकाल के अर्थ को प्रकट करने के लिए जिस क्रिया के लिए कोई क्रिया की जाती है, उस धातु के साथ तुमुन् (तुम्) प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे—छात्रः पठितुं विद्यालयं गच्छति—इस वाक्य में जाने की क्रिया पढ़ने के लिए की जा रही है। अतः पठ् धातु से तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। कुछ मुख्य-मुख्य धातुओं के साथ तुमुन् प्रत्ययान्त रूप दिये जा रहे हैं :

भू	+	तुमुन्	=	भवितुम्	सेव्	+	तुमुन्	=	सेवितुम्
घ्रा	+	तुमुन्	=	घ्रातुम्	वृत्	+	तुमुन्	=	वर्तितुम्
दा	+	तुमुन्	=	दातुम्	याच्	+	तुमुन्	=	याचितुम्
मुद्	+	तुमुन्	=	मोदितुम्	शास्	+	तुमुन्	=	शासितुम्
हस्	+	तुमुन्	=	हसितुम्	देव्	+	तुमुन्	=	देवितुम्
स्था	+	तुमुन्	=	स्थातुम्	नश्	+	तुमुन्	=	नशितुम्

सह् + तुमुन् = सोढुम्	जन् + तुमुन् = जनितुम्
त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम्	शक् + तुमुन् = शक्तुम्
वस् + तुमुन् = वस्तुम्	इष् + तुमुन् = एषितुम्, एष्टुम्
शिक्ष् + तुमुन् = शिक्षितुम्	रुध् + तुमुन् = रोद्धुम्
स्ना + तुमुन् = स्नातुम्	तन् + तुमुन् = तनितुम्
वह् + तुमुन् = वोढुम्	दह् + तुमुन् = दग्धुम्
अद् + तुमुन् = अत्तुम्	या + तुमुन् = यातुम्
कथ् + तुमुन् = कथयितुम्	विद् + तुमुन् = वेत्तुम्
गम् + तुमुन् = गन्तुम्	क्री + तुमुन् = क्रेतुम्
चि + तुमुन् = चेतुम्	आप् + तुमुन् = आप्तुम्
जि + तुमुन् = जेतुम्	कृ + तुमुन् = कर्तुम्
दुह् + तुमुन् = दोग्धुम्	ग्रह् + तुमुन् = ग्रहीतुम्
नम् + तुमुन् = नन्तुम्	छिद् + तुमुन् = छेत्तुम्
प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्	ज्ञा + तुमुन् = ज्ञातुम्
भञ्ज् + तुमुन् = भङ्क्तुम्	पा + तुमुन् = पातुम्
भी + तुमुन् = भेतुम्	वच् + तुमुन् = वक्तुम्
भ्रम् + तुमुन् = भ्रमितुम्, भ्रान्तुम्	भिद् + तुमुन् = भेत्तुम्
रुद् + तुमुन् = रोदितुम्	भुज् + तुमुन् = भोक्तुम्
वद् + तुमुन् = वदितुम्	मुद् + तुमुन् = मोदितुम्
श्रु + तुमुन् = श्रोतुम्	लभ् + तुमुन् = लब्धुम्
स्वप् + तुमुन् = स्वप्तुम्	शी + तुमुन् = शयितुम्
पठ् + तुमुन् = पठितुम्	स्पृश् + तुमुन् = स्प्रष्टुम्
हन् + तुमुन् = हन्तुम्	दम् + तुमुन् = दमितुम्
रुच् + तुमुन् = रोचितुम्	ईक्ष् + तुमुन् = ईक्षितुम्
हृ + तुमुन् = हर्तुम्	हु + तुमुन् = होतुम्
नृत् + तुमुन् = नर्तितुम्	युध् + तुमुन् = योद्धुम्
सु + तुमुन् = सोतुम्	तुद् + तुमुन् = तोत्तुम्
युज् + तुमुन् = योक्तुम्	मुष् + तुमुन् = मोषितुम्
सृ + तुमुन् = सर्तुम्	हस् + तुमुन् = हसितुम्
यज् + तुमुन् = यष्टुम्	रुह् + तुमुन् = रोढुम्
सृ + तुमुन् = सर्तुम्	चल् + तुमुन् = चलितुम्
व्रज् + तुमुन् = व्रजितुम्	शप् + तुमुन् = शप्तुम्
रक्ष् + तुमुन् = रक्षितुम्	पत् + तुमुन् = पतितुम्
वह् + तुमुन् = वोढुम्	पूज् + तुमुन् = पूजयितुम्
जन् + तुमुन् = जनितुम्	मन् + तुमुन् = मन्तुम्

सिध् + तुमुन् = सेद्धुम् तड् + तुमुन् = ताडयितुम्
चुर् + तुमुन् = चोरयितुम् भक्ष् + तुमुन् = भक्षयितुम्

3. क्त व 4. क्तवतु प्रत्यय (Past Passive Participle and Past Active Participle)

ये दोनों (क्त तथा क्तवतु) प्रत्यय भूतकालिक कृत् प्रत्यय (Past Verbal Suffixes) हैं। भूतकाल की क्रिया की पूर्ण समाप्ति को बताने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है अतः इन दोनों को निष्ठा भी कहते हैं (निष्ठा का अर्थ है, समाप्ति अर्थात् क्रिया की समाप्ति)। जैसे—उसने पाठ पढ़ा या उससे पाठ पढ़ा गया। इन दो वाक्यों में प्रथम वाक्य भूतकाल की पढ़ना क्रिया की समाप्ति को बताता है तथा क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होने से यह कर्तृवाच्य (Active Voice) का वाक्य है। दूसरा वाक्य भी पढ़ना क्रिया की समाप्ति को बताता है पर क्रिया का स्वरूप कर्म के अनुसार होने से वह कर्मवाच्य (Passive Voice) वाक्य है। क्त का प्रयोग कर्मवाच्य (Passive Voice) में होता है तथा क्तवतु का प्रयोग कर्तृवाच्य (Active Voice) में होता है।

1. उसने पाठ पढ़ा। सः पाठम् पठितवान्।
2. उससे पाठ पढ़ा गया। तेन पाठः पठितः ।

(क) पठितवान् में क्तवतु प्रत्यय है— पठ् + क्तवतु = पठितवान् । क्तवतु का तवत् शेष रह जाता है, 'क्' तथा 'उ' का लोप हो जाता है। पठ् + क्तवतु = पठ् + इ + तवत् = पठितवत् । क्योंकि पठ् सेट् धातु है, सेट् धातुओं में क्त व क्तवतु के प्रयोग से पूर्व 'इ' का आगम हो जाता है। पठितवत् के रूप बलवत् या भवत् शब्द के समान बनते हैं। पुंल्लिंग, एकवचन में कर्त्ता होने से उसी प्रकार की क्रिया होनी चाहिए। अतः पठितवत् का प्रथमा विभक्ति पुंल्लिग, एकवचन में पठितवान् रूप बना है।

(ख) पठितः = पठ् + क्त = पठ + इ + त (पुंल्लिंग, एकवचन)। यहाँ भी पठितः क्रिया का कर्त्ता पाठः पुंल्लिग, एकवचन में होने से अकारान्त प्रथमा विभक्ति का पठितः रूप बना है ।

'क्त' प्रत्यय का 'त' शेष रह जाता है तथा 'क्तवतु' का 'तवत्' शेष रह जाता है।

कर्मवाच्य में क्त का प्रयोग कर्म के विशेषण के रूप में होता है, इसलिए इनके रूप भी विशेष्य के अनुसार तीनों लिंगों तथा वचनों में बनते हैं। जैसे—

1. मया वृक्षः दृष्टः मुझसे वृक्ष देखा गया।
2. मया लतिका दृष्टा मुझसे लता देखी गई।
3. मया फलं दृष्टम् मुझसे फल देखा गया।

पहले वाक्य में विशेष्य वृक्ष पुंल्लिंग, एकवचन है अतः विशेषण दृष्टः (पुंल्लिग, एकवचन) रूप का प्रयोग हुआ है। दूसरे वाक्य में विशेष्य लतिका (स्त्रीलिंग, एकवचन) है अतः विशेषण दृष्टा (स्त्रीलिंग, एकवचन) रूप का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में विशेष्य फलम् नपुंसकलिंग, एकवचन के कारण विशेषण भूत 'दृष्टम्' (नपुंसकलिंग, एकवचन) रूप का प्रयोग हुआ है। 'क्त' प्रत्यय प्रायः कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी तीनों

लिङ्गों तथा वचनों में बनते हैं । जैसे—

1. सः बालकः पुस्तकं पठितवान् — उस बालक ने पुस्तक पढ़ी।
2. सा बालिका पुस्तकं पठितवती — उस बालिका ने पुस्तक पढ़ी।
3. पुष्पं पृथिवौ पतितवत् — फल पृथ्वी पर गिर पड़ा।

पहले वाक्य में 'सः बालकः' (विशेष्य) पुंल्लिंग, एकवचन है, तो विशेषण पठितवान् भी तद्वत् पुंल्लिग, एकवचन होगा। दूसरे वाक्य में 'सा बालिका' स्त्रीलिंग, एकवचन है, तो पठितवती (स्त्रीलिंग, एकवचन) का प्रयोग होगा। इसी तरह तीसरे वाक्य में 'पुष्पम्' (नपुंसकलिंग, एकवचन) के साथ पतितवत् नपुंसकलिंग, एकवचन का प्रयोग उचित है।

नीचे कुछ मुख्य धातुओं के 'क्त' और 'क्तवतु' के रूप दिये जा रहे हैं :

क्त प्रत्यय	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ् (पढ़ना)	पठितः (पढ़ा गया)	पठिता	पठितम्
भू (होना)	भूतः (हुआ)	भूता	भूतम्
पा (पीना)	पीतः (पीया गया)	पीता	पीतम्
दा (देना)	दत्तः (दिया गया)	दत्ता	दत्तम्
कृ (करना)	कृतः (किया गया)	कृत्ता	कृत्तम्
क्री (खरीदना)	क्रीतः (खरीदा गया)	क्रीता	क्रीतम्
शक् (सकना)	शक्तः (सका)	शक्ता	शक्तम्
दृश् (देखना)	दृष्टः (देखा गया)	दृष्टा	दृष्टम्
स्मृ (याद करना)	स्मृतः (याद किया गया)	स्मृता	स्मृतम्
सेव् (सेवा करना)	सेवितः (सेवा किया गया)	सविता	सेवितम्
लभ् (प्राप्त करना)	लब्धः (पाया गया)	लब्धा	लब्धम्
रुच् (पसन्द करना)	रुचितः (पसन्द किया गया)	रुचिता	रुचितम्
ईक्ष् (देखना)	ईक्षितः (देखा गया)	ईक्षिता	ईक्षितम्
याच् (माँगना)	याचितः (माँगा गया)	याचिता	याचितम्
नी (ले जाना)	नीतः (ले जाया गया)	नीता	नीतम्
हृ (हरना)	हृतः (हरा गया)	हृता	हृतम्
अस् (होना)	भूतः (बीत गया)	भूता	भूतम्
स्तु (स्तुति करना)	स्तुतः (स्तुति किया गया)	स्तुता	स्तुतम्
विद् (जानना)	विदितः (जाना गया)	विदिता	विदितम्
शास् (शासन करना)	शिष्टः (शासन किया गया)	शिष्टा	शिष्टम्
शी (सोना)	शयितः (सोया)	शयिता	शयितम्
हु (हवन करना)	हुतः (हवन किया गया)	हुता	हुतम्
भी (डरना)	भीतः (डरा)	भीता	भीतम्
नृत् (नाचना)	नर्तितः (नाचा गया)	नर्तिता	नर्तितम
नश् (नष्ट करना)	नष्टः (नष्ट हुआ)	नष्टा	नष्टम्
भ्रम् (घूमना)	भ्रान्तः (घूमा, भटका)	भ्रान्ता	भ्रान्तम्

क्त प्रत्यय	पुंल्लिंग		स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
युध् (युद्ध करना)	युद्धः	(लड़ा गया)	युद्धा	युद्धम्
विद् (होना)	वित्तः	(हुआ)	वित्ता	वित्तम्
तुद् (पीड़ा होना)	तुन्नः	(पीड़ित हुआ)	तुन्ना	तुन्नम्
सह् (सहना)	सोढः	(सहा गया)	सोढा	सोढम्
वह् (उठाना)	ऊढः	(उठाया गया)	ऊढा	ऊढम्
इष् (चाहना)	इष्टः	(चाहा गया)	इष्टा	इष्टम्
स्पृश् (छूना)	स्पृष्टः	(छुआ गया)	स्पृष्टा	स्पृष्टम्
विद् (प्राप्त करना)	विन्नः वित्तः	(पाया गया)	विन्ना, वित्ता	विन्नम्, वित्तम्
आप् (प्राप्त करना)	आप्तः	(पाया गया)	आप्ता	आप्तम्
रुध् (रोकना)	रुद्धः	(रोका गया)	रुद्धा	रुद्धम्
भुज् (भोगना)	भुक्तः	(खाया गया)	भुक्ता	भुक्तम्
युज् (जोड़ना)	युक्तः	(जोड़ा गया)	युक्ता	युक्तम्
ज्ञा (जानना)	ज्ञातः	(जाना गया)	ज्ञाता	ज्ञातम्
वृत् (होना)	वृत्तः	(हुआ)	वृत्ता	वृत्तम्
चुर् (चुराना)	चोरितः	(चुराया गया)	चोरिता	चोरितम्
कथ् (कहना)	कथितः	(कहा गया)	कथिता	कथितम्
स्वप् (सोना)	सुप्तः	(सोया)	सुप्ता	सुप्तम्
दिव् (चमकना)	द्यूतः, द्यूनः	(चमका)	द्यूता, द्यूना	द्यूतम्, द्यूनम्
ग्रह् (लेना)	गृहीतः	(पकड़ा गया)	गृहीताः	गृहीतम्
यज् (यज्ञ करना)	इष्टः	(यज्ञ किया गया)	इष्टा	इष्टम्
वच् (बोलना)	उक्तः	(कहा गया)	उक्ता	उक्तम्
वस् (रहना)	उषितः	(रहा गया)	उषिता	उषितम्
वद् (बोलना)	उदितः	(बोला गया)	उदिता	उदितम्
वप् (बोना)	उप्तः	(बोया गया)	उप्ता	उप्तम्
शृ (नष्ट हो जाना)	शीर्णः	(नष्ट हुआ)	शीर्णा	शीर्णम्
जृ (जीर्ण होना)	जीर्णः	(पुराना हुआ)	जीर्णा	जीर्णम्
कृ (बिखेरना)	कीर्णः	(बिखेरा गया)	कीर्णा	कीर्णम्
दृ (फाड़ना)	दीर्णः	(फाड़ा)	दीर्णा	दीर्णम्
भिद् (फोड़ना)	भिन्नः	(टूटा)	भिन्ना	भिन्नम्
छिद् (काटना)	छिन्नः	(कटा)	छिन्ना	छिन्नम्
सद् (बैठना)	सन्नः	(बैठा)	सन्ना	सन्नम्
विद्√सद् (दुखी होना)	विषण्णः	(दुखी हुआ)	विषण्णा	विषण्णम्
म्लै (उदास होना)	म्लानः	(उदास हुआ)	म्लाना	म्लानम्
ग्लै (मुरझाना)	ग्लानः	(मुरझाया)	ग्लाना	ग्लानम्
स्त्यै (जमना)	सत्यानः	(जमा हुआ)	स्त्याना	स्त्यानम्
ध्यै (ध्यान करना)	ध्यातः	(ध्याया हुआ)	ध्याता	ध्यातम्

क्त प्रत्यय	पुंल्लिंग		स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
गम् (जाना)	गतः	(गया)	गता	गतम्
नम् (झुकना)	नतः	(झुका)	नताः	नतम्
मन् (मानना)	मतः	(माना गया)	मताः	मतम्
जन् (पैदा करना)	जातः	(पैदा हुआ)	जाता	जातम्
लू (काटना)	लूनः	(काटा गया)	लूना	लूनम्
ली (छिपना)	लीनः	(छिपा हुआ)	लीना	लीनम्
ज्या (वयोहानि)	जीनः	(आयु में घटा)	जीना	जीनम्
भुज् (टेढ़ा होना)	भुग्नः	(टेढ़ा हुआ)	भुग्ना	भुग्नम्
हा (छोड़ना)	हीनः	(छोड़ा हुआ)	हीना	हीनम्
उत्+श्वि (सूजना)	उच्छूनः	(सूजा हुआ)	उच्छूना	उच्छूनम्
क्षि (नष्ट होना)	क्षीणः	(नष्ट हुआ)	क्षीणा	क्षीणम्
शुष् (सूखना)	शुष्कः	(सूखा हुआ)	शुष्का	शुष्कम्
पच् (पकाना)	पक्वः	(पका हुआ)	पक्वा	पक्वम्
धा (धारण करना)	हितः	(रखा हुआ)	हिता	हितम्
हन् (मारना)	हतः	(मारा गया)	हताः	हतम्
तन् (फैलाना)	ततः	(फैला हुआ)	तता	ततम्
अद् (खाना)	जग्धः	(खाया हुआ)	जग्धा	जग्धम्
या (जाना)	यातः	(गया)	याता	यातम्
स्था (ठहरना)	स्थितः	(ठहरा)	स्थिता	स्थितम्
घ्रा (सूँघना)	घ्रातः, घ्राणः	(सूँघा गया)	घ्राता, घ्राणा	घ्रातम्, घ्राणम्
स्निह् (स्नेह करना)	स्निग्धः	(चिकना)	स्निग्धा	स्निग्धम्
बन्ध् (बाँधना)	बद्धः	(बाँधा गया)	बद्धा	बद्धम्
बुध् (जानना)	बुद्धः	(जाना हुआ)	बुद्धा	बुद्धम्
मुच् (छोड़ना)	मुक्तः	(छोड़ा गया)	मुक्ता	मुक्तम्
सिच् (सींचना)	सिक्तः	(सींचा हुआ)	सिक्ता	सिक्तम्
त्रै (रक्षा करना)	त्रातः	(बचाया गया)	त्राता	त्रातम्
जि (जीतना)	जितः	(जीता गया)	जीता	जितम्
तृ (पार करना)	तीर्णः	(पार किया गया)	तीर्णा	तीर्णम्
पृ (पूरा करना)	पूर्णः	(पूरा किया गया)	पूर्णा	पूर्णम्
गै (गाना)	गीतः	(गाया गया)	गीता	गीतम्
क्षै (कृश होना)	क्षामः	(दुर्बल हुआ)	क्षामा	क्षामम्
कृष् (खेंचना)	कृष्टः	(खेंचा हुआ)	कृष्टा	कृष्टम्
शंक् (शंका करना)	शंकितः	(शंका किया गया)	शंकिता	शंकितम्
वृध् (बढ़ना)	वृद्धः	(बढ़ा हुआ)	वृद्धा	वृद्धम्
लिह् (चाटना)	लीढः	(चाटा हुआ)	लीढा	लीढम्
सिध् (पूरा करना)	सिद्धः	(पूरा हुआ)	सिद्धा	सिद्धम्

क्तवतु प्रत्यय

क्त प्रत्यय	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
दश् (काटना)	दष्टवान्	दष्टवती	दष्टवत्
दृश (देखना)	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
स्वप् (सोना)	सुप्तवान्	सुप्तवती	सुप्तवत्
यज् (पूजा करना)	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
त्यज् (छोड़ना)	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
मुञ्च् (छोड़ना)	मुक्तवान्	मुक्तवती	मुक्तवत्
जि (जीतना)	जितवान्	जितवती	जितवत्
पठ् (पढ़ना)	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
भू (होना)	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
पी (पीना)	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
दा (देना)	दत्तवान्	दत्तवती	दत्तवत्
कृ (करना)	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
क्री (खरीदना)	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
शक् (सकना)	शक्तवान्	शक्तवती	शक्तवत्
स्मृ (याद करना)	स्मृतवान्	स्मृतवती	स्मृतवत्
सेव् (सेवा करना)	सेवितवान्	सेवितवती	सेवितवत्
लभ् (प्राप्त करना)	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
आ+रभ्(आरम्भ करना)	आरब्धवान्	आरब्धवती	आरब्धवत्
रुच् (पसन्द करना)	रुचितवान्	रुचितवती	रुचितवत्
ईक्ष (देखना)	ईक्षितवान्	ईक्षितवती	ईक्षितवत्
याच (माँगना)	याचितवान	याचितवती	याचितवत्
नी (ले जाना)	नीतवान्	नीतवती	नीतवत्
हृ (हरना)	हृतवान्	हृतवती	हृतवत्
अस् (होना)	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
स्तु (स्तुति करना)	स्तुतवान्	स्तुतवती	स्तुतवत्
दुह् (दुहना)	दुग्धवान्	दुग्धवती	दुग्धवत्
विद् (जानना)	विदितवान्	विदितवती	विदितवत्
शास् (शासन करना)	शिष्टवान्	शिष्टवती	शिष्टवत्
शी (सोना)	शयितवान्	शयितवती	शयितवत्
हु (हवन करना)	हुतवान्	हुतवती	हुतवत्
भी (डरना)	भीतवान्	भीतवती	भीतवत्
नृत (नाचना)	नर्तितवान्	नर्तितवती	नर्तितवत्

क्तवतु प्रत्यय	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
नश् (नष्ट होना)	नष्टवान्	नष्टवती	नष्टवत्
भ्रम (घूमना)	भ्रान्तवान्	भ्रान्तवती	भ्रान्तवत्
युध् (युद्ध करना)	युद्धवान्	युद्धवती	युद्धवत्
विद् (होना)	वित्तवान्	वित्तवती	वित्तवत्
तुद् (पीड़ा देना)	तुन्नवान्	तुन्नवती	तुन्नवत्
सह (सहना)	सोढवान्	सोढवती	सोढवत्
इष् (चाहना)	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
स्पृश् (छूना)	स्पृष्टवान्	स्पृष्टवती	स्पृष्टवत्
आप् (प्राप्त करना)	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
रुध् (रोकना)	रुद्धवान्	रुद्धवती	रुद्धवत्
भुज् (भोगना)	भुक्तवान्	भुक्तवती	भुक्तवत्
युज् (जोड़ना)	युक्तवान्	युक्तवती	युक्तवत्
ज्ञा (जानना)	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
वृत् (होना)	वृत्तवान्	वृत्तवती	वृत्तवत्
चुर् (चुराना)	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्
कथ् (कहना)	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
दिव् (चमकना)	द्यूतवान्	द्यूतवती	द्यूतवत्
ग्रह (लेना)	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
प्रच्छ् (पूछना)	पृष्टवान्	पृष्टवती	पृष्टवत्
वच् (कहना)	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्
वस् (रहना)	उषितवान्	उषितवती	उषितवत्
वद् (बोलना)	उदितवान्	उदितवती	उदितवत्
वप् (बोना)	उप्तवान्	उप्तवती	उप्तवत्
श्रृ (नष्ट होना)	शीर्णवान्	शीर्णवती	शीर्णवत्
जृ (जीर्ण होना)	जीर्णवान्	जीर्णवती	जीर्णवत्
कृ (बिखेरना)	कीर्णवान्	कीर्णवती	कीर्णवत्
दृ (फाड़ना)	दीर्णवान्	दीर्णवती	दीर्णवत्
भिद् (फोड़ना)	भिन्नवान्	भिन्नवती	भिन्नवत्
छिद् (काटना)	छिन्नवान्	छिन्नवती	छिन्नवत्
मिद् (चिकना करना)	मिन्नवान्	मिन्नवती	मिन्नवत्
सद् (बैठना)	सन्नवान्	सन्नवती	सन्नवत्
वि√सद् (दुखी होना)	विषण्णवान्	विषण्णवती	विषण्णवत्
म्लै (उदास होना)	म्लानवान्	म्लानवती	म्लानवत्
ग्लै (मुरझाना)	ग्लानवान्	ग्लानवती	ग्लानवत्
स्त्यै (जमना)	स्त्यानवान्	स्त्यानवती	स्त्यानवत्
ध्यै (सोचना)	ध्यातवान्	ध्यातवती	ध्यातवत्

क्तवतु प्रत्यय	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
गै (गाना)	गीतवान्	गीतवती	गीतवत्
गम् (जाना)	गतवान्	गतवती	गतवत्
नम् (झुकना)	नतवान्	नतवती	नतवत्
मन् (मानना)	मतवान्	मतवती	मतवत्
जन् (पैदा करना)	जातवान्	जातवती	जातवत्
लू (काटना)	लूनवान्	लूनवती	लूनवत्
ली (छिपना)	लीनवान्	लीनवती	लीनवत्
ज्या (वयोहानि)	जीनवान्	जीनवती	जीनवत्
भुज् (टेढ़ा होना)	भग्नवान्	भुग्नवती	भुग्नवत्
हा (छोड़ना)	हीनवान्	हीनवती	हीनवत्
क्षि (क्षीण होना)	क्षीणवान्	क्षीणवती	क्षीणवत्
शुष् (सूखना)	शुष्कवान्	शुष्कवती	शुष्कवत्
धा (धारण करना)	हितवान्	हितवती	हितवत्
हन् (मारना)	हतवान्	हतवती	हतवत्
तन् (फैलाना)	ततवान्	ततवती	ततवत्
अद् (खाना)	जग्धवान्	जग्धवती	जग्धवत्
हस् (हँसना)	हसितवान्	हसितवती	हसितवत्
स्था (ठहरना)	स्थितवान्	स्थितवती	स्थितवत्
पत् (गिरना)	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
व्रज (जाना)	व्रजितवान्	व्रजितवती	व्रजितवत्
शप् (शाप देना)	शप्तवान्	शप्तवती	शप्तवत्
शुच् (शोक करना)	शुचितवान्	शुचितवती	शुचितवत्
सृ (सरकना)	सृतवान्	सृतवती	सृतवत्
भज् (सेवा करना)	भक्तवान्	भक्तवती	भक्तवत्
भण् (बोलना)	भणितवान्	भणितवती	भणितवत्
भष् (भोंकना)	भषितवान्	भषितवती	भषितवत्
यम् (रोकना)	यतवान्	यतवती	यतवत्
यत् (यत्न करना)	यत्नवान्	यत्नवती	यत्नवत्
रुह् (उगना)	रूढवान्	रूढवती	रूढवत्
ध्मा (फूँकना)	ध्मातवान्	ध्मातवती	ध्मातवत्
पूज् (पूजा करना)	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
चल् (चलना)	चलितवान्	चलितवती	चलितवत्
क्रीड् (खेलना)	क्रीडितवान्	क्रीडितवती	क्रीडितवत्
अर्ज् (संग्रह करना)	अर्जितवान्	अर्जितवती	अर्जितवत्
गुप् (छुपाना)	गुप्तवान्	गुप्तवती	गुप्तवत्
मुद् (प्रसन्न होना)	मुदितवान्	मुदितवती	मुदितवत्

क्तवतु प्रत्यय	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
ईक्ष् (देखना)	ईक्षितवान्	ईक्षितवती	ईक्षितवत्
शिक्ष् (सीखना)	शिक्षितवान्	शिक्षितवती	शिक्षितवत्
रम् (रमना)	रतवान्	रतवती	रतवत्
श्रु (सुनना)	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
सृज् (उत्पन्न करना)	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
ख्या (कहना)	ख्यातवान्	ख्यातवती	ख्यातवत्
घ्रा (सूँघना)	घ्राणवान्, घ्रातवान्	घ्राणवती, घ्रातवती	घ्राणवत्, घ्रातवत्

क्त और क्तवतु रूपों का प्रयोग :

क्त प्रत्ययान्त शब्द का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही होता है किन्तु कुछ धातुएँ ऐसी हैं जिनमें कर्तृवाच्य में भी क्त का प्रयोग होता है। जैसे—गत्यर्थ धातुएँ, अकर्मक धातुएँ तथा श्लिष्, शी, स्था, वस्, जन्, रुह् तथा जृ । जैसे—

हरिः गंगां गतः प्राप्तः वा।	हरि गंगा पर गया।
लक्ष्मीम् आश्लिष्टः हरिः।	हरि ने लक्ष्मी का आलिंगन किया।
विष्णुः वैकुण्ठम् अधिष्ठितः।	विष्णु वैकुण्ठ में रहे।
विष्णुः गुरुडम् आरूढः।	विष्णु गरुड़ पर चढ़े।
मानवः जराजीर्णः।	मानव बुढ़ापे से जीर्ण था।
संगात् संजातः कामः।	काम आसक्ति से उत्पन्न हुआ।

भूतकाल में सामान्य वाक्यों में क्त तथा क्तवतु का प्रयोग निम्न प्रकार से होगा :

1. रामः रावणं बाणेन हतवान्।	(क्तवतु)	कर्तृवाच्य
2. रामेण रावणः बाणेन हतः।	(क्त)	कर्मवाच्य
3. बालिका एकं सुन्दरं गीतं गीतवती।	(क्तवतु)	कर्तृवाच्य
4. बालिकया एकं सुन्दरं गीतं गीतम्।	(क्त)	कर्मवाच्य
5. तेन हसितम्, रुदितम्, प्रलपितम् च।	(क्त)	भाववाच्य

ऊपर के वाक्यों में सकर्मक धातुओं के साथ कर्मवाच्य में क्त प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग किया गया है। पाँचवें वाक्य में तीनों क्त प्रत्ययान्त रूप अकर्मक क्रियाओं के साथ भाववाच्य में हैं अतः क्तान्त रूप नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति एकवचन में ही है ।

5. तव्यत् तथा 6. अनीयर् प्रत्यय (Potential Verbal Suffixes)

तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्ययों की गणना कृत्य प्रत्ययों में की जाती है। कृत्य प्रत्ययों की संख्या सात है—तव्य, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप् तथा ण्यत्। इन सात प्रत्ययों का 'चाहिए' अर्थ में प्रयोग होता है। कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में होता है। पाणिनीय सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय जिस अर्थ में उक्त होते हैं उससे भिन्न अर्थ में भी होते हैं।

उदाहरण—(1) कर्त्तव्यम् (कृ + तव्यत्) = करना चाहिए। (2) गन्तव्यम् (गम् + तव्यत्) = जाना चाहिए। अतः चाहिए या योग्य अर्थ में कृत्य प्रत्यय होते हैं। कृत्य प्रत्ययों (तव्यत्, अनीयर्, ण्यत् आदि) के रूप तीनों लिंगों तथा सभी कारकों में चलते

हैं, यथा—प्रथमा विभिक्त, एकवचन, पुंल्लिंग में कर्त्तव्यः, गन्तव्यः, स्त्रीलिंग में कर्त्तव्या, गन्तव्या, तथा नपुंसकलिंग में कर्त्तव्यम्, गन्तव्यम्। पुंल्लिग (कर्त्तव्यः) में राम के समान रूप चलते हैं, स्त्रीलिंग (कर्त्तव्या) में लता के समान रूप चलते हैं एवं नपुंसकलिंग (कर्त्तव्यम्) में फल के समान रूप चलते हैं। कृत्य (तव्यत्, अनीयर्, ण्यत् आदि) प्रत्ययों का कर्त्ता तृतीया अथवा षष्ठी विभक्ति में होता है, यथा—

मया (मम वा) तत्कर्त्तव्यम्, करणीयम्, कार्यम् वा। (मुझे वह काम करना चाहिए।)

कृ धातु से अनीयर् प्रत्यय लगने से करणीयम् बनता है तथा ण्यत् प्रत्यय लगने से कार्यम् बनता है।

नियम—(1) धातु मात्र से तव्य, तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्यय होते हैं, यथा—गम् धातु से तव्य, तव्यत् प्रत्यय होने पर गन्तव्यः (पुं०) गन्तव्या (स्त्री०), गन्तव्यम् (नपुं०), गमनीयः (पुं०) गमनीया (स्त्री०) व गमनीयम् (नपुंसकलिंग) के रूप होते हैं।

(2) धातुओं से तव्य, तव्यत्, अनीयर् प्रत्यय होने पर धातु के स्वर (इ, उ, ऋ, लृ) को गुण (इ को ए, उ को ओ, ऋ को अर् तथा लृ को अल्) हो जाता है। जैसे—

नी + तव्यत् = नेतव्यः (पुं०)　　श्रू + तव्यत् = श्रोतव्यः (पुं०)
कृ + तव्यत् = कर्त्तव्यः (पुं०)　　हृ + तव्यत् = हर्तव्यः (पुं०)

(3) यदि धातु सेट् है तो धातु और तव्यत् प्रत्यय के बीच में इट् (इ) लग जाता है। जैसे—

एध् + तव्यत् = एध् + इ + तव्य = एधितव्यः
पठ् + तव्यत् = पठ् + इ + तव्य = पठितव्यः
भू + तव्यत् = भो + इ + तव्य = भवितव्यः

नीचे प्रमुख धातुओं से तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्यय दिए जा रहे हैं :

धातु		तव्यत्		अनीयर्	
जि	(जीतना)	जेतव्यः	(जि + तव्यत्)	जयनीयः	(जि + अनीयर्)
चि	(चुनना)	चेतव्य	(चि + तव्यत्)	चयनीयः	(चि + अनीयर्)
पत्	(गिरना)	पतितव्यः	(पत् + तव्यत्)	पतनीयः	(पत् + अनीयर्)
पच्	(पकाना)	पक्तव्यम्	(पच + तव्यत्)	पचनीयम्	(पच् + अनीयर्)
हस	(हँसना)	हसितव्यम्	(हस + तव्यत्)	हसनीयम्	(हस + अनीयर्)
रुद्	(रोना)	रोदितव्यम्	(रुद् + तव्यत्)	रोदनीयम्	(रुद् + अनीयर्)
शी	(सोना)	शयितव्यम्	(शी + तव्यत्)	शयनीयम्	(शी + अनीयर्)
चुर्	(चोरी करना)	चोरयितव्यः	(चुर् + तव्यत्)	चोरणीयः	(चुर् + अनीयर्)
क्री	(खरीदना)	क्रेतव्यः	(क्री + तव्यत्)	क्रयणीयः	(क्री + अनीयर्)
युज्	(जोड़ना)	योक्तव्यः	(युज् + तव्यत्)	योजनीयः	(युज् + अनीयर्)
पुष्	(पुष्ट करना)	पोष्टव्यः	(पुष् + तव्यत्)	पोषणीयः	(पुष् + अनीयर्)
लिह्	(चाटना)	लेढव्यः	(लिह् + तव्यत्)	लेहनीयः	(लिह् + अनीयर्)
दुह्	(दोहना)	दोग्धव्यः	(दुह् + तव्यत्)	दोहनीयः	(दुह् + अनीयर्)
दृश्	(देखना)	द्रष्टव्यः	(दृश् + तव्यत्)	दर्शनीयः	(दृश् + अनीयर्)

धातु	तव्यत्	अनीयर्
त्यज् (छोड़ना)	त्यक्तव्यम् (त्यज् + तव्यत्)	त्यजनीयः (त्यज् + अनीयर्)
एध् (बढ़ना)	एधितव्यम् (एध् + तव्यत्)	एधनीयम् (एध् + अनीयर्)
श्रु (सुनना)	श्रोतव्यः (श्रु + तव्यत्)	श्रवणीयः (श्रु + अनीयर्)
कृ (करना)	कर्त्तव्यः (कृ + तव्यत्)	करणीयः (कृ + अनीयर्)
हन् (मारना)	हन्तव्यः (हन् + तव्यत्)	हननीयः (हन् + अनीयर्)
जीव् (जीना)	जीवितव्यः (जीव् + तव्यत्)	जीवनीयः (जीव् + अनीयर्)
भू (होना)	भवितव्यम् (भू + तव्यत्)	भवनीयम् (भू + अनीयर्)
मन् (मानना)	मन्तव्यम् (मन् + तव्यत्)	मननीयम् (मन् + अनीयर्)
पा (पीना)	पातव्यम् (पा + तव्यत्)	पानीयम् (पा + अनीयर्)
दा (देना)	दातव्यम् (दा + तव्यत्)	दानीयम् (दा + अनीयर्)
स्था (ठहरना)	स्थातव्यम् (स्था + तव्यत्)	स्थानीयम् (स्था + अनीयर्)
स्ना (स्नान करना)	स्नातव्यम् (स्ना + तव्यत्)	स्नानीयम् (स्ना + अनीयर्)
घ्रा (सूँघना)	घ्रातव्यम् (घ्रा + तव्यत्)	घ्राणीयम् (घ्रा + अनीयर्)
रम् (रमण करना)	रन्तव्यम् (रम् + तव्यत्)	रमणीयम् (रम् + अनीयर्)
नम् (झुकना)	नन्तव्यम् (नम् + तव्यत्)	नमनीयम् (नम् + अनीयर्)
सह् (सहना)	सोढव्यम् (सह् + तव्यत्)	सहनीयम् (सह् + अनीयर्)
वह् (उठना)	वोढव्यम् (वह् + तव्यत्)	वहनीयम् (वह् + अनीयर्)
छिद् (काटना)	छेत्तव्यम् (छिद् + तव्यत्)	छेदनीयम् (छिद् + अनीयर्)
भिद् (तोड़ना)	भेत्तव्यम् (भिद् + तव्यत्)	भेदनीयम् (भिद् + अनीयर्)
रक्ष् (रक्षा करना)	रक्षितव्यम् (रक्ष् + तव्यत्)	रक्षणीयम् (रक्ष् + अनीयर्)
सेव् (सेवा करना)	सेवितव्यम् (सेव् + तव्यत्)	सेवनीयम् (सेव् + अनीयर्)
वद् (बोलना)	वदितव्यम् (वद् + तव्यत्)	वदनीयम् (वद् + अनीयर्)
वृत् (होना)	वर्तितव्यम् (वृत् + तव्यत्)	वर्तनीयम् (वृत् + अनीयर्)
नृत् (नाचना)	नर्तितव्यम् (नृत् + तव्यत्)	नर्तनीयम् (नृत् + अनीयर्)
नश् (नष्ट करना)	नशितव्यम्, नष्टव्यम् (नश् + तव्यत्)	नशनीयम् (नश् + अनीयर्)
जन् (पैदा करना)	जनितव्यम् (जन् + तव्यत्)	जननीयम् (जन् + अनीयर्)
इष् (इच्छा करना)	एष्टव्यम्, एषितव्यम् (इष् + तव्यत्)	एषणीयम् (इष + अनीयर्)
तन् (फैलना)	तनितव्यम् (तन् + तव्यत्)	तननीयम् (तन् + अनीयर्)
रुच् (पसन्द करना)	रोचितव्यम् (रुच + तव्यत्)	रोचनीयम् (रुच् + अनीयर्)
कथ् (कहना)	कथयितव्यम् (कथ् + तव्यत्)	कथनीयम् (कथ् + अनीयर्)
सिच् (सींचना)	सेक्तव्यम् (सिंच् + तव्यत्)	सेचनीयम् (सिच् + अनीयर्)
भुज् (खाना)	भोक्तव्यम् (भुज् + तव्यत्)	भोजनीयम् (भुज् + अनीयर्)

धातु		तव्यत्		अनीयर्	
लभ्	(प्राप्त करना)	लब्धव्यम्	(लभ् + तव्यत्)	लभनीयम्	(लभ् + अनीयर्)
याच्	(माँगना)	याचितव्यम्	(याच् + तव्यत्)	याचनीयम्	(याच् + अनीयर्)
दिव्	(चमकना)	देवितव्यम्	(दिव् + तव्यत्)	देवनीयम्	(दिव् + अनीयर्)
तुद्	(दुःख देना)	तोत्तव्यम्	(तुद् + तव्यत्)	तोदनीयम्	(तुद् + अनीयर्)
लिख्	(लिखना)	लेखितव्यः	(लिख् + तव्यत्)	लेखनीयः	(लिख् + अनीयर्)
स्मृ	(याद करना)	स्मर्तव्यः	(स्मृ + तव्यत्)	स्मरणीयः	(स्मृ + अनीयर्)
स्पृश्	(छूना)	स्प्रष्टव्यम्	(स्पृश् + तव्यत्)	स्पर्शनीयः	(स्पृश् + अनीयर्)
भक्ष्	(खाना)	भक्षयितव्यम्	(भक्ष् + तव्यत्)	भक्षणीयः	(भक्ष् + अनीयर्)
वप्	(बोना)	वप्तव्यः	(वप् + तव्यत्)	वपनीयः	(वप् + अनीयर्)
त्रा	(रक्षा करना)	त्रातव्यः	(त्रा + तव्यत्)	त्राणीयः	(त्रा + अनीयर्)
स्तु	(स्तुति करना)	स्तोतव्यः	(स्तु + तव्यत्)	स्तवनीयः	(स्तु + अनीयर्)
√वच्	(बोलना)	वक्तव्यम्	(वच् + तव्यत्)	वचनीयः	(वच् + अनीयर्)
यज्	(पूजा करना)	यष्टव्यः	(यज् + तव्यत्)	यजनीयः	(यज् + अनीयर्)
मुच्	(छोड़ना)	मोक्तव्यः	(मुच् + तव्यत्)	मोचनीयः	(मुच् + अनीयर्)
क्रम्	(चलना)	क्रन्तव्यः, क्रमितव्यः	(क्रम् + तव्यत्)	क्रमनीयः	(क्रम् + अनीयर्)
अधि+इ	(पढ़ना)	अध्येतव्यः	(अधि+इ+तव्यत्)	अध्ययनीयः	(अधि+इ+अनीयर्)
ईक्ष्	(देखना)	ईक्षितव्यः	(ईक्ष् + तव्यत्)	एक्षणीयः	(ईक्ष् + अनीयर्)
आप्	(प्राप्त करना)	आप्तव्यः	(आप् + तव्यत्)	आपनीयः	(आप् + अनीयर्)
धृ	(धारण करना)	धर्त्तव्यम्	(धृ + तव्यत्)	धरणीयम्	(धृ + अनीयर्)
बुध्	(समझाना)	बोद्धव्यम्	(बुध् + तव्यत्)	बोधनीयम्	(बुध् + अनीयर्)
भ्रम्	(घूमना)	भ्रमितव्यम्	(भ्रम + तव्यत्)	भ्रमणीयम्	(भ्रम् + अनीयर्)
शक्	(सकना)	शक्तव्यम्	(शक् + तव्यत्)	शकनीयम्	(शक् + अनीयर्)
ज्ञा	(जानना)	ज्ञातव्यम्	(ज्ञा + तव्यत्)	ज्ञानीयम्	(ज्ञा + अनीयर्)
भृ	(भरण-पोषण करना)	भर्तव्यम्	(भृ + तव्यत्)	भरणीयम्	(भृ + अनीयर्)
रच्	(रचना)	रचितव्यम्	(रच् + तव्यत्)	रचनीयम्	(रच् + अनीयर्)
दह्	(जलाना)	दग्धव्यम्	(दह् + तव्यत्)	दहनीयम्	(दह् + अनीयर्)
नी	(ले जाना)	नेतव्यम्	(नी + तव्यत्)	नयनीयम्	(नी + अनीयर्)
रुह्	(उगना, चढ़ना)	रोढव्यम्	(रुह् + तव्यत्)	रोहणीयम्	(रुह् + अनीयर्)
रुध्	(रोकना)	रोद्धव्यम्	(रुध् + तव्यत्)	रोधनीयम्	(रुध् + अनीयर्)
शिक्ष्	(सीखना)	शिक्षितव्यम्	(शिक्ष् + तव्यत्)	शिक्षिणीयम्	(शिक्ष् + अनीयर्)
स्वप्	(सोना)	स्वप्तव्यम्	(स्वप् + तव्यत्)	स्वपनीयम्	(स्वप् + अनीयर्)
हृ	(हरना)	हर्तव्यम्	(हृ + तव्यत्)	हरणीयम्	(हृ + अनीयर्)
अर्च्	(पूजा करना)	अर्चितव्यम्	(अर्च् + तव्यत्)	अर्चनीयम्	(अर्च + अनीयर्)
वस्	(रहना)	वस्तव्यम्	(वस् + तव्यत्)	वसनीयम्	(वस् + अनीयर्)

(ख) तद्धित प्रत्यय

(Nominal Derivatives)

(मतुप्, इन्, ठक्, त्व, तल्)

संज्ञा शब्दों से विशेषण, विशेषण से संज्ञा, अथवा अव्यय आदि बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं। ये प्रत्यय धातुओं को छोड़कर शेष सभी प्रकार के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण प्रत्यय आदि शब्दों से लगाकर विशेष, अर्थ को प्रकट करते हैं। अतः धातु से भिन्न शब्दों से जिन प्रत्ययों को लगाकर विशेष अर्थ प्रकट किया जाता है उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं तथा उन प्रत्ययों से बनने वाले शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं। वैसे तो तद्धित प्रत्ययों की संख्या पर्याप्त है किन्तु हमारे पाठ्यक्रम में मतुप्, इन्, ठक्, त्व, तल् प्रत्यय ही निर्धारित हैं :

'वाले' अर्थ को प्रकट करने के लिए जिन प्रत्ययों को लगाया जाता है उन्हें मतुवर्थक प्रत्यय कहते हैं। ऐसे प्रत्ययों में मतुप् का स्थान सर्वप्रथम आता है।

(i) मतुप् प्रत्यय

किसी एक वस्तु में दूसरी वस्तु का होना सूचित करने के लिए मतुप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। हिन्दी में 'वाला' अर्थ से इसको व्यक्त किया जाता है। मतुप् प्रत्यय जिस शब्द से लगता है, मतुप् लगने के बाद 'वह उस पदार्थ में है या उस पदार्थ का है' (तत् अस्य अस्मिन् वा अस्ति, इति) यह अर्थ हो जाता है।

मतुप् का मत् ही शेष रहता है । जिन शब्दों के अन्त में अ, आ से अतिरिक्त स्वर होता है, उन शब्दों के साथ मत् जैसे का तैसा जुड़ जाता है। जैसे—बुद्धि के अन्त में इ स्वर है जो अ, आ से भिन्न है अतः बुद्धि के साथ मतुप् लगने पर बुद्धिमत् रूप बन जाता है। किन्तु जिन शब्दों के अन्त में अ, आ स्वर होते हैं वहाँ मतुप् के म् को व् हो जाता है। (जैसे—ज्ञान + मतुप् = ज्ञानवत्।

मतुप् प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं तथा इनके रूप बलवत् के समान चलते हैं । अन्त में दीर्घ ई लगने पर इनके स्त्रीलिंङ्ग रूप बन जाते हैं जो नदी के समान चलते हैं (बुद्धिमती आदि)।

मतुप् प्रत्ययान्त शब्दों की रचना के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

अकारान्त :

गुण	+	मतुप्	=	गुणवत्	(गुणवान्, पुं०),	गुण वाला
फल	+	मतुप्	=	फलवत्	(फलवान्, पुं०),	फल वाला
धन	+	मतुप्	=	धनवत्	(धनवान्, पुं०),	धन वाला
ज्ञान	+	मतुप्	=	ज्ञानवत्	(ज्ञानवान्, पुं०),	ज्ञान वाला
बल	+	मतुप्	=	बलवत्	(बलवान्, पुं०),	बल वाला
रूप	+	मतुप्	=	रूपवत्	(रूपवान्, पुं०),	रूप वाला
वित्त	+	मतुप्	=	वित्तवत्	(वित्तवान्, पुं०),	धन वाला
रस	+	मतुप्	=	रसवत्	(रसवान्, पुं०),	रस वाला
गन्ध	+	मतुप्	=	गन्धवत्	(गन्धवान्, पुं०),	गन्ध वाला
स्पर्श	+	मतुप्	=	स्पर्शवत्	(स्पर्शवान्, पुं०),	स्पर्श वाला

नाद + मतुप् = नादवत् (नादवान्, पुं०), शब्द वाला
भाग्य + मतुप् = भाग्यवत् (भाग्यवान्, पुं०), भाग्य वाला
धूम्र + मतुप् = धूम्रवत् (धूम्रवान्, पुं०), लज्जा वाला

आकारान्त :

विद्या + मतुप् = विद्यावत् (विद्यावान्, पुं०), विद्या वाला
क्रिया + मतुप् = क्रियावत् (क्रियावान्, पुं०), क्रिया वाला
प्रज्ञा + मतुप् = प्रज्ञावत् (प्रज्ञावान्, पुं०), बुद्धि वाला
लज्जा + मतुप् = लज्जावत् (लज्जावान्, पुं०), लज्जा वाला

इकारान्त :

अग्नि + मतुप् = अग्निमत् (अग्निमान्, पुं०), अग्नि वाला
ध्वनि + मतुप् = ध्वनिमत् (ध्वनिमान्, पुं०), ध्वनि वाला
बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान्, पुं०), बुद्धि वाला
धृति + मतुप् = धृतिमत् (धृतिमान्, पुं०), धैर्य वाला
शक्ति + मतुप् = शक्तिमत् (शक्तिमान्, पुं०), शक्ति वाला

ईकारान्त :

श्री + मतुप् = श्रीमत् (श्रीमान्, पुं०), शोभा वाला
धी + मतुप् = धीमत् (धीमान्, पुं०), बुद्धि वाला
ह्री + मतुप् = ह्रीमत् (ह्रीमान्, पुं०), लज्जा वाला
नदी + मतुप् = नदीमत् (नदीमान्, पुं०), नदी वाला

अन्य शब्द :

मधु + मतुप् = मधुमत् (मधुमान्, पुं०), मधु वाला
वधू + मतुप् = वधूमत् (वधूमान्, पुं०), वधू वाला
गो + मतुप् = गोमत् (गोमान्, पुं०), गौ वाला
ऊर्मि + मतुप् = ऊर्मिमत् (ऊर्मिमान्, पुं०), तरंग वाला
यव + मतुप् = यवमत् (यवमान्, पुं०), जौ वाला
लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीवान्, पुं०), लक्ष्मी वाला
यशस् + मतुप् = यशस्वत् (यशस्वान्, पुं०), यश वाला
पयस् + मतुप् = पयस्वत् (पयस्वान्, पुं०), जल या दूध वाला
विद्युत् + मतुप् = विद्युत्वत् (विद्युत्वान्, पुं०), बिजली वाला

(*ii*) इन् प्रत्यय

यह प्रत्यय णिनि प्रत्यय का संक्षिप्त रूप है। 'णिनि' के ण् तथा अन्तिम् इ के लोप हो जाने पर इन् शेष रह जाता है । इसका प्रयोग मतुप् की तरह 'वाला' (अस्य, अस्मिन् वा अस्ति) के अर्थ में होता है। जैसे मन्त्र + इन् = मन्त्रिण् (मन्त्र में र् होने के कारण न् को ण् हो जाता है) = मन्त्री (मन्त्र या मन्त्रणा देने वाला)। इसी प्रकार ज्ञान + इन् = ज्ञानिन् = ज्ञानी (ज्ञान वाला), इत्यादि।

इन् प्रत्ययान्त उदाहरण

वर्ण + इन् = वर्णी (पुं०) वर्णिनी (स्त्री०) वर्णि (नपुं०)
दण्ड + इन् = दण्डी (पुं०) दण्डिनी (स्त्री०) दण्डि (नपुं०)

मन्त्र	+	इन्	=	मन्त्री	(पुं०)	मन्त्रिणी	(स्त्री०)	मन्त्रि	(नपुं०)
हस्त	+	इन्	=	हस्ती	(पुं०)	हस्तिनी	(स्त्री०)	हस्ति	(नपुं०)
गुण	+	इन्	=	गुणी	(पुं०)	गुणिनी	(स्त्री०)	गुणि	(नपुं०)
फल	+	इन्	=	फली	(पुं०)	फलिनी	(स्त्री०)	फलि	(नपुं०)
धन	+	इन्	=	धनी	(पुं०)	धनिनी	(स्त्री०)	धनि	(नपुं०)
प्राण	+	इन्	=	प्राणी	(पुं०)	प्राणिनी	(स्त्री०)	प्राणि	(नपुं०)
विकार	+	इन्	=	विकारी	(पुं०)	विकारिणी	(स्त्री०)	विकारि	(नपुं०)
व्यवहार	+	इन्	=	व्यवहारी	(पुं०)	व्यवहारिणी	(स्त्री०)	व्यवहारि	(नपुं०)

(*iii*) ठक् प्रत्यय

ठक् प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। ठक् का इक् शेष रह जाता है।

ठक् प्रत्ययान्त शब्द के उदाहरण—

मास	+	ठक्	(इक)	=	मासिक
वर्ष	+	ठक्	(इक)	=	वार्षिक
दिन	+	ठक्	(इक)	=	दैनिक
पक्ष	+	ठक्	(इक)	=	पाक्षिक
सप्ताह	+	ठक्	(इक)	=	साप्ताहिक
समाज	+	ठक्	(इक)	=	सामाजिक
धर्म	+	ठक्	(इक)	=	धार्मिक
इतिहास	+	ठक्	(इक)	=	ऐतिहासिक
साहित्य	+	ठक्	(इक)	=	साहित्यिक
संस्कृति	+	ठक्	(इक)	=	सांस्कृतिक
देह	+	ठक्	(इक)	=	दैहिक
शरीर	+	ठक्	(इक)	=	शारीरिक
भूमि	+	ठक्	(इक)	=	भौमिक
नीति	+	ठक्	(इक)	=	नैतिक
वृत्ति	+	ठक्	(इक)	=	वार्त्तिक
आत्मन्	+	ठक्	(इक)	=	आत्मिक
बुद्धि	+	ठक्	(इक)	=	बौद्धिक
विशेष	+	ठक्	(इक)	=	वैशेषिक
वेतन	+	ठक्	(इक)	=	वैतनिक
भाव	+	ठक्	(इक)	=	भाविक
अस्ति	+	ठक्	(इक)	=	आस्तिक
नास्ति	+	ठक्	(इक)	=	नास्तिक
लोक	+	ठक्	(इक)	=	लौकिक

परलोक	+	ठक्	(इक)	=	पारलौकिक
इह	+	ठक्	(इक)	=	ऐहिक
देह	+	ठक्	(इक)	=	दैहिक
मनस्	+	ठक्	(इक)	=	मानसिक
अध्यात्मन्	+	ठक्	(इक)	=	आध्यात्मिक
काया	+	ठक्	(इक)	=	कायिक
नौ	+	ठक्	(इक)	=	नाविक

(*iv*) त्व प्रत्यय

भाववाचक संज्ञा (नपुं०) बनाने के लिए त्व प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—

पृथु	+	त्व	=	पृथुत्वम् (पृथोः भावः)	गुरु	+	त्व	=	गुरुत्वम् (गुरोः भावः)
मृदु	+	त्व	=	मृदुत्वम् (मृदोः भावः)	गो	+	त्व	=	गोत्वम्
ब्राह्मण	+	त्व	=	ब्राह्मणत्वम्	क्षत्रिय	+	त्व	=	क्षत्रियत्वम्
लघु	+	त्व	=	लघुत्वम्	दीर्घ	+	त्व	=	दीर्घत्वम्
प्रसाद	+	त्व	=	प्रसादत्वम्	विषाद	+	त्व	=	विषादत्वम्
खेद	+	त्व	=	खेदत्वम्	शूद्र	+	त्व	=	शूद्रत्वम्
बन्धु	+	त्व	=	बन्धुत्वम्	पण्डित	+	त्व	=	पण्डितत्वम्
रस	+	त्व	=	रसत्वम्	प्रिय	+	त्व	=	प्रियत्वम्
अम्ल	+	त्व	=	अम्लत्वम्	मधुर	+	त्व	=	मधुरत्वम्
कटु	+	त्व	=	कटुत्वम्	कषाय	+	त्व	=	कषायत्वम्
देव	+	त्व	=	देवत्वम्	मानव	+	त्व	=	मानवत्वम्
राक्षस	+	त्व	=	राक्षसत्वम्	असुर	+	त्व	=	असुरत्वम्
पिशाच	+	त्व	=	पिशाचत्वम्	ईश्वर	+	त्व	=	ईश्वरत्वम्
दिव्य	+	त्व	=	दिव्यत्वम्	कातर	+	त्व	=	कातरत्वम्
भीरु	+	त्व	=	भीरुत्वम्	शूर	+	त्व	=	शूरत्वम्
रिपु	+	त्व	=	रिपुत्वम्	शत्रु	+	त्व	=	शत्रुत्वम्
मित्र	+	त्व	=	मित्रत्वम्	सुहृत्	+	त्व	=	सुहृत्त्वम्
पुरुष	+	त्व	=	पुरुषत्वम्	फल	+	त्व	=	फलत्वम्
दृढ	+	त्व	=	दृढत्वम्	स्त्री	+	त्व	=	स्त्रीत्वम्
नारी	+	त्व	=	नारीत्वम्	हास्य	+	त्व	=	हास्यत्वम्
चारु	+	त्व	=	चारुत्वम्	स्थूल	+	त्व	=	स्थूलत्वम्
पशु	+	त्व	=	पशुत्वम्	पटु	+	त्व	=	पटुत्वम्
महत्	+	त्व	=	महत्त्वम्					

(*v*) तल् प्रत्यय

भाववाचक संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग) बनाने के लिए तल् प्रत्यय भी लगाया जाता है। तल् के स्थान पर 'ता' हो जाता है। जैसे

शूद्र	+	तल्	=	शूद्रता	शत्रु	+	तल्	=	शत्रुता
बन्धु	+	तल्	=	बन्धुता	कटु	+	तल्	=	कटुता

मित्र	+	तल्	=	मित्रता	अम्ल	+	तल्	=	अम्लता
मधुर	+	तल्	=	मधुरता	प्रिय	+	तल्	=	प्रियता
स्निग्ध	+	तल्	=	स्निग्धता	विषण्ण	+	तल्	=	विषण्णता
हास्य	+	तल्	=	हास्यता	खिन्न	+	तल्	=	खिन्नता
प्रसन्न	+	तल्	=	प्रसन्नता	मुग्ध	+	तल्	=	मुग्धता
रुष्ट	+	तल्	=	रुष्टता	कठोर	+	तल्	=	कठोरता
मृदु	+	तल्	=	मृदुता	पीन	+	तल्	=	पीनता
शुष्क	+	तल्	=	शुष्कता	लघु	+	तल्	=	लघुता
गुरु	+	तल्	=	गुरुता	गो	+	तल्	=	गोता
पृथु	+	तल्	=	पृथुता	दृढ़	+	तल्	=	दृढ़ता
हास्य	+	तल्	=	हास्यता	क्रूर	+	तल्	=	क्रूरता
भीरु	+	तल्	=	भीरुता	सुन्दर	+	तल्	=	सुन्दरता
हीन	+	तल्	=	हीनता	सौम्य	+	तल्	=	सौम्यता
दुष्ट	+	तल्	=	दुष्टता	दिव्य	+	तल्	=	दिव्यता

तल् प्रत्यय ग्राम, जन, बन्धु, गज तथा सहाय शब्दों से समूह के अर्थ में भी किया जाता है । जैसे—

ग्रामाणां समूहः = ग्रामता   जनानां समूहः = जनता
बन्धूनां समूहः = बन्धुता   गजानां समूहः = गजता
सहायानां समूहः = सहायता

(ग) स्त्री प्रत्यय
(टाप्, ङीप्)

पुंल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग शब्दों में बदलने के लिए जो प्रत्यय लगाए जाते हैं उन्हें स्त्री-प्रत्यय कहते हैं। जैसे—टाप्, ङीप् आदि। टाप् का आ शेष रह जाता है तथा ङीप्, ङीष् का ई शेष रह जाता है।

(*i*) अजादि शब्दों से तथा अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में टाप् (आ) प्रत्यय होता है। जैसे—अज से अजा, अश्व से अश्वा इत्यादि।

(*ii*) ऋकारान्त तथा नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय लगता है। जैसे—कर्तृ से कर्त्री, कामिन् से कामिनी इत्यादि। वय (आयु) वाचक अकारान्त शब्दों से भी ङीप् प्रत्यय होता है। जैसे—कुमार से कुमारी आदि।

(*iii*) जातिवाची, अनियत जिनके उपधा में य न हो, अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् (ई) प्रत्यय होता है, जैसे ब्राह्मणी, मृगी, वृषली इत्यादि।

पुंल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग शब्दों की तालिका

टाप् प्रत्यय (आ) :

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमः	प्रथमा (प्रथम+टाप्)	कृपणः	कृपणा
मध्यमः	मध्यमा	निपुणः	निपुणा
शिष्यः	शिष्या	भद्रः	भद्रा
सुतः	सुता	क्षत्रियः	क्षत्रिया

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
आर्यः	आर्या	वृद्धः	वृद्धा
वत्सः	वत्सा	वैश्यः	वैश्या

ङीप् प्रत्यय (ई) :

गौरः	गौरी	पितामहः	पितामही
नर्तकः	नर्तकी	तरुणः	तरुणी
सुन्दरः	सुन्दरी	एकादशः	एकादशी

अक् → इका :

गायकः	गायिका	साधकः	साधिका
पाठकः	पाठिका	नायकः	नायिका
पाचकः	पाचिका	कारकः	कारिका
अध्यापकः	अध्यापिका		

ङीप् (ई) :

कर्तृ	कर्त्री	गरीयस्	गरीयसी
नेतृ	नेत्री	मानिन्	मानिनी
धीमत्	धीमती	हरिण	हरिणी
श्रीमत्	श्रीमती	विद्यार्थिन्	विद्यार्थिनी
धनवत्	धनवती		

अकारान्त जातिवाचक :

विडालः	विडाली	काकः	काकी
हंसः	हंसी	वायसः	वायसी
सिंहः	सिंही	मृगः	मृगी

शत्रन्त शब्द में ङीप् से पूर्व न जुड़ जाता है (भ्वादि, दिवादि, अदादि, तुदादि, चुरादि में)

गच्छत्	गच्छन्ती	नृत्यत्	नृत्यन्ती	
कथयत्	कथयन्ती	रुदत्	रुदन्ती	
इच्छत्	इच्छन्ती	ददत्	ददती	(जुहोत्यादि)

उकारान्त (गुणवाचक) में विकल्प से 'ई' जुड़ता है :

गुरुः	गुर्वी/ गुरुः	साधुः	साध्वी/साधुः
मृदुः	मृद्वी/मृदुः	पटुः	पट्वी/पटुः

आनुक् (आन) का आगम होकर ई प्रत्यय जुड़ता है :

इन्द्रः	इन्द्राणी	रुद्रः	रुद्राणी
मातुलः	मातुलानी	मनुष्यः	मानुषी
युवन्	युवती	सखि	सखी
मत्स्यः	मत्सी	राजन्	राज्ञी
पतिः	पत्नी	विद्वस्	विदुषी
श्वसुरः	श्वश्रूः	श्रेयस्	श्रेयसी

मिश्रित उदाहरण

1. निम्नलिखित पदों में से किन्हीं पांच पदों में अपेक्षानुसार प्रत्यय विभाग कीजिए :

1. श्रीमान् 2. धनिकः 3. अजा 4. किशोरी 5. कर्त्तव्यम् 6. पठनीयम् 7. गत्वा 8. हतः।

उत्तर—

1. श्रीमान् = श्री + मतुप्
2. धनिकः = धन + ठक्
3. अजा = अज + टाप्
4. किशोरी = किशोर + ङीप्
5. कर्त्तव्यम् = कृ + तव्यत्
6. पठनीयम् = पठ् + अनीयर्
7. गत्वा = गम् + क्त्वा
8. हतः = हन् + क्त

2. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच में प्रकृति-प्रत्यय-विभाग कीजिए :

1. मिलित्वा 2. सन्दीपितम् 3. हन्तव्यः 4. पृष्टा 5. भवती 6. शिखावान् 7. उज्ज्वला।

उत्तर—

1. मिलित्वा = मिल् + क्त्वा
2. सन्दीपितम् = सम् + दीप्+क्त
3. हन्तव्यः = हन् + तव्यत्
4. पृष्टा = प्रच्छ् + क्त+टाप्
5. भवती = भवत् + ङीप्
6. शिखावान् = शिखा + मतुप्
7. उज्ज्वला = उज्ज्वल+ टाप्

3. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच के प्रकृति-प्रत्यय के योग से बने रूप लिखिए—

1. रूप+मतुप् 2. प्रच्छ्+तुमुन् 3. कृ+अनीयर् 4. महत्+त्व 5. गम्+तव्य 6. दृश्+क्त्वा 7. दण्ड+इन् 8. जन्+तल्

उत्तर—

1. रूप + मतुप् = रूपवान्
2. प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्
3. कृ + अनीयर् = करणीयम् (नपुं०), करणीयः (पुं०)
4. महत् + त्व = महत्त्वम्
5. गम् + तव्य = गन्तव्यः (पुं०), गन्तव्यम् (नपुं०)
6. दृश + क्त्वा = दृष्ट्वा
7. दण्ड + इन् = दण्डिन्, दण्डी (प्रथमा, एकवचन)
8. जन् + तल् = जनता

अन्य उदाहरण

1. पातुम्, करणीयम्, शक्तिमान्, लघुता, श्रोतव्यम्, गृहीतम्, दात्री।

उत्तर— पा + तुमुन्, कृ + अनीयर्,
शक्ति + मतुप्, लघु + तल्,
श्रु + तव्यत्, ग्रह् + क्त,
दातृ + ङीप्

2. प्रकृति-प्रत्यय के योग से बने रूप लिखिए :

(क) सदाचार + मतुप्, पच् + तुमुन्, पा + क्त्वा, देह + इन्, मूल + ठक्, विद्वस् + ङीप्, मृदु + तल्

(ख) प्रकृति-प्रत्यय विभाग कीजिए—
उपविष्टः, स्थित्वा, पट्वी, गायिका, गुणी, द्रष्टव्यम्

उत्तर—प्रकृति-प्रत्यय के योग से बने रूप
सदाचारवान्, पक्तुम्, पीत्वा, देही, मौलिक, विदुषी, मृदुता,

प्रकृति-प्रत्यय विभाग
उपविश् + क्त, स्था + क्त्वा, पटु + ङीप्, गायक + टाप्, गुण + इन्, दृश् + तव्यत्

प्रकृति-प्रत्यय विभाग

उषित्वा = वस्+क्त्वा		हतः = हन् + क्त	
श्रीमान् = श्री+मतुप्		राज्ञी = राजन्+ङीप्	
पाचिका = पाचक+ टाप्		गन्तव्यम् = गम्+तव्यत्	

प्रकृति-प्रत्यय योग से बने रूप

शक्ति+मतुप् = शन्तिमान्	तरुण+ङीप् = तरुणी
हन्+तुमुन् = हन्तुम्	लघु+तल् = लघुता
प्राण+ इन् = प्राणी	चटक+टाप् = चटका
वेद+ ठक् = वैदिक	

अपेक्षानुसार प्रकृति-प्रत्यय विभाग

कोकिला = कोकिल+टाप्	राजन्+ङीप् = राज्ञी
पातुम् = पा+तुमुन्	श्रु+तव्यत् = श्रोतव्यम्
दण्डिन् = दण्ड+इन्	नीत्वा = नी+क्त्वा
कृ+क्त = कृतम्	अभिधातव्यम् = अभिधा+ तव्यत्
पच्+तुमुन् = पक्तुम्	नम्+क्त = नतम्
गम्+क्तवतु = गतवान्	वच्+क्त्वा = उक्त्वा
दृश्+क्तवतु = दृष्टवान्	शक्ति+मतुप् = शक्तिमान्
वार्षिकम् = वर्ष+ठक्	गम्+क्त्वा = गत्वा
गौरी = गौर+ङीप्	सम्पन्नः = सम्+पद्+क्त
दैनिकम् = दिन+ठक्	वि+हस्+ल्यप् = विहस्य
नी+तुमुन् = नेतुम्	वच्+क्तवतु = उक्तवान्
परिभ्रम्य = परि+भ्रम्+ल्यप्	लुभ्+क्त = लुब्धः

कथनीयः = कथ्+अनीयर् रूप+मतुप् = रूपवान्
प्रणम्य = प्रणम्+ल्यप् दृष्ट्वा = दृश्+क्त्वा
पा+तुमुन् = पातुम्

अभ्यास

1. निम्न शब्दों के स्त्रीलिंग रूप बनाकर लिखें :
   विद्वस्, मातुल्, ददत्, कथयत्, मनुष्यः, युवन्, पाचकः, वृद्धः, साधकः।
2. निम्न शब्दों के पुंल्लिंग रूप लिखें :
   साध्वी, श्रेयसी, राज्ञी, मातुलानी, अजा।
3. नीचे दिए गए शब्दों के सामने लिखे गए प्रत्ययों को जोड़कर बने हुए शब्द लिखिए :
   (क) त्यज्+ तुमुन्, वह्+क्त, लभ्+क्तवतु, मुच्+व्यत्, कृ+अनीयर्, मास+ठक् ।
   (ख) गम्+क्त्वा, पठ्+तव्यत्, हृ+तुमुन्, जि+अनीयर्, शी+अनीयर्।
   (ग) अधि+इ+क्त, पा+क्तवतु, हस्+क्त, वद्+क्त, श्रि+अनीयर्।
   (घ) धृ+क्त, लिख्+तव्य, नृत्+क्तवतु, दा+अनीयर्, स्वप्+क्त्वा, भृ+क्त।
   (ङ) गम्+अनीयर्, छिद्+क्त, गै+क्तवतु, नश्+तुमुन्, नश्+क्तवा।

□

तृतीय अध्याय

कारक तथा उपपद विभक्ति
[CASES]

कारक—जिन शब्दों का क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध होता है, उन्हें कारक कहते हैं (क्रियान्वयित्व कारकत्वम्) । क्रिया तथा द्रव्य का संयोग करने वाले शब्दों को कारक कहते हैं। जिन शब्दों का क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता, वे कारक नहीं कहलाते ।

कारक के भेद—कारक के छः प्रकार होते हैं :

(1) कर्त्ता (2) कर्म (3) करण (4) सम्प्रदान (5) अपादान (6) अधिकरण। सम्बन्ध की गणना कारकों में नहीं होती।

विभक्ति—संज्ञा शब्दों के क्रिया के साथ सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए जो प्रत्यय लगाया जाता है उसे कारक विभक्ति कहते हैं। सामान्यतः कर्त्ता कारक का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति, कर्म कारक का बोध कराने के लिए द्वितीया विभक्ति, करण कारक का बोध कराने के लिए तृतीया विभक्ति, सम्प्रदान कारक का बोध कराने के लिए चतुर्थी विभक्ति, अपादान कारक का बोध कराने के लिए पञ्चमी विभक्ति तथा अधिकरण कारक का बोध कराने के लिए सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

कारक तथा विभक्ति में अन्तर—कारक विभक्ति का पर्यायवाची शब्द नहीं है क्योंकि कर्त्तृवाच्य में तो कर्त्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है परन्तु कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में कर्त्ता कारक में तृतीया विभक्ति होती है। इसी प्रकार कर्त्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, किन्तु कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

षष्ठी विभक्ति—एक संज्ञा शब्द का दूसरे संज्ञा शब्द से सम्बन्ध बताने में षष्ठी विभक्ति होती है। प्रमुख रूप से ये चार सम्बन्ध हैं—

(क) स्व-स्वामिभाव सम्बन्ध, जैसे—साधु का धन (साधोः धनम्)।
(ख) जन्य-जनकभाव सम्बन्ध, जैसे—पिता का पुत्र (पितुः पुत्रः)।
(ग) अवयवावयवविभाव सम्बन्ध, जैसे—पशु का पैर (पशोः पादः)।
(घ) स्थान्यादेश भाव सम्बन्ध, जैसे—ब्रू के स्थान पर वच् (ब्रु वोः वचिः)।

सम्बोधन कारक—उपर्युक्त विभक्तियों के अतिरिक्त एक सम्बोधन कारक होता है जिसका अन्तर्भाव प्रथमा विभक्ति में कर लिया जाता है। सम्बोधन, एकवचन में प्रथमा विभक्ति के एकवचन के रूप में कहीं थोड़ा परिवर्तन हो जाता है, द्विवचन तथा बहुवचन के रूप पूर्णतया प्रथमा विभक्ति के समान चलते हैं।

उपपद विभक्ति—जो विभक्ति किसी पद विशेष (प्रायः अव्यय) के योग में आती है उसे उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे 'सह' के योग में तृतीया उपपद विभक्ति होती है।

कारक तथा उपपद विभक्ति—यदि कहीं कारक तथा उपपद विभक्ति दोनों भिन्न-भिन्न हों, तो वहाँ कारक विभिक्त को ही बलवान् मानकर उसका प्रयोग किया जाता है। जैसे 'नमस्करोति' क्रिया के कर्म में द्वितीय कारक विभक्ति का प्रयोग उचित है, भले ही नमः (नमस्करोति = नमः + करोति) के योग में चतुर्थी उपपद विभक्ति का नियम रहता है । उदाहरण—गुरुभ्यः नमः। गुरून नमस्करोमि। प्रथम वाक्य में नमः के योग में गुरुभ्यः में चतुर्थी उपपद विभक्ति का प्रयोग उचित है किन्तु द्वितीय वाक्य में नमस्करोमि क्रिया के साथ कर्म (गुरून) में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग उचित है।

प्रथमा विभक्ति

1. किसी शब्द का नियत अर्थ बताने में, लिंग का बोध कराने में, परिमाण का ज्ञान कराने में, वचन मात्र के निर्देश में प्रथमा विभक्ति होती है।

(क) प्रातिपदिक का अर्थ बताने में—कृष्णः (कृष्ण) श्रीः (लक्ष्मी), ज्ञानम् (ज्ञान) शब्दों में नियत अर्थ बताने के लिए प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(ख) लिंग का बोध कराने में—तटः (पुंल्लिंग), तटी (स्त्रीलिंग), तटम् (नपुंसकलिंग) शब्दों में प्रथमा विभक्ति है।

(ग) परिमाण मात्र में—द्रोणो व्रीहिः (द्रोण भर चावल)। यहाँ द्रोणः में प्रथमा विभक्ति है तथा यह व्रीहिः का विशेषण हो गया है।

(घ) वचन का ज्ञान कराने में—एकः (एकवचन), द्वौ (द्विवचन), बहवः (बहुवचन) शब्दों में प्रथमा विभक्ति है तथा विशिष्ट संख्या की सूचना भी मिलती है।

2. कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है, जैसे 'अहम् गृहं गच्छामि' वाक्य में गच्छामि क्रिया का कर्त्ता अहम् है।

अन्य उदाहरण :

संस्कृत वाक्य	हिन्दी वाक्य
मयूराः नृत्यन्ति।	मोर नाचते हैं।
छात्राः हसन्ति।	छात्र हँसते हैं।
रमा गायति।	रमा गाती है।
त्वं धावसि।	तुम दौड़ते हो।
कृष्णः वदति।	कृष्ण बोलता है।
ते श्रृण्वन्ति।	वे सुनते हैं।
कला जागर्ति।	कला जागती है।
कमला स्मरति।	कमला याद करती है।
सूदौ पचतः।	दो रसोइए पकाते हैं।
वयं क्रीडामः।	हम खेलते हैं।
पत्रं पतति।	पत्ता गिरता है।
देवदत्तः शेते।	देवदत्त सोता है।
प्रीतिः उपविशति।	प्रीति बैठती है।
मोहनः उत्तिष्ठति।	मोहन खड़ा होता है।

संस्कृत वाक्य	हिन्दी वाक्य
सः विस्मरति।	वह भूलता है।
छात्राः आयान्ति।	छात्र आते हैं।
गुरुमहोदयः लिखति।	गुरु जी लिखते हैं।
लता नमति।	लता झुकती है।
माता आह्वयति।	माता बुलाती है।
पिता ताडयति।	पिता मारता है।
स्वसा पश्यति।	बहिन देखती है।
भ्राता रोदिति।	भैया रोता है।
मेघः वर्षति।	मेघ बरसता है।

3. कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—'रामेण पत्रं लिख्यते' में 'पत्रम्' में कर्म होने पर भी कर्मवाच्य के कारण प्रथमा विभक्ति है।

(अन्य उदाहरण 'वाच्य-परिवर्तन' में देखिए।)

4. सम्बोधन में—हे बालिकाः ! अत्र आगच्छत। यहाँ 'बालिकाः' में प्रथमा विभक्ति है।

द्वितीया विभक्ति
(कर्मणि द्वितीया)

1. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में से कर्त्ता क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है उसे कर्म कहते हैं। उस पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है। यदि वाक्य कर्तृवाच्य में हो तो कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

गोपालः यवेषु गां बध्नाति।	गोपाल जौ के खेत में गाय को बाँधता है।
भक्तः हरिं भजति।	भक्त हरि को भजता है।
अहं गुरुं प्रणमामि।	मैं गुरु जी को प्रणाम करता हूँ।
राजा शत्रुम् अजयत्।	राजा ने शत्रु को जीता।
माता कथां श्रृणोति।	माता कथा सुनती है।
हरिः पुस्तकं पठति।	हरि पुस्तक पढ़ता है।
मृगयुः मृगं हन्ति।	शिकारी मृग को मारता है।
भक्तः ईश्वरं स्मरति।	भक्त ईश्वर को याद करता है।
कुम्भकारः घटं करोति।	कुम्हार घड़ा बनाता है।
प्रभा दुग्धं पिबति।	प्रभा दूध पीती है।
प्रजाः राजानं सेवन्ते।	प्रजाएँ राजा की सेवा करती हैं।
अहं पितृचरणौ स्पृशामि।	मैं पिता के चरण छूता हूँ।
भगवान् सृष्टिं रचयति।	भगवान् संसार की रचना करता है।
पुरोहितः राजानम् उपदिशति।	पुरोहित राजा को उपदेश करता है।
छात्राः पुस्तकानि आनयन्ति।	छात्र पुस्तक लाते हैं।
बालिका फलं गृह्णाति।	बालिका फल लेती है।
वयं पशून् गणयामः।	हम पशुओं को गिनते हैं।

संस्कृत वाक्य	हिन्दी वाक्य
त्वं गां क्रीणसि।	तुम गाय खरीदते हो।
सः भगिनीं ताडयति।	वह बहिन को सताता है।
भवान् जम्बूफलानि भक्षयतु।	आप जामुन खाइए।
स्व नाम कथय।	अपना नाम कहो।
सः पारितोषिकं ददाति।	वह पुरस्कार देता है।
पितामही पत्रं लिखति।	दादी पत्र लिखती है।
सः दण्डं धारयति।	वह दण्ड को धारण करता है।
अहं सुखम् इच्छामि।	मैं सुख चाहता हूँ।
दुर्जनः सज्जनम् अपकरोति।	दुर्जन सज्जन की बुराई करता है।
काकः कोकिलम् अनुकरोति।	कौआ कोयल की नकल करता है।
सः वृक्ष पातयति।	वह वृक्ष को गिराता है।
स्वामी धनं वितरति।	स्वामी धन को बाँटता है।
आत्मना आत्मानम् उद्धरेत्।	आत्मा के द्वारा आत्मा का उद्धार करना चाहिए।
कृषकाः बीजान् विकिरन्ति।	किसान बीज डालते हैं।
वटुकः व्याकरणम् अधीते।	वटुक व्याकरण का अध्ययन करता है।
शिष्यः शास्त्रं जानाति।	शिष्य शास्त्र को जानता है।
माता वस्त्राणि सीव्यति।	माता वस्त्र सीती है।
वटु अन्नं भक्षयति।	वटु अन्न खाता है।

2. द्विकर्मक क्रिया में—वाक्य में मुख्य कर्म के साथ-साथ कहीं पर गौण या अकथित कर्म होता है। गौण या अकथित कर्म में भी द्वितीय विभक्ति होती है। गौण कर्म निम्न धातुओं में होते हैं—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ, मुष, नी, हृ, कृष्, वह्।

सः गाम् दोग्धि पयः।	वह गाय से दूध दोहता है।
सः बलिं याचते वसुधाम्।	वह बलि से पृथ्वी माँगता है।
सः तण्डुलान् ओदनं पचति।	वह चावलों से भात पकाता है।
सः गर्गान् शतं दण्डयति।	वह गर्गों पर सौ रुपए जुर्माना करता है।
सः गां व्रजमवरुणद्धि।	वह ब्रज में गाय को रोकता है।
सः वृक्षमवचिनोति फलानि।	वह पेड़ से फल इकट्ठा करता है।
गुरुः शिष्यं धर्म शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश करता है।
सः देवदत्त शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
सः माणवकं धर्म ब्रूते।	वह बालक से धर्म करता है।
सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।	वह बालक से मार्ग पूछता है।
सः सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	वह क्षीर सागर से अमृत मथता है।
सः देवदत्तं शतं मुष्णाति।	वह देवदत्त से सौ रुपए चुराता है।
सः ग्रामम् अजां नयति।	वह गाँव में बकरी को ले जाता है।
चौरः कृपणं धनं हरति।	चोर कंजूस का धन चुराता है।

नरेन्द्रः ग्रामम् अजां कर्षति। नरेन्द्र गाँव में बकरी को खेंचता है।
सः ग्रामं भारं वहति। वह गाँव में बोझा ले जाता है।

3. गत्यर्थक धातुएँ—गत्यर्थक धातुओं के साथ द्वितीया विभक्ति होती है (चाहे शारीरिक कर्म हो, मानसिक कर्म हो या अन्य प्रकार की गति हो)।

सः गृहम् अगच्छत्। वह घर गया।
सः परं विषादम् अगच्छत्। वह परम विषाद को प्राप्त हुआ।
पश्चाद् उमाख्यां सुमुखी जगाम। बाद में वह उमा नाम से प्रसिद्ध हुई।

4. अधि उपसर्ग पूर्वक शी, स्था तथा आस् धातुओं के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है।

अधिशेते हरिः वैकुण्ठम्। हरि वैकुण्ठ में शयन करते हैं।
सिंहासनं भूपतिरध्यतिष्ठत्। राजा सिंहासन पर बैठा।
पुरोहितः आसनमध्यास्ते। पुरोहित आसन पर बैठता है।

उपपद विभक्ति

5. कालवाचक तथा मार्गवाचक शब्द, यदि उनके बीच में किसी प्रकार की रुकावट न हो अर्थात् निरन्तरता का बोध हो, कर्म के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

न ववर्ष वर्षाणि द्वादश देवः इन्द्र अर्थात् बादल लगातार बारह साल तक नहीं बरसा।
मासं गुडधानाः सन्ति गुड़ और धान लगातार एक मास के लिए हैं।
क्रोशं कुटिला नदी कोस तक नदी लगातार टेढ़ी है।

6. अकर्मक धातुओं के योग में देश, काल, भाव और गमन के योग्य मार्ग की कर्म संज्ञा होती है। जैसे—

सः कुरून् स्वपिति। वह कुरुदेश में सोता है।
सः मासम् आस्ते। वह महीने भर रहता है।
विद्यालयः क्रोशम् आस्ते। विद्यालय कोस भर है।

7. अभि तथा नि उपसर्ग पूर्वक विश् धातु के आधार में कर्म कारक होता है। जैसे—

सः सन्मार्गम् अभिनिविशते। वह सन्मार्ग पर आता है।

8. उप, अनु, अधि, आ उपसर्ग पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। जैसे—

विश्वनाथः काशीम् उपवसति, अनुवसति, अधिवसति,आवसति वा।
विश्वनाथ काशी में रहते हैं।
हरिः वैकुण्ठम् उपवसति,अनुवसति, अधिवसति, आवसति वा
हरि वैकुण्ठ में निवास करते हैं।
विशेष—उपवास अर्थ में उप √वस् की कर्म संज्ञा नहीं होती। जैसे—
सः वने उपवसति। वह वन में उपवास करता है।

9. उभयतः (दोनों तरफ), सर्वतः (सब तरफ), धिक् (धिक्कार), उपर्युपरि (ऊपर), अधोऽधः (नीचे), अध्यधि (ऊपर-ऊपर), अभितः (दोनों तरफ), परितः (चारों

तरफ), समया (पास), निकषा (पास), हा, प्रति, अन्तरा, अन्तरेण के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

कृष्णम् उभयतः गोपाः सन्ति।	कृष्ण के दोनों तरफ ग्वाले हैं।
उद्यानम् सर्वतः जलमेव दृश्यते।	बाग के सब तरफ जल-ही-जल दिखाई देता है।
धिक् जाल्मान्।	दुष्टों को धिक्कार।
उपर्युपरि लोकं सः हरिः।	वह हरि संसार के ऊपर है।
अध्यधिः लोकं सः।	वह संसार के ऊपर-ऊपर है।
अधोऽधः लोकं हरिः।	हरि संसार के नीचे है।
प्रयागम् अभितः नद्यौ स्त।	प्रयाग के दोनों तरफ नदियाँ हैं।
नगरं परितो नदी वहति।	गाँव के चारों तरफ नदी बहती है।
ग्रामं समया नदी।	गाँव के पास नदी है।
निकषा लंकां समुद्रः अस्ति।	लंका के पास समुद्र है।
हा नास्तिकम्।	नास्तिक पर अफसोस।
अहं नगरगमनं प्रति उत्सुकोऽस्मि।	मैं नगर जाने के लिए उत्सुक हूँ।
अन्तरा त्वां मां च हरिः।	तुम्हारे और मेरे बीच हरि है।
अन्तरेण हरिं न सुखम्।	हरि के बिना सुख नहीं।

10. कर्म प्रवचनीय (अनु, अति, अभि, उप, परि) के योग में द्वितीया विभक्ति आती है। जैसे—

जपम् अनु प्रावर्षत् ।	जप के बाद वर्षा हुई।
अनु हरिं देवाः ।	देवता हरि से हीन हैं।
अति देवान् कृष्णः।	कृष्ण देवों से बढ़कर है।
भक्तो हरिम् अभि।	भक्त हरि के समीप है।
उप हरिं सुराः ।	देवता हरि से हीन हैं।
वृक्षं वृक्षं प्रति ।	प्रत्येक वृक्ष पर।
दीनम् प्रति दयां कुरु ।	दीन के प्रति दया कर।
लक्ष्मीः हरि प्रति, परि अनु वा।	लक्ष्मी हरि का अंश है।

11. दक्षिणेन तथा उत्तरेण आदि एनप् प्रत्ययान्त शब्दों के साथ द्वितीया व षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

मम आगार धनपतिगृहं (धनपतिगृहस्य वा) उत्तरेण अस्ति।
मेरा घर धनपति के घर के उत्तर में है।
मम आगारं धनपतिगृहं (धनपतिगृहस्य वा) दक्षिणेन अस्ति।
मेरा घर धनपति के घर के दक्षिण में है।

12. पृथक्, विना और नाना के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती हैं। जैसे—

परिश्रमं विना कुतो विद्या?
परिश्रम के बिना विद्या कहाँ?
परिश्रमेण विना कुतौ विद्या? परिश्रमाद् विना कुतो विद्या? भी सही हैं।

पृथक् रामेण रामं रामात् वा नास्ति कल्याणम् ।
राम से पृथक् भला नहीं है।

तृतीया विभक्ति
(करणे तृतीया)

क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त उपकारक हो वह करण कारक होता है अर्थात् जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूर्ण करता है उसे करण कारक कहते हैं। यथा—**स लेखन्या** पत्रं लिखति। यहाँ वह कलम की सहायता से पत्र-लेखन का कार्य पूरा करता है, अतः लेखनी करण कारक हुआ।

1. कर्तृवाच्य के करण कारक में तथा कर्मवाच्य के कर्त्ता कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

कर्तृवाच्य—

रामः बालीं **वाणेन** हतवान्।	राम ने बाली को बाण से मारा।

कर्मवाच्य—

रामेण बाली वाणेन हतः।	राम द्वारा बाली बाण से मारा गया।
वीरः शस्त्रेण रिपु हन्ति।	वीर शस्त्र से शत्रु को मारता है।

2. शपथबोधक शब्दों के योग में जिस नाम से शपथ ली जाती है, वह तथा गत्यर्थक धातुओं के योग में वाहन (साधन) करण कारक होता है तथा करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

अहं जीवितेन शपामि।	मैं प्राणों की शपथ लेता हूँ।
राजा **रथेन** गच्छति	राजा रथ से जाता है।

3. समानता या सादृश्य वाचक शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः त्यागे **धनदेन** समः ।	वह त्याग में कुबेर के समान है।
सः वीर्ये **विष्णुना** सदृशः।	वह वीरता में विष्णु के समान है।
लवस्य मुखं सीतायाः **मुखचन्द्रेण** संवदति ।	लव का मुख सीता के मुखचन्द्र से मिलता है।
सः **स्वरेण** रामभद्रम् अनुहरति।	वह स्वर में राम से मिलता है।

4. वाहन, धारण के अर्थ की द्योतक धातुओं में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः श्वानं **स्कन्धेन** बहति।	वह कुत्ते को कन्धे पर उठाता है।
सः आज्ञां शिरसा धारयति।	वह आज्ञा को सिर पर उठाता है।
भर्तुः आज्ञां मूर्ध्ना आदाय।	पति की आज्ञा सिर पर धारण कर।

उपपद विभक्ति

5. अलम् के योग में तथा अपि, किम्, कार्यम्, प्रयोजनम्, अर्थ, गुण, हीन इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

अलं विषादेन; अलम् अतिविस्तरेण; अलं क्रोधेन
दुःख मत करो, बहुत विस्तार मत करो, क्रोध मत करो।
ईश्वराणाम् **तृणेन** अपि कार्यं भवति ।
धनिकों का तिनके से भी काम हो जाता है।

किम् अति श्रमेण ?	अत्यधिक श्रम से क्या लाभ ?
तव ज्ञानेन प्रयोजनं नास्ति।	तुम्हारा ज्ञान से कोई प्रयोजन नहीं है।
कोऽर्थः मूर्खेण पुत्रेण।	मूर्ख पुत्र से क्या लाभ ?
धर्मेण हीनः पशुभिः समानः।	धर्म से हीन पशु के समान हैं।
धनेन किं यो न ददाति।	उसके धन से क्या लाभ जो दान नहीं करता।

6. फल प्राप्त होने पर कालवाची तथा मार्गवाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

द्वादशभिः वर्षैः व्याकरणं श्रूयते।	बारह वर्षों में व्याकरण पढ़ा जाता है।
सः सप्तभिः दिनैः नीरोगः जातः।	वह सात दिनों में नीरोग हुआ।

7. सह, साकम्, सार्धम्, समम् के साथ अप्रधान में भी तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

नाहं मूर्खेण सह गच्छामि।	मैं मूर्ख के साथ नहीं जाता।
त्वं वानरेण साकं धावसि ।	तू बन्दर के साथ दौड़ता है।
सः पित्रा सार्धं प्रतिनिवृत्तः।	वह पिता के साथ लौट गया।
सा केन साकं विद्यालयं गता ?	वह किसके साथ विद्यालय गई ?

8. जिस अंग से शरीर का विकार प्रसिद्ध हो उस अंगवाचक पद के योग में तृतीय विभक्ति होती है। जैसे–

अक्ष्णा काणः ।	आँख से काना।
कर्णाभ्यां वधिरः ।	कानों से बहरा।
पादेन खञ्जः ।	पाँव से लँगड़ा।
पृष्ठेन कुब्जः ।	पीठ से कुबड़ा।

9. जिस लक्षण के द्वारा कोई वस्तु या मनुष्य लक्षित हो उस लक्षणबोधक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

जटाभिः तापसः ।	जटाओं से तपस्वी।

10. पृथक्, विना, नाना के योग में द्वितीया, तृतीया व पंचमी विभक्ति होती है। जैसे–

सा रामेण विना जीवितुं न शक्नोति ।

वह राम के बिना जीवित नहीं रह सकती।

चतुर्थी विभक्ति
(सम्प्रदाने चतुर्थी)

1. जिसको उद्दिष्ट करके कोई वस्तु दी जाए उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–

विप्राय गां ददाति।	ब्राह्मण को गाय देता है।

यहाँ ब्राह्मण के लिए गाय प्रदान करता है अतः ब्राह्मण सम्प्रदान कारक है तथा इसमें विप्र (ब्राह्मण) के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

2. क्रिया के द्वारा जो वस्तु अभिप्रेत हो उसकी भी सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे–

पत्ये शते। वह पति को अनुकूल करने के लिए सोती है।

3. रुच् धातु के साथ प्रसन्न होने वालों में सम्प्रदान कारक होता है । जैसे—

हरये रोचते भक्तिः। हरि को भक्ति अच्छी लगती है।

तुभ्यं मोदकः रोचते। तुझे लड्डू अच्छा लगता है।

4. धृ धातु (ऋणी होना, उधार लेना अर्थ में) के प्रयोग में ऋण देने वाले के योग में सम्प्रदान कारक होता है। जैसे—

त्वं मह्यं शतं धारयसि। तुम्हें मेरे सौ रुपए देने हैं।

5. ण्यन्त 'स्पृह्' के योग में जो वस्तु चाही जाए उसमें भी चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति। वह पुष्पों की चाह करता है।

सर्वे पुरस्काराय स्पृहयन्ति। सब पुरस्कार की इच्छा करते हैं।

6. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष् तथा असूय धातुओं के योग में जिन पर क्रोध, ईर्ष्या आदि की जाये उनमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

सः जामात्रे क्रुध्यति। वह दामाद पर क्रोध करता है।

7. प्रति तथा आ पूर्वक श्रु धातु (प्रतिज्ञा अर्थ में) जिनसे प्रतिज्ञा की जाती है उनके योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

विप्राय गां प्रति श्रृणोति। वह ब्राह्मण से गाय की प्रतिज्ञा करता है।

8. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

नमो राष्ट्रदेवाय। राष्ट्र देव को नमन हो।

गुरवे नमः। गुरु जी को प्रणाम।

प्रजाभ्यः स्वस्ति। प्रजाओं का कल्याण हो।

पितृभ्यः स्वधा। पितरों को हवि का दान।

इन्द्राय वषट्। इन्द्र के लिए हवि का दान।

9. पर्याप्ति अर्थ में अलम् व तदर्थ वाचक समर्थः, शक्तः, प्रभुः के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे—

अलं मल्लो मल्लाय। यह पहलवान उस पहलवान के लिए काफी है।

पंचमी विभक्ति

(अपादाने पंचमी)

1. पृथक् होने के योग में स्थिर (ध्रुव) पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है तथा अपादान कारक में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

सः ग्रामाद् आयाति। वह गाँव से आता है।

वृक्षात् पत्रं पतति। वृक्ष से पत्ता गिरता है।

सः धावतोऽश्वात् पतति। वह दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

2. जुगुप्सा, विराम तथा प्रमादवाची धातुओं के योग में पंचमी विभक्ति होती है ।

जैसे—

सः पापात् जुगुप्सते।	वह पाप से घृणा करता है।
सः धर्मात् प्रमाद्यति।	वह धर्म का प्रमाद करता है।
सः अध्ययनात् विरमति।	वह पढ़ने से रुकता है।

धीराः न्याय्यात् पथः पदं न प्रविचलन्ति ।
धीर न्यायमार्ग से पद भर विचलित नहीं होते।

3. भय तथा रक्षा अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे भय या रक्षा हो उनके योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

सज्जनः दुष्टात् बिभेति।	सज्जन दुष्ट से डरता है।
सः सिंहात् बिभेति ।	वह शेर से डरता है।
खलेभ्यः राजा त्रायते।	राजा दुष्टों से रक्षा करता है।

4. नियमपूर्वक विद्या ग्रहण करने में पढ़ाने वाले के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

सः अध्यापकात् संस्कृतं पठति।	वह अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है।

5. जन् तथा प्र √भू धातुओं के कर्त्ता के हेतु में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे-

कामात् क्रोधः अभिजायते।	काम से क्रोध पैदा होता है।
गंगा हिमालयात् प्रभवति।	गंगा हिमालय से उत्पन्न होती है।

6. दूर करना या हटाना अर्थ वाली धातुओं के योग में अत्यन्त इष्ट कारक में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

यवेभ्यो गां वारयति।	जौ के खेत से गाय को हटाता है।

7. अन्य (भिन्न, अतिरिक्त), आरात् (समीप या दूर), इतर (दूसरा), ऋते (बिना), प्राक्, प्रत्यक् आदि अन्य दिशा वाची शब्द तथा बहिः, अनन्तर, परं, ऊर्ध्वन् आदि के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

कृष्णात् अन्यः, भिन्नः, अतिरिक्तः, इतरः।	कृष्ण से भिन्न।
वनात् आरात्।	वन के समीप।
ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः।	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं।
ग्रामात् पूर्वः उत्तरो वा।	गाँव के पूर्व या उत्तर में।
प्राक् प्रत्यक् वा ग्रामात्।	गाँव के पूर्व या पश्चिम में।
दक्षिणहि ग्रामात्।	गाँव के दक्षिण में।
ग्रामाद् बहिः।	गाँव से बाहर।
सः शैशवात् प्रभृति चतुरः।	वह बचपन से ही चतुर है।
भोजनाद् अनन्तरम्।	भोजन के बाद।
अस्मात् परम्।	इसके बाद।
मुहूर्ताद् ऊर्ध्वम्।	क्षण भर के बाद।

8. तरप्, ईयसुन् तुलनात्मक प्रत्ययान्त शब्दों के योग में जिनसे तुलना की जाए उन शब्दों में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

जननी और जन्म-भूमि स्वर्ग से भी महान् है।

9. दूर और अन्तिक शब्दों में द्वितीया, तृतीया व पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—दूरम् (द्वितीया), दूरेण (तृतीया), दूरात् (पंचमी)—ग्रामस्य दूरं, दूरेण, दूरात् वा।

10. प्रतिनिधि व प्रतिदान (बदलना) के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।	प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि हैं।
तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्।	वह तिलों से उड़द बदलता है।

षष्ठी विभक्ति

1. जहाँ अन्य विभक्तियों के प्रयोग का विधान नहीं है उन शेष सम्बन्धों को बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। ये सम्बन्ध स्व-स्वामी, जन्य और कार्य-कारण के रूप में हो सकते हैं। जैसे—

अयं राज्ञः पुरुषोऽस्ति।	यह राजा का पुरुष है। (सेवक-स्वामी सम्बन्ध)
इयं **बालकस्य** माता।	यह बालक की माता है। (जन्य-जनक सम्बन्ध)
अयं **सुवर्णस्य** कटकोऽस्ति।	यह सोने का कड़ा है। (कारण-कार्य सम्बन्ध)
पितुश्चरणयोर्नमति।	पिता के चरणों में झुकता है। (अवयव-अवयवि-भाव सम्बन्ध)

2. (**कर्तृकर्मणो** कृति, 2.3.65)—(कृति) कृदन्त क्रिया का प्रयोग होने पर उस क्रिया के कर्त्ता अथवा कर्म में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

रघुवंशम् **कालिदासस्य** कृतिः अस्ति। रघुवंश कालिदास की कृति है।

इस वाक्य में √कृ धातु से ति (क्तिन्) प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा 'कृति' बनाई गई है। यद्यपि कालिदास करने वाला (कर्त्ता) है किन्तु 'कृतिः' शब्द के साथ होने पर षष्ठी विभक्ति होगी। इसी प्रकार 'रचना' या 'सृष्टि' शब्द भी कृदन्त भाववाचक संज्ञा है। इसके साथ भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होगा।

वेदव्यासः **वेदानाम्** अध्येता आसीत्। वेदव्यास वेदों को पढ़ने वाला था।

इसमें भी अधि √इ (पढ़ना) क्रिया से तृच् (कृत्) प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द किया गया है (अध्येता = पढ़ने वाला) । इसका कर्म 'वेद' है। उसमें षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

मम इदं कर्त्तव्यमस्ति। **देवस्य** गीतं मनोज्ञं अस्ति। **बालकानां** रोदनं श्रुत्वा माता सचिन्ता भवति। ऋषयो **यज्ञानां** कर्त्तारः आसन्। **विषस्य** भोजनं घातकं भवति। रामः **राक्षसानां** घातक आसीत्। परिश्रमेण **विद्यायाः** प्राप्तिः भवति। **पुष्पाणां** दर्शनं प्रसादकं भवति।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में कृदन्त शब्दों के साथ होने पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

सप्तमी विभक्ति

1. **अधिकरण कारक की परिभाषा**—(आधारोऽधिकरणम्, 1.4.45) कर्त्ता और

कर्म से सम्बन्ध रखने वाली अर्थात् कर्तृवाच्य में कर्त्ता द्वारा और कर्मवाच्य में कर्म द्वारा की जाने वाली क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। जैसे–

अहम् पुस्तकं काष्ठफलके निक्षिपामि। मैं पुस्तक को मेज पर रखता हूँ।

इस वाक्य में 'अहम्' के द्वारा की जाने वाली 'निक्षिपामि' क्रिया का आधार 'काष्ठफलक' है। अतः यह अधिकरण है।

मया पुस्तकं काष्ठफलके निक्षिप्यते–यहाँ पुस्तकं (प्रथमा विभक्ति) से सम्बद्ध 'निक्षिप्यते' क्रिया का आधार काष्ठफलक है। अतः अधिकरण है।

पथिकाः वृक्षस्य छायायाम् उपविशन्ति। पथिक वृक्ष की छाया में बैठते हैं।

2. **(सप्तम्यधिकरणे च, 2.3.36)**–जिसकी अधिकरण संज्ञा होती है उसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए ऊपर के वाक्यों में 'काष्ठफलके' में सप्तमी विभक्ति है।

सः प्रातःकाले उत्तिष्ठति उद्याने उपविश्य च पठति।

इस वाक्य में सः कर्त्ता है उसका सम्बन्ध 'उत्तिष्ठति' और 'उपविश्य' क्रियाओं से है। उठने का आधार (समय की दृष्टि से) प्रातःकाल है और बैठने का आधार (स्थान की दृष्टि से) उद्यान है। अतः दोनों आधारों की अधिकरण संज्ञा होगी और उनमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होगा।

3. **(आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्, 2.3.40)**–तत्परता (आसेवा) अथवा नियुक्त अर्थ में आयुक्त और कुशल (निपुण) शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ की जाती हैं किन्तु आसेवा (तत्परता) के न होने पर केवल सप्तमी ही होती है। जैसे–

देवदत्तः हरिपूजने हरिपूजनस्य वा आयुक्तः अस्ति।
देव हरि की पूजा में लगा हुआ है।
रमेशः संगीतायोजनस्य संगीतायोजने वा प्रबन्धे आयुक्तः ।
रमेश संगीत के आयोजन के प्रबन्ध में नियुक्त है।
त्वम् पठने पठनस्य वा कुशलोऽसि। तू पढ़ने में निपुण है।
आयुक्त शकटे गौः–इसमें तत्परता नहीं है अतः केवल सप्तमी होगी।

4. **(साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः, 2.3.43)**–पूजा अर्थात् आदर के अर्थ में साधु और निपुण शब्दों के साथ सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। 'प्रति' का प्रयोग होने पर सप्तमी नहीं होगी। जैसे–

श्रवणकुमारः मातरि साधुः आसीत् ।
श्रवण माता के प्रति अच्छा व्यवहार करता था।
सुशीलः पितरि निपुणोऽस्ति। सुशील पिता की सेवा करने में निपुण है।

5. इसके अतिरिक्त कुछ विशेष प्रयोग है, जहाँ सप्तमी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है :

(क) स्नेह, आदर, अनुराग शब्दों के तथा इनके समानार्थक अन्य शब्दों के साथ और √स्निह्, √अभिलष् धातुओं के कर्म में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

एषु वृक्षेषु मम सोदरस्नेहोऽस्ति। इन वृक्षों पर मेरा सगे भाई का-सा स्नेह है। यहाँ स्नेह के साथ होने के कारण वृक्षेषु में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग है।

अस्ति सुशिष्याणां गुरुषु अत्यादरः।

अच्छे शिष्यों का अपने गुरुजनों के प्रति अत्यन्त आदर है।

प्राणिनः स्वापत्येषु स्नेहो भवति। प्राणी का अपने बच्चों के प्रति स्नेह होता है।

तापसकन्यायां दुष्यन्तस्याभिलाषः।

तपस्वी कन्या के प्रति दुष्यन्त की चाहना है।

माता पुत्रे स्निह्यति। माता पुत्र से स्नेह करती है।

शिशुः मातरि स्निह्यति। बच्चा माता से स्नेह करता है।

निर्धनः धनेऽभिलषति। गरीब धन चाहता है।

(ख) √क्षिप् (फेंकना), √मुच् (छोड़ना), √अस् (फेंकना), √पत् + णिच् आदि धातुओं और इनसे बनने वाले शब्दों के योग में जिस पर कोई वस्तु फेंकी, छोड़ी अथवा गिराई जाती है उसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

बालकाः तड़ागे मण्डूकेषु प्रस्तरखण्डान् क्षिपन्ति।

बच्चे तालाब में मेंढकों पर पत्थर के टुकड़े फेंकते हैं।

दुष्यन्तः राक्षसेषु शरान् अमुंचत्। दुष्यंत ने राक्षसों पर बाण छोड़े।

वनं गन्तुमिच्छुः दिलीपः योग्यमन्त्रिणि राज्यभारं न्यस्तवान्।

वन जाना चाहने वाले दिलीप ने योग्य मंत्री पर राज्य का भार सौंप दिया।

राज्याभिषेकसमये मंत्रपाठं कुर्वाणः पुरोहितः नृपे तीर्थजलं पातयति।

राज्याभिषेक के समय मंत्रपाठ करते हुए पुरोहित राजा पर तीर्थों का जल डालता है।

शुकनासनाम्नि मन्त्रिणि राज्यभारमारोप्य।

शुकनास नाम के मंत्री पर अपने राज्य का भार डालकर।

(ग) विश्वास के योग में सप्तमी आती है। जैसे—

तस्मिन् विश्वासं न कुरु। उस पर विश्वास मत कर।

अभ्यास

1. कारक किसे कहते हैं?
2. कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति में क्या भेद है?
3. प्रथमा विभक्ति का प्रयोग कहाँ होता है? सोदाहरण बताइए।
4. कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, तथा अधिकरण की परिभाषा उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. निम्न शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए :
   उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, सह, नमः, स्वस्ति, अलम्, √भी, √त्रै, √जुगुप्स्, √प्रमद्, √कुशल।
6. निम्न वाक्यों को शुद्ध कीजिए और कारक बताइए :
   (क) वानराः वृक्षाः दृश्यन्ते।

(ख) रामस्य विना अयोध्या शून्या जाता।
(ग) राजेन्द्रः सुरेन्द्रात् पुस्तकानि याचते।
(घ) त्वं निजमित्रस्य सार्धं कुत्र गतवान्।
(ङ) रमेशः स्वानुजं स्निह्यति।
(च) विद्यालयस्य सर्वतः वृक्षाः सन्ति।
(छ) सूर्यस्य उदिते तारकाः लीनाः।
(ज) पथिकः विदेशेन आगतः।
(झ) देवान् नमः । युष्माकं स्वस्ति।
(ञ) अध्ययने प्रमादं मा कुरु।
(ट) बालकः सिंहेन बिभेति।
(ठ) रामः राक्षसान् बाणान् अमुंचत्।

7. **अधोलिखितेषु केषाञ्चिदपि पञ्चानां कालेपदानां विभक्तिकारणं निर्दि**
निम्नलिखित में किन्ही पाँच काले पदों में विभक्ति कारण बताइए
(*i*) **अक्ष्णा** काणः। (*ii*) **पुत्राय** क्रुध्यति। (*iii*) **सिंहात्** बिभेति
(*iv*) **प्रजाभ्यः** स्वस्ति। (*v*) न ववर्ष **वर्षाणि** द्वादश। (*vi*) **त्वया** विना
प्रभवामि।

8. **अधोलिखितेषु कानिचित् पञ्च पदान्यादाय संस्कृते वाक्यानि रचय**
निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पदों को लेकर संस्कृत वाक्यों की र
कीजिए :
अभितः, सह, अलम्, बिभ्यति, रोचन्ते, नमः, परितः, नूनम्।

9. **अधोलिखितेषु केषांचित् पञ्चानां कालेपदानां विभक्तिकारणं लिखत**
निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच काले पदों में विभक्तिकारण समझाइ
(क) (*i*) **गुरवे** नमः। (*ii*) धिक् **दुष्टान्**। (*iii*) **बालकेभ्यः** मोदको रोचते।
(*iv*) अधिशेते **वैकुण्ठं** हरिः। (*v*) **चौराद्** बिभेति। (*vi*) **केन** सह ग
(ख) (*i*) हरिः **वैकुण्ठम्** अधिवसति।
(*i*) गिरिधरः **कर्णेन** वधिरः।
(*ii*) **छात्रेभ्यः** संस्कृतं रोचते।
(*iii*) मित्रं **पापात्** निवारयति।
(*iv*) रामे **वनं** गते दशरथः **पञ्चत्वं** गतः।

10. **अधोलिखितेषु केषुचित प्रत्येकभागात् पञ्चवाक्येषु विभक्तिकारणं निर्दि**
कोष्ठनिर्दिष्टशब्दयोः एकेन शब्देन रिक्तस्थानपूर्ति विधत्त :
निम्नलिखित में प्रत्येक भाग से किन्हीं पाँच वाक्यों में विभक्तिकारण
निर्देश करते हुए कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से एक को रिक्त स्थान में
(क) (*i*) सः ……… सुवर्ण ददौ। (राजानम्, रा
(*ii*) हरिः ……… अध्यास्ते । (वैकुण्ठं, वैकु
(*iii*) ……… भक्तिः रोचते। (हरिम्, ह

(iv) पिता .... क्रुध्यति। (पुत्रम्, पुत्राय)
(v) .... परितः जलमस्ति। (नगरम्, नगराय)
(vi) .... वधिरः अस्ति। (कर्णयोः, कर्णाभ्याम्)

(ख) (i) इन्द्रः .... न ववर्ष। (वर्षेभ्यः, वर्षाणि)
(ii) देवव्रतः सर्वदा .... नमस्करोति। (गुरुन्, गुरुभ्यः)
(iii) अहं तु .... विना जीवितुं न शक्नोमि। (पुत्रात्, पुत्रेण)
(iv) .... सर्वतः जलमेव दृश्यते। (उद्यानम्, उद्यानस्य)
(v) विपिनात् आगच्छन् रामः .... विभेति। (अन्धकारे, अन्धकारात्)
(vi) राजा .... क्रुध्यति। (सेवकेषु, सेवकेभ्यः)
(vii) रामः .... सह गृहं गच्छति। (मित्राय, मित्रेण)

(ग) (i) मोहनः .... सह ग्रामं गच्छति। (बालकेन, बालकस्य)
(ii) हरिः .... अधिशेते। (शय्याम्, शय्यायाम्)
(iii भिक्षुकः .... खञ्जः अस्ति। (पादेन, पादात्)
(iv) .... अभितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालयम्, विद्यालयस्य)
(v) सः........ दशरूप्यकाणि ददाति। (माम्, मह्यम्)

(घ) (i) अहं .... नमामि। (गुरवे, गुरुम्)
(ii) .... ऋते न मुक्तिः। (ज्ञानम्, ज्ञानात्)
(iii) .... स्वस्ति। (प्रजानां, प्रजाभ्यः)
(iv) हरिः .... अधिशेते। (वैकुण्ठं, वैकुण्ठे)
(v) अलं .... । (रोदनेन, रोदनात्)
(vi) देवदत्तः .... खञ्जः। (पादात्, पादेन)

(ङ) (i) राजा .... अध्यास्ते। (सिहासनं, सिंहासने)
(ii) .... मिष्ठान्नं रोचते। (बालकस्य, बालकाय)
(iii) .... परितः परिखा। (नगरं, नगरस्य)
(iv) रामः .... सह वनं गतः। (सीतया, सीतेन)
(v) .... नमः। (गुरुं, गुरवे)

11. **अधोलिखितेषु कालेशब्देषु विभक्तिकारणं निर्दिश्यताम् :**
निम्नलिखित काले शब्दों में विभक्ति का कारण समझाइए :
(i) भगवतः निन्दकं धिक्।
(ii) रामः ब्राह्मणाय वस्त्रं ददाति।
(iii) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
(iv) हिमवतः गंगा निर्गच्छति।
(v) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

12. **कोष्ठगतशब्देन उचितपदं निर्माय रिक्तस्थानपूर्ति विधत्त :**
कोष्ठक में दिए शब्दों के उचित रूप बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।
(i) .... कालिदासः श्रेष्ठः। (कवि)

(ii) ……… विना कुतो विद्या? (परिश्रम)
(iii) ……… प्रति दया कार्या। (दीनं, दीनस्य)
(iv) भिक्षुकः ……… खञ्जः। (पादेन, पादस्य)
(v) अलं ………। (विवादः, विवादेन)
(vi) छात्रां ……… संस्कृतं पठन्ति। (अध्यापकेन, अध्यापकात्)
(vii) चोरः ……… बिभेति। (रक्षकात्, रक्षकेण)
(viii) माता ……… स्निह्यति। (पुत्र)
(ix) सज्जनः ……… बिभेति। (दुष्ट)
(x) पथिकाः वृक्षस्य ……… उपविशन्ति। (छात्रा)
(xi) ……… पुरस्काराय स्पृहयन्ति। (सर्व)
(xii) तुभ्यं मोदकः ………। (रुच्-लट्)
(xiii) वीरः ……… रिपुं हन्ति। (शस्त्र)
(xiv) तस्मिन् ……… न कुरु। (विश्वास)
(xv) एतानि वस्त्राणि ……… सन्ति। (सुन्दर)

चतुर्थ अध्याय

अव्यय
[INDECLINABLES]

जो शब्द तीनों लिंगों में तथा सब विभक्तियों में एवं सब वचनों में एक समान रहते हैं तथा जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, वे शब्द अव्यय कहलाते हैं । जैसे– शनैः, उच्चैः, नीचैः, इत्यादि।

अभ्यासार्थ कुछ अव्यय, अर्थ और उनके प्रयोग नीचे लिखे गये हैं :

1. **शनैः** (धीरे-धीरे)
   स मत्तोऽपि शनैर्लिखति । (वह मुझसे भी धीरे लिखता है।)
   तस्मै निवेदय यत् शनैः सर्वो विदितो भविष्यति।
   (उसको बता दो कि धीरे-धीरे सब विदित हो जायेगा।)
2. **उच्चैः** (ऊँचे)
   श्येनः उच्चैः उड्डयति गच्छति वा। (बाज ऊँचा उड़ता है।)
   (जोर से)–जाले पतितेन सिंहेन उच्चैः रुदितम्।
   (जाल में फँसा हुआ सिंह जोर से चिल्लाया।)
3. **नीचैः** (नीचे)
   नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।
   (चक्र-नेमि के समान मनुष्यों की दशा नीचे-ऊपर जाती रहती है।)
   अत्र जलस्य नीचैर्मृत्तिका वर्तते। (यहाँ पानी के नीचे मिट्टी है।)
4. **ह्यः** (बीता हुआ कल)
   ह्यः रात्रौ मया एकः स्वप्नः दृष्टः।
   (कल रात को मैंने एक सपना देखा था।)
5. **श्वः** (आने वाला कल)
   श्वः अहम् इन्द्रप्रस्थं गमिष्यामि। (कल मैं इन्द्रप्रस्थ जाऊँगा।)
6. **तूष्णीम्** (मौन)
   देवमन्दिरे तूष्णीं स्थातव्यम् ।
   (देवमन्दिर में मौन होकर बैठना चाहिए।)
   हे बालौः, युवामाचार्य तूष्णीं सेवेयाथाम्।
   (अरे बालको, तुम दोनों को आचार्य जी की मौन रहकर सेवा करनी चाहिए।)
7. **बहिः** (बाहर)
   शब्दं श्रुत्वा चौरः बहिर्निरगच्छत्।
   (आवाज सुनकर चोर बाहर निकल गया।)
   नगराद् बहिरेकमुद्यानमस्ति। (नगर के बाहर एक उद्यान है।)

8. वृथा (व्यर्थ)
छात्राणां वृथाटनं संस्कारान् हसति।
(छात्रों का व्यर्थ घूमना आदतें बिगाड़ देता है।)
9. नक्तम् (रात्रि)
नक्तं दधि न भुञ्जीत। (रात्रि के समय दही नहीं खाना चाहिए।)
10. विना (बिना, रहित)
विद्यां बिना जीवनं व्यर्थम्। (विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है।)
11. नाना (अनेक)
अत्र वाटिकायां नानाविधानि पुष्पाणि सन्ति।
(यहाँ इस बाड़ी में कई प्रकार के फूल हैं।)
(बिना)—नाना नारी निष्फला लोकयात्रा।
(नारी के बिना संसार में जीवन-यात्रा व्यर्थ है।)
12. मृषा (झूठा)
मृषा वदति लोकोऽयं ताम्बूलं मुखभूषणम्।
मुखस्य भूषणं पुंसां स्यादेकैव सरस्वती॥
(लोग झूठ कहते हैं कि मुख की शोभा पान से है। मुख की शोभा तो केवल वाणी ही है।)
13. पुरा (पहले)
पुरा भारतम् अतिसमृद्धम् आसीत्। (पहले भारतवर्ष अतीव समृद्ध था।)
14. धिक् (धिक्कार)
धिक् मूर्खम्। (मूर्ख को धिक्कार।)
15. अथ (विषय के आरम्भ में)
अथ कथां करोति। (इसके बाद वह कथा करता है।)
अथ कथा प्रारभ्यते। (अब कथा शुरू की जाती है।)
16. मा (मत, नहीं)
दरिद्रान् भर, कौन्तेय। मा प्रयच्छ ईश्वरे धनम्।
(हे कुन्ती-पुत्र, धनवान् को धन मत दो। गरीबों का भरण-पोषण करो।)
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
(हे निषाद, तू अनन्त वर्षों तक प्रतिष्ठा को प्राप्त न हो।)
17. कदाचित् (शायद)
कदाचित् सः जीवितः एव भवेत्। (शायद वह जीवित ही हो।)
18. अलम् (पर्याप्त, बस)
अलं मल्लो मल्लाय । (मल्ल मल्ल के लिए काफी है।)
अलमति विषादेन। (अधिक दुःख मत करो।)
19. इदानीम् (अब)
इदानीम् अहं भोजनं न करिष्यामि। (अब मैं भोजन नहीं करूँगा।)
20. सर्वत्र (सब जगह)
ईश्वरः सर्वत्र पश्यति। (ईश्वर सब जगह देखता है।)

21. अति (अधिक)
अति सर्वत्र वर्जयेत् । (अधिक को सब जगह छोड़ देना चाहिए।)

22. यदा (जब)
यदा यज्ञः सम्पन्नो भविष्यति, तदा वृष्टिः भविष्यति।
(जब यज्ञ सम्पन्न हो जायेगा तब वर्षा होगी।)
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
(हे अर्जुन जब-जब धर्म की हानि तथा अधर्म का उत्थान होता है तब-तब मैं अपने आप का सृजन करता हूँ।)

23. कदा (कब)
त्वं कक्षायां कदाऽनुपस्थितः आसीः ? (तुम कक्षा में कब अनुपस्थित थे ?)

24. यथा (जैसा)
यथा वदामि तथैव कुरु। (जैसा कहता हूँ वैसा ही कर।)

25. कुतः (कहाँ से)
त्वं कुतः आयातः ? (तुम कहाँ से आये हो ?)
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ?
(तुझे युद्ध में यह पाप कहाँ से लगा ?)

26. कुत्र (कहाँ)
त्वं कुत्र गमिष्यसि ? (तुम कहाँ जाओगे।)

27. तथा (वैसा)
यथा सः न आगच्छति, तथा कुरु। (जैसे वह न आये, वैसा प्रबन्ध करो।)

28. तत्र (वहाँ)
तत्र एकः सिहः वसति स्म। (वहाँ एक सिंह रहता था।)

29. यत्र (जहाँ)
यत्र यत्र वह्निः, तत्र तत्र धूमः। (जहाँ जहाँ आग है, वहाँ वहाँ धुआँ है।)

30. नूनम् (अवश्य, निश्चय ही)
नूनम् अहं परीक्षायां प्रथमो भविष्यामि।
(मैं निश्चय ही परीक्षा में प्रथम रहूँगा ।)

31. अपि (भी)
तस्य अपि गृहं दर्शय। (उसका भी घर दिखाओ।)
अपि स्वर्णमयी लङ्का न में लक्ष्मण रोचते।
(हे लक्ष्मण, सोने की लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती।)

32. अत्र (यहाँ)
द्वादशतारिकायाम् अहम् अत्र आगमिष्यामि।
(बारह तारीख को मैं यहाँ आ जाऊँगा।)

33. च (और)
रामश्च लक्ष्मणश्च वनं गमिष्यतः। (राम और लक्ष्मण वन जायेंगे।)

34. अतः (इसलिए, इससे)
यतः सः रुग्णः, अतः सोऽनुपस्थितः आसीत्।

(क्योंकि वह बीमार था इसलिए वह अनुपस्थित था।)
अहम् अतः कुत्रापि न गमिष्यामि। (मैं इस स्थान से कहीं न जाऊँगा।)

अभ्यास

1. कोष्ठक में दिए गए अव्ययों के प्रयोग द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : (मा, न, तथा, न, हि)।
   (i) यदा यदा ········ धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
   (ii) ········ चैनं क्लेदयन्त्यापो शोषयति ········ मारुतः।
   (iii) कर्मण्येवाधिकारस्ते ········ फलेषु कदाचन।
   (iv) तं ········ कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
2. किन्हीं तीन का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करें :
   (क) उच्चैः, बहिः, मा, पुरा।
   (ख) (i) ह्यः (ii) विना (iii) नक्तं (iv) तूष्णीम्।
   (ग) अथ, विना, धिक्, बहिः, श्वः।
3. अधोलिखितेषु कोऽपि द्वे संस्कृतवाक्ये प्रयोक्तव्ये :
   निम्नलिखित में से किन्हीं दो का संस्कृत में प्रयोग कीजिए :
   शनैः, श्वः, विना, पुरा, वृथा।
4. अव्ययप्रयोगेन रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत :
   अव्यय के प्रयोग द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
   (क) जलेन ········ कम्लानि न रोहन्ति।
   (ख) ········ निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
   (ग) राक्षसः नगराद् ········ समागतः।
   (घ) अय लोको ········ वदति ताम्बूलं मुखभूषणमिति।
   (ङ) ········ शब्दानुशासनम्।
5. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषायाऽनुवादं कुरुत
   नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :
   (क) हार नीचे गिर पड़ा और वह जोर से चिल्लाने लगी।
   (ख) कल स्कूल की छुट्टी थी।
   (ग) जल के बिना कमलों का सौन्दर्य नष्ट हो गया।
   (घ) वह चुपचाप सब सुनता रहा।
6. अधोलिखितानाम् संस्कृतभाषायां वाक्यप्रयोगं कुरुतः
   निम्नलिखित का संस्कृत भाषा में वाक्य प्रयोग कीजिए :
   ह्यः, वृथा, शनैः, अथ, धिक्, मा, पुरा, नाना, श्वः, उच्चैः, मृषा, नीचै
   नक्तम् विना, तुष्णीम्।
7. निम्नांकिताव्ययानि स्ववाक्येषु प्रयोक्तव्ययानि :
   निम्नांकित अव्ययों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
   (क) कदाचित्, अलम्। (ख) इदानीम, सर्वत्र, अपि।
   (ग) यदा, कदा, यथा, कुतः। (घ) अथ, तथा, कुत्र, अत्र, च।
   (ङ) यत्र, नूनम्, अपि।

पञ्चम अध्याय	अशुद्धि संशोधन [CORRECT INCORRECT]

कारक तथा उपपद विभक्तियों का उचित प्रयोग करने से वाक्य में प्रायः अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं।

द्वितीया विभक्ति

नीचे दिए गए वाक्यों में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होने से इन्हें शुद्ध किया जा सकता है :

अशुद्ध	शुद्ध
1. छात्राः आसनेषु अधितिष्ठन्ति।	छात्राः आसनानि अधितिष्ठन्ति।
2. गावः क्षेत्रे अधिवसन्ति।	गावः क्षेत्रम् अधिवसन्ति।
3. भवान् कथं भूमौ अध्यास्ते?	भवान् कथं भूमिम् अध्यास्ते?
4. लंकायाः परितः सागराः विद्यन्ते।	लंकाम् परितः सागराः विद्यन्ते।
5. सेवकाः राज्ञः अभितः अतिष्ठन्।	सेवकाः राजानम् अभितः अतिष्ठन्।
6. ग्रामस्य समया जलाशयः अस्ति।	ग्रामं समया जलाशयः अस्ति।
7. वीरस्य विना युद्धं जेतु न कोऽपि पारयति।	वीरं विना युद्धं जेतु न कोऽपि पारयति।
8. धिक् तस्मै पापाय।	धिक् तं पापम्।
9. विद्यायाः अन्तरेण कस्यापि सुखं नास्ति।	विद्याम् अन्तरेण कस्यापि सुखं नास्ति।
10. यज्ञस्य अनु देवः वर्षति।	यज्ञम् अनु देवः वर्षति।
11. गोपः गोः पयः दोग्धि।	गोपः गां पयः दोग्धि।
12. शिष्यः गुरोः प्रश्नं पृच्छति।	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
13. स मासेन अधीते।	स मासम् अधीते।
14. क्रोशेन कुटिला नदी।	क्रोशं कुटिला नदी।
15. स ग्रामस्य प्रति गच्छति।	स ग्रामं प्रति गच्छति।
16. स धर्मे अभिनिविशते।	स धर्मम् अभिनिविशते।
17. कथं मह्यं विना यूयं जीवितवन्तः?	कथं मां (मयू, मत् वा) विना यूयं जीवितवन्तः?
18. काकः शाखायाम् अधितिष्ठति।	काकः शाखाम् अधितिष्ठति।

निम्नलिखित वाक्यों में सप्तमी विभक्ति रहेगी :

1. स पर्यङ्कं शेते।	स पर्यङ्के शेते।
2. विष्णुः शेषासनं तिष्ठति।	विष्णुः शेषासने तिष्ठति।

तृतीया विभक्ति

निम्न वाक्यों में तृतीया विभक्ति का प्रयोग करके इन्हें शुद्ध किया जा सकता है :

अशुद्ध	शुद्ध
1. रामः श्यामस्य सह क्रीडति।	रामः श्यामेन सह क्रीडति।
2. अहं शतं रूप्यकेभ्य अन्नं क्रीणामि।	अहं शतं रूप्यकैः अन्नं क्रीणामि।
3. स पादात् खञ्जः अस्ति।	स पादेन खञ्जः अस्ति।
4. धर्मस्य हीनः पशुभिः समानः।	धर्मेण हीनः पशुभिः समानः।
5. एष शिरसः खल्वाट अस्ति।	एष शिरसा खल्वाटः अस्ति।
6. त्वम् अक्ष्णाः काणोऽसि।	त्वम् अक्ष्णा काणोऽसि।
7. पुत्रः स्वरे पितरम् अनुहरति।	पुत्रः स्वरेण पितरम् अनुहरति।
8. स जटाभ्यः पापसः प्रतीयते।	स जटाभिः पापसः प्रतीयते।
9. अलम् अतिभोजनम्।	अलम् अतिभोजनेन।
10. रामः वाणात् शत्रुं जघान।	रामः बाणेन शत्रुं जघान।
11. कियति मूल्ये त्वया वस्त्रं क्रीतम्?	कियता मूल्येन त्वया वस्त्रं क्रीतम्?
12. त्व कस्मिन् याने गच्छसि?	त्वं केन यानेन गच्छसि?
13. स प्रकृतेः साधुः।	सः प्रकृत्या साधुः।
14. कन्दर्प इव रूपात् मूर्तिमानभवत् स्वयम्।	कन्दर्प इव रूपेण मूर्तिमानभवत् स्वयम्।
15. अलं साहसात्।	अलं साहसेन।
16. गुरुं सह शिष्यः आगच्छति।	गुरुणा सह शिष्यः आगच्छति।
17. लक्ष्मणः रामस्य सह वनम् अगच्छत्।	लक्ष्मणः रामेण सह वनम् अगच्छत्।

चतुर्थी विभक्ति

निम्न वाक्यों को शुद्ध करने के लिए उचित स्थान पर चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग करना चाहिए :

1. तं भिक्षुकं भोजनं प्रयच्छ।	तस्मै भिक्षुकाय भोजनं प्रयच्छ।
2. पितरं नमः।	पित्रे नमः।
3. दुष्टं जनम् अहम् अलम्।	दुष्टाय जनाय अहम् अलम्।
4. शिशुं स्वस्ति।	शिशवे स्वस्ति।
5. सर्वान् छात्रान् मिष्टान्नं देहि।	सर्वेभ्यः छात्रेभ्यः मिष्टान्नं देहि।
6. स मां क्रुध्यति।	सः मह्यं क्रुध्यति।
7. मन्त्री राजनं न्यवेदयत्।	मन्त्री राज्ञे न्यवेदयत्।
8. दुर्जनः सज्जनान् द्रुह्यति।	दुर्जनः सज्जनेभ्यः द्रुह्यति।
9. रामः फलानि स्पृहयति।	रामः फलेभ्यः स्पृहयति।
10. धनं सुखं कल्पते।	धनं सुखाय कल्पते।
11. रामः श्यामं शतं धारयति।	रामः श्यामाय शतं धारयति।
12. यजमानः ब्राह्मणं गां प्रतिश्रृणोति।	यजमानः ब्राह्मणाय गां प्रतिश्रृणोति।
13. स राजा तस्य कर्णाटक राज्यं ददौ।	सः राजा तस्मै कर्णाटक राज्यं ददौ।
14. कोपिष्यति चारुदत्तः त्वाम्।	कोपिष्यति चारुदत्तः तुभ्यम्।

पञ्चमी विभक्ति

नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग करके शुद्ध किया गया है :

अशुद्ध	शुद्ध
1. नगरस्य बहिः नदी वहति।	नगरात् बहिः नदी वहति।
2. सोमवासरेण आरभ्य कार्यं प्रारब्धम्।	सोमवासरात् आरभ्य कार्यं प्रारब्धम्।
3. ग्रामेण निर्गत्य वनं प्राविशत्।	ग्रामात् निर्गत्य वनं प्राविशत्।
4. ज्ञानस्य ऋते न मुक्तिः।	ज्ञानाद् ऋते न मुक्तिः।
5. कः केन बिभेति?	कः कस्माद् बिभेति?
6. स गुरुणा पुस्तकम् अधीते।	स गुरोः पुस्तकम् अधीते।
7. वृक्षैः फलानि पतन्ति।	वृक्षेभ्यः फलानि पतन्ति।
8. अधर्मेण पापं जायते।	अधर्मात् पापं जायते।
9. कामेन् संजायते क्रोधः।	कामात् संजायते क्रोधः।
10. दुर्जनेन कस्य भयं न जायते?	दुर्जनात् कस्य भयं न जायते?
11. स शैशवेन प्रभृति मम मित्रम्।	सः शैशवात् प्रभृति मम मित्रम्।
12. सुप्तोऽपि मूषकभयेन तेन ताडयति।	सुप्तोऽपि मूषकभयात् तेन ताडयति।
13. देव, अज्ञानस्य अनेनापराधः कृतः।	देव, अज्ञानात् अनेनापराधः कृतः।
14. ऋते धनस्य जीवनं कष्टम्।	ऋते धनात् जीवनं कष्टम्।
15. छात्रः अध्यापकस्य संस्कृतं पठति।	छात्रः अध्यापकात् संस्कृतं पठति।

षष्ठी विभक्ति

नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग करके शुद्ध किया गया है :

1. पर्वतात् उपरि वनानि सन्ति।	पर्वतस्य उपरि वनानि सन्ति।
2. अध्ययनाय हेतोः छात्राः आश्रमे निवसन्ति।	अध्ययनस्य हेतोः छात्राः आश्रमे निवसन्ति।
3. गुरुः शिष्ये दयति।	गुरुः शिष्यस्य दयति।
4. अध्ययनात् पश्चात् छात्रः भ्रमणाय गच्छति।	अध्ययनस्य पश्चात् छात्रः भ्रमणाय गच्छति।
5. देवाय कुशलं भूयात्।	देवस्य कुशलं भूयात्।
6. गृहेण दूरं मम विद्यालयः अस्ति।	गृहस्य दूरं मम विद्यालयः अस्ति।
7. रामः जनान् पूजितः आसीत्।	रामः जनानाम् पूजितः आसीत्।
8. अस्मान् पुस्तकं पठनीयम्।	अस्माभिः (अस्माकं वा) पुस्तकं पठनीयम्।
9. कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।	कवीनां (कविषु वा) कालिदासः श्रेष्ठः।
10. स सज्जनान् उपकरोति।	सः सज्जनानाम् उपकरोति।

अशुद्ध	शुद्ध
11. सदृशमेतत् गान्धारीपुत्राय।	सदृशमेतत् गान्धारीपुत्रस्य।
12. प्रजापालनं राजानां धर्मः।	प्रजापालनं राज्ञां धर्मः।
13. स आत्मस्य हिताय पठति।	सः आत्मनः हिताय पठति।

सप्तमी विभक्ति

नीचे दिए गए वाक्यों में उचित स्थान पर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग करके शुद्ध किया गया है :

1. स दिनं शेते।	सः दिने शेते।
2. कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।	कविषु (कवीनां ना) कालिदासः श्रेष्ठः।
3. रामस्य विद्यायाः अनुरागः अस्ति।	रामस्य विद्यायाम् अनुरागः अस्ति।
4. असत्यवादिनः न श्रद्दधाति लोकः।	असत्यवादिनि न श्रद्दधाति लोकः।
5. कार्पण्यं त्वां न युज्यते।	कार्पण्यं त्वयि न युज्यते।
6. गुरुजनैः सद्व्यवहारः कर्त्तव्यः।	गुरुजनेषु सद्व्यवहारः कर्त्तव्यः।
7. पुत्रस्य मृते सः संन्यासी अभवत्।	पुत्रे मृते सः संन्यासी अभवत्।
8. सूर्यस्य उदिते सः भ्रमणार्थम् अगच्छत्।	सूर्ये उदिते सः भ्रमणार्थम् अगच्छत्।
9. गुरुः प्राज्ञं विद्यां वितरति।	गुरुः प्राज्ञे विद्यां वितरति।
10. स मां न विश्वसिति।	स मयि न विश्वसिति।
11. रामः पुत्रं स्निह्यति।	रामः पुत्रे स्निह्यति।
12. राजा धर्माधिकारं नियुक्तः।	राजा धर्माधिकारे नियुक्तः।
13. शशकाः पर्वतान् अवसन्।	शशकाः पर्वतेषु अवसन्।
14. वयं कुत्र गच्छन्ति?	वयं कुत्र गच्छामः?
15. ते बालिके गृहम् एव अपठत्।	ते बालिके गृहे एव अपठताम्।

वाक्यों की शुद्धता को परखने के लिए कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रिया का पुरुष तथा वचन आवश्यक है :

1. भवान् कुत्र गच्छसि?	भवान् कुत्र गच्छति?
2. जनः चौरात् बिभ्यति।	जनाः चौरात् बिभ्यति। अथवा जनः चौरात् बिभेति।
3. स्त्रीजनः तत्र गच्छन्ति।	स्त्रीजनः तत्र गच्छति।
4. छात्रद्वयं गृहं गच्छतः।	छात्रद्वयं गृहं गच्छति।
5. शतं गच्छन्ति।	शतं गच्छति।
6. त्वया पुस्तकं पठति।	त्वया पुस्तकं पठ्यते। अथवा त्वं पुस्तकं पठसि।
7. धर्मात् न प्रमदितव्यः।	धर्मात् न प्रमदितव्यम्।
8. नद्यः परोपकाराय वहति।	नद्यः परोपकाराय वहन्ति।
9. ते मम मित्राणि अस्ति।	ते मम मित्राणि सन्ति।

अशुद्ध	शुद्ध
10. तस्य चत्वारि वर्धते।	तस्य चत्वारि वर्धन्ते।
11. धीरः न्याय्यात् पथः न प्रविचलन्ति।	धीराः न्याय्यात् पथः न प्रविचलन्ति।
12. लोभः न कर्त्तव्यम्।	लोभः न कर्त्तव्यः।
13. गुरवः छात्रेभ्यः विद्यां ददाति।	गुरवः छात्रेभ्यः विद्यां ददति।
14. छात्राः विद्यालयं गच्छति।	छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
15. रामः मम मित्रः अस्ति।	रामः मम मित्रम् अस्ति।

वाक्यों की शुद्धता के लिए विशेषण-विशेष्य में समान लिङ्ग, वचन आवश्यक हैं :

अशुद्ध	शुद्ध
1. अयं बाला पठति।	इयं बाला पठति।
2. तिस्त्रः बालिकाः गच्छन्ति।	तिस्त्रः बालिकाः गच्छन्ति।
3. दशरथस्य चत्वारि पुत्राः आसन्।	दशरथस्य चत्वारः पुत्राः आसन्।
4. इदं रम्यं वृक्षं अस्ति, यत्र मनोहराः फलाः पत्राः पुष्पाः च सन्ति।	अयं रम्यः वृक्षः अस्ति, अत्र मनोहराणि फलानि, पत्राणि पुष्पाणि च सन्ति।
5. यः गुरुं सेवति सः सुखं लभते।	यः गुरुं सेवते, सः सुखं लभते।
6. पुरा वीरवरो नाम राजा आसन्।	पुरा वीरवरो नाम राजा आसीत्।
7. व्याधेन घोराकृतिः शूकरः दृष्टम्।	व्याधेन घोराकृतिः शूकरः दृष्टः।
8. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ति तत्र देवताः।	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
9. धर्मो रक्षति रक्षितम्।	धर्मो रक्षति रक्षितः।
10. गतस्य शोकः न कर्त्तव्यम्।	गतस्य शोकः न कर्त्तव्यः।
11. वृक्षात् फलानि पतति।	वृक्षात् फलानि पतन्ति।
12. रामेण निबन्धं लिखति।	रामः निबन्धं लिखति। अथवा रामेण निबन्धः लिख्यते।
13. अहं चलचित्रं पश्यति।	अहं चलचित्रं पश्यामि।
14. त्वया पुस्तकं पठसि।	त्वं पुस्तकं पठसि।
15. सः मम मित्रम् असि।	सः मम मित्रम् अस्ति।
16. परिव्राजक-मूषक-कथा कस्मात् पुस्तकात् संगृहीतम्।	परिव्राजक-मूषक-कथा कस्मात् पुस्तकात् संगृहीता?
17. वीरवरेण कश्चित् स्त्री दृष्टा।	वीरवरेण काचित् स्त्री दृष्टा।
18. तत्र द्वौ मित्रौ अवसताम्।	तत्र द्वे मित्रौ अवसताम्।
19. राज्ञा तस्मै पञ्चशतानि सुवर्णं दत्तानि।	राज्ञा तस्मै पञ्चशतं सुवर्णं दत्तम्।
20. सीतायाः मुखम् अतिशोभनः।	सीतायाः मुखम् अतिशोभनम्।
21. रमा मम सखा अस्ति।	रमा मम सखी अस्ति।
22. मम पार्श्वे चतस्त्रः पुस्तकानि सन्ति।	मम पार्श्वे चत्वारि पुस्तकानि सन्ति।
23. त्रयः नार्यः आपणं गच्छन्ति।	तिस्रः नार्यः आपणं गच्छन्ति।
24. त्रीणि बालिका पुस्तकं पठन्ति।	तिस्रः बालिकाः पुस्तकं पठन्ति।

25. इमे छात्रौ पठतः।	इमौ छात्रौ पठतः।
26. अस्य बालिकायाः गृहं कुत्रास्ति?	अस्याः बालिकायाः गृहं कुत्रास्ति?

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

1. रामस्य विना अयोध्या शून्यं जातम्।
2. त्वां भक्तिः कथं न रोचते?
3. तं ज्ञानं नास्ति।
4. भरतः मातरि क्रुध्यति।
5. स पितरं सन्देशं प्रहिणोति।
6. स पुत्रं पत्रं लिखति।
7. विश्वामित्रः रामात् वसुधां याचते।
8. स दिवसे पञ्चकृत्वः भुङ्क्ते।
9. साधवः दीनान् उपकुर्वन्ति।
10. स अध्ययनेन जुगुप्सते।
11. स्वाध्यायेन मा प्रमदः।
12. विद्या विनयं कल्पते।
13. रामः मात्रे साधुः।
14. गुरुवे नमः।
15. तस्य स्वस्ति।
16. मम सह चत्वारि मित्राणि सन्ति।
17. अयं मनुष्याणां प्रकृतिः अस्ति।
18. सः मातरि क्रुध्यति।
19. मल्लः मल्लेन अलम्।
20. अलम् अति विस्तराय।

षष्ठ अध्याय

रिक्त स्थान पूर्ति
[FILL IN THE BLANKS]

तृतीय तथा चतुर्थ अध्यायों में क्रमशः कारक/उपपद विभक्तियों व अव्ययों का विचार किया गया है। इनसे सम्बन्धित प्रश्न रिक्त स्थान पूर्ति के रूप में प्रायः पूछा जाता है । यद्यपि इन अध्यायों में भी इस प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण दिये गये हैं पर छात्रों की सुविधा तथा अभ्यास के लिए अलग अध्याय के रूप में रिक्त स्थानों की पूर्ति का विवेचन किया जा रहा है।

कारक तथा उपपद विभक्तियों से सम्बन्धित रिक्त स्थान

कारक तथा उपपद विभक्तियों से सम्बन्धित प्रश्न में कुछ वाक्य दिये गये होते हैं जिनमें प्रायः एक या दो स्थानों को रिक्त छोड़ दिया जाता है। उस वाक्य के सामने एक शब्द कोष्ठक में दिया जाता है तथा रिक्त स्थान में कोष्ठक में दिये गये शब्द के साथ उचित विभक्ति लगा कर उचित पद को भरना होता है। जैसे–

सप्तमी विभक्ति का उदाहरण

माता ········ स्निह्यति ।   (पुत्र)

इस वाक्य में रिक्त स्थान को पुत्र के साथ उचित विभक्ति लगा कर उचित पद से भरना है। √स्निह्, अनु √रञ्ज् आदि धातुओं के योग में जिस से प्रेम किया जाए उसके साथ सप्तमी विभक्ति लगती है अतः यहाँ चूँकि स्निह्यति में स्निह् धातु से तथा माता पुत्र से स्नेह करती है, अतः पुत्र के साथ सप्तमी विभक्ति लगा कर एकवचन में 'पुत्रे' बनता है तथा रिक्त स्थान को पुत्रे शब्द से भरने पर 'माता पुत्रे स्निह्यति' वाक्य बन जाता है।

पञ्चमी विभक्ति का उदाहरण

सज्जनः ········ बिभेति ।   (दुष्टं)

इस वाक्य में रिक्त स्थान को दुष्ट प्रातिपदिक के साथ उचित विभक्ति लगाकर उचित पद से भरना है। √भी, √त्रा आदि के योग में भय, रक्षा आदि के कारक शब्दों से पञ्चमी विभक्ति लगाई जाती है। यहाँ सज्जन को दुष्ट से भय लगता है अतः दुष्ट के साथ पञ्चमी विभक्ति लगाकर एकवचन में दुष्टात् रूप रिक्त स्थान में भरना अपेक्षित है। तदनुसार 'सज्जनः दुष्टात् बिभेति' अर्थात् सज्जन दुष्ट से डरता है वाक्य बन जाता है।

तृतीया विभक्ति का उदाहरण

वीरः ········ रिपुं हन्ति।   (शस्त्र)

इस वाक्य में रिक्त स्थान में शस्त्र शब्द से उचित विभक्ति लगाकर उचित पद भरना है। 'वीर शस्त्र से शत्रु को मारता है' यहाँ हन् (मारना) क्रिया के लिए साधन के रूप में शस्त्र का प्रयोग किया गया है तथा साधन के साथ करण कारक–तृतीया

विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः शस्त्र के साथ तृतीया विभक्ति लगाकर 'शस्त्रेण' पद का रिक्त स्थान में भरने पर 'वीरः शस्त्रेण रिपुं हन्ति' (वीर शस्त्र के द्वारा शत्रु को मारता है) वाक्य बन जाता है ।

चतुर्थी विभिक्त का प्रयोग

अध्यापिका ……… कुप्यति । (छात्रा)

इस वाक्य में रिक्त स्थान में छात्रा शब्द से उचित विभक्ति लगाकर बने उचित पद को भरना है। √कुप् (क्रोध करना) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति के प्रयोग का नियम है। अतः छात्रा के साथ चतुर्थी उपपद विभक्ति लगाकर 'छात्रायै' पद को रिक्त स्थान में भरना अपेक्षित है। तदनुसार 'अध्यापिका छात्रायै कुप्यति' (अध्यापिका छात्रा पर क्रोध करती है) वाक्य बन जाता है।

षष्ठी विभक्ति का उदाहरण

संस्कृतभाषा ……… जननी अस्ति। (भारतीयभाषा)

इस वाक्य में रिक्त स्थान में भारतीयभाषा (कोष्ठगत पद) से उचित विभक्ति लगा कर उचित पद भरना है। क्योंकि वाक्य में रिक्त स्थान के बाद 'जननी' पद पड़ा है, अतः भारतीय भाषा से ही जननी का सम्बन्ध अपेक्षित है। सम्बन्ध के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः रिक्त स्थान में भारतीयभाषाणां (भारतीय भाषा, षष्ठी, बहुवचन) को रखना उचित होगा। ऐसा करने पर पूर्ण वाक्य 'संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी अस्ति' बनता है जिसका अर्थ है संस्कृत भाषा भारतीय भाषाओं की जननी है।

कुछ वाक्य विविध विभक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से दिये जा रहे है, जैसे—

1. ……… साकं रामः वनं गतः। (सीता)
2. सः ……… स्पृहयति। (फल)
3. सः ……… बिभेति। (पाप)
4. ……… गोपालः चतुरः। (छात्र)
5. गङ्गा ……… प्रभवति । (हिमालय)
6. हरिः ……… अधितिष्ठति। (वैकुण्ठ)
7. अलं ………। (विवाद)
8. ……… अधः एकः पथिकः आसीत्। (वृक्ष)
9. तव ……… रुधिरः अस्ति। (कर्ण)
10. रामः ……… सह वनमगच्छत्। (सीता)
11. ……… निकषा नदी वहति। (मथुरा)
12. ……… विना जीवनं निष्फलम्। (धन)
13. ……… स्वाहा। (इन्द्र)
14. बालः ……… पतति। (अश्व)
15. हे हरे ! ……… दयां कुरु। (अस्मद्)
16. कपोताः ……… उत्पतन्ति। (आकाश)

17. सः ……… बहिः अगच्छत्। (नगर)
18. सुरेशः ……… अधिशेते। (शय्या)
19. ……… गोपालः चतुरः। (छात्र)
20. ज्ञानं भारः ……… विना। (क्रिया)
21. रामः रावणं ……… हतवान्। (बाण)
22. सः ……… बिभेति। (पाप)
23. ……… स्वस्ति। (प्रजा)
24. ……… पुरुषः अत्र आगच्छति। (राजा)
25. ……… परितः क्षेत्राणि सन्ति। (ग्राम)
26. ……… अन्तरेण शान्तिः नास्ति। (सन्तोष)
27. ……… धर्मं ब्रूते शास्तिवा। (माणवक)
28. ……… सह आगतः। (पुत्र)
29. ……… ऋते न मुक्तिः। (ज्ञान)
30. ……… हरिदर्शनं भवति। (पुण्य)
31. ……… कालिदासः श्रेष्ठः। (कवि)
32. शकुन्तला ……… अधिशेते। (शिला)
33. ……… अधः एकः बालकः आसीत्। (वृक्ष)
34. चन्द्रमाः ……… दीव्यति। (रात्रि)
35. ……… द्रुह्यति रावणः । (राम)
36. ……… अधितिष्ठति मुनिः। (आसन्)
37. ……… मथुरा आढ्यतरा। (नगरी)
38. ……… पतति बालः। (प्रासाद)
39. ……… सह पिता गच्छति। (पुत्र)
40. ……… सह अहं गमिष्यामि। (त्वम्)
41. ……… बिभेति अयं बालकः । (चौर)
42. ……… छात्राः पठन्ति। (विद्यालय)
43. ……… संवद्धाः भवत । (देशरक्षा)
44. ……… उभयतः वृक्षाः सन्ति। (नदी)
45. देवदत्तः ……… वृक्षं छिनत्ति। (परशु)
46. ……… सर्वे छात्राः प्रणमन्ति। (आचार्य)
47. पथिकाः वृक्षस्य ……… उपविशन्ति। (छाया)
48. ……… पुरस्काराय स्पृहयन्ति। (सर्व)
49. तुभ्यं मोदकः ………। (रुच्, लट्)
50. तस्मिन् ……… न कुरु। (विश्वास)

उपर्युक्त वाक्यों में कोष्ठगत पदों से उचित कारक विभक्ति या उपपद विभक्ति जिसका ज्ञान तीसरे अध्याय में कराया जा चुका है लगाकर रिक्त स्थानों को भरा जा सकता है, जैसे—

1. सीतया साकं रामं वनं गतः। (साकं के योग में तृतीया)

2. सः फलाय स्पृहयति। (स्पृह् के योग में चतुर्थी)
3. सः पापात् बिभेति। (भी के योग में पञ्चमी)
4. हरिः वैकुण्ठम् अधितिष्ठति। (अधि√स्था के योग में द्वितीया)
5. छात्रेषु गोपालः चतुरः। (तुलना में अतिशय में सप्तमी)
6. गङ्गा हिमालयात् प्रभवति। (प्र√भू के योग में पञ्चमी)
7. अलं विवादेन। (अलं के योग में तृतीया)
8. वृक्षात् अधः एकः पथिकः आसीत्। (अधः के योग में पंचमी)
9. तव कर्णे रुधिरः अस्ति। (आधार के योग में सप्तमी)
10. रामः सीतया सह वनमगच्छत्। (सह के योग में तृतीया)
11. मथुरां निकषा नदी वहति। (निकषा के योग में द्वितीया)
12. धनं विना जीवनं निष्फलम्। (विना के योग में द्वितीया)
13. इन्द्राय स्वाहा। (स्वाहा के योग में चतुर्थी)
14. बालः अश्वात् पतति। (√पत् के योग में पञ्चमी)
15. हे हरे! मम दयां कुरु। (दया के योग में षष्ठी)
16. कपोताः आकाशे उत्पतन्ति। (आधार के योग में सप्तमी)
17. सः नगरात् बहिः अगच्छत्। (बहिः के योग में पंचमी)
18. सुरेशः शय्याम् अधिशेते। (अधि√शी के योग में द्वितीया)
19. छात्रेषु गोपालः चतुरः। (अतिशय तुलना में सप्तमी)
20. ज्ञानं भारः क्रियां विना। (विना के योग में द्वितीया)
21. रामः रावणं बाणेन हतवान्। (साधन के योग में तृतीया)
22. सः पापात् बिभेति। (भी के योग में पंचमी)
23. प्रजाभ्यः स्वस्ति। (स्वस्ति के योग में चतुर्थी)
24. राज्ञः पुरुषः अत्रागच्छति। (सम्बन्ध में षष्ठी)
25. ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति। (परितः के योग में द्वितीया)
26. सन्तोषम् अन्तरेण शान्तिः नास्ति। (अन्तरेण के योग में द्वितीया)
27. माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा। (√ब्रू, √शास् द्विकर्मक हैं)
28. पुत्रेण सह आगतः। (सह के योग में तृतीया)
29. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः। (ऋते के योग में पंचमी)
30. पुण्याय हरिदर्शनं भवति। (प्रयोजन में चतुर्थी)

अथवा

पुण्येन हरिदर्शनं भवति। (साधन में तृतीया)

31. कविषु/कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः। (अतिशय तुलना में षष्ठी, सप्तमी)
32. शकुन्तला शिलाम् अधिशेते। (अधि√शी के योग में द्वितीया)
33. वृक्षात् अधः एकः बालकः आसीत्। (अधः के योग में पंचमी)
34. चन्द्रमाः रात्रौ दीव्यति। (कालवाचक में सप्तमी)

35. रामाय द्रुह्यति रावणः। (√द्रुह् के योग में चतुर्थी)
36. आसनम् अधितिष्ठति मुनिः। (अधि√स्था के योग में द्वितीया)
37. नगर्याः मथुरा आढ्यतरा। (दो की तुलना में पंचमी)
38. प्रासादात् बालः पतते। (पत् के योग में पंचमी)
39. पुत्रेण सह पिता गच्छति। (सह के योग में तृतीया)
40. त्वया सह अहं गमिष्यामि। (सह के योग में तृतीया)
41. चौरात् बिभेति अयं बालः। (√भी के योग में पंचमी)
42. विद्यालये छात्राः पठन्ति। (आधार में सप्तमी)
43. देशरक्षायै सन्नद्धाः भवत। (प्रयोजन में चतुर्थी)
44. नदीम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (उभयतः के योग में द्वितीया)
45. देवदत्तः परशुना वृक्षं छिनत्ति। (साधन में तृतीया)
46. आचार्यं सर्वे छात्राः प्रणमन्ति। (कर्म में द्वितीया)
47. पथिकाः वृक्षस्य छायायाम् उपविशन्ति। (आधार में सप्तमी)
48. सर्वे पुरस्काराय स्पृहयन्ति। (कर्त्ता में प्रथमा)
49. तुभ्यं मोदकः रोचते। (रुच् आत्मेनपदी धातु है)
50. तस्मिन् विश्वासं न कुरु। (कर्म में द्वितीया)

अव्ययों के प्रयोग में रिक्त स्थान पूर्ति

परीक्षा में उपर्युक्त प्रश्न के अतिरिक्त रिक्त स्थानों की पूर्ति से सम्बन्धित एक अन्य प्रश्न पूछा जाता है। यह प्रश्न अपेक्षाकृत सरल होता है। इस प्रश्न में प्रायः सात वाक्य दिये गये होते हैं जिनमें एक पद का स्थान रिक्त होता है। इस रिक्त स्थान को उचित अव्यय पद से भरना अपेक्षित है। सुविधा की दृष्टि से क्रम बदल कर जितने रिक्त स्थान होते हैं उनते ही अव्यय दिये गये होते हैं। अब छात्रों को जिन्होंने चतुर्थ अध्याय में अव्ययों के प्रयोग का अभ्यास किया है उस अभ्यास के आधार पर अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान में भरने के लिए दिये गये सभी अव्यय पदों से उचित अव्यय चुनकर रिक्त स्थानों को भरना है। यह कार्य वाक्य के अर्थ को समझ कर पूरा किया जा सकता है, जैसे नीचे कुछ वाक्य दिये जा रहे है–

1. सूर्यः .... प्रकाशते।
2. सभाया सर्वे जनाः .... तिष्ठन्ति।
3. .... निषधेषु नलो नाम राजा अभवत्।
4. अत्याचारिणं .... ।
5. गृहद्वारात् .... कः तिष्ठति।
6. सङ्गीतप्रतियोगिता तु .... भविष्यति।
7. ज्ञानं .... निष्फलं जीवनम्।

इन वाक्यों के अर्थ नीचे दिए जा रहे हैं तथा अर्थ में भी रिक्त स्थान छोड़े गये हैं, यथा–

1. सूर्य .... चमकता है।
2. सभा में सब लोग .... बैठे हैं।

3. ········ निषध देश में नल नाम का राजा हुआ।
4. अत्याचारी को ········ ।
5. घर के द्वार से ········ कौन ठहरा है ?
6. सङ्गीत प्रतियोगिता तो ········ होगी।
7. ज्ञान के ········ जीवन निष्फल है।

अव्यय पद निम्नलिखित हैं—

1. श्वः	(आने वाला कल)
2. पुरा	(प्राचीन समय में)
3. तूष्णीम्	(चुपचाप)
4. विना	(बिना)
5. धिक्	(धिक्कार)
6. बहिः	(बाहर)
7. दिवा	(दिन में)

अब बारी-बारी से एक-एक वाक्य को लें, जैसे—

सूर्यः ········ प्रकाशते। यहाँ रिक्त स्थान में श्वः, तूष्णीम्, पुरा, विना, धिक्, बहिः पदों को भरने का कोई औचित्य नहीं है। तथा दिवा (दिन में) ही उचित पद है। अतः वाक्य के रिक्त स्थान में दिवा भरना अपेक्षित है। 'सूर्यः दिवा प्रकाशते' (सूर्य दिन में चमकता है।)

इसी प्रकार दूसरा वाक्य है—'सभायाः सर्वे जनाः ········ तिष्ठन्ति'। इस वाक्य में श्वः, पुरा, विना, धिक्, बहिः, दिवा से रिक्त स्थान को भरने का कोई औचित्य नहीं बनता जबकि 'तूष्णीम्' सर्वथा उचित पद है जिससे रिक्त स्थान को भरा जा सकता है। सभायाः सर्वे जनाः तूष्णीं तिष्ठन्ति। (सभा में सब लोग चुपचाप बैठे हैं।)

तीसरा वाक्य '········ निषधेषु, नलो नाम राजा अभवत्' यह अपेक्षा रखता है कि निषध देश में नल नाम का राजा कब हुआ। उस अपेक्षा को पूरा करने वाला पद (पुरा) प्राचीन समय में ही है । अतः वही रिक्त स्थान में भरा जा सकता है—पुरा निषधेषु नलो नाम राजा अभवत्। प्राचीन समय में निषध देश में नल नाम का राजा हुआ।

चौथे वाक्य में 'अत्याचारिणं ········ ।' में धिक् शब्द को भरने का औचित्य है। पूरा वाक्य हुआ—अत्याचारिणं धिक् (अत्याचारी को धिक्कार)।

पाँचवे वाक्य में 'गृहद्वारात् ········ कः तिष्ठति' में 'बहिः' (बाहर) पद को भरने का औचित्य बनता है। पूरा वाक्य हुआ—गृहद्वारात् बहिः कः तिष्ठति (घर के द्वार से बाहर कौन ठहरा है ?)

छठा वाक्य 'सङ्गीतप्रतियोगिता तु ········ भविष्यति' अपेक्षा रखता है कि संगीत प्रतियोगिता कब होगी ? इस प्रश्न की पूर्ति 'श्वः' (कल) पद से हो सकती है। पूरा वाक्य हुआ— सङ्गीतप्रतियोगिता तु श्वः भविष्यति। (संगीत प्रतियोगिता तो कल होगी।)

अन्तिम वाक्य 'ज्ञानं .... निष्फलं जीवनम्' रिक्त स्थान में बचा हुआ 'विना' पद् भरना उचित है। पूरा वाक्य हुआ—ज्ञानं विना निष्फलं जीवनम् । (ज्ञान के बिना जीवन निष्फल है।)

गत वर्षों में इस तरह के जो प्रश्न पूछे गये हैं उनके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं, जैसे—

1. अहं .... नगरं गमिष्यामि।
   (मैं .... शहर जाऊँगा।)
2. जलं प्रकृत्या .... प्रवहति।
   (पानी स्वभाव से .... बहता है।)
3. .... त्वां मिथ्यावादिनम्।
   (तुम झूठ बोलने वाले को ....)
4. अद्य सोमवारः, ... रविवारः आसीत्।
   (आज सोमवार है, ... रविवार था।)
5. जलं .... कोऽपि न जीवति।
   (पानी के .... कोई जिन्दा नहीं रहता।)
6. ये मेघाः .... गर्जन्ति न ते वर्षन्ति।
   (जो बादल .... गरजते हैं वे नहीं बरसते।)
7. अध्यापकं दृष्ट्वा छात्र .... स्थितः।
   (अध्यापक को देखकर छात्र .... हो गया।)

अव्यय पद निम्नलिखित हैं :—

धिक् (धिक्कार), उच्चैः (जोर से), श्वः (आने वाला कल), विना (बिना), तूष्णीं (चुप), नीचैः (नीचे), ह्यः (बीता हुआ कल)

इन वाक्यों में क्रमशः श्वः, नीचेः, धिक्, ह्यः, विना, उच्चैः, तूष्णीं पदों को भरने का औचित्य है, जैसे—

1. अहं श्वः नगरं गमिष्यामि।
   (मैं कल शहर जाऊँगा।)
2. जलं प्रकृत्या नीचैः प्रवहति।
   (जल स्वभाव से नीचे की ओर बहता है।)
3. धिक् त्वां मिथ्यावादिनम्।
   (तुझ झूठ बोलने वाले को धिक्कार।)
4. अद्य सोमवारः, ह्यः रविवारः आसीत्।
   (आज सोमवार है, कल रविवार था।)
5. जलं विना कोऽपि न जीवति।
   (जल के बिना कोई जिन्दा नहीं रहता।)
6. ये मेघाः उच्चैः गर्जन्ति, न ते वर्षन्ति।
   (जो बादल जोर से गरजते हैं वे नहीं बरसते।)
7. अध्यापकं दृष्ट्वा छात्रः तूष्णीं स्थितः।
   (अध्यापक को देखकर छात्र चुप हो गया।)

सप्तम अध्याय

प्रश्नोत्तर-विधि

[संस्कृत में प्रश्नोत्तर]

अपठित लघु संस्कृत अनुच्छेदों को पढ़कर उसके आधार पर दिए गए संस्कृत के लघु प्रश्नों के उत्तर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। कभी-कभी प्रश्न हिन्दी में होते हैं किन्तु उत्तर संस्कृत में ही देने होते हैं। आठवीं तक की कक्षाओं में निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों के प्रत्येक पाठ के अभ्यास में भी उस पाठ के आधार पर संस्कृत में लघु प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते रहे हैं।

प्रश्नोत्तर-विधि :

संस्कृत में प्रश्नोत्तर की विधि के सम्बन्ध में निम्न पाँच बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :

1. अपठित संस्कृत अनुच्छेद का ठीक-ठीक अर्थ समझना जरूरी है अतः उस अनुच्छेद को कम-से-कम तीन बार तो अवश्य पढ़ लेना चाहिए और उसके अर्थ को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। बार-बार पढ़ने से उसका भावार्थ भी ध्यान में आ जाता है तथा कठिन शब्दों के अर्थ का भी पता चल जाता है।

2. तदनन्तर अपठित अनुच्छेद के आधार पर दिए गए प्रश्नों को भी बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए। प्रायः इन प्रश्नों में किसी एकाध तथ्य की जानकारी पूछी जाती है। वह तथ्य क्या है इसे बुद्धि में अवस्थित कर लेना चाहिए। किम्, किमर्थम्, कदा, कथम्, केन, कस्मै, कस्मात्, कस्य, कस्मिन्, कुतः आदि शब्दों पर विशेष ध्यान देने से पता चल जाता है कि प्रश्नकर्त्ता किस तरह के तथ्य की ओर संकेत कर रहा है।

3. प्रश्न में जो तथ्य अपेक्षित है उसका उत्तर अनुच्छेद के किस वाक्यांश, वाक्य या भाग में है इसका पता लगा लेना चाहिए। कभी-कभी प्रश्न का सम्बन्ध पूर्ण सन्दर्भ से होता है जैसे 'शीर्षको लिख्यताम्' आदि। उस समय पूर्ण सन्दर्भ का अर्थ, भावार्थ ध्यान में रखना चाहिए।

4. जब प्रश्न का उत्तर समझ में आ जाये तो उसे शुद्ध संस्कृत वाक्य में लिखना चाहिए तथा अपने उत्तर को दो-तीन बार पढ़कर देख लेना चाहिए कि पूछे गए प्रश्न से इसकी ठीक-ठीक संगति बैठती है या नहीं। प्रश्न, अनुच्छेद और उत्तर इन तीनों को एक साथ ध्यान में करने से उत्तर के सही होने का निश्चय किया जा सकता है।

5. इस बात का अत्यधिक ध्यान रखना आवश्यक है कि हमारा उत्तर प्रश्न की परिधि से इधर-उधर न जाकर प्रश्न की सीमाओं में ही बना रहे।

I

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी मम प्रियः नेता अस्ति। तस्य जन्म गुजरात प्रदेशस्य पोरबन्दरनामके स्थाने अभवत्। तस्य पिता कर्मचन्दः आसीत्। तस्य माता पुतलीबाई अभवत्। महात्मा गान्धी मानवहिताय सर्व जीवनम् अर्पयत्। तेन अहिंसया हिंसकान् आंग्लान् भारतात् निष्कास्य भारतदेशः स्वतन्त्रः कृतः।

प्रश्नाः— 1. अस्य शीर्षको लिख्यताम् ।
2. राष्ट्रपिता को मन्यते ?
3. महात्मा गान्धी कुत्र अजायत ?
4. कर्मचन्दः कः आसीत् ?
5. गान्धिमातुः किं नाम आसी
6. गान्धी किमर्थं जीवनम् अर्पयत् ?
7. गान्धिना कः स्वतन्त्रः कृतः ?
8. मानवहिताय महात्मा गान्धी किम् चकरोत् ?

उत्तराणि— 1. महात्मा गान्धी।
2. महात्मा गान्धी राष्ट्रपिता मन्यते।
3. महात्मा गान्धी पोरबन्दरनामके स्थाने अजायत।
4. कर्मचन्दः गान्धिमहात्मनः पिता आसीत्।
5. गान्धिमातुः नाम पुतलीबाई आसीत्।
6. गान्धी मानवहिताय जीवनम् अर्पयत्।
7. गान्धिना भारतदेशः स्वतन्त्रः कृतः।
8. मानवहिताय सः सर्वं जीवनम् अर्पयत्।

II

रामायणम् संस्कृतवाङ्मयस्य आदिकाव्यमस्ति। अस्य रचनाकालः पुरातत्त्व गवेषकैः बौद्धकालादपि प्राचीनः मन्यते। लोके हि सर्वतः मधुरं, सर्वतः हृदयग्रहि, सर्वतः लोकप्रियं राम चरितम् अस्य ग्रन्थस्य कथानकम् अस्ति। अस्मिन् महाकाव्ये रघुवंशीय रामस्य जन्मनः आरभ्य निर्वाणपर्यन्तं कथा विद्यते। रामायणे अतीव सरल संस्कृतस्य प्रयोगोऽस्ति यः श्रोतृणां मनांसि हरति। अस्य शैली काव्यस्य सौंदर्यं द्विगुणयति। अयं ग्रन्थः भारतीयसभ्यतायाः संस्कृतेः च महान् प्रतीकः अस्ति।

प्रश्नाः— 1. अस्य शीर्षको लिख्यताम् ।
2. आदिकाव्यम् किम् मन्यते ?
3. रामायणम् कस्याः भाषायाः काव्यम् अस्ति ?
4. पुरातत्त्वगवेषकैः रामायणस्य रचनाकालः को मन्यते ?
5. बौद्धकालात् प्राचीनः कालः कस्य ग्रन्थस्य मन्यते ?
6. रामायणस्य कथानकं कीदृशम् अस्ति ?
7. रामायणे कीदृशस्य संस्कृतस्य प्रयोगोऽस्ति ?
8. भारतीयसभ्यतायाः संस्कृतेश्च महान् प्रतीकः कः अस्ति ?

उत्तराणि— 1. रामायणम्।
2. आदिकाव्यं रामायणं मन्यते।
3. रामायणं संस्कृतभाषायाः काव्यमस्ति।
4. पुरातत्त्वगवेषकैः रामायणस्य रचनाकालः बौद्धकालादपि प्राचीनतरः मन्यते।

5. बौद्धकालात् प्राचीनः कालः रामायणस्य मन्यते।
6. रामायणस्य कथानकं सर्वतः मधुरः, हृदयग्राहि लोकप्रियं रामचरितम् अस्ति।
7. रामायणे अतीव सरलसंस्कृतस्य प्रयोगः अस्ति।
8. भारतीयसभ्यतायाः संस्कृतेश्च महान् प्रतीकः रामायणम् अस्ति।

III

कपिलवस्तुनगरे शुद्धोदननाम्नो राज्ञः गृहे भगवान् बुद्धः जनिम् अलभत्। यदा अयं शिशुः एव आसीत् तस्य जननी मायादेवी उपरता। अतः अस्य लालनपालनं विमात्रा महाप्रजावत्या कृतम्। वाल्यकालादेव अस्य स्वभावः अतिगम्भीरः आसीत्. आमोदप्रमोदेषु तस्य रुचिः नासीत् ।

प्रश्नाः— 1. भगवान् बुद्धः कत्र अजायत?
2. शुद्धोदनः कः आसीत्?
3. मायादेवी का आसीत्?
4. मायादेवी कदा उपरता?
5. बुद्धस्य पालनं कया कृतम्?
6. बुद्धस्य स्वभावः कीदृशः आसीत्?
7. बुद्धस्य रुचिः कुत्र नासीत्?
8. अस्य शीर्षकः लिख्यताम्?

उत्तराणि— 1. भगवान् बुद्धः कपिलवस्तु नगरे अजायत।
2. शुद्धोदनः भगवतो बुद्धस्य जनकः आसीत्।
3. मायादेवी भगवतो बुद्धस्य जननी आसीत्।
4. मायादेवी बुद्धय शैशवे उपरता।
5. बुद्धस्य पालनं महाप्रजावत्या कृतम्।
6. बुद्धस्य स्वभावः गम्भीरः आसीत्।
7. बुद्धस्य रुचिः आमोद-प्रमोदेषु नासीत्।
8. भगवान् बुद्धः।

IV

विद्या मानवस्य बन्धुवत् साहाय्यम् करोति, माता इव रक्षति, पिता इव हितकार्ये नियोजयति। राजसभायां विद्वान् एवं शोभा गौरवं च लभते। विद्याधनम् सर्वधनप्रधानम्। एतत् न चोरयितुं न कोऽपि समर्थः, न च वण्टयितुं शक्तः? विद्यया चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सम्भवति।

प्रश्नाः— 1. अस्य शीर्षकः लिख्यताम्?
2. विद्या मानवस्य किंवत् साहाय्यं करोति?
3. मातेव कः रक्षति?
4. विद्या पितेव कस्मिन् नियोजयति?

5. राजसभायां कः गौरवं लभते ?
6. चतुर्वर्गफलप्राप्तिः कया सम्भवति ?

उत्तराणि— 1. विद्यायाः लाभाः।
2. विद्या मानवस्य बन्धुवत् साहाय्यं करोति।
3. मातेव विद्या रक्षति।
4. विद्या पितेव हितकार्ये नियोजयति।
5. राजसभायां विद्वान् गौरवं लभते।
6. चतुर्वर्गफलप्राप्तिः विद्यया सम्भवति।

V

श्रीरामजन्मभूमिः अयोध्या नगरे अस्ति। तत्र बाबरमहोदयेन प्राचीनं मन्दिरं भूमिसात्कृत्वा यावनधर्ममन्दिरं निर्मापितम्। लक्षावधिसंख्यकाः हिन्दवः निजतीर्थस्थानं प्राप्तुं स्वजीवनानि अर्पितवन्तः। न्यायालयस्य आदेशेन तत्स्थानं सद्य एव मुक्तम् अभवत्। यवनानां धार्मिकासहिष्णुतायाः एतत् अविस्मरणीयं निदर्शनम् अस्ति।

प्रश्नाः— 1. श्रीरामजन्मभूमिः कुत्र अस्ति ?
2. तत्र यावनधर्ममन्दिरं केन निर्मापितम् ?
3. हिन्दवः किमर्थ स्वजीवनानि अर्पितवन्तः ?
4. अधुना रामजन्मभूमिः कथं मुक्तिम् अलभत ?
5. यवनानां धार्मिकासहिष्णुतायाः निदर्शनम् किमस्ति ?

उत्तराणि— 1. श्रीरामजन्मभूमिः अयोध्यानगरे अस्ति।
2. तत्र यावनधर्ममन्दिरं बाबरमहोदयेन निर्मापितम्।
3. हिन्दवः रामजन्मभूमि प्राप्तुं स्वजीवनानि अर्पितवन्तः।
4. अधुना रामजन्मभूमिः न्यायालयस्य आदेशेन मोक्षम् अलभत्।
5. रामजन्मभूमिः यवनानां धार्मिकासहिष्णुतायाः निदर्शनमस्ति।

VI

भारतीयसंस्कृत्याः प्रमुख विशेषता आध्यात्मिकता अस्ति। धर्मार्थकाममोक्षेषु मोक्षप्राप्तिः मानवजीवनस्य चरमं लक्ष्यम् अस्ति। भारतीय संस्कृतिः आध्यात्मिक-चिन्तनमूलाः अस्ति। वेदेषु एव सर्वप्रथमम् आध्यात्मिकविचारधारा प्रवहमाना दृश्यते। वेदानां माहात्म्यं हिन्दूधर्मे नितान्तम् उच्चतम विशालं चास्ति।

प्रश्नाः— 1. भारतीय संस्कृत्याः प्रमुखविशेषता कास्ति ?
2. मानवजीवनस्य चरम् लक्ष्यं किमं अस्ति ?
3. आध्यात्मिकचिन्तनमूला का वर्तते ?
4. सर्वप्रथमम् आध्यात्मिकविचारधारा कुत्र प्रवहमाना दृश्यते ?
5. हिन्दूधर्मे नितान्तं उच्चतम् माहात्म्यं केषाम् अस्ति ?

उत्तराणि— 1. भारतीयसंस्कृतेः प्रमुखविशेषता आध्यात्मिकता अस्ति।
2. मानवजीवनस्य चरम् लक्ष्यं मोक्षप्राप्तिः अस्ति।
3. आध्यात्मिकचिन्तनमूला भारतीया संस्कृतिः अस्ति।

4. सर्वप्रथमम् आध्यात्मिक-विचारधारा वेदेषु प्रवहमाना अस्ति।
5. हिन्दूधर्मे नितान्तमं उच्चतम् माहात्म्यं वेदानाम् अस्ति।

VII

मथुराप्रदेशे होलिकायाः विशेषायोजनं भवति। तत्र रंगमंचम् उपस्थाप्य जनाः सप्ताहपर्यन्तं भाण-प्रहसनानि रूपकानि अभिनयन्ति। नानावर्णगुलालं मुखोपरि प्रक्षिपन्ति। परस्परं वस्त्रेषु रंग-क्षेपणं कुर्वन्ति। जनाः स्वमित्राणां बन्धूनां च गृहं यान्ति। तत्र मिष्टान्नादिकस्य सेवनं, आदान-प्रदानं च भवति। आपणेषु, रथ्यासु, च नानारङ्ग-विभूषिताननाः जनाः परस्परम् आलिङ्गन्ति। मदोन्मत्ताः जनाः अत्र तत्र सर्वत्र कूर्दन्ति च उच्छलन्ति च।

प्रश्नाः— 1. होलिकायाः विशेषायोजनं कुत्र भवति?
2. तत्र जनाः किं अभिनयन्ति?
3. मुखोपरि किं प्रक्षिपन्ति?
4. जनाः केषां गृहं सान्ति?
5. कीदृशाः जनाः परस्परम् आलिङ्गन्ति?

उत्तराणि— 1. होलिकायाः विशेषायोजनं मथुराप्रदेशे भवति।
2. तत्र जनाः भाणप्रहसनानि अभिनयन्ति।
3. मुखोपरि नानावर्णगुलालं प्रक्षिपन्ति।
4. जनाः स्वामित्राणां बन्धूनां च गृहं यान्ति।
5. नाना-रङ्ग-विभूषिताननाः जनाः परस्परम् आलिङ्गन्ति।

VIII

स्वाध्यायात् न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायी जनाः आत्मशुद्धेः मार्गम् अनुसरति। ज्ञानार्जनस्य वहवः उपायाः सन्ति। तेषु उपायेषु पुस्तकालयस्य उपयोगः अपि अन्यतमः सुलभः उपायः अस्ति। तत्र गत्वा जनाः स्वस्वरुच्यनुगतानि पुस्तकानि प्राप्नुवन्ति। एतानि पुस्तकानि पठित्वा जनाः। अतिशयज्ञानवृद्धिं कुर्वन्ति।

प्रश्नाः— 1. कस्मात् न प्रमदितव्यम्?
2. आत्मशुद्धेः मार्गम् कः अनुसरति?
3. जनाः पुस्तकालयेषु किं प्राप्नुवन्ति?
4. पुस्तकानि पठित्वा जनाः कस्य वृद्धिम् कुर्वन्ति।
5. ज्ञानवृद्धेः अन्यतमः सुलभः उपायः कः अस्ति?

उत्तराणि— 1. स्वाध्यायात् न प्रमदितव्यम्।
2. आत्मशुद्धेः मार्ग स्वाध्यायी अनुसरति।
3. जनाः पुस्तकालयेषु स्वरुचिम् अनुसृत्य पुस्तकानि लभन्ते।
4. पुस्तकानि पठित्वा जनाः ज्ञानस्य वृद्धिं कुर्वन्ति।
5. ज्ञानवृद्धेः अन्यतमः सुलभः उपायः 'पुस्तकालयस्य सदुपयोगः' अस्ति।

IX

परा दिल्लीनगरे विद्याभारती एकं शिशुशिविरम् आयोजितवती। तदायोजनं अतीव प्रभावकारकम् आसीत्। तद् दृष्ट्वा दर्शकानां हृदयेषु भारतस्य स्वर्णिमं भविष्यं प्रति दृढा आस्था उद्भूता। तत्र साङ्घिक-कार्यक्रमाणाम् अद्भुत-छटाम् अवलोक्य जनाः चकिताः जाताः। बालकानां विकासे ईदृशानां कार्यक्रमाणां महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते।

प्रश्नाः— 1. विद्याभारती किम् आयोजितवती?
2. शिशुशिविरं कुत्र आयोजितम्?
3. शिविरं दृष्ट्वा जनाः किम् अन्वभवन्?
4. किम् आलोक्य जनाः चकिताः जाताः?
5. बालाविकासे केषां स्थानं महत्त्वपूर्णम् अस्ति?

उत्तराणि— 1. विद्याभारती शिशुशिविरम् आयोजितवती।
2. शिशुशिविरं दिल्लीनगरे आयोजितम्।
3. शिविरं दृष्ट्वा जनाः भारतस्य स्वर्णिमं भविष्यं प्रति आस्थावन्तः जाताः।
4. साङ्घिक-कार्यक्रमाणाम् अद्भुतां छटाम् आलोक्य जनाः चकिता जाताः।
5. बालविकासे शिविराणां स्थानं महत्त्वपूर्णं वर्तते।

X

'सहशिक्षा' इत्यय शब्दः बालक-बालिकयोः सहैव एकस्मिन् विद्यालये शिक्षां बोधयति। सहशिक्षायाः समर्थकाः मन्यते यत् तया सर्वकारस्य बहुधनं रक्षितुं शक्यते। बाल्यावस्थायाः एव सहवासेन बालकाः बालिकाः व्यवहारकुशलाः भवन्ति। प्राचीनकाले अपि आश्रमेषु तापसयुवानो युवत्यश्च सहैव तिष्ठन्तः शिक्षां गृह्णन्ति स्म। सहशिक्षाविरोधिनः कथयन्ति यत् तया शिक्षाग्रहणे तेषां प्रवृतिः मन्दा जायते। अन्यान्यविषयेषु तेषाम् अधिका रुचिः प्रवतिश्च भवति।

प्रश्नाः— 1. 'सहशिक्षा' इति शब्दः किं बोधयति?
2. सर्वकारस्य बहुधनं कथं रक्षितुं शक्यते?
3. परस्पर सहवासेन जनाः कीदृशाः भवन्ति?
4. आश्रमेषु के सह अतिष्ठन्?
5. केषां मतेषु सहशिक्षया जनः मन्दरुचिः जायते?

उत्तराणि— 1. 'सहशिक्षा' इति शब्दः बालक-बालिकयोः विद्यालयेषु सहशिक्षणं बोधयति।
2. सर्वकारस्य बहुधनं सहशिक्षया रक्षितुं शक्यते।
3. परस्परसहवासेन जनाः व्यवहारकुशलाः जायन्ते।
4. आश्रमेषु तापसयुवानो युवत्यश्च सहैव अतिष्ठन्।
5. सहशिक्षाविरोधिनां मतेषु सहशिक्षया जनः मन्दरुचिः भवति।

XI

अस्ति कस्मिंश्चिद् वने नानाजलचरसनाथं महत् सरः। तत्र च कृताश्रयो बकः एको वृद्धभावम् उपागतो मत्स्यान् व्यापादयितुम् असमर्थः। ततश्च क्षुत्क्षामकण्ठः सरस्तीरे उपविष्टो रुरोद। एकः कुलीरको नानाजलचरसमेतः तत्र समागतः।

प्रश्नाः— 1. वने किम् आसीत्?
2. वृद्धभावम् कः उपागतः?
3. मत्स्यान् व्यापादयितुं कः असमर्थः?
4. बकः कुत्र उपविष्टः रुरोद?
5. नानाजलचरसमेतः कः समागतः?

उत्तराणि— 1. वने नानाजलचरसनाथं महत् सरः आसीत्।
2. वृद्धभावम् वकः उपागतः।
3. मत्स्यान् व्यापादयितुं वृद्धः वकः असमर्थः आसीत्।
4. बकः सरस्तीरे उपविष्टः रुरोद।
5. नानाजलचरसमेतः एकः कुलीरकः समागतः।

XII

बाबर-आक्रमण-समये शासकेन गुरु-नानकः कारागारे निक्षिप्तः। तत्र तेनासौ पेषणीचालने नियुक्तः। परन्तु विस्मिताः द्वारपालकाः लोकोत्तरम् चमत्कारम् अपश्यन् यत् पेषणी स्वचालितयन्त्रम् इव क्रियाशीला अस्ति। गुरुनानकश्च अन्यत्र एकस्मिन् कोणे समाधिस्थोऽतिष्ठत्।

प्रश्नाः— 1. कारगारे कः निक्षिप्तः?
2. शासकेन गुरुनानकः कस्मिन् नियुक्तः?
3. द्वारपालकाः किम् अपश्यन्?
4. पेषणी कथं क्रियाशीला आसीत्?
5. गुरुनानकः तदा कुत्र अतिष्ठत्?

उत्तराणि— 1. कारागारे गुरुनानकः निक्षिप्तः।
2. शासकेन गुरुनानकः पेषणी चालने नियुक्तः।
3. द्वारपालकाः लोकात्तरं चमत्कारम् अपश्यन्।
4. पेषणी स्वचालितयन्त्रम् इव स्वतः क्रियाशीला आसीत्।
5. गुरुनानकः तदा एकस्मिन् कोणे समाधिस्थः आसीत्।

XIII

अस्ति ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती। तमवलोक्य सर्वे शृगालाः चिन्तयन्ति स्मयद्ययं केनाप्युपायेन म्रियते तदास्माकम् एतद्-देहेन मासचतुष्टयस्य भोजनं भविष्यति। तत्रैकेन वृद्ध शृगालेन प्रतिज्ञातम्—मया बुद्धिप्रभावत् अस्य मरणं साधयितव्यम्। अनन्तरं स वञ्चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा साष्टाङ्गपातं प्रणम्योवाच—देव, दृष्टिप्रसादं कुरु।

प्रश्नाः— 1. ब्रह्मारण्ये कः आसीत्?

2. श्रृगालाः कम् अवालोकयन् ?
3. वृद्धश्रृगालेन किं प्रतिज्ञातम् ?
4. वञ्चकः कः आसीत् ?
5. हस्तिदेहेन कियद् भोजनम् अपेक्षितम् ?

उत्तराणि— 1. ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती आसीत्।
2. श्रृगालाः कर्पूरतिलकं नाम हस्तिनम् अवालोकयन्।
3. वृद्धश्रृगालेन प्रतिज्ञातं यत् तेन बुद्धिप्रभावात् हस्तिमरणं साधनीयम्।
4. वञ्चकः वृद्धश्रृगालः आसीत्।
5. हस्तिदेहेने मासचतुष्टयस्य भोजनम् अपेक्षितम्।

XIV

अस्ति मगधदेशशेखरीभूता पुष्पपुरीनाम नगरी तत्र राजहंसो नाम भूपो बभूव। तस्य धर्मपाल पद्मोद्भवीसतवर्मनामधेयाः त्रयाः कुलामात्याः अभूवन्। तेषां सितवर्मणः सुमति-सत्यवर्माणौ धर्मपालस्य सुमन्त्र सुमित्रकामपालाः, पद्मोद्भवस्य सुश्रुतरत्नोद्भवाविति तनयाः समभूवन्। तेषु धर्मशीलः सत्यवर्मा संसारासारतां बुद्ध्वा तीर्थयात्राभिलाषी देशान्तरम् अगच्छत्।

प्रश्नाः— 1. राजहंसः कः आसीत् ?
2. राजहंसस्य अमात्यानां नामानि लिखत।
3. सितवर्मणः पुत्रनाम्नी लिखत।
4. देशान्तरम् कः अगच्छत् ?
5. सत्यवर्मा तीर्थाभिलाषी कथं जातः ?

उत्तराणि— 1. राजहंसः नाम पुष्पपुर्याः भूप आसीत्।
2. राजहंसस्य अमात्यानां नामानि धर्मपालः, पद्मोद्भव सितवर्मा च आसन्।
3. सितवर्मणः पुत्रनाम्नी सुमति-सत्यवर्माणौ आस्ताम्।
4. देशान्तरं धर्मशीलः सत्यवर्मा अगच्छत्।
5. सत्यवर्मा संसारासारतां बुद्ध्वा तीर्थाभिलाषी जातः।

XV

राजा भोजः सर्वं राज्यं कवये दत्त्वा स्वयं लीलादेव्या सह वन गन्तुं तत्परः आसीत्। तस्य अमात्यः बुद्धिसागरः कवेः श्लोक पाठं श्रुत्वा राज्ञा दत्रं राज्यं कोटिद्रव्यमूल्येन प्राप्तवान् राजानं च कथितवान्—'भवदीयमेव राज्यं भुङ्क्ष्व' इति। तदा राजा अमात्यं विशेषेण सम्मानितवान्।

प्रश्नाः— 1. राजा भोजः कस्मै राज्यं दत्तवान् ?
2. बुद्धिसागरः कः आसीत् ?
3. बुद्धिसागरः राज्यं कथं प्राप्तवान् ?
4. बुद्धिसागरः राजानं किं कथितवान् ?
5. राज्यं प्राप्य भोजराजः कं विशेषेण सम्मानितवान् ?

उत्तराणि— 1. राजा भोजः कवये राज्यं दत्तवान्।
2. बुद्धिसागरः भोजराजस्य अमात्यः आसीत्।
3. बुद्धिसागरः कोटिद्रव्यमूल्येन राज्यं प्राप्तवान्।
4. बुद्धिसागरः राजानं कथितवान्—'भवदीयमेव राज्यं भुङ्क्ष्व' इति।
5. राज्यं प्राप्य भोजराजः बुद्धिसागरं विशेषेण सम्मानितवान्।

XVI

असह्यानि कष्टानि सोढ्वा महापुरुषाः भारतं स्वतन्त्रं अकुर्वन्। अल्पकालेन एव देशस्य स्वतन्त्रतायाः रक्षायाः भारः बालकेषु भविष्यति। तेन बालकैः प्राणपणेन भारमातुः सेवार्थं प्रतिज्ञा करणीया। सत्रवः तु भारतदेशं रसातलं नेतुं प्रयतन्ते। देशस्य स्वतन्त्रतां चिरस्थायिनीं विधातुं बलिदानस्य महती अपेक्षा भवति।

प्रश्नाः— 1. महापुरुषाः कथं भारतं स्वतन्त्रं अकुर्वन्?
2. बालकेषु कदा भारत स्वतन्त्रतायाः रक्षाभारः भविष्यति?
3. बालकैः कीदृशी प्रतिज्ञा करणीया?
4. शत्रवः किमर्थं प्रयतन्ते?
5. किमर्थम् बलिदानस्य अपेक्षा भवति?

उत्तराणि— 1. महापुरुषाः भारतं असह्यानि कष्टानि सोढ्वा स्वतन्त्रम् अकुर्वन्।
2. बालकेषु अल्पकालेनैव भारतस्य स्वतन्त्रतायाः रक्षाभारः भविष्यति।
3. बालकैः भारतमातुं प्राणपणेन रक्षार्थं प्रतिज्ञा विधेया।
4. शत्रवः भारतं रसातलं नेतुं प्रयतन्ते।
5. देशस्य स्वतन्त्रतां चिरस्थायिनीं विधातुं बलिदानस्य अपेक्षा भवति।

XVII

सेनासहितं भरतं वीक्ष्य लक्ष्मणः रामाय स्वशङ्कां निवेदितवान्। तत् श्रुत्वा रामः विहसन् प्राह—'नाहं भरतं तथा मन्ये यथा त्वं स्वचेतसि कल्पयसि। सः प्रजाजनैः सह दर्शनेच्छयां एव समायातीति मे मतिः। एवं वदतः एव भरतः रामस्य पादौ जग्राह, न च शशाक वक्तुम्। ततः रामः वारंवारं कृताग्रहोऽपि पितुः आज्ञा-भङ्गभयेन न मेने प्रत्यावर्तनाय।

प्रश्नाः— 1. लक्ष्मणः सेनासहितं कम् अपश्यत्?
2. लक्ष्मणः रामाय किं निवेदितवान्?
3. भरतः किमर्थं समायातः?
4. रामः प्रत्यावर्तनाय किमर्थं न मेने?
5. भरतः किं कर्त्तु न शशाक?

उत्तराणि— 1. लक्ष्मणः सेनासहितं भरतम् अपश्यत्।
2. लक्ष्मणः रामाय भरतविषये स्वशङ्कां निवेदितवान्।
3. भरतः रामं अयोध्यायां प्रत्यावर्तयितुं समायातः।
4. रामः पितुः आज्ञा-भङ्गात् भीतः प्रत्यावर्तनं न स्वीकृतवान्।
5. भरतः वक्तुं न शशाक।

XVIII

दुर्जनानां संसर्गेण बहवो हानयः भवन्ति। तेन मानवः असद्वृत्तो भवति। तस्य शरीरं क्षीणं निर्बलं च भवति। तस्य कीर्तिः नश्यति। तस्य सर्वत्र अनादरो भवति।अतः दर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया। स्वयशोवृद्धये सुखशान्तिलाभाय च सर्वदा सज्जनां संगतिः एव करणीया।

प्रश्नाः— 1. दुर्जनसंसर्गेण किं भवति?
2. कस्य शरीरं क्षीणं दुर्बलं च भवति?
3. कस्य कीर्तिः नश्यति?
4. कैः सह संगतिः करणीया?
5. कैः सह संगो न विधेयः?

उत्तराणि— 1. दुर्जनसंसर्गेण बहवो हानयो भवन्ति।
2. दुर्जनैः संगतस्य मानवस्य शरीरं क्षीणं दुर्बलं च भवति।
3. दुर्जनैः संगतस्य जनस्य कीर्तिः नश्यति।
4. सज्जनैः सह संगतिः करणीया।
5. दुर्जनैः सह संगो न विधेयः।

XIX

विदेशगमनकाले महात्मा गान्धी प्रतिज्ञात्रयम् अकरोत् यथा 'नाहं मदिरां सेविष्ये, नाहं मांसस्पर्शं विधास्यामि, पूर्णरूपेण च ब्रह्मचर्यव्रतम् आचरिष्यामि। विदेशे सः त्रीणि वर्षाणि विधिशास्त्रम् अधीतवान्। स्वदेशम् आगत्य सः बैरिस्टरवृत्तिं प्रारभत तथा च अहिंसामूलस्य सत्याग्रहस्य प्रयोगेन स्वदेशोद्धाराय प्रायतत। दक्षिण-अफ्रीकादेशे भारतीयानां दुर्दशाम् विलोक्य स तेषाम् उद्धाराय अपि यत्नम् अकरोत् सफलतां च प्राप्तवान्।

प्रश्नाः— 1. महात्मा गान्धी प्रतिज्ञात्रयं कदा अकरोत्?
2. सः कियन्तं कालं विधिशास्त्रम् अधीतवान्?
3. स्वदेशम् आगत्य स किं प्रारभत।
4. अफ्रीकादेशे स किम् अपश्यत्?
5. सः कीदृशस्य सत्याग्रहस्य प्रयोगम् अकरोत्?

उत्तराणि— 1. महात्मा गान्धी विदेशगमनकाले प्रतिज्ञात्रयम् अकरोत्।
2. स त्रीणि वर्षाणि विधिशास्त्रम् अधीतवान्।
3. स्वदेशम् आगत्य स वैरिस्टरवृत्तिं प्रारभत।
4. अफ्रीकादेशे स भारतीयानां दुर्दशां अपश्यत्।
5. स अहिंसामूलस्य सत्याग्रहस्य प्रयोगम् अकरोत्।

XX

अस्ति कस्मिश्चिद् ग्रामे हरिदत्तो नाम ब्राह्मणः। तस्य च कृषिं कुर्वतः सदा एव निष्फलः कालो जायते। अथ एकस्मिन् दिवसे स स्वक्षेत्रमध्ये बल्मीकोपरि भीषणं भुजंगमं दृष्टवा चिन्तयामास—नूनम् एषा क्षेत्रदेवता मया न कदाचित् पूजिता। तेन मे

कृषि-कर्म विफलं भवति। तदस्य अद्याहं पूजां करिष्यामि। ततः कुतोऽपि क्षीरमानीय शरावे निक्षिप्य तदन्तिकमुपागत्य उवाच—भो क्षेत्रपाल ! मया तव उपस्थितिरत्र न ज्ञाता अतः पूजा न कृता, तत् क्षमस्व इत्येवमुक्त्वा दुग्धेन तं पूजयित्वा गृहमागच्छत्।

प्रश्नाः— 1. हरिदत्तः स्वक्षेत्रमध्ये किम् अपश्यत् ?
2. सर्पं दृष्ट्वा हरिदत्तः किम् अचिन्तयत् ?
3. सर्पस्य पूजार्थं हरिदत्तः किम् आनयत् ?
4. हरिदत्तः कथं सर्पं पूजितवान् ?
5. हरिदत्तः सर्पं किम् अमन्यत ?

उत्तराणि— 1. हरिदत्तः स्वक्षेत्रमध्ये भीषणं भुजङ्गमम् अपश्यत्।
2. सर्पं दृष्ट्वा हरिदत्तः अचिन्तयत् सर्पदेवतायाः पूजां न कुर्वतो। मम कृषिः विफला जाता, अतोऽहं अद्य अस्याः देवतायाः पूजां करिष्यामि।
3. सर्पस्य पूजार्थं स दुग्धम् आनीतवान्।
4. हरिदत्तः दुग्धेन सर्पं पूजितवान्।
5. हरिदत्तः सर्पं 'कृषिदेवता' इति अमन्यत।

XXI

भारतस्य उत्तरस्यां दिशि महोन्नतः पर्वतराजः हिमालयः वर्तते। यः उत्तरदिशातः प्रहरी इव भारत रक्षति। हिमालयः भारतदेशस्य समृद्धः भूभागः अस्ति, यतः अस्मात् पर्वतात् बह्व्यः नद्यः निस्सरन्ति, देशस्य विशालं भूभागं सिञ्चन्ति च।

प्रश्नाः— 1. अस्य उद्धरणस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।
2. भारतस्य उत्तरस्यां दिशि कः वर्तते ?
3. प्रहरीव भारत कः रक्षति ?
4. भारतदेशस्य समृद्धः भूभागः कः अस्ति ?

उत्तराणि— 1. हिमालयः (शीर्षकः)।
2. हिमालयः भारतस्य उत्तरस्यां दिशि वर्तते।
3. हिमालयः भारतं प्रहरीव रक्षति।
4. हिमालयः भारतदेशस्य समृद्धः भूभागः अस्ति।

XXII

एकदा गोविन्दः आपणे कान्दविकात् मोदकान् क्रेतुमगच्छत्। सः कान्दविकः महावञ्चक आसीत्। सः सदा न्यूनमेवातोलयत्। तदानीमपि सः गोविन्दाय यथोचित मानादल्प-मेवायच्छत् तदा गोबिन्दः अवदत्। किं भोः ! मह्यं पूर्णं परिमाणं न प्रयच्छसीति। तत् श्रुत्वा कान्दविकः प्रत्यवदत्—का हानिः। यावदल्पं ते ददामि तावत्ते भारः सुबहो भविष्यति। गोबिन्दोऽपि तस्य शाठ्यं प्रतिकर्तुमेकेन रूप्यकेन हीनं मूल्यमददात्। ततः स सरोषमाह—किं मेऽल्पमेव मूल्यं ददासि। आम् यथा ते गणनायां नायासो भवेदिति उक्त्वा गोविन्दः गृहम्प्रत्यागच्छत्।

प्रश्नाः— 1. गोविन्दः आपणे किमर्थंगच्छत् ?
2. सः कान्दविकः कीदृशः आसीत् ?

3. यदा स न्यूनमतोलयत् तदा गोविन्दः किमवदत् ?
4. गोविन्दः तस्य शाठ्यं प्रतिकर्तुं किमकरोत् ?
5. अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखत।

उत्तराणि— 1. गोविन्दः आपणे कान्दविकात् मोदकान् क्रेतुम् अगच्छत्।
2. सः कान्दविकः महावञ्चकः आसीत्।
3. यदा सः न्यूनमतोलयत् तदा गोविन्दः अवदत् किं भोः मह्यं पूर्णं परिमाणं न प्रयच्छसीति।
4. गोविन्दः तस्य शाठ्यं प्रतिकर्तुम् एकेन रूप्यकेन हीनं मूल्यम् अददात्।
5. अस्य गद्यांशस्य उचितः शीर्षकः अस्ति—'शठे शाठ्यं समाचरेत्' इति।

XXIII

'संस्कृत दिवसः' रक्षाबन्धन दिने समाजतः सर्वकारतः च सर्वत्र देशे मानितो भवति। संस्कृतभाषायाः गुणान् वैशिष्ट्यानि च बोधयित्वा संस्कृत-हितैषिणः संस्कृतरक्षणाय, संस्कृत-प्रचाराय च संकल्पन्ते। तद् हिताय च कार्यं कर्तु कटिबद्धाः भवन्ति।

प्रश्नाः— 1. अस्य उद्धरणस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।
2. 'संस्कृतदिवसः' कदा कुत्र च मानिती भवति ?
3. संस्कृतहितैषिणः किं कर्तुं कटिबद्धाः भवन्ति ?
4. संस्कृतहितैषिणः किमर्थं संकल्पन्ते।

उत्तराणि— 1. अस्य उद्धरणस्य समुचितः शीर्षकः 'संस्कृतदिवसः' अस्ति।
2. संस्कृतदिवसः रक्षाबन्धनदिने सर्वत्र देशे मानितो भवति।
3. संस्कृत-हितैषिणः संस्कृतहिताय कार्यं कर्तुं कटिबद्धाः भवन्ति।
4. संस्कृत-हितैषिणः संस्कृतरक्षणाय संस्कृतप्रचाराय च संकल्पन्ते।

XIV

पञ्चविंशतिः शतानि वत्सराणां व्यतीतानि यदा गौतमकुलोत्पन्नः सिद्धार्थः इमां भारतभुवम् अलञ्चकार स्वजन्मना। भागीरथ्या उत्तरे तीरे कपिलवस्तु नाम महनीयं नगरमेकमासीत्। शक्यवंशोत्पन्नाः शुद्धोदनस्तत्र राज्यमकरोत्। तस्य मायादेवी नाम सती भार्या अभवत्। तस्याश्च सिद्धार्थों नाम सुनुर्जन्म लभे। स शैशवादेव सुवृत्तो विवेकी चीभूत्।

प्रश्नाः— 1. उपरिलिखितस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।
2. सिद्धार्थः कदा स्वजन्मना भारतभुषम् अलञ्चकार ?
3. 'कपिलवस्तु' नाम नगरस्य कः शासकः आसीत् ?
4. मायादेवी का कीदृशी च आसीत् ?
5. सिद्धार्थे के गुणाः आसन् ?

उत्तराणि— 1. उपरिलिखितस्य गद्यांशस्य उचितः शीर्षकः 'सिद्धार्थः' अस्ति।
2. यदा पञ्चविंशतिः शतानि वत्सराणां व्यतीतानि तदा सिद्धार्थः स्वजन्मना भारतभुवम् अलञ्चकार।
3. शाक्यवंशोत्पन्नः शुद्धोदनः 'कपिलवस्तु' नाम नगरस्य शासकः आसीत्।

4. मायादेवी शुद्धोदनस्य सती भार्या आसीत्।
5. सिद्धार्थः शैशवादेव सुवृत्तो विवेकी चासीत्।

XV

विजयदशमी आर्याणां पर्व अस्ति। अस्यं प्रारम्भः भगवतः रामचन्द्रस्य कालात् अस्ति। अयं महोत्सवः आश्विनमासे शुक्लपक्षस्य दशम्यां सम्पाद्यते। अस्मिन्नेव दिवसे रामः रावणं हतवान्। इदं पर्व शिक्षयति यत् सदा असत्ये सत्यस्य विजयः भवति। क्षत्रिया अस्मिन् अवसरे अस्त्राणां शास्त्राणां पूजां च कर्वन्ति।

प्रश्नाः— 1. विजयदशमी केषां पर्व अस्ति?
2. विजयदशमी कदा सम्पाद्यते?
3. विजयदशमी किं शिक्षयति?
4. अस्मिन् अवसरे क्षत्रियाः किं कुर्वन्ति?

उत्तराणि— 1. विजयदशमी आर्याणाम् पर्व अस्ति।
2. विजयदशमी आश्विनमासे शुक्लपक्षस्य दशाम्यां सम्पाद्यते।
3. विजयदशमी शिक्षयति यत् सदा असत्ये सत्यस्य विजयः भवति।
4. अस्मिन् अवसरे क्षत्रियाः शस्त्राणां पूजां कुर्वन्ति।

XVI

दीपोत्सवः भारतीयानां प्रसिद्धं पर्व अस्ति। अस्य प्रारम्भः रामायणकालात् अभवत्। यदा श्रीरामचन्द्रः रावणं निहत्य अयोध्यायाम् आगच्छत् तदा जनैः स्वस्वगृहेषु मङ्गलसूचकाः दीपकाः प्रज्वालिताः। अस्मिन् उत्सवे जनाः लक्ष्मीपूजां कुर्वन्ति बंगप्रदेशे अस्मिन् अवसरे दुर्गापूजा भवति। अयमुत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्याम् सम्पाद्यते?

प्रश्नाः— 1. दीपोत्सवः कदा सम्पाद्यते?
2. यदा श्रीरामचन्द्रः अयोध्यायाम् आगच्छत् तदा जनाः किम् अकुर्वन्?
3. बंगप्रदेशे दीपोत्सवावसरे किं भवति?
4. दीपोत्सवे जनाः किं कुर्वन्ति?

उत्तराणि— 1. दीपोत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्यां सम्पाद्यते।
2. यदा श्रीरामचन्द्रः अयोध्यायाम् आगच्छत् तदा जनाः स्वस्वगृहेषु मङ्गलसूचकान् दीपकान् प्रज्वलितवन्तः।
3. बंगप्रदेशे दीपोत्सवावसरे दुर्गापूजा भवति।
4. दीपोत्सवे जनाः लक्ष्मीपूजां कुर्वन्ति।

XVII

एकदा कौरवपाण्डवानां शस्त्रकौशलपरीक्षा अभवत्। वृक्षशाखायां लक्ष्यरूपेण एकः कृत्रिमखगः स्थापित आसीत्। आचार्य द्रोणेन पूर्व युधिष्ठिरः आहूतः पृष्टश्च— लक्ष्यवेधवेलायां त्वं किं किं पश्यसि? युधिष्ठिरोऽब्रवीत—अहं खगं, वृक्षं, सर्वान् सहचरान्, भवन्तमपि च पश्यामि। उत्तरं श्रुत्वा द्रोणः अहसत्।

प्रश्नाः— 1. खगः कुत्र स्थापितः आसीत्?
2. केषां शस्त्रकौशलपरीक्षा अभवत्?

3. केन कः आहूतः पृष्टश्च ?
4. युधिष्ठिरस्य उत्तरं किम् आसीत् ?

उत्तराणि— 1. खगः वृक्षशाखायां स्थापित आसीत्।
2. कौरवपाण्डवानां शस्त्रकौशलपरीक्षा अभवत्।
3. आचार्यद्रोणेन युधिष्ठिरः आहूतः पृष्टश्च।
4. युधिष्ठिरस्य उत्तरम् आसीत्—अहं खगं वृक्षं सर्वान् सहचरान् च पश्यामि।

XVIII

संस्कृतभाषा देवभाषा, प्रायः सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, प्रादेशिक भाषाणाञ्च प्राणभूता इति। यथा प्राणी अन्नेन जीवति परन्तु वायुं विना अन्नमपि जीवनं रक्षितुं न शक्नोति, तदैव अस्मद्देश्य कापि भाषा संस्कृतभाषावलम्बं विना जीवितुमक्षमेति निःसंशयम्। अस्यामेव अस्माकं धर्मः, अस्माकपितिहासः, अस्माकं भूतं भविष्यञ्च सर्वं सुसन्निहितमस्ति।

प्रश्नाः— 1. उपरिलिखितस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।
2. संस्कृतभाषा कासां जननी कासाञ्च प्राणभूता अस्ति।
3. प्राणिनः प्राणरक्षार्थं किमावश्यकम् ?
4. संस्कृतभाषावलम्बं विना का जीवितुमक्षमा ?
5. संस्कृतभाषायां किं किं सुसन्निहितमस्ति ?

उत्तराणि— 1. समुचितः शीर्षकः—संस्कृतभाषा।
2. संस्कृतभाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, प्रादेशिकभाषाणां च प्राणभूता अस्ति।
3. प्राणिनः प्राणरक्षार्थं वायुः आवश्यकः भवति।
4. संस्कृतभाषावलम्बं विना अस्मद्-देशस्य काऽपि भाषा जीवितुमक्षमा।
5. संस्कृतभाषायाम् अस्माकं धर्मः, अस्माकमितिहासः, अस्माकं भूतं भविष्यञ्च सर्वं सुसन्निहितमस्ति।

अभ्यास के लिए अनुच्छेद

I

काशीदेशवासी कोऽपि तण्डुलदेवनामा राज्ञे स्वस्ति इति उक्त्वा अतिष्ठत्। राजा तम् अपृच्छत्—सुमते! कुत्र ते निवासः ? तण्डुलदेवः अवदत्—श्रीमन् मालवभूपाल, यत्र रिक्तशाखिनः वाणी कृपाणी भवति, अहं तत्र वसामि। तुष्टः राजा तस्मै गजेन्द्रसप्तकम् अयच्छत्।

प्रश्नाः— 1. तण्डुलदेवः कः आसीत् ?
2. तण्डुलदेवः कस्मै स्वस्ति इति अवदत् ?
3. राजा तण्डुलदेवं किम् अपृच्छत् ?
4. तुष्टः राजा तण्डुलदेवाय किम् अयच्छत् ?
5. राजा किमर्थम् तुष्टः आसीत् ?

II

ततो राजा कालिदासं दूरे समायान्तं वीक्ष्य सानन्दम् आसनात् उत्थाय 'सुकवे, मत्प्रियतम' अद्य कथं विलम्बः क्रियते इति भाषमाणः पञ्चषट्पदानि सम्मुखो गच्छति। ततो निखिलाः सभा आसनात् उत्थिता। सर्वे सभासदश्चमत्कृताः। वैरिणश्चास्य विच्छायवदना बभूवुः। ततौ राजा निजकरकमलेन अस्य करकमलम् अवलम्ब्य स्वासनदेशम् प्राप्य, तं च सिंहासनम् उपवेश्य स्वयं च तदाज्ञया तत्रैवोपविष्टः।

प्रश्नाः— 1. राजा दूरे समायान्तं कम् अपश्यत्?
2. आसनीत् का उत्थिता?
3. सर्वे सभासदः कथम् अभवन्?
4. तस्य वैरिणः कीदृशाः बभूवुः?
5. राजा कालिदासं कुत्र उपवेशयति स्म?

III

ततः सन्तुष्टो राजा निज सिंहासने भोजं निवेशयित्वा छत्रचामराभ्यां भूषयित्वा तस्मै राज्यं ददौ। ततः परलोकपरित्राणाय मुञ्जो निजपट्टराज्ञीभिः सह तपोभूमि गत्वां परं तपस्तेपे। ततो भोजभूपालः देवब्राह्मणप्रसादाद् राज्यं पालयामास।

प्रश्नाः— 1. सन्तुष्टो राजा निजसिंहासने कं न्यवेशयत्?
2. मुञ्जः कैः सह तपोभूमिम् गतः?
3. भोजः केषां प्रसादात् राज्यम् अपालयत्?

IV

एकदा एकस्य शशकस्य वारः समायातः। स भयात् भीतः अतिष्ठत्। त सिंहस्य मारणोपायम् अचिन्तयत्। स तस्य पार्श्वे चिरात् प्राप्तः। बुभुक्षितः सिंह विलम्बस्य कारणम् अपृच्छत्। सह आह—मार्गे अपरः सिहः मां रोधयित्वा अपृच्छत् कुत्र यासीति।

प्रश्नाः— 1. एकदा कस्य वारः समायातः?
2. शशकः किम् अचिन्तयत्?
3. शशकः कस्य पार्श्वे चिरात् प्राप्तः?
4. बुभुक्षितः सिंहः किम् अपृच्छत्?
5. अपरः सिंहः शशकं किम् अपृच्छत्?

V

एकस्मिन् वने एकः सिहः वसति स्म। सः तत्रत्यान् वनजन्तून् प्रतिदिनं तुद स्म। वनजन्तुभिः चिन्तितम्—'अयं तु व्यर्थं महान् जन्तुसंहारः इति।' ते सिंहं गत्वा प्रार्थयन्ति स्म—'भो वनराज, भवान् एवं जन्तुसंहारं न करोतु। अस्माकं मध्ये क्रमशः एकैकः भवत्पार्श्वे भोजनार्थं प्रतिदिनम् आयास्यति तेन भवान् स्वतृप्ति करोतु। सिंह तत स्वीकृतवान्।

प्रश्नाः— 1. सिंहः कुत्र न्यवसत्?
2. वनजन्तून् कः तुदति स्म?
3. वनजन्तुभिः किं चिन्तितम्?

4. सिंहसमीपं गत्वा के प्रार्थयन्ति स्म ?
5. सिंहः प्रार्थनां श्रुत्वा किम् अकरोत् ?

VI

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेतानां युयुत्सुकानां कौरवाणां पाण्डवानां च मध्ये भगवता कृष्णेन अर्जुनम् अभिलक्ष्य गीता वाणी श्रीमद्भगवद्गीता इति नाम्ना वर्तते। अष्टादेशपर्वसु सप्तशतश्लोकेषु महर्षिवेदव्यासेन निबद्धा इयं रचना महाभारतस्य मध्यभागे दीपस्तम्भ इव स्थिता प्रतीयते।

प्रश्नाः— 1. धर्मक्षेत्रं किमस्ति ?
2. धर्मक्षेत्रे के समवेताः ?
3. भगवान् कृष्णः कम् अभिलक्ष्य गीताम् उक्तवान् ?
4. गीतायां कति पर्वाणि सन्ति ?
5. महाभारतस्य मध्ये गीता कथं प्रतीयते ?

VII

भारतस्य संविधाने प्रधानमन्त्रिणः पदम् अतीव महत्त्वपूर्णम् वर्तते। सः राष्ट्रस्य असिद्धानि कार्याणि साधयितुं प्रभवति। सः प्रमुखदलस्य नेता अस्ति। सः मन्त्रिमण्डलस्य अध्यक्षः वर्तते। सः राष्ट्रम् उन्नतिपथं नेतुम् अहोरात्रं प्रयतेत इति काम्यते।

प्रश्नाः— 1. भारतीय-संविधाने किम् अतिमहत्त्वपूर्णम् अस्ति ?
2. कीदृशानि कार्याणि साधयितुं प्रधानमन्त्री प्रभवति ?
3. प्रधानमन्त्री कस्य नेता अस्ति ?
4. मन्त्रिमण्डलस्य नेता कोऽस्ति ?
5. प्रधानमन्त्री किमर्थम् अहोरात्रं प्रयतेत ?

VIII

एकः विदेशीयः वर्षमेकं भारते न्यवसत्। तस्य प्रतिगमनकाले एकेन भारतीयेन पृष्टम्—भारतनिवासेन तव विचारेषु किंचित्परिवर्तनं किम् ? विदेशीयेन उक्तम्—मूलभूतं परिवर्तनं जातम्, आस्तिकोऽस्मि संजातः। भारतीयः प्रसन्नः सन् उक्तवान्—"एतदेव भारतस्य धर्मप्राणता ! कथमेतादृशं जातम् ?" सोऽवदत्—"नात्र मया कोऽपि जनः परिश्रमेण ऋतेन च कार्यं कुर्वन् दृष्टः तथापि सर्वे उदरपूरं भुञ्जन्ति इति सिध्यति एव कोऽपि अलौकिकशक्तिसम्पन्नः भारतपक्षपाती अकर्मण्यकृपालुः। स च ईश्वरं विहाय कोऽन्यः भवितुमर्हति ?

प्रश्नाः— 1. अस्य शीर्षको लिख्यताम् ?
2. कियत्कालं विदेशीयः भारते न्यवसत् ?
3. भारतनिवासेन विदेशीयः किं संजातः ?
4. परिश्रमेण विना उदरपूरं के भुञ्जन्ति ?
5. भारतीयः कथं प्रसन्नः आसीत् ?
6. विदेशीयस्य आस्तिकतायाः मूलम् किम् आसीत् ?
7. ईश्वरः कथम् अलौकिक शक्तिसम्पन्नः अस्ति ?
8. आस्तिकः कः भवति ?

IX

एकः वृद्धप्रिय काकबलिं गृह्णन् गृहात् निर्गत्य काकान् आह्वयति स्म। समायातेषु काकेषु तारं रटन्तं कंचित् काकं श्रुत्वा अतीव भीता विप्रपत्नी अवदत्—"मादृशानां पतिव्रतास्त्रीणां क्रूरध्वनिश्रवणं न सह्यम्।" तद्वचनं श्रुत्वा राजा व्यचिन्तयत्—"इयं तरुणी नुनं दुःशीला वर्तते या स्वपातिव्रत्यं स्वयमेव कीर्तयति।"

प्रश्नाः— 1. अस्य शीर्षको लिख्यताम्।
2. वृद्धप्रियः कान् आह्वयति स्म?
3. विप्रपत्नी कथमं भीता आसीत्?
4. विप्रपत्नी कथं दुःशीला आसीत्?

X

'दहेज' इति शब्दः समाजस्य कलङ्कः अस्ति। तेन निर्धनानां कन्यकाः बहुकालम् अविवाहिताः भवन्ति। मध्यकाले इयं प्रथां सामन्त-वर्गे राजसु एव च आसीत् परम् अद्य जनसाधारणे अपि अस्य प्रभावो वर्तते। कन्यायाः पित्रा किमर्थं धनराशिः दीयते इति अनुत्तरितः प्रश्नः।

प्रश्नाः— 1. समाजस्य कलङ्कः कः अस्ति?
2. अविवाहिताः काः भवन्ति?
3. मध्यकाले दहेज-प्रथा कस्मिन् वर्गे आसीत्?
4. कोऽनुत्तरितः प्रश्नः?

XI

मुहम्मदगोरिणा पृथ्वीराजस्य वन्दीकरणदिने एव भारतवर्षस्य स्वातन्त्र्यम् अपहृतम्। तदनन्तरं भारते परकीयाणां अनेकानि आक्रमणानि अभवन्, मुगलानां च साम्राज्यं स्थापितम्। अस्मिन् संघर्षयुगे एव प्रतापस्य शिवराजस्य च नाम प्रकटितम्। वयं मुगलसाम्राज्यम् उन्मूलयितुं कटिबद्धाः आस्म परं चिकित्साकरणे अपि रोगः विवर्धित एव।

प्रश्नाः— 1. भारतस्य स्वातन्त्र्यं कदा अपहृतम्?
2. मुहम्मदगोरिणा को वन्दीकृतः?
3. भारते केषां साम्राज्यं स्थापितम्?
4. संघर्षयुगे किं प्रकटितम्?
5. चिकित्साकरणे कथं रोगो विवर्धितः?

XII

रजकस्य एकः दुर्बलः गर्दभः आसीत्। एकदा रजकः कुतश्चित् व्याघ्रचर्म प्राप्तवान्। से तेन रासभं प्रच्छाद्य यवक्षेत्रेषु अत्यजत्। रासभः तत्र बहुकालं यावत् रात्रौ यवभक्षणम् अकरोत्। एकदा रासभीं दृष्ट्वा तस्याः शब्दं श्रुत्वा स्वयमपि शब्दापयितुम् आरब्धः। क्षेत्रपालाः तं रासभं ज्ञात्वा लगुडप्रहारैः हतवन्तः।

प्रश्नाः— 1. दुर्बलः कः आसीत्?
2. रजकः किं प्राप्तवान्?
3. रजकः यवक्षेत्रेषु कम् अत्यजत्?

4. रात्रौ यवभक्षणं कः अकरोत्?
5. क्षेत्रपालाः किमर्थं रासभं हतवन्तः?

XIII

1919 तमे वर्षे अप्रैलमासे 13 तारिकायाः वैशाखीपर्वणः दिनं स्वतन्त्रतायाः इतिहासे विशेषं महत्त्वम् अर्हति। तदा जनरल डायरमहोदयेन निःशस्त्रनागरिकाणाम् उपरि गोलिकावर्षणम् कृतम्। सिखयुवकेन ऊधमसिंहेन डायरं हत्वा तेषाम् अत्याचाराणां प्रतिशोधः कृतः।

प्रश्नाः— 1. वैशाखीपर्वणः महत्त्वपूर्णं दिनं किम् अस्ति?
2. निःशस्त्रनागरिकाणाम् उपरि गोलिकावर्षणं केन संजातम्?
3. ऊधमसिंहः कः आसीत्?
4. ऊधमसिंहः अत्याचाराणां प्रतिशोधं कथं कृतवान्?

XIV

ततः कदाचित् भोजराजः कालिदासं प्रति प्राह—"सुकवे, त्वम् अस्माकं चरमग्रन्थं पठ।" ततः क्रुद्धो राजानं विनिन्द्य कालिदासः क्षणेन तं देशं त्यक्त्वा विलासवत्या सह एकशिलानगरं प्राप। ततः कालिदासवियोगेन शोकाकुलं कालिदासं मृगयितुं राजा कापालिकवेषं घृत्वा क्रमेण एकशिलानगरं प्राप।

प्रश्नाः— 1. कालिदासः कः आसीत्?
2. कालिदासः कथं क्रुद्धो जातः।
3. कालिदासः कया सह एकशिलानगरं प्राप?
4. कालिदासं मृगयितुं भोजः किं चकार?

XV

एकदा वाक् शरीरात् उदक्रामत। सा संवत्सरं प्रोष्य प्रत्यागता प्रपच्छ—"कथं भवद्भिः मया विना जीवितम्?" प्राणादयः ऊचुः—यथा मूका अवदन्तोऽपि प्राणेन श्वसन्तः चक्षुषा पश्यन्तः श्रोत्रेण शृण्वन्तो मनसा ध्यायन्तो जीवन्ति एवं वयमपि अजीवाम।" ततश्चक्षुर्निरगच्छत् संवत्सरं प्रोष्य प्रत्यावर्त्य अपृच्छत्—"कथं यूयं मद्गते अजीवत?

प्रश्नाः— 1. शरीरात् का उदक्रामत्?
2. वाक् कियदवधि प्रावसत्?
3. वाचमनु किं निरगच्छत्?
4. वाचमनन किं निरगच्छत्?
5. शरीरे केषां श्रेष्ठत्वम् वर्तते?

XVI

त्रेतायुगे मर्यादापुरुषोत्तमः श्रीरामचन्द्रः पितुः आज्ञां पर्यपालयत्। स चतुर्दशवर्षं यावत् वने न्यवसत्। तत्र न्यवसन् तस्य पत्नी सीता राक्षसराजेन अपहृता। वानराणां साहाय्येन स राक्षसराजं रावणं जघान। रावणस्य बन्धनागरात् सीतां विमोच्य सीतया लक्ष्मणेन च सहितः सः अयोध्यानगरीं निवृत्तः।

प्रश्नाः— 1. मर्यादापुरुषोत्तमः कः आसीत्?
2. रामचन्द्रस्य पत्नी का आसीत्?
3. रामचन्द्रः किमर्थं वने न्यवसत्?
4. सः राक्षसराजं किमर्थं हतवान्?
5. सीता कस्या बन्धनागारात् विमुक्ता?
6. केषां साहाय्येन रामचन्द्रः राक्षसान् हतवान्?
7. लक्ष्मणः कः आसीत्?
8. अयोध्यानगरीं के के निवृत्ताः?

XVII

सङ्कटे समुपस्थिते सति अभिमानिनं क्रुद्धस्वभावं च राजानं तस्य स्वजनाः एव घ्नन्ति। यो भूपः सवकार्यं सम्यक्तया न करोति स शीघ्रमेव राज्यभ्रष्टो भवति। लोकाः लोष्ठानां रजसश्चापि महत्त्वम् आकलयन्ति परं न राज्यभ्रष्टस्य राज्ञः।

प्रश्नाः— 1. क्रुद्धस्वभावं राजानं के घ्नन्ति?
2. कीदृशो राजा राज्यभ्रष्टो भवति?
3. लोकाः केषां महत्त्वम् आकलयन्ति?
4. लोकाः केषां महत्त्वं न आलोकयन्ति?

XVIII

एकदा हर्षः प्रातःकालस्य आदौ स्वप्ने दावाग्नौ दह्यमानम् एकं सिहं स्वशावकान् विमुच्य पावकं प्रविशन्तीं सिहीं च अपश्यत्। एतद् दृष्ट्वा तस्य मनसि अभवत् यत् संसारे प्रेम्णः बन्धनं लोहादपि दृढतरं भवति यतो हि तिर्यञ्चोऽपि तथा कुर्वन्ति। आगामिदिने स कुरङ्गकनाम्नः दूतात् पितुः रुग्णतायाः समाचारम् अश्रृणोत् युगपदेव च कैश्चित् पुरुषैः सह पितुः सकाशं समागतः।

प्रश्नाः— 1. पावके का प्राविशत्?
2. अग्नौ दह्यमानः कः आसीत्?
3. प्रेम्णो बन्धनं कीदृशं भवति?
4. दूतस्य कि नाम आसीत्?
5. हर्षः दूतमुखात् किम् अश्रृणोत्?

XIX

प्राचीनकाले संस्कृतमेव बृहत्तरभारतस्य राज्यभाषा लोकभाषा चासीत्। तदानीं सर्वे जना संस्कृतेन एव व्यवहरन्ति स्म। एकोऽपि भारतीयः तादृशौ नासीत् यः संस्कृतं न जानाति स्म। भारतीयेतिहासस्य स्वर्णकाले संस्कृतमेव राष्ट्रभाषापदे व्यराजत्।

प्रश्नाः— 1. बृहत्तरभारतस्य राज्यभाषा का आसीत्?
2. प्राचीनकाले जनाः कथं व्यवहरन्ति स्म?
3. को जनः संस्कृतं न जानाति स्म?
4. राष्ट्रभाषापदे का भाषा व्यराजत्?

XX

कस्मिश्चिद् वने एकः साधुः प्रतिवसति स्म। स प्रतिदिनं भिक्षायै नगरं गच्छति स्म। एकदा स भिक्षायै एकं गृहम् अगच्छत्। तत्र एका स्त्री विषाक्तां रोटिकां तस्मै प्रायच्छत्। अन्यस्मिन् दिने तस्याः बुभुक्षितः। पुत्रः साधोः कुटीरं गत्वा भोजनम् आयाचत्। साधुः तस्मै तामेव रोटिकां प्रायच्छत्। भोजनोपरान्तं सः पुत्रः मृतः। यः यथा करोति स तथैव फलम् आप्नोति।

प्रश्नाः— 1. साधुः किमर्थं नगरं गच्छति स्म?
2. स्त्री साधवे किं प्रायच्छत्?
3. साधोः कुटीरं क आगतः?
4. पुत्रः कस्मात् कारणात् मृतः?
5. अनया कथया का शिक्षा प्राप्यते?

अष्टम अध्याय

अनुवाद-विधि

किसी एक भाषा के वाक्यों को दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद एक कला है। किसी भी कला को सीखने के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता रहती है। अनुवाद-कला को सीखने के लिए दो बातों का अभ्यास जरूरी है—सर्वप्रथम, व्याकरण के छोटे-बड़े सभी नियमों का ज्ञान हो और दूसरे, प्रत्येक अर्थ को प्रकट करने के लिए उचित शब्द का ज्ञान हो। यदि एक अर्थ को प्रकट करने के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हों, तो प्रस्तुत सन्दर्भ में कौन-सा शब्द भाव एवं प्रसंग की दृष्टि से संगत बैठता है, इसका विवेक वही कर सकता है जिसने उस भाषा के अधिकाधिक साहित्य का अनुशीलन किया हो। अनुवाद सीखने का सरल उपाय यह है कि संस्कृत वाक्यों को पढ़कर हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में पहले उसका अनुवाद कर लेना चाहिए। ऐसे अंग्रेजी या हिन्दी के वाक्यों को फिर से संस्कृत बनाकर मूल संस्कृत वाक्यों से उनकी तुलना करनी चाहिए। अनुवाद का अभ्यास करने के लिए इस पद्धति का अवलम्बन अत्यन्त उपयोगी है।

अनुवाद में यह ध्यान रखना जरूरी होता है कि जिस वाक्य का अनुवाद किया जाता है उसके अर्थ और भावार्थ में कोई अन्तर नहीं आना चाहिए। प्रत्येक भाषा के व्याकरण के अपने-अपने नियम होते हैं। इसलिए भाषा के नियमों का अच्छी तरह से ज्ञान होना चाहिए। हमें हिन्दी भाषा के साथ-साथ संस्कृत भाषा के व्याकरण का ज्ञान भी अच्छी तरह होना चाहिए। संस्कृत भाषा के व्याकरण में भी विशेष रूप से निम्न बातों का ज्ञान होना जरूरी है :

1. संस्कृत व्याकरण पढ़ते समय हमें यह अनुभव हुआ कि संस्कृत शब्दों में संयुक्त अक्षर बहुत हैं तथा वहाँ अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त आदि का विशेष महत्त्व है, अतः संस्कृत के शब्दों का उच्चारण ठीक-ठीक आना चाहिए। इसके अभाव में अशुद्ध उच्चारण होने पर लिखने में भी अशुद्धियाँ होना स्वाभाविक है।

2. संस्कृत में दूसरी बड़ी कठिनाई शब्दों के लिङ्ग-ज्ञान की है। संस्कृत शब्दों के लिङ्गों के लिए कोई विशेष नियम नहीं हैं। यह हमें बार-बार के अभ्यास से ही पता चलता है कि अमुक शब्द पुंल्लिङ्ग है, स्त्रीलिङ्ग है या नपुंसकलिङ्ग है। अनेक ऐसे शब्द हैं जिनका हम हिन्दी में किसी और लिङ्ग में प्रयोग करते हैं किन्तु संस्कृत में उनका लिङ्ग दूसरा होता है। जैसे, मित्र शब्द 'दोस्त' अर्थ में हिन्दी में पुंल्लिङ्ग में होता है, किन्तु संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग में होता है। संस्कृत में यदि हम मित्र शब्द का पुंल्लिङ्ग में प्रयोग करते हैं तो इसका अर्थ 'सूर्य' हो जाता है।

3. संख्यावाचक शब्दों (एक, द्वि, त्रि, इत्यादि) तथा सर्वनाम शब्दों (यत्, तत्, सर्व इत्यादि) के रूप पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में अलग-अलग बनते हैं, अतः इन शब्दों के रूपों को तीनों लिङ्गों में याद करना जरूरी होता है, क्योंकि जब

हम अनुवाद करते हैं तो ये शब्द प्रायः विशेषण के रूप में आते हैं और विशेषणों के रूप में इनका उसी लिङ्ग के रूप का प्रयोग करना होगा जिस लिङ्ग में 'विशेष्य' होता है। विशेष्य-शब्दों के अनुसार ही विशेषण के लिङ्ग होते है।

4. संस्कृत वाक्यों के अनुवाद में धातु-रूपों का विशेष महत्त्व है। पहले तो हमें यह पता होना चाहिए कि अमुक धातु किस गण की है। दूसरे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि यह धातु परस्मैपदी है, आत्मनेपदी है या उभयपदी है। फिर हमें यह देखना है कि वाक्य में जिस काल या अवस्था का निर्देश है उसके अनुसार कौन-से लकार का प्रयोग होना चाहिए। किन्तु इतने मात्र में काम नहीं चलेगा। अन्त में हमें यह देखना है कि वाक्य कर्तृवाच्य में है, कर्मवाच्य में है या भाववाच्य में। यह सब निश्चित हो जाने पर वाच्य के अनुसार कर्त्ता के पुरुष (प्रथम, मध्यम तथा उत्तम) तथा वचन आदि का ज्ञान पूर्ण रूप से करना होगा। जिस पुरुष तथा वचन का कर्त्ता होगा, क्रिया-रूप भी उसी पुरुष तथा वचन का होगा।

5. अनुवाद में णिजन्त (प्रेरणार्थक क्रिया), कृदन्त शब्द एवं उपसर्ग आदि का ज्ञान भी आवश्यक है। धातुओं के पूर्व उपसर्ग कैसे लगाया जाता है, इसका पता होना चाहिए। पहले धातु का लकार रूप बना लिया जाता है तथा उसके पश्चात् धातु रूप से पहले उपसर्ग लगाया जाता है, जैसे—गम् धातु का लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में अगच्छत् रूप बन जाने पर इसके पूर्व प्रति तथा आ उपसर्ग लगाने से प्रत्यागच्छत् (प्रति + आ + अगच्छत्) रूप बनेगा। ऐसे ही कृदन्त रूपों में यदि क्त्वा का रूप हो तथा उससे पूर्व उपसर्ग आ गया हो तो क्त्वा को ल्यप् हो जायेगा। श्रु धातु से क्त्वा में श्रुत्वा रूप बनता है परन्तु इसके पूर्व प्रति उपसर्ग आने से प्रतिश्रुत्य रूप हो जाएगा।

6. अनुवाद में कारक, विभक्तियों तथा उपपद-विभक्तियों का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रायः परीक्षा में अनुवाद के लिए जो वाक्य आते हैं उनमें उपपद-विभक्ति से सम्बन्धित कुछ वाक्य अवश्य होते हैं। कारक रूपों में भी वचन का ध्यान रखा जाना जरूरी है।

7. संस्कृत में विशेषण और विशेष्य का अनुवाद में बहुत महत्त्व रहता है। कई बार तो हिन्दी भाषा में वाक्य में विशेषण विशेष्य से पहले आता है, किन्तु अनेक बार ऐसा भी होता है कि विशेष्य के बाद विशेषण आता है। चाहे विशेषण विशेष्य से पहले आये या विशेष्य के बाद में आये, चाहे विशेषण गुणवाचक हो अथवा परिमाणवाचक, चाहे वह सार्वनामिक हो या संख्यावाचक, लिङ्ग और वचन की दृष्टि से जो लिंग और वचन विशेष्य का होता है वहीं लिंग और वचन विशेषण का रहेगा।

8. क्रिया-विशेषण शब्द अव्यय होते हैं। उनके रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता। हमें अनुवाद के लिए संस्कृत के अव्यय शब्दों तथा उनके अर्थों का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए, तभी हम वाक्य के अन्तर्गत सभी शब्दों का अनुवाद कर सकते हैं।

9. अनुवाद को उत्तम बनाने के लिए हम वाक्य में संस्कृत शब्दों के बीच में सन्धि कर सकते हैं या फिर ऐसे शब्दों का चयन करना चाहिए, जिनमें सन्धि की अपेक्षा कम-से-कम हो।

अभ्यास 1

1. चार बालिकाओं में शकुन्तला कौन-सी है? — चतसृषु बालासु शकुन्तला कतमा?
Which of the four girls is Shakuntala?
2. साधुओं का चरित्र अनुकरण के योग्य है। — साधूनां चरित्रम् अनुकरणनीयम्।
The conduct of the mendicants is worthy of immitation.
3. आप दोनों के पुत्र कहाँ पढ़ते हैं? — भवतः पुत्रौ कुत्र पठतः?
Where do the sons of both of you study?
4. क्या तुम्हारी धन की इच्छा बढ़ गई है? — किं तव धनलिप्सा वर्धिता?
Has your desire for wealth increased?
5. उस के सब अर्थ सिद्ध हो गये। — तस्य सर्वार्थाः सिद्धाः।
All his aims were accompolished.
6. पेड़ के कोटर में सांप रहता है। — वृक्षस्य कोटरे सर्पः न्यवसत्।
There lived a snake in the hollow of the tree.
7. शेरों के मुँह किसने धोये? — सिंहानां मुखानि केन प्रक्षालितानि?
Who washed the mouths of the lions?
8. तुम सत्य व धर्म के मार्ग में स्थित हो। — त्वं सत्यस्य धर्मस्य च मार्गे स्थितोऽसि।
You stand on the path of truth and righteousness.

अनुवाद करो (Translate)

1. आप के भय से वह मेरी शरण आया है।
He has come to my resort due to the fear from you.
2. राजा के वचनों को सुन कर पक्षी बोला।
The bird spoke after listening to the words of the king.
3. धर्म को आठ प्रकार का माना जाता है।
Dharma is considered to be of eight types.
4. उस का फल उसे अवश्य मिलेगा।
He will certainly get his fruit.
5. वह लेट कर पढ़ता है इस कारण उस की कमर सीधी नहीं है।
He reads in a lying position, so his back is not straight.
6. सन्तोष का फल मीठा होता है।
The fruit of contentment is sweet.
7. उसको दिल का रोग हो गया।
He had a heart attack.
8. रमा घर का काम अच्छा करती है।
Rama is well in household work.

9. उसे विद्यालय के काम की चिन्ता नहीं है।
He is not worried about the school work.
10. मोहन की गाड़ी में कौन सो रहा है?
Who is sleeping in the Mohan's cart ?

अभ्यास 2

1. आकाश मेघों से व्याप्त है। आकाशः मेघैः संवृतः अस्ति।
The sky is overcast with clouds.
2. यह घड़ी आप ने किस से बनवाई है? इमां घटिकां भवान् केन कारितवान्?
To whom did you ask to make this watch ?
3. वह पैर से लंगड़ा है। सः पादेन खंजः अस्ति।
He is lame of leg.
4. वह दिल से साफ है। सः मनसा पवित्रः आस्ति।
He is pure from heart.
5. जलप्लावन से क्या हानि होती है? जलप्लावनेन का हानिः भवति?
What are the demerits of the floods?
6. तुम ब्रह्मचारियों के साथ खेलो। यूयं वटुभिः सह क्रीडत।
You play with the Vatus.
7. शिष्यों के बताने पर महर्षि वहाँ आये। शिष्यैः निवेदितः महर्षिः तत्रागच्छत्।
The great sage did come there when the disciples told him.
8. तुम दोनों मेरे साथ युद्ध करो। युवां मया सह युद्धं कुरुतम्।
Both of you fight with me.
9. वे दोनों अपनी माँ के साथ रहते थे। तौ स्वजनन्या सह न्यवसताम्।
Both of them lived with their mother.
10. वह धर्मपूर्वक लोगों की रक्षा करता है। सः धर्मेण जनान् रक्षति।
He protects the people with Dharma.

अनुवाद करो (Translate)

1. तुम से यह चित्र देखा जाना चाहिये।
This picture should be seen by you.
2. भिक्षुक के द्वारा धनिक से धन माँगा जाता है।
Money is asked for from the rich by the beggar.
3. माता के द्वारा बालक विद्यालय ले जाया जाता है।
The boy is taken to the school by the mother.
4. बालक के द्वारा चन्द्र बिम्ब देखा गया।
The moon-orbit was seen by the boy.
5. उस के द्वारा पश्चाताप किया गया।
Repentance was committed by him.

6. आत्मा से आत्मा का उद्धार करना चाहिये।
Soul should be elevated through soul.
7. वह दोनों हाथों से दान देता है।
He donates with both hands.
8. वह मन से अच्छी तरह सोच कर कार्य करता है।
He works after well-thought.
9. धन से क्या नहीं मिल सकता?
What can't be achieved by the wealth ?
10. जिस मार्ग से महाजन जाते हैं वही मार्ग है।
That is the path which is used by the great persons.

अभ्यास 3

1. उसने यान को देख कर सोचा। सः यानम् अवलोक्य अचिन्तयत्।
Seeing the cart, he thought.
2. उसने अच्छी तरह सोचकर प्रश्न पूछा। सः सम्यक् विचार्य प्रश्नम् अपृच्छत्।
He asked the question after well-thought.
3. वह फल लेकर घर आई। सा फलानि आदाय गृहमागता।
She taking the fruits, came home.
4. ज्ञान प्राप्त कर तुम सुखी हो जाओगे। ज्ञानं प्राप्य त्वं सुखी भविष्यसि।
You will be happy after getting knowledge.
5. घर आकर वह आसन पर बैठ गया। गृहमागत्य सः आसने उपविशत्।
He sat on the seat after coming home.
6. सूर्य की पूजा कर के भोजन करो। सूर्यम् उपास्य भोजनं कुरु।
Take your meals after worshipping the sun.
7. मैं सौ फल खरीदना चाहता हूँ। अहं फलानां शतं क्रेतुमिच्छामि।
I want to buy hundred fruits.
8. वह दिल्ली जाना चाहता है। सः दिल्ली-नगरं गन्तुमिच्छति।
He wants to go to Delhi.
9. उसने पशु को छोड़ने के लिए कहा। सः पशुं त्यक्तुमुक्तवान्।
He asked to leave the animal.
10. वह पशु को भूमि पर डाल कर घर चला गया। सः पशुं भुवि निक्षिप्य गृहं प्रचलितः।
He went home, after throwing the animal on the earth.

अनुवाद करो (Translate)

1. क्या यहाँ तुम सोने के लिए आये हो?
Have you come here to sleep ?

2. क्या तुम्हें वहाँ जाने के लिए गाड़ी चाहिये?
Do you want car to go there ?
3. क्या मुझे भी उन्हें प्रणाम करना चाहिये?
Should I too bow to them ?
4. क्या सूर्य को भी दीपक की आवश्यकता है?
Does even the sun need the lamp ?
5. क्या पढ़ने के लिए भी तुम स्वतन्त्र नहीं हो?
Are you not free even to make your studies ?
6. क्या छूने से ये फल खराब हो जायेंगे?
Will these fruits be rotten by touching ?
7. क्या धर्म से अर्थ और काम प्राप्त हो सकते हैं?
Can wealth and sex be obtained by Dharma ?
8. क्या विद्यालय से वह अभी तक नहीं आया?
Did he not come from the school as yet ?
9. क्या सुबह से तुम उस की इन्तजार कर रही हो?
Are you waiting for him since morning ?
10. क्या तुम मुझे मरने के बाद भी याद करोगे?
Will you remember me even after my dealth ?

अभ्यास 4

1. पके हुये फल देखकर वे लालायित हुए। Seeing the ripe fruits, they were anxious to get them. — पक्वानि फलानि दृष्ट्वा ते लालायिताः अभवन्।
2. उन्होंने केवल बीस फल खरीदे। They purchased twenty fruits only. — तैः केवलं विंशतिः फलानि क्रीतानि।
3. श्री कृष्ण का जन्मोत्सव भी वर्षाकाल में होता है। The Birth day festival of Lord Krishna is also held in the rainy season. — भगवतः कृष्णस्य जन्मोत्सवः अपि वर्षाकाले भवति।
4. काम से क्रोध उत्पन्न होता है। The anger is born out of desire. — कामात् क्रोधः अभिजायते।
5. वर्षा में तालाब जल से भर जाते हैं। The ponds are full of water during rainy season. — वर्षायां सरांसि जलपूर्णानि सन्ति।
6. काले जामुन स्वादिष्ट होते हैं। Black Jamun fruits are full of taste. — श्यामवर्णानि जम्बूफलानि स्वादूनि भवन्ति।
7. सुप्त बीज भी वर्षाकाल में उग जाते हैं। Seeds which are asleep too grow in the rainy season. — सुप्तानि बीजानि अपि वर्षाकाले प्ररोहन्ति।

8. मेघों का गर्जन सुनकर वन में मोर नाचते हैं। — मेघानां गर्जनं श्रुत्वा वने मयूराः नृत्यन्ति।
Listening to the thundering sound of the clouds, the peacocks dance in the jungle.
9. नये पत्ते सब के मन को हर लेते हैं। — नवपल्लवानि सर्वेषां मनांसि हरन्ति।
New leaves attract every mind.
10. एक वर्ष में बारह महीने होते हैं। — एकस्मिन् वर्षे द्वादश मासाः भवन्ति।
There are twelve months in a year.

अनुवाद करो (Translate)

1. इन्द्र का वचन सुनकर वह प्रसन्न हो गया।
Listening to the Indra's words, he became happy.
2. वह प्रातः चार बजे उठता है।
He gets up at four in the morning.
3. हाथ मुँह धोकर वह घूमने के लिए बाहर निकल जाता है।
He goes out for a walk after washing her hands and mouth.
4. वह गुरुजनों की सेवा करता है।
He serves his teachers.
5. वह बड़ों की आज्ञा शिरोधार्य करता है।
He carries out the order of the elders.
6. वह अपना पाठ मन लगाकर याद करता है।
He learns his lesson with concentration.
7. वह सदा ठंडे पानी से स्नान करता है।
He always takes a bath from the cold water.
8. वह नित्य व्यायाम करता है।
He takes exercise daily.
9. वह स्वाध्याय से कभी प्रमाद नहीं करता।
He never ignores self-study of the scriptures.
10. वह प्रातः तथा सायं सन्ध्या करता है।
He worships God in the morning and evening.

अभ्यास 5

1. वह आपके साथ कब से रहते हैं? — ते भवता सह कदा प्रभृति निवसन्ति?
Since when do they live with you?
2. यह पत्र आप को कहाँ से मिला? — इदं पत्रं भवान् कुतः लब्धवान्?
From where did you get this letter?
3. यहाँ कितना जल है? — अत्र कियज्जलं विद्यते?
How much water is there at this place?
4. तुम यहाँ कितने छात्र रहते हो? — यूयम् अत्र कति छात्राः निवसथ?
How many students live here?

5. यह कैसा जमाना है? — अयं कीदृशः युगः अस्ति?
What type of period is this?
6. कोई यक्ष वहाँ रहता था। — कश्चिद् यक्षः तत्र न्यवसत्।
Some Yaksha lived there.
7. तुम किस नगर में रहते थे? — त्वं कस्मिंश्चित् नगरे न्यवसः?
In which city did you live?
8. जिस किसी पर विश्वास मत करो। — यस्मिन् कस्मिश्चिद् विश्वासं न कुरुत।
Do not rely upon the person, whosoever.
9. किस ने तुम्हें बुलाया है? — त्वं केन आहूतोऽसि?
Who has called you?
10. यह पुस्तक किसे दोगे? — इदं पुस्तकं कस्मै दास्यसि?
Whom would you give this book?

अनुवाद करो (Translate)

1. यह कैसा आडम्बर है?
What a show is this?
2. तुम कैसी बातें करती हो?
What kind of talk do you make?
3. वह कितना नीच है?
How mean is he?
4. क्या वह इतना गिर गया है?
Has he stooped so low?
5. क्या वह तुम पर विश्वास करेगा?
Will he rely upon you?
6. क्या हम उन्हें पहचान लेंगे?
Shall we recognise them?
7. क्या आज सूर्य बादलों में छिपा रहेगा?
Will the sun remain hidden in the clouds today?
8. तुम किसकी बात कर रहे थे?
Whom were you talking about?
9. यह कैसी सुन्दर जोड़ी है!
How beautiful this couple is!
10. जमाना कितना बदल गया है?
How much has the time changed?

अभ्यास 6

1. इन्द्र ने वृत्रासुर को मार दिया। — इन्द्रः वृत्रासुरम् अमारयत्।
Indra killed the demon Vrtrasur.

2. तुम इन हड्डियों को स्वीकार करो। त्वम् इमानि अस्थीनि स्वीकुरु।
You should accept these bones.
3. वह कभी यहाँ नहीं आयेगा। सः कदापि अत्र न आयास्यति।
He will never come here.
4. जो लोगों को सताते हैं वे मेरे शत्रु हैं। ये जनान् पीडयन्ति ते मम रिपवः।
Those who tease the people are my enemies.
5. इसे हम बाँधकर यहाँ लाते हैं। वयम् इमं बद्ध्वा अत्र आनयामः।
We bring here this man after binding.
6. ग्रामाधिकारी किसलिए नियुक्त किया गया था? ग्रामाधिकृतः किमर्थम् नियुक्त आसीत्?
What for had the village officer been appointed ?
7. समुद्र के किनारे की शीतल वायु सेवन करने योग्य है। समुद्रतीरे शीतलवायुः सेव्यः।
The cool breeze of the sea-beach is worth enjoying.
8. सज्जनों की संगति करनी चाहिये। सज्जनैः सह संगतिः करणीया।
We should accompany the noble persons.
9. मण्डप में नौका से पहुँचा जा सकता है। मण्डपः नौकया प्राप्यः।
We can reach Mandap by boat.
10. कन्याकुमारी भारत के दक्षिण में स्थित है। कन्याकुमारी भारतस्य दक्षिणे कोणे तिष्ठति।
Kanyakumari is located in the south of Bharata.

अनुवाद करो (Translate)

1. वह मुझ सोये हुए के बालों को काटता है।
He cuts my hair during sleep.
2. भूख से पीड़ित मुझे भोजन दो।
Give meals to me who is dying of hunger.
3. कुएँ में प्रवेश करके मेरे शत्रुओं को नष्ट करो।
Finish my enemies after entering into the well.
4. मैं तेरा क्या प्रिय करूँ?
What good may I do for you ?
5. शत्रु को शत्रु से मारना चाहिये।
Enemy should be killed through his enemy.

6. भक्ष्य तथा भक्षक में कैसी मित्रता?
What friendship can there between the eater and the object of eating.
7. मार्ग के दोनों और छायादार वृक्ष हैं?
There are shady trees on both sides of the road.
8. वह उस का परम मित्र हो गया।
He became his fast friend.
9. वह भूख से मर रहा है।
He is dying of hunger.
10. वह दूध लेकर आता है।
He is coming, carrying milk?

अभ्यास 7

1. तुम कैसी बात करते हो? — त्वं कथं वार्तयसि?
How do you talk?
2. क्या यह सब स्वप्न था? — किमिदं सर्वं स्वप्नम् आसीत्?
Was it all a dream?
3. तुम किसलिये यहाँ आये हो? — त्वं किमर्थम् अत्र आगतोऽसि?
What brings you here?
4. यदि तुम नहीं दोगी तो तुम दासी हो। — यदि त्वं न दास्यसि तदा त्वं दास्यसि (दासी+असि)।
If you do not give, then you are a maid servant.
5. तुम कैसी दासी हो? — त्वं कीदृशी दासी असि?
What kind of maid servant you are?
6. प्रजापति ने हरि को सब कुछ बता दिया। — प्रजापतिः हरये सर्वं न्यवेदयत्।
Prajapati told everything to Hari.
7. हरि ही हमें बचा सकते हैं। — हरिः एव अस्मान् रक्षितुं समर्थः।
Hari alone can save us.
8.
क्या तुम भी दिल्ली जाना चाहते हो? — किं त्वमपि इन्द्रप्रस्थं गन्तुम् इच्छसि?
Do you also want to go to Delhi?
9. क्या आप हम से नाराज हैं? — किं भवान् अस्मासु अप्रसन्नः अस्ति?
Are you unhappy with us?
10. भगवान् भी मनुष्य को अपना प्यार बाँटते हैं। — ईश्वरोऽपि मानवाय स्वस्नेहं वितरति।
God also distributes his love for men.

अनुवाद करो (Translate)

1. तुम किस के कहने से यहाँ आये हो?
Who has brought you here?

2. काँटे से काँटा निकाला जाता है।
Diamond cuts diamond.
3. चिन्ता से सब कुछ नष्ट हो जाता है।
Everything goes away due to worries.
4. धैर्य से सब काम सिद्ध हो जाते हैं।
All works are completed by forbearance.
5. तुम किस की सहायता से पुल बाँधोगे?
With whose help will you make the bridge?
6. उस का क्या नाम है?
What is his name?
7. क्या तुम फिर भी उसके पास जाओगे?
Will you again go to him?
8. उस को कभी अकल नहीं आयेगी।
He will never act wisely.
9. सूर्य का पूर्व दिशा से निकलना निश्चित है।
Rising of the sun in the east is certain.
10. इस ब्राह्मण के मनोरथों को पूरा करो।
Fulfil the wishes of this Brahman.

अभ्यास 8

1. सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। सूर्यः पूर्वस्यां दिशि उदेति।
The sun rises in the east.
2. सूर्य पश्चिम दिशा में अस्त होता है। सूर्यः प्रतीच्याम् अस्तमेति।
The sun sets in the west.
3. कृपया शोर मत कीजिए। कृपया कोलाहलेन अलम्।
Please do not make a noise.
4. सदा सच बोलो। सदा सत्यं वद।
Always speak truth.
5. रामायण के लेखक कौन हैं? रामायणस्य लेखकः कोऽस्ति।
Who is the author of the Ramayana.
6. परिश्रम सफलता की कुंजी है। परिश्रमः साफल्यस्य कुञ्जी अस्ति।
Hard work is a key to success.
7. कृष्ण ने कंस को मथुरा में मारा था। कृष्णः कंसं मथुराया जघान।
Krishna had killed Kansa in Mathura.
8. तपस्वी वनों में रहते हैं। तपस्विनः वनेषु निवसन्ति।
The ascetics live in the forests.
9. रामायण की कथा सुन्दर है। रम्या रामायणी कथा।
The Ramayana story is charming.
10. काव्यों में नाटक सुन्दर होता है। काव्येषु नाटकं रम्यम्।
Drama is charming among the Kavyas.

अनुवाद करो (Translate)

1. तू ही यह काम कर।
   You alone would do this work.
2. शायद वह इस काम को करे।
   He might do this work.
3. एक कर्म करता है फल अनेक भोगते हैं।
   One does the work, many enjoy its fruit.
4. सुन्दरी शरीर के अंगों को सजाती है।
   The beautiful lady decorates the parts of her body.
5. वह काम करता दिखाई नहीं देता।
   He is not seen while doing work.
6. न जाने कोई काम करेगा या नहीं।
   God knows, someone will do the work or not.
7. व्याकरण शब्दों को खोल-खोल कर बता देता है।
   Grammar describes the words in detail.
8. प्रजातन्त्र में प्रजा ही राज्य करती है।
   In democracy, the people run the administration.
9. नीच बोलता जाता है, करता नहीं।
   The low speaks on, but does not act.
10. सज्जन बोलता नहीं, करता है।
    The noble does not speak, but acts.

अभ्यास 9

1. दिन के समय चन्द्रमा दिखाई नहीं देता। The moon is not seen during daytime.	दिवा चन्द्रः दृष्टिपथं नायाति।
2. गाँव के चारों और जंगल है। There is forest around the village.	ग्रामं परितः वनं विद्यते।
3. युद्ध में रावण को किस ने मारा था? Who had killed Ravana in the battle.	युद्धे रावणं कः अमारयत्?
4. मैंने निर्धन को एक गाय दान में दी है। I have donated a cow to the poor.	अहं निर्धनाय गामेकाम् दानेन अयच्छत्।
5. कृपया धीरे-धीरे चलिए। Please go slowly.	कृपया शनैः-शनैः चलितव्यम्।
6. वृक्ष पर कुछ पक्षी हैं। There are some birds on the tree.	वृक्षे केचन खगाः सन्ति।
7. बालक बन्दर से डरता है। The boy is afraid of the monkey.	बालः वानरात् बिभेति।
8. केवल पेट को कौन नहीं भर लेता? Who does not fill up the belly?	उदरं को न बिभर्ति केवलम्।

9. दीपावली के शुभ दिन हम हवन करेंगे। दीपावल्याः शुभे दिवसे वयं होष्यामः।
We shall perform Havana on the auspicious day of Deepawali.

10. तू ने कब हवन किया? त्वं कदा अजुहोः?
When did you perform Havana?

अनुवाद करो (Translate)

1. कवि ने सुन्दरता का वर्णन किया।
The poet described the beauty.
2. शिशु माँ की गोद में सोया।
The child slept in the mother's lap.
3. शिष्यों ने पाठ पढ़े।
The disciples learnt the lessons.
4. चिट्ठी किस ने लिखी?
Who wrote the letter?
5. सब ने भेद जान लिया।
All knew the secret.
6. मेरे कपड़ों को धोबी ले गया।
The washerman took away my clothes.
7. अर्जुन ने चिड़िया को देखा।
Arjuna saw the sparrow.
8. मेरा बेटा कहाँ गया?
Where did my son go?
9. सुनो, जा कर स्नान करो।
Listen, go and take bath.
10. छात्रों को प्रातः उठना चाहिये।
The students should get up in the morning.
11. दूसरे का धन नहीं लेना चाहिए।
We should not take other's wealth.
12. तुम्हें फूल तोड़ने चाहिये।
You should pluck the flowers.
13. वीरों को शत्रु जीतने चाहिये।
The brave should win over the enemies.
14. यह जल पीने योग्य है।
This water is worth drinking.
15. हमारा उपदेश उससे ग्रहण नहीं किया जाता।
Our sermon is not accepted by him.
16. क्या यह जूता तुम्हें चुभता है।
Does this shoe pinch you?
17. मैंने पिछले साल यह घर खरीदा?
I purchased this house last year.
18. चूहा रात-दिन अन्न चुराता है।
The mouse steals the grains day and night.

19. जो ऊपर को काटता है वह उल्लू कहा जाता है।
One who cuts at the top is called 'owl'.

20. गेहूँ को कौन खरीदेगा ?
Who will purchase the wheat ?

अभ्यास 10

1. पं. जवाहरलाल नेहरू का नाम कौन नहीं जानता ?
Who does not know the name of Pt. Jawahar Lal Nehru?
को न जानाति पण्डितस्य-जवाहरलालनेहरू-महोदयस्य नामधेयम् ?

2. उन्होंने उच्च शिक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्राप्त की।
He got his higher education at Cambridge University.
सः उच्चशिक्षां कैम्ब्रिज-विश्वविद्यालये लब्धवान्।

3. उज्जयिनी भारत की एक प्राचीन नगरी है।
Ujjain is an old city of India.
उज्जयिनी भारतस्य एका प्राचीना नगरी वर्तते।

4. मुनि तपस्या से महान् होता है।
An ascetic is great by the penance.
मुनिः तपोभिः महान् भवति।

5. आप किस कक्षा के छात्र हैं ?
In which class do you read?
भवान् कस्यां कक्षायाम् अधीते ?

6. दिल्ली भारत की राजधानी है।
Delhi is the capital of India.
दिल्ली-नगरं भारतस्य राजधानी अस्ति।

7. मैं इस वर्ष दसवीं की परीक्षा दे रहा हूँ।
This year, I am appearing in the secondary examination.
अस्मिन्वर्षे अहं दशम-कक्षायाः परीक्षां दास्यामि।

8. छात्रों को अनुशासन के पालन की शिक्षा भी दी जानी चाहिये।
The students should also be educated in the discipline making.
अनुशासन-निर्वाहस्य शिक्षा अपि छात्राणां कृते प्रदेया।

9. मुनि ने कौए द्वारा ले जाए जाते हुए चूहे के बच्चे को देखा।
The ascetic saw the child mouse being carried by the crow.
मुनिः काकेन नीयमान मूषिक-शावकम् अपश्यत्।

10. मुनि के ऐसा कहने से वह फिर चूहा बन गया।
Being said so by the sage, he again became mouse.
मुनिना इति उक्तः सः पुनः मूषिकः अभवत्।

अनुवाद करो (Translate)

1. एक महावन में कोई संन्यासी रहता था।
There lived an ascetic in a great jungle.

2. एक बार उस देश का राजा उस वन के मार्ग से गुजरा।
Once the king of that country passed by the road of that forest.

3. उस साधु ने उसे शेर बना दिया।
That sadhu made him lion.
4. मेरी इच्छा तो उसके दर्शन से पूरी हो गई।
My desire was fulfilled merely by his sight.
5. मेरी राय में तो यह व्यक्ति साक्षात् पशु है।
This fellow is an animal in my opinion.
6. एक घोड़ा सौ गधों से अच्छा होता है।
One horse is better than one hundred donkeys..
7. किसी राजा के चार पुत्र थे।
Some king had four sons.
8. यह सुनकर राजा हँस पड़ा।
Listening to that, the king laughed at..
9. यह हितकारक वचन क्या आप को ज्ञात नहीं?
Don't you know this useful statement?
10. उनमें एक पुत्र बहुत दुर्बल था।
Among them, one son was very much weak.

अभ्यास 11

1. ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। Whatever God does does for the right.	ईश्वरः यत्करोति तत् शोभनमेव भवति।
2. ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में विद्यमान है। God is present in the hearts of all beings.	ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे तिष्ठति।
3. महात्मा गाँधी का कथन है कि सत्य ही ईश्वर है। Mahatma Gandhi's statement is "that truth is God".	महात्मा गाँधी कथयति स्म "सत्यमेव ईश्वरः" इति।
4. विद्या से व्यक्ति नम्र होता है। The knowledge makes us humble.	विद्या विनयं ददाति। *अथवा* विद्यया जनः विनीतो भवति।
5. गुण ही पूजा के स्थान हैं। Merits are the places of worship.	गुणाः एव पूजास्थानम्।
6. महर्षि लोग संस्कृत को देवभाषा भी कहते हैं। The great sages call Sanskrit as 'Language of gods'.	महर्षयः संस्कृतं देवभाषा इति अपि कथयन्ति।
7. चारों वेद, रामायण और महाभारत संस्कृत की अमूल्य निधि हैं। Four Vedas, the Ramayana as well as the Mahabharata are priceless treasure of Sanskrit.	चत्वारः वेदाः, रामायणं, महाभारतं च संस्कृतस्य अमूल्यः निधिरस्ति।

8. संस्कृत के कवि कुलगुरु कालिदास की तुलना आङ्ग्लभाषा के प्रसिद्ध महाकवि शकेसपीयर से की जाती है।
संस्कृतस्य कविकुलगुरुः कालिदासः आङ्ग्लभाषायाः प्रसिद्धमहाकविना शेक्सपीयर-महोदयेन उपमीयते।
Kalidasa, the teacher of the family of Sanskrit poets, is compared with the English great poet, Shakespeare.

9. सारी उपनिषदे गौ के समान हैं और भगवान् कृष्ण गोपालक के समान है।
सर्वाः उपनिषदः गावः इव, भगवान् कृष्णश्च गोपालकः इव।
All the Upanishads are like cows and the lord Krishna is like cowherd.

10. महाभारत वेदव्यास की एक प्रख्यात रचना है जिसका प्रसारण आजकल दूरदर्शन से किया जा रहा है।
महाभारतं वेदव्यासस्य प्रसिद्धं काव्यमस्ति यत् च अद्यत्वे दूरदर्शने प्रसार्यते।
The Mahabharata is a famous work of Veda Vyasa which is being telecast on television these days.

अनुवाद करो (Translate)

1. कल उस का भाई आया था।
Yesterday his brother had come.
2. तुम्हें सच बोलना चाहिए।
You should speak truth.
3. तुम गुरु की बात मानो।
You should obey your teacher.
4. जीवन तो पानी का बुलबुला है।
Life is a bubble of water.
5. राजा के मन को देवता भी नहीं जानते।
Even the gods do not know the king's mind.
6. संघर्ष का नाम ही जिन्दगी है।
Struggle is named as life.
7. मनुष्य मौत से डरता है।
Man is afraid of the death.
8. अपनी बड़ाई सुनकर फूलना नहीं चाहिए।
One should not be haughty after listening to one's praise.
9. विद्या छिपा हुआ धन है।
Knowledge is a hidden wealth.
10. हमें राम की तरह व्यवहार करना चाहिये।
We should act like Rama.

अभ्यास 12

1. वह योग्य बालक है जो प्रतिदिन स्कूल में उपस्थित रहता है। — सः योग्यः बालकः, यः प्रतिदिनं विद्यालये उपस्थितो भवति।
He is a good boy who is present in the school everyday.
2. महाराजा चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्र में निवास करते थे। — महाराजः चन्द्रगुप्तः पाटलिपुत्र-नगरम् अधिवसति स्म।
The emperor Chandragupta lived in Pataliputra (Patna).
3. कल हम अपने मित्र के घर जायेंगे। — श्वः वयं निजमित्रस्य गृहं गमिष्यामः।
Tomorrow we shall go to the house of our friend.
4. मेर सिर में बहुत दर्द है। — मम अतीव शिरोवदनं वर्तते।
I have severe headache.
5. तुम को इस पाप का फल मिलेगा। — त्वम् अस्य पापस्य फलं लप्स्यसे।
You will bear fruit of this sin.
6. मेरे पास यहाँ तीन पुस्तकें थी। — मत्समीपे अत्र पुस्तकत्रयम् आसीत्।
I had three books here.
7. बार-बार जाना उचित नहीं है। — मुहुर्मुहुः गमनं नोचितम्।
It is not good to go every now and then.
8. आज विज्ञान का युग है। — अद्यत्वे विज्ञानस्य युगम् अस्ति।
Now a days, it is an age of Science.
9. कुछ छात्रों के संरक्षक भी आ जाते हैं। — केषांचित् छात्राणां संरक्षकाः अपि आयान्ति।
Some guardians of the students also come.
10. वह पर्यटन के लिए कश्मीर गया। — सः पर्यटनाय काश्मीर-प्रदेशम् अगच्छत्।
He went to Kashmir on a tour.

अनुवाद करो (Translate)

1. अन्त में राम ने रावण को जीत लिया।
Finally Rama won over Ravana.
2. राजनीति भी एक व्यवसाय बन गई है।
Politics also has become a profession.
3. हरियाणा में किस दल की सरकार है?
Which party's government is there in Haryana?
4. वसन्त में आम के पेड़ पर बौर आ जाता है।
In spring season, the mango tree becomes flowery.
5. ऐसा वक्ता व श्रोता मिलना दुर्लभ है।
Such an orator and listener is difficult to find.
6. क्या कोई विशेष बात है।
Is there something particular?
7. ये बालक युद्धकला में निपुण हैं।
These boys are trained in the art of battle.

8. हरिश्चन्द्र काशी के राजा थे।
Harish Chandra was the king of Kashi.
9. उस ने काम शुरू कर दिया है।
He has started the work.
10. उसने एक हिरण देखा।
He saw a deer.
11. हमें काम सीखने की कोशिश करनी चाहिए।
We should try to learn the job.
12. तुम फूल सूँघते हो।
You smell the flowers.
13. तुम्हें किस रंग के फूल पसन्द हैं ?
Flowers of which colour are liked by you ?
14. वृक्ष कभी स्वयं फल नहीं खाते।
Trees never eat fruits themselves.
15. भारत के लोग वीर हैं।
The people of Bharat are brave.

अभ्यास 13

1. मैं सिनेमा देखने नहीं जाऊँगा। अहं चित्रपटं द्रष्टुं न गमिष्यामि।
I shall not go to see the picture.
2. क्रोध को जीतना बहुत कठिन है। क्रोधस्य दमनम् अतिकठिनम् अस्ति
It is very difficult to win over the anger.
3. श्रीलंका के पास समुद्र है। श्रीलंकां निकषा समुद्रोऽस्ति।
There is ocean near Sri Lanka.
4. वह दीनों के प्रति दया करता है। सः दीनान् प्रति दयति।
He is sympathetic towards the miserable persons.
5. पिताजी मुझ पर क्रुद्ध होंगे। जनकः मह्यं कोपिष्यति।
The father will be angry at me.
6. वह जटाओं से तपस्वी लगता है। स जटाभिः तापसः प्रतीयते।
He looks like an ascetic by his matted hair.
7. राजा रथ से जायेगा। राजा रथेन यास्यति।
The king will go by the chariot.
8. गुड़ और धान मास भर के लिए काफी हैं। गुड़धानाः मासं सन्ति।
Gur and rice are sufficient for a month.
9. लक्ष्मण राम के बाद पैदा हुआ। लक्ष्मणः राममनु अजायत।
Lakshman was born after Ram.

10. जल के बिना कमलों की सुन्दरता नष्ट हो गई। — जलाद् ऋते कमलानां सौन्दर्यम् अपगतम्।
The beauty of the lotuses vanished in the absence of air.

अनुवाद करो (Translate)

1. कथा समाप्त हो गई।
The narration of the story came to an end.
2. श्रोता अपने-अपने घर चले गये।
The audience went away to their own houses.
3. कल फिर कथा सुनने आयेंगे।
Tomorrow, they will come again to listen the story.
4. कमला विद्यालय से घर लौट आई।
Kamala returned from the school.
5. बालक का मन कच्ची मिट्टी के समान होता है।
The mind of the child is like an unbaked earth.
6. तुम सब मेधावी बनो।
May all of you be intelligent !
7. भरत ने शेर को पकड़ लिया।
Bharata caught hold of the lion.
8. मुख खोल, मैं तेरे दन्त गिनूँगा।
Open your mouth, I shall count your teeth.
9. गोपाल दूध बेचता है।
Gopal sells milk.
10. वह पिता के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता।
He does not treat his father well.
11. राम का पुत्र वृक्ष से गिर गया।
Rama's son fell from the tree.
12. हृदय रोग से उसकी मृत्यु हो गई।
He died of heart disease.
13. वह कैन्सर का रोगी है।
He is a patient of cancer.
14. सब लोग सौ वर्ष जीएँ।
May all people live for hundred years.
15. हम सब भारत की रक्षा करें।
May all of us protect Bharat.

अभ्यास 14

1. हरि बैकुण्ठ में रहता है। — हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति।
Hari lives in Heaven.
2. नगर के चारों ओर जल है। — नगरम् अभितः जलम् अस्ति।
There is water all around the city.

3. बुराई से डरना अच्छा है। — असद्भावात् भीतिः श्रेयस्करा।
It is good to be afraid of the evil.

4. जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर है। — जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
Mother and motherland are greater than the heaven.

5. हे लक्ष्मण, सोने की लंका भी मुझे पसन्द नहीं। — लक्ष्मण, स्वर्णमयी लंका अपि मह्यं न रोचते।
O Lakshmana, I have no liking even for Lanka, made of Gold.

6. वह दुष्कर्म से लज्जित होगा। — सः दुष्कर्मभ्यः त्रपिष्यते।
He will be ashamed of the sins.

7. वह वेद को सीखेगा। — सः वेदं शिक्षिष्यते।
He will learn the Veda.

8. वह सब का हित चाहेगा। — सः सर्वेषां हितम् ईहिष्यते।
He will desire the welfare of all.

अनुवाद करो (Translate)

1. वह सत्कर्म में चेष्टा करेगा।
He will make efforts in noble deeds.
2. वह अध्ययन से नहीं घबरायेगा।
He will not run away from studies.
3. वह ज्ञानोपार्जन में स्पर्धा करेगा।
He will compete in getting knowledge.
4. वह समयानुसार खेलेगा।
He will play as per time table.
5. वह क्रीड़ा क्षेत्र में कूदेगा।
He will jump into the play-ground.
6. वह धर्म की रक्षा करेगा।
He will protect the Dharma.
7. वह घोड़े पर चढ़ेगा।
He will mount the horse.
8. वह सौ रुपये का लेन-देन करेगा।
He will deal in the hundred rupees.
9. उसकी वाणी में मिठास होगा।
There will be sweetness in his tongue.
10. वह प्रातः काल उठेगा।
He will get up in the morning.

संकेत—चेष्टिष्यते। पलायिष्यते। स्पर्धिष्यते। क्रीडिष्यति। कूर्दिष्यति। रक्षिष्यति। आरोक्ष्यति। व्यवहरिष्यति। स्थास्यति। उत्थास्यति।

अभ्यास 15

1. स्त्रियाँ जन्म से ही चतुर होती है। स्त्रियः निसगदिव चतुराः भवन्ति।
Ladies are clever from their very birth.
2. विद्वान् ही विद्वानों के परिश्रम को जानता है। विद्वानेव जानाति विद्वज्जन-परिश्रमम्।
A scholar alone knows the hard work of the scholars.
3. जल्दी से कोई काम न करो। सहसा विदधीत न क्रियाम्।
Don't do anything in haste.
4. मुझ में मन लगाओ। मयि चेतः आधत्स्व।
Set your mind in me.
5. खिड़की बन्द कर दो। गवाक्षं पिधेहि।
Close the window.
6. बलवान् शत्रु से सन्धि कर लो। बलीयसा रिपुणा सन्दध्यात्।
Make agreement with strong enemy.
7. यह अफवाह फैल गई। इति वार्ता प्रसृता।
This rumour got air.
8. उसका मन कहीं और है। सः हृदयेन असंनिहितः।
His mind is set elsewhere.
9. उस ने यह शर्त लगाई। इति तेन समयः कृतः।
He put this bet.
10. आधा काम समाप्त हो गया। अर्धम् अवसितम्।
Half the work is complete.

अनुवाद करो (Translate)

1. वह कानों को बन्द करता है।
He closes the ears.
2. मुझे राजा मानते हैं।
Kings respect me.
3. वह गुरु पर श्रद्धा करता है।
He has faith on the teacher.
4. वह बाँह का तकिया बना कर सोता है।
He uses the arm as pillow.
5. शत्रु भी जिस के नाम का अभिनन्दन करते हैं वही पुरुष पुरुष है।
That man is man whose name is felicitated even by the enemies.
6. उसने यह वचन कहा।
He gave this statement.
7. हंस दूध को ले लेता है।
Swan takes out the milk.

8. बालक बार-बार रोता है।
The boy weeps repeatedly.
9. वह अपने कुल को बदनाम करता है।
He brings bad name to his family.
10. वह पत्नी सहित तपस्या करता है।
He makes penance along with his wife.

संकेत—पिदधाति। अहं राज्ञां मतः। श्रद्दधाति। सः बाहुम् उपधाय स्वपिति। अभिनन्दति, पुमान्। इति वचनम् अब्रवीत्। आददाति। रोरूद्यते। सः स्वकुलं कलंकयति। सपत्नीकः तपस्यति।

अनुच्छेद का अनुवाद

अनुच्छेद का अनुवाद करते समय भी उन सभी नियमों को ध्यान में रखना जरूरी है जो सरल वाक्यों के अनुवाद में अपेक्षित रहते हैं। जैसे—

1. संज्ञा व सर्वनाम शब्दों के पुरुष, लिङ्ग तथा वचन को ध्यान में रखकर उसका संस्कृत रूप बनाना चाहिए।

2. कारक-विभक्ति तथा उपपद-विभक्ति सम्बन्धी नियमों का पालन करते हुए हिन्दी, अंग्रेजी शब्दों के संस्कृत रूप को बनाना चाहिए।

3. विशेषण के लिङ्ग तथा वचन एवं विभक्ति विशेष्य के अनुसार ही होने चाहिएँ।

4. क्रिया के काल तथा अवस्थाओं के अनुसार ही धातु के लकार-विशेष को निश्चित करके उसी लकार में क्रिया-रूप बनाना चाहिए।

5. क्रिया-रूप में पुरुष तथा वचन को वाक्य में प्रथमा विभक्ति के पुरुष तथा वचन के अनुसार ही रखना चाहिए किन्तु भाव-वाच्य में जहाँ प्रथमा विभक्ति का अभाव हो वहाँ क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन में रखनी चाहिए।

अनुच्छेद या तो किसी कहानी के रूप में होता है या किसी विषय पर आठ-दस वाक्य होते हैं। यदि अनुच्छेद कहानी पर आधारित होता है तो उसके वाक्य अधिकतर भूतकाल में होते हैं, किन्तु यदि किसी विशिष्ट विषय पर आधारित होता है तो उसके वाक्य सामान्यतः लट् लकार में होते हैं। कहीं-कहीं लोट्, विधिलिङ् अथवा लृट् लकार से सम्बन्धित वाक्य भी अनुच्छेद के बीच में रहते हैं। अनुच्छेद में कोई-कोई वाक्य देखने में बड़ा जटिल होता है किन्तु यदि उसका भाव वही रहने दें और उसका रूप थोड़ा बदल दें तो वह एक सरल वाक्य बन जाता है तथा उसका अनुवाद भी आसानी से किया जा सकता है। अनुच्छेद के वाक्यों में भी विशेषणों से युक्त शब्द रहते हैं तथा अनुवाद के उन सभी नियमों का, जो सामान्य सरल वाक्यों का अनुवाद करने के लिए बताये गये हैं, यहाँ भी पालन किया जाना चाहिए। अनुच्छेद के अनुवाद में यदि छात्र ठीक सन्धि कर सकें तो बहुत उत्तम माना जाता है। विशेष रूप से वाक्य के बीच में जहाँ-जहाँ विसर्ग हो, वहाँ अवश्य सन्धि कर देनी चाहिए।

अभ्यास 1

वाल्मीकि एक ऋषि था। वह अपने आश्रम में रहता था। उसका आश्रम तमसा नदी के किनारे पर था। एक दिन वह नहाने के लिए नदी को जा रहा था। उसने वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों को देखा। इतने में एक शिकारी ने अपने तीर से उनमें से एक पक्षी को मार डाला। वह पक्षी मर कर गिर पड़ा। दूसरा पक्षी व्याकुल हुआ। यह दृश्य देखकर वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो उठा। उसे शिकारी पर क्रोध आया। उसने शिकारी को शाप दिया। वाल्मीकि ने कहा—हे व्याध, तूने निर्दोष पक्षी को मारा है। तुझको कभी शान्ति नहीं मिलेगी। यह सुनकर शिकारी ने पश्चाताप किया और ऋषि से क्षमा माँगी।

अनुवाद—वाल्मीकिः एकः ऋषिः आसीत्। सः निजाश्रमे न्यवसत्। तस्य आश्रमः तमसायः नद्याः तटे आसीत्। एकदा स स्नातुं नदीं गच्छति स्म। स वृक्षे स्थितौ द्वौ पक्षिणौ अपश्यत्। अत्रान्तरे कश्चिद् व्याधः निजवाणेन तयोः एकं पक्षिणम् अविष्यत्। स पक्षी मृत्वा अधः पतितः। अपरः पक्षी व्याकुलोऽभवत्। तद् दृश्यं दृष्ट्वा वाल्मीकेः हृदयं द्रवितम् अभवत्। सः व्याधाय अकुप्यत्। सः व्याधम् अशपत्। वाल्मीकिः अकथयत्—हे व्याध, त्वं निर्दोषं पक्षिणं हतवान्। त्वं कदापि प्रतिष्ठां न गमिष्यसि। एतच्छ्रुत्वा व्याधः पश्चात्तापम् क्षमयाचनं चकरोत्।

अभ्यास 2

श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ। कृष्ण के पिता वसुदेव और माता देवकी कारागार में बन्दी थे। कृष्ण के मामा कंस ने उन दोनों को कैद कर रखा था। कृष्ण का जन्म अँधेरी रात के समय हुआ। उस समय सब पहरेदार सो रहे थे। वसुदेव ने कृष्ण को उठाया और कारागार से निकाल कर गोकुल की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में यमुना नदी थी। वर्षा काल था। यमुना नदी पानी से भरी थी। बड़ी कठिनाई से वसुदेव ने यमुना को पार किया। वह अपने मित्र नन्द के घर गया। कृष्ण को उसने वहीं दिया और नन्द की नवजात पुत्री को लेकर मथुरा का रास्ता लिया। अभी पहरेदार सो रहे थे। प्रातः होने पर कंस ने कारागार में आकर उस कन्या को मार दिया।

अनुवाद—श्रीकृष्णस्य जन्म कारागारे अभवत्। कृष्णस्य जनकः वसुदेवः, जननी च देवकी कारागारे वन्दिनौ आस्ताम्। कृष्णस्य मातुलः कंसः तौ वन्दिनौ अकरोत्। कृष्णस्य जन्म अन्धकारपूर्णायां रात्रौ अभवत्। तदा सर्वे प्रहरणिः निद्राम् अवाप्तवन्तः। वसुदेवः कृष्णम् अगृह्णात्, वन्दिगृहात् च निस्सार्य गोकुलं प्रति प्रस्थितः। मार्गे यमुना नदी अपतत्। वर्षाकालः आसीत्। यमुना नदी जलापूर्णा आसीत्। अतीवकाठिन्येन स यमुनापारं प्राप्तः। स स्वमित्रस्य नन्दस्य गृहम् अगच्छत्। कृष्णं तस्मै तत्र अयच्छत् नन्दस्य च नवजातां बालिकां गृहीत्वा मथुरामार्गम् अगृह्णात्। अधुनापि प्रहरिणः प्रसुप्ताः आसन्। प्रातःकाले संजाते कंसः कारागृहम् आगत्य तां कन्यां जघान।

अभ्यास 3

प्राचीनकाल में भारत में उत्तानपाद नाम का राजा था। उसकी दो रानियाँ थीं, सुरुचि और सुनीति। पहली राजा को प्रिय थी, दूसरी नहीं। सुनीति का एक पुत्र था

जिसका नाम ध्रुव था। एक दिन राजा सुरुचि के पुत्र उत्तम को गोद में लिए बैठा था। ध्रुव ने भी पिता की गोद में बैठने की इच्छा प्रकट की। यह देखकर सुरुचि ने कहा, "बेटा, यदि पिता की गोद में बैठना चाहता है तो मेरा पुत्र होता।" ध्रुव रोता हुआ अपनी माँ के पास गया। माँ ने कहा, "बेटा, परमात्मा ही सबका पिता है। तू उसकी गोद में बैठ। यह सुनकर और माँ से पूछकर ध्रुव तपस्या करने के लिए वन को गया।

अनुवाद—प्राचीनकाले भारते उत्तानपादो नाम राजा आसीत्। तस्य द्वौ राज्ञयौ आस्ताम्, सुरुचिः सुनीतिः च। प्रथमा राज्ञः प्रिया आसीत्, अपरा न। सुनीतेः एकः पुत्रः ध्रुवनामकः आसीत्। एकदा राजा सुरुचिपुत्रम् उत्तमम् अङ्के आदाय उपविष्टः। ध्रुवः अपि पितुः अंके उपवेशनम् ऐच्छत्। एतद् दृष्ट्वा सुरुचिः अकथयत्—पुत्र, यदि पितुः अंकम् उपवेष्टुम् इच्छसि तदा मम पुत्रो भव।" ध्रुवः रोदन् स्वमातरम् गतः। माता अकथयत्—"पुत्र, परमात्मा एव सर्वेषां जनकः अस्ति। त्वं तस्य क्रोडे उपविश।" इदं श्रुत्वा मातरं च पृष्ट्वा ध्रुवः तपः तप्तुं वनम् अयात्।

अभ्यास 4

राजा भागीरथ ने हिमालय में बहुत तप किया । वह गंगा नदी को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाना चाहता था। गंगा ने प्रसन्न होकर आना स्वीकार किया। जब गंगा आकाश से गिरी तो देर तक हिमालय में रही। फिर वह राजा भागीरथ के रथ के पीछे-पीछे चली। पृथ्वी से गंगा पाताल में गई। वहाँ भागीरथ के पितामहों की भस्म पड़ी थी। गंगा के स्पर्श से भागीरथ के पितामहों ने सद्गति को प्राप्त किया। भागीरथ के कारण अब भी गंगा का नाम भागीरथी है। गंगा के कई नाम हैं। भागीरथी एक प्रसिद्ध नाम है।

अनुवाद—राजा भागीरथः हिमालये तपः अकरोत्। स गंगानदीं स्वर्गात् पृथ्वीम् आनेतुम् ऐच्छत्। गंगा हृष्टा अवतरणम् स्वीकृतवती। यदा गंगा गगनात्पतिता तदा चिराय हिमालये न्यवसत्। तदा सा राज्ञः भागीरथस्य रथम् अन्वसरत्। पृथ्व्याः गंगा पातालम् गता। तत्र भागीरथस्य पितामहानां भस्म आसीत्। गंगायाः स्पर्शेन भागीरथस्य पितामहाः सद्गतिम् अवाप्नुवन्। भागीरथस्य हेतोः अधुनापि गङ्गायाः नाम भागीरथी अस्ति। गङ्गायाः अनेकानि नामानि सन्ति। भागीरथी एकं प्रसिद्धं नाम अस्ति।

अभ्यास 5

एक बार गीदड़ ने मृग से एकान्त में कहा—"मित्र, इस जंगल के एक भाग में हरा-भरा खेत है। मैं तुम्हें ले जाकर दिखाता हूँ।" ऐसा किया जाने पर हिरण प्रतिदिन वहाँ जाने पर खेती खाता। खेत के स्वामी ने यह देखकर वहाँ जाल लगा दिया। फिर वहाँ आया हुआ हिरण जाल में फँस गया और मन में कहने लगा कि मृत्यु के फन्दे के समान इस दृढ जाल से मुझे कौन बचा सकता है?

अनुवाद—एकदा श्रृगालः मृगम् एकान्ते अकथयत्—"मित्र, अस्य वनस्य एकपार्श्वे सस्यश्यामलं क्षेत्रम् अस्ति।" अहं त्वां तत्र आनीय दर्शयामि। एवं कृते सति हरिणः प्रतिदिनं तत्र गत्वा सस्यम् असेवत। क्षेत्रस्वामी तद् दृष्ट्वा तत्र जालं

प्रसारितवान्। पुनः तत्र आगतः हरिणः जालनिबद्धः मनसि अकरोत् यत् मृत्युपाशात् इव अस्मात् दृढजालात् मां रक्षितुं कोऽर्हति?

अभ्यास 6

एक बार रात को राजा शूद्रक ने रोने की आवाज सुनी। राजा ने कहा—"द्वार पर कौन है?" वीरवर ने उत्तर दिया—"महाराज, मैं वीरवर हूँ।" राजा ने कहा—"इस रोने की आवाज का पता लगाओ।" राजा की आज्ञा पाकर वीरवर चला गया। राजा ने सोचा कि इस घुप अँधेरे में राजकुमार को अकेले ही भेजकर मैंने अच्छा नहीं किया। तब राजा भी तलवार लेकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

अनुवाद—एकदा रात्रौ राजा शूद्रकः रोदनध्वनिम् अश्रृणोत्। राजा अकथयत्—"द्वारि कोऽस्ति?" वीरवरः प्रत्यवदत्—"महाराज, वीरवरोऽहम्।" राजा अवदत्—"अस्य रोदनशब्दस्य कारणं ज्ञापय।" राजादेशं गृहीत्वा वीरवरः अगच्छत्। राजा अचिन्तयत्—अस्मिन् घनान्धकारे राजकुमारं एकाकिनमेव सम्प्रेष्य मया सुष्ठु न कृतम्। तदा राजा अपि खड्गम् आदाय तम् अन्वसरत्।

अभ्यास 7

ध्रुव जब तपस्या करके लौटा, तब उसकी माता सुनीति ने उससे कहा—"बेटा, तुमने तपस्या करके भगवान को पाया है। मुझे भी उसके दर्शन कराओ।" माता के कहने पर ध्रुव ने भगवान् से प्रकट होने के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर ध्रुव के सामने प्रकट हुए। तब ध्रुव ने माँ से कहा—"माँ भगवान् प्रकट हो गए। उनके रूप से सारा जगत प्रकाशित हो गया है। क्या तुम नहीं देखती?"

अनुवाद—ध्रुवः यदा तपः तप्त्वा प्रत्यागतः, तदा तस्य माता सुनीतिः तम अवदत्—पुत्र, त्वं तपः कृत्वा भगवन्तम् अलभथाः। मह्यमपि तस्य दर्शनं कारय।" मातरि उक्तवत्यां ध्रुवः भगवन्तं प्रकटयितुं प्रार्थयत्। परमेश्वरः ध्रुवसम्मुखं प्रकटितः। तदा ध्रुवः मातरम् अकथयत्—मातः, भगवान् प्रकटितः। तस्य रूपेण सर्वं जगत् आलोकितं जातम्। किं त्वं न पश्यसि?"

अभ्यास 8

प्राचीनकाल में शाक्य लोगों की राजधानी कपिलवस्तु थी। वहाँ शुद्धोधन नाम का राजा राज्य करता था। मायादेवी उसकी पत्नी थी। बुढ़ापे में उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पिता ने उसका नाम सिद्धार्थ रखा। सिद्धार्थ ने संसार को दुःखमय जानकर त्याग दिया और कल्याण का मार्ग खोजने के लिए वनों में चला गया। ज्ञान प्राप्त कर लेने पर राजकुमार सिद्धार्थ बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अनुवाद—प्राचीनकाले शाक्यानां राजधानी कपिलवस्तुः आसीत्। तत्र शुद्धोदनः नाम राजा राज्यम् अकरोत्। मायादेवी तस्य पत्नी आसीत्। वार्धक्ये तयोः एकः पुत्रः जातः। पिता तस्य नाम 'सिद्धार्थः' इति अकरोत्। सिद्धार्थः संसारम् दुःखमयं ज्ञात्वा अत्यजत् कल्याणमार्गं चान्वेष्टुं वनानि गतः। ज्ञानं लब्ध्वा सः बुद्धः इति ख्यातनामा अभवत्।

अभ्यास 9

निषध देश के राजा का नाम नल था। उसकी पत्नी दमयन्ती थी। दमयन्ती बहुत सुन्दर थी। उसने इन्द्रादि देवों को छोड़कर नल के साथ विवाह किया। नल में गुणों के साथ एक अवगुण भी था। वह जुआ खेलता था। एक बार जुए में सब कुछ हार गया और प्रिया दमयन्ती को वन में छोड़कर चला गया।

अनुवाद—निषधदेशे नलो नाम राजासीत्। तस्य पत्नी दमयन्ती आसीत्। दमयन्ती अतीव सुन्दरी आसीत्। सा इन्द्रादिदेवान् त्यक्त्वा सह विवाहम् अकरोत्। नलस्य गुणैः सह एकः अवगुणः अपि आसीत्। स द्यूतक्रीडाम् अकरोत्। एकदा द्यूते स सर्वं हारितवान् प्रियां दमयन्तीं च वने त्यक्त्वा अन्यत्र गतः।

अभ्यास 10

पुराने समय में एक राजा था। उसके चार पुत्र थे। सभी मूर्ख थे। इस कारण राजा बहुत दुखी था। उसने पण्डितों को बुलवाया और कहा—"है कोई जो मेरे पुत्रों को पण्डित बना दे।" विष्णु शर्मा नामक पण्डित ने कहा—"महाराज, इस काम को मैं कर सकता हूँ।" यह सुनकर राजा को शान्ति मिली। विष्णु शर्मा ने उन्हें पढ़ाया। वे विद्वान् हो गये।

अनुवाद—पुरा एकः राजा आसीत्। तस्य चत्वारः पुत्राः आसन्। सर्वे मूर्खाः आसन्। अनेन राजा अतीव दुःखी आसीत्। सः पण्डितान् आहूतवान् अकथयत् च—"अस्ति कश्चन यः मम पुत्रान् पण्डितः कुर्यात्।" विष्णुशर्मा नाम पण्डितः अकथयत्—"महाराज, इदं कार्यम् अहं कर्तुं शक्नोमि।" एतच्छ्रुत्वा राजा शान्तिम् अलभत। विष्णुशर्मा तान् अध्यापयत्। ते विद्वांसः जाताः।

अभ्यास 11

भारत का स्वातन्त्र्य-युद्ध अति प्राचीन है। जिस दिन मुहम्मद गौरी वीर पृथ्वीराज को बन्दी बनाकर ले गया उस दिन से भारत की आजादी छीन ली गई। उसके बाद भारत पर अनेक आक्रमण हुए तथा मुसलमानों का साम्राज्य स्थापित हो गया। उस समय व्रती प्रताप तथा वीर शिवराज का नाम भी हमारे सम्मुख आया। उस समय हमारी आत्मा में अपनी संस्कृति तथा अपने वंश के गौरव की गुरुता बाकी थी। हमारा हृदय पराधीन नहीं हुआ था। स्वतन्त्रता के लिए हम अपना रक्त बहाने के लिए सदा तत्पर रहते थे। हमारी कुलवधुएँ सतीत्व की रक्षा के लिए प्रतिक्षण उद्यत रहती थीं। पर चिकित्सा करने पर भी रोग बढ़ता गया और मुगलों का साम्राज्य समृद्ध होता चला गया।

अनुवाद—भारतस्य स्वातन्त्र्य-युद्धम् अतिप्राचीनतम् अस्ति। यस्मिन् दिने मुहम्मदगोरी वीरं पृथ्वीराजं वन्दिनं कृत्वा अनयत्, तदा एव भारतस्य स्वातन्त्र्यम् अपहृतम्। ततः पश्चात् भारते अनेकानि आक्रमणानि जातानि, मुगलानां साम्राज्यं स्थापितम्। तस्मिन् काले व्रतिनः प्रतापस्य, वीरशिवराजस्य च नाम अस्माकं सम्मुखे प्रकटितम्। तदा अस्माकम् आत्मनि स्वसंस्कृतेः स्ववीरतायाः स्ववंशगौरवस्यं गुरुता शिष्टा आसीत्। अस्माकं हृदयं पराधीनं नासीत् । वयं स्वातन्त्र्याय स्वरक्तस्य प्रवाहं

कर्तुं सदा तत्परा आस्म। अस्माकं कुलवध्वः सतीत्वरक्षायै प्रतिक्षणं समुद्यता आसन्। परं रोगः चिकित्साकारणे अपि वर्धितः एव, मुगलानां च साम्राज्यं समृद्धं जातम्।

अभ्यास 12

एक बार शिवाजी एक किला बना रहे थे। वहाँ हजारों मजदूर काम कर रहे थे। शिवाजी के मन में विचार आया कि इन सबका अन्नदाता मैं हूँ। मेरे बिना ये सब भूखे मर जायेंगे। गुरु रामदास पास ही खड़े थे। वे शिवाजी के मन का भाव समझ गए थे। बोले—"शिवा, जरा इस शिला को तुड़वाओ।" शिला टूटने पर बीच में से एक कीड़ा निकला। समर्थ रामदास ने पूछा—"शिवा, कहो इस कीड़े को कौन भोजन देता है?" इस पर शिवा ने अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी।

अनुवाद—एकदा शिवाजिः एकं दुर्गं रचयति स्म। तत्र श्रमिकाणां सहस्राणि कार्यरतानि आसन्। शिवाजेः मनसि अभवत् यत् एतेषाम् सर्वेषाम् अहम् अन्नदाता अस्मि। मां विना एते सर्वे बुभुक्षिताः मरिष्यन्ति। गुरुः रामदासः समीपे एव स्थितः। असौ शिवाजेः मनोभावं ज्ञातवान्। अब्रवीत्—"शिव, शीघ्रम् एनां शिलां खण्डितां कारय।" शिलायाः त्रोटनात् तन्मध्यात् एकः कीटः निर्गतः। समर्थः रामदासः अपृच्छत्—"शिव, कथय, एतं कीटं कः भोजयति?" अस्मिन् शिवाजिः स्वापराधस्य क्षमाम् अयाचत्।

अभ्यास 13

महाकवि बाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं। उन्होंने रामायण महाकाव्य की रचना की। उन्होंने लिखा है कि राम आदर्श राजा थे। उनके राज्य में प्रजा अत्यन्त सुखी थी। सारे राज्य में कोई पापी तथा चोर न था। कोई दरिद्र अथवा रोगी न था। सब सत्य और धर्म के मार्ग पर चलते थे। पराई वस्तु को कोई छूता तक न था। बादल समय पर बरसते थे। खेतियाँ धान्य से भरी रहती थीं।

अनुवाद—महाकविः वाल्मीकिः आदिकविः मन्यते। सः रामायणं महाकाव्यं व्यरचयत्। सः लिखितवान् यत् रामः आदर्शः राजा आसीत्। तस्य राज्ये प्रजाजनः अतीव सुखी आसीत्। सम्पूर्णराज्ये न कोऽपि पापी न चौरः आसीत्। न कश्चिद् दरिद्रः, न च रोगी आसीत्। सर्वे सत्यस्य धर्मस्य च मार्गम् अन्वसरन्। न कोऽपि परकीयं वस्तु स्पृशति स्म। मेघाः काले वर्षन्ति स्म। शस्याः धान्यसम्पन्नाः आसन्।

अभ्यास 14

महाराज जनक ने मिथिला राज्य की स्थापना की। वह भगवान शंकर के भक्त थे। शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें एक धनुष दिया था। इस धनुष को सीता-स्वयंवर में श्री राम ने तोड़ा था। महाराज जनक ब्रह्मज्ञानी थे। संसार के प्रति उनकी आसक्ति नहीं थी। ऋषि लोग ब्रह्मज्ञान के लिए उनके पास आते थे। श्री शुकदेव ने जनक के पास जाकर ज्ञान प्राप्त किया था। राग-द्वेष से रहित पुरुषों में महाराज जनक अद्वितीय थे। श्रीकृष्ण ने गीता में महाराज जनक का नाम बड़े आदर से ग्रहण किया है।

अनुवाद—महाराजः जनकः मिथिलाराज्यं स्थापितवान्। सः भगवतः शंकरस्य

भक्तः आसीत्। शिवः प्रसन्नो भूत्वा तस्मै एकं धनुः ददौ। इदं धनुः सीता-स्वयंवरे श्रीरामः अत्रोटयत्। महाराजः जनकः ब्रह्मज्ञानी आसीत्। संसारं प्रति तस्य आसक्तिः नासीत्। ऋषयः ब्रह्मज्ञानं लब्धुं तस्य पार्श्वे आगच्छन्ति स्म। श्री शुकदेवः जनकस्य सविधे गत्वा ज्ञानं लब्धवान्। रागद्वेषवियुक्तेषु जनेषु महाराजः जनकः अद्वितीयः आसीत्। श्रीकृष्णः गीतायां महाराजस्य जनकस्य नाम अतीव आदरेण गृहीतवान्।

अभ्यास 15

महाभारत के युद्ध में भीष्म ने प्रतिज्ञा की—कल श्रीकृष्ण को शस्त्र-धारण के लिए विवश कर दूँगा। दूसरे दिन युद्ध आरम्भ हुआ। भीष्म की वाण-वर्षा से अर्जुन मूर्छित हो गया। श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा त्यागकर शस्त्र धारण किया। वह हाथ में रथ का टूटा पहिया लेकर भीष्म की ओर दौड़े। सेना में सब भयभीत हो गए। सब क्रन्दन करने लगे—भीष्म मारे गए ! भीष्म मारे गए ! अर्जुन ने श्रीकृष्ण को प्रणाम किया। भीष्म ने हाथ जोड़कर कहा—भगवान्, मेरी प्रतिज्ञा पूरी हुई।

अनुवाद—महाभारतस्य युद्धे भीष्मः प्रतिज्ञाम् अकरोत्—श्वः श्रीकृष्णं शस्त्र-धारणार्थं विवशं करिष्यामि इति। अपरेद्युः युद्धम् आरब्धम्। भीष्मस्य बाणवर्षया अर्जुनः मूर्च्छितः संजातः। श्रीकृष्णः प्रतिज्ञां परित्यज्य शस्त्रग्रहणम् अकरोत्। सः हस्तेन रथस्य भग्नं चक्रम् आदाय भीष्मं प्रति अधावत्। सेनायां सर्वे भयभीताः आसन्। सर्वे क्रन्दन्ति स्म—भीष्मः हतः, भीष्मः हतः इति। अर्जुनः श्रीकृष्णं प्राणमत्। भीष्मः करबद्धः अब्रवीत्—मम प्रतिज्ञा पूर्णा अभवत्।

अभ्यास 16

शिमला में मैं एक सुन्दर बँगले में रहता था। वहाँ पर सुन्दर-सुन्दर फूलों से भरा एक बाग था। लेकिन हमारी एक बहुत बड़ी समस्या थी। बाग के बाहर से बन्दरों का रास्ता था जहां से बन्दर प्रतिदिन दो बार जाते थे—प्रातःकाल घाटी में उतरते समय और सायंकाल अपने घरों को लौटते समय। जब भी वे वहाँ से गुजरते थे, वे फूलों को नष्ट कर जाते थे।

अनुवाद—शिमलानगरे अहं एकस्मिन् रम्ये भवने निवासम् अकरवम्। तत्र रमणीयैः कुसुमैः आपूर्णम् एकम् उद्यानम् आसीत्। परम् अस्माकं सम्मुखम् एका अति विशाला समस्या आसीत्। उद्यानाद् बहिः वानराणां मार्गम् आसीत् यतः वानराः प्रतिदिनं द्विवारम्—प्रातःकाले घाट्याम् अवरोहणसमये, सायंकाले निजगृहाणि प्रत्यागमनकाले—गच्छन्ति स्म। यदैव ते ततः यान्ति स्म ते पुष्पाणि विनाशयन्ति स्म।

अभ्यास 17

महाकवि कालिदास संस्कृत कवियों में सर्वोत्कृष्ट हैं। इन्होंने सात ग्रन्थों की रचना की। इनका अभिज्ञानशाकुन्तल संस्कृत नाटकों में सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसमें राजा दुष्यन्त का शकुन्तला के साथ प्रेम वर्णित है। कालिदास के ग्रन्थों का संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उज्जयिनी में प्रतिवर्ष कालिदास समारोह आयोजित होता है।

अनुवाद—महाकविः कालिदासः संस्कृतकविषु सर्वोत्कृष्टः अस्ति। तेन सप्त ग्रन्थाः रचिताः । तेन रचितम् अभिज्ञान-शाकुन्तलम् संस्कृतनाटकेषु सर्वाधिकं लोकप्रियम् अस्ति। कालिदासस्य ग्रन्थाः संसारस्य अनेकभाषासु अनूदिताः सन्ति। उज्जयिन्यां प्रतिवर्ष कालिदास-समारोहः आयोज्यते।

अभ्यास 18

भारतवर्ष में बहुत-सी नदियाँ हैं। गङ्गा सब नदियों में श्रेष्ठ है। गङ्गा-स्नान करने के लिए बहुत दूर से लोग आते हैं। गङ्गा-जल की बड़ी महिमा है। इससे अनेक रोग दूर हो जाते हैं। इसीलिए गङ्गा को देवता माना जाता है।

अनुवाद—भारतवर्षे नैकाः नद्यः सन्ति। गंगा सर्वासु नदीषु श्रेष्ठा अभिवर्तते। गंगास्नानाय दूरात् जनाः आगच्छन्ति। गंगाजलस्य अतीव महिमा अस्ति। अनेन बहवः रोगाः अपयान्ति। अनेनैव गंगा देवता मन्यते।

अभ्यास 19

राम एक आदर्श पुरुष थे। पिता की आज्ञा के पालन के लिए उन्होंने चौदह वर्षों तक वनों में निवास किया। उनके साथ उनकी पत्नी सीता और लक्ष्मण भी वन गए। वन में रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। राम ने रावण को मारकर सीता को प्राप्त किया तथा लङ्का का राज्य विभीषण को दे दिया। राम के जीवन की कथा रामायण में है। रामायण एक आदर्श धार्मिक ग्रन्थ है।

अनुवाद—रामः एकः आदर्शः पुरुषः आसीत्। पितुः आदेशं पालनार्थं सः चतुर्दश वर्षाणि वनेषु न्यवसत्। तेन सह तस्य पत्नी सीता लक्ष्मणश्चापि वनम् जग्मतुः। वने रावणः सीताम् अपजहार। रामः रावणं हत्वा सीतां प्राप्नोत् लंकायाश्च राज्यं विभीषणाय प्रायच्छत्। रामस्य जीवनचरितं रामायणे निबद्धम् अस्ति। रामायणम् एकः आदर्शः धार्मिकः ग्रन्थः अस्ति।

अभ्यास 20

दिल्ली भारत की राजधानी हैं। आजकल यहाँ नवम् एशियाड खेल हो रहे हैं। विभिन्न देशों से खिलाड़ी यहाँ आए हैं। यह हमारे देश की उन्नति का सूचक है।

अनुवाद—दिल्ली भारतस्य राजधानी अस्ति। अद्यत्वे अत्र नवम-एशियाडक्रीडाः भवन्ति। विभिन्नदेशानां क्रीडकाः अत्र आगताः सन्ति। इदम् अस्माकं देशस्य उन्नतेः सूचकम् अस्ति।

अभ्यास 21

किसी जंगल में एक साधु रहता था । वह प्रतिदिन भिक्षा के लिए नगर जाता था। एक दिन वह भिक्षा के लिए एक घर गया जहाँ एक स्त्री रहती थी। क्रोधवश उसने विष मिलाकर एक रोटी उस साधु को दी। वह उसे घर लेकर चला गया। दूसरे दिन उस स्त्री का बेटा किसी नगर से वापस आ रहा था। वह भूखा था, अतएव साधु की कुटी पर जाकर उसने भोजन माँगा। साधु ने उसे वही रोटी दे दी। खाने के बाद वह मर गया। जो जैसा करता है, वह वैसा पाता है।

अनुवाद—कस्मिश्चिद् वने एकः साधुः प्रतिवसति स्म। सः प्रतिदिनं भिक्षायै नगरं गच्छति स्म। एकदा सः भिक्षायै एकस्मिन् गृहे अगच्छत् यत्र एका स्त्री अवसत्।

क्रोधात् सा विषाक्ताम् एकां रोटिकां तस्मै साधवे अयच्छत्। सः नीत्वा अगच्छत्। अन्यस्मिन् दिने तस्याः पुत्रः कस्माच्चित् नगरात् प्रत्यागच्छति स्म। सः बुभुक्षितः आसीत्, अत एव साधोः कुटीरं गत्वा सः भोजनम् अयाचत्। साधुः तस्मै तामेव रोटिकां प्रायच्छत्। भक्षणोपरान्तं सः मृतः। यः यथा करोति सः तथैव फलम् आप्नोति।

अभ्यास 22

राजा भोज के दर्शन के लिए वह कलिंग देश में आकर एक महीने तक वहाँ रहा, पर उसे राजा के दर्शन न हुए। उसका मार्ग का भोजन भी समाप्त हो गया। एक बार राजा शिकार की इच्छा से बाहर निकला। तब कवि ने राजा को देखकर कहा—श्री भोजराज को देखते ही उसी क्षण शत्रु का शस्त्र, कवि का कष्ट तथा मृगनयनी की करधनी भूमि पर गिर पड़ती है। इसे सुनकर राजा ने कवि को एक लाख रुपये दिए। जब राजा शिकार में मस्त थे तब किसी शिकारी के पुत्र ने एक गीत गाया। गीत की मधुरता से प्रसन्न होकर राजा ने गायक को पाँच लाख रुपये दिये।

अनुवाद—राज्ञः भोजस्य दर्शनाय सः कलिङ्गदेशम् उपेत्य मासं यावत् तत्र न्यवसत्, परं सः राजानं नापश्यत्। तस्य पाथेयम् अपि परिसमाप्तम्। एकदा नृपः मृगयाभावेन बहिर्निर्गतः। तदा कविः राजानं दृष्ट्वा अकथयत्—श्रीभोजराजं पश्यन्नेव तत्क्षणं रिपोः शस्त्रं, कवेः कष्टं, मृगनयन्याः करधनी च भूमौ पतन्ति। तच्छ्रुत्वा राजा कविः लक्षं ददौ। यदा राजा मृगयासक्तः आसीत् तदा कश्चित् व्याधसुतः एकं गीतम् अगायत्। गीतस्य माधुर्येण प्रसन्नो भूत्वा राजा गायकाय पञ्चलक्षं ददौ।

अभ्यास 23

अब जबकि पुल बन चुका, राम तथा उनके भाई के नेतृत्व में बन्दरों की पूरी सेना लंका में प्रवेश कर गई। तत्पश्चात् कई महीनों तक भयानक युद्ध हुआ। अन्त में राक्षसराज रावण को जीत लिया। वह मारा गया तथा सोने से बनी उसकी पूरी राजधानी अधिकार में कर ली गई।

अनुवाद—अधुना यदा सेतुबन्धोऽभवत्, रामस्य, तस्य भ्रातृणां च नेतृत्वे वानराणां समस्तसेना लंकां प्राविशत्। तत्पश्चात् बहुमासं यावत् भयंकरं युद्धम् अभवत्। अन्ते राक्षसराजः रावणः पराजितः। सः हतः तथा च स्वर्णनिर्मिता तस्य अखिला राजधानी वशम् अधिगता।

अभ्यास 24

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन, यह नश्वर शरीर है किन्तु आत्मा अमर है। जैसे पुराने वस्त्रों को छोड़कर मनुष्य नया वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीर्ण शरीर को त्यागकर यह आत्मा नया शरीर धारण करती है, इसलिए मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जून का मोह दूर हो गया।

अनुवाद—श्रीकृष्णः अर्जुनम् उवाच—हे अर्जुन, इदं शरीरं नश्वरम्, आत्मा च अयम् अमरः अस्ति। यथा जीर्णानि वासांसि विहाय नरः नवानि वस्त्राणि धारयति, तथैव जीर्णं देहं त्यक्त्वा। अयम् आत्मा नवं देहं धारयति, अतः मृत्योः न भेतव्यम्। श्रीकृष्णस्य उपदेशेन अर्जुनस्य मोहः नष्टो जातः।

अभ्यास 25

रामायण एक आदर्श धार्मिक ग्रन्थ है। इसमें श्रीराम के जीवन की कहानी है। पिता के आज्ञा-पालन के लिए राम ने चौदह वर्षों तक वन में निवास किया। राम के साथ उनकी धर्मपत्नी सीता भी वन में गई। वहाँ रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। राम ने वानरों की सहायता से रावण को मारकर सीता को प्राप्त किया।

अनुवाद—रामायणम् एकः आदर्शः धार्मिकः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् श्रीरामस्य जीवनस्य कथा अस्ति। पितुः आज्ञापालनार्थं रामः चतुर्दश वर्षाणि वनेषु न्यवसत्। रामेण सह तस्य धर्मपत्नी सीताऽपि वनम् अगच्छत्। तत्र रावणः सीताम् अपाहरत्। रामः वानराणां साहाय्येन रावणं हत्वा सीतां प्राप्नोत्।

अभ्यास 26

संस्कृत साहित्य के गद्य लेखकों में महाकवि बाणभट्ट सर्वश्रेष्ठ हैं। हर्षचरित व कादम्बरी ये दोनों उनके अनुपम ग्रन्थ हैं। उनकी शैली में भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय है। विषयानुकूल पदावली में बाण सिद्धहस्त हैं। भाषा और शब्दकोष पर उनका असाधारण अधिकार है।

अनुवाद—संस्कृतसाहित्यस्य गद्यलेखकेषु महाकविः बाणभट्टः सर्वश्रेष्ठः अस्ति। हर्षचरितम् कादम्बरी च उभे तस्य अनुपमौ ग्रन्थौ स्तः। तस्य शैल्यां भावानां भाषायाश्च रम्यं समन्वयम् अस्ति। विषयानुकूलपदरचनायां बाणः सिद्धस्तोऽस्ति। भाषायां शब्दकोषे च तस्य असामान्यः अधिकारः तिष्ठति।

अभ्यास 27

पाण्डु की स्त्री पृथा अथवा कुन्ती के नाम से प्रसिद्ध थी। उसके पाँच पुत्र थे—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। सभी राजकुमारों में ज्येष्ठ युधिष्ठिर उत्तम राजा के गुणों से युक्त था। यह देखकर भीम प्रसन्न था। उसके पिता महाराज पाण्डु की वन में अकस्मात् मृत्यु हो गई। धृतराष्ट्र ने घोषित किया कि आज से राजकुमार युधिष्ठिर दोनों राज्यों के उत्तराधिकारी होंगे।

अनुवाद—पाण्डोः पत्नी पृथाभिधानेन कुन्तीनाम्ना वा प्रख्याताऽभवत्। तस्य पञ्च पुत्राः आसन्—युधिष्ठिरः, भीमः, अर्जुनः, नकुलः, सहदेवश्च। सर्वेषु राजपुत्रेषु ज्येष्ठः युधिष्ठिरः उत्तरराजगुणैः युक्तः आसीत्। इदं दृष्ट्वा भीमः प्रसन्नः आसीत्। तस्य पिता महाराजस्य पाण्डोः वने अकस्मात् मरणं जातम्। धृतराष्ट्रः पृष्टवान्—अद्य प्रभृति राजकुमारः युधिष्ठिरः राज्यद्वयस्य उत्तराधिकारी भविष्यति इति।

अभ्यास 28

हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। इसकी उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत है। इसकी दक्षिण दिशा में समुद्र का किनारा है। इसमें गंगा और यमुना नदियाँ बहती हैं जिनका जल अमृत के तुल्य है। हमें अपने देश का अच्छा नागरिक होना चाहिए।

अनुवाद—अस्माकं देशस्य नाम भारतवर्षम् अस्ति। अस्य उत्तरी सीमा हिमालयः पर्वतः अस्ति। अस्य दक्षिणदिशायां समुद्रतटम् अस्ति। अस्मिन् गङ्गा च यमुना च वहतः ययोः जलम् अमृततुल्यम् अस्ति। अस्माभिः स्वकीयस्य देशस्य उत्तमैः नागरिकैः भवितव्यम्।

अभ्यास 29

वाराणसी भारत का बहुत पुराना नगर है। यहाँ न केवल एक विद्यापीठ है, अपितु एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान भी है। प्रतिवर्ष हजारों यात्री इस नगर में आते हैं। यह नगर विदेशी पर्यटकों को भी अपनी तरफ आकर्षित करता है।

अनुवाद—वाराणसी भारतस्य अतिपुरातनं नगरम् अस्ति। अत्र न केवलं एकः विद्यापीठः अस्ति, अपितु एकं प्रसिद्धं तीर्थस्थानम् अप्यस्ति। प्रतिवर्ष सहस्त्रशः यात्रिणः इदं नगरम् आयान्ति। इदं नगरं वैदेशिकान् पर्यटकान् अपि निजं प्रति आकर्षति।

अभ्यास 30

इस नाटक ने मेरे सामने यह आदर्श रखा कि सत्य का अनुसरण करना चाहिए। मैं हरिश्चन्द्र की कहानी में पूर्णतया विश्वास करता था। हरिश्चन्द्र और श्रवण मेरे लिए जीवित सत्य हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि मैं पुनः उन नाटकों को देखूँ तो पूर्व की भाँति प्रभावित हो जाऊँगा।

अनुवाद—इदं नाटकं ममाग्रे इमम् आदर्शम् अस्थापयत् यत्सत्यम् अनुसर्तव्यम्। अहं हरिश्चन्द्रस्य आख्याने पूर्णरूपेण विश्वसिमि स्म। हरिश्चन्द्रः श्रवणश्च मदर्थे जीवितं सत्यम् स्तः। मम इयं दृढा धारणा अस्ति यत् अहं चेत् ते नाटके पुनः द्रक्ष्यामि तदा यथापूर्वं प्रभावितो भविष्यामि।

अभ्यास

I

निम्नलिखित अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार करने के लिए गया। वहाँ उसने एक कबूतरी को पकड़ लिया। रात अधिक हो गई। वह घर वापस न आ सका। उसी पेड़ के नीचे वह सो गया। सर्दी बहुत अधिक थी। उसका शरीर काँप रहा था। उसकी ऐसी दशा देखकर जाल में बंधी हुई कबूतरी ने वृक्ष पर बैठे अपने कबूतर से कहा—"पतिदेव, आज यह व्याध हमारा अतिथि है। इसका सत्कार हमारा कर्त्तव्य है। मैं इसके जाल में फँस गई हूँ तो क्या हुआ, आपको अपने धर्म का पालन अवश्य करना चाहिए। कबूतरी के वचन सुनकर कबूतर कहीं से एक अंगारा ले आया और उसने सूखी घास के ढेर में अंगारा रख दिया। आग जलने लगी और शिकारी सर्दी के प्रकोप से बच गया। परन्त वह भूख से अत्यधिक व्याकुल हो रहा था। यह देखकर कबूतर ने अपने आपको जलती हुई आग में गिरा दिया। उसे खाकर शिकारी की भूख भी मिट गई।

II

किसी समय अंग देश में एक उदार राजा राज्य किया करता था। उसने प्रजा की भलाई के लिए जगह-जगह धर्मशालाएँ बनवाईं। एक बार एक साधु धर्मशाला के सामने सड़क पर सो गया। जब प्रातःकाल राजा रथ पर उस ओर से गया तो वह चकित हो गया। उसने बड़े आदर भाव से साधु को जगाया तथा प्रणाम करके पूछा—महात्मन्, आप धर्मशाला में न सोकर सड़क पर क्यों सोए हैं? साधु ने उत्तर दिया—

महाराज, धर्मशाला से साफ-सुथरी तो यह सड़क है। राजा ने पूछा—क्यों, कैसे? साधु बोला—आप इस राजमार्ग से प्रतिदिन रथ पर गुजरते हैं। इसलिए सड़क की सफाई प्रतिदिन दोनों समय की जाती है, परन्तु धर्मशाला में कभी नहीं जाते, इसलिए आपके सेवक उसकी सफाई कभी नहीं करते। इसलिए धर्मशाला में कैसे रहा जा सकता है? इसके बाद धर्मशाला में भी प्रतिदिन नियमपूर्वक सफाई की जाने लगी और सब यात्री वहाँ सुखपूर्वक रहने लगे।

III

एक यात्री चलते-चलते थक गया और एक वृक्ष की छाया में विश्राम करने के लिए लेट गया। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई। कुछ समय के बाद उस पर धूप आने लगी। उस वृक्ष पर एक हंस और एक कौआ बैठे थे। हंस के मन में दया उपजी। उसने पंख फैलाकर यात्री के मुँह पर छाया कर दी जिससे यात्री गहरी नींद में सो रहा। कौए को यह सब अच्छा न लगा। उसने उड़कर यात्री के मुँह पर वीट कर दी। इससे यात्री की नींद खुल गई। उसने हंस को अपने सिर के ऊपर पंख फैलाए हुए देखा और समझा कि इस हंस ने ही उसके मुँह पर वीट की है। क्रोध में आकर यात्री ने हंस को अपने तीर का निशाना बनाया और मार गिराया।

IV

एक दिन प्रातःकाल बालक सिद्धार्थ अपने उपवन में भ्रमण कर रहा था। आकाश में हंसों की पंक्ति उड़ती हुई जा रही थी। वह इस मनोरम दृश्य को देखकर बहुत आनन्द अनुभव कर रहा था। इतने में किसी शिकारी का तीर एक हंस को लगा और वह छटपटाता हुआ सिद्धार्थ के उपवन में गिर गया। सिद्धार्थ दौड़कर हंस के पास गया। हंस के शरीर में से रक्त की धारा बह रही थी और वह पीड़ा से अत्यन्त व्याकुल हो रहा था। सिद्धार्थ से यह दृश्य देखा न गया। उसका हृदय दुःख से द्रवित हो गया। उसने हंस के शरीर में से तीर निकाला और घावों पर मरहम पट्टी की। सिद्धार्थ ने हंस को दूध पिलाकर सुरक्षित स्थान पर सुला दिया। सिद्धार्थ की सेवा से हंस का घाव भरने लगा और वह धीरे-धीरे लड़खड़ा कर उड़ने लगा।

V

एक दुराचारी व्यक्ति था। उसने भगवान् बुद्ध के पास जाकर कहा—भगवन्, आप प्रातः मेरे घर से भिक्षा ग्रहण करें और मुझे उपदेश भी दें। बुद्ध ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वे अगले दिन अपने भिक्षा-पात्र में कूड़ा-करकट भरकर उसके घर पहुँच गये। उस व्यक्ति ने झुंझलाकर कहा—"महात्मन्, मैं आपके कूड़ा-करकट से भरे बर्तन में अपना उत्तम भोजन नहीं डाल सकता।" बुद्ध ने भी तत्काल उत्तर दिया—"श्रीमान् जी, मैं भी छलछिद्रों से भरपूर आपके दुराचारी मन में अपना कीमती उपदेश नहीं डाल सकता।" वह व्यक्ति अपनी कमी समझ गया। उसने अपना मन निर्मल किया और बुद्ध ने अपना पात्र।

VI

प्राचीन काल की बात है। एक आचार्य अपने सदाचार के लिए बहुत प्रसिद्ध था। विद्यार्थी लोग दूर-दूर से उसके आश्रम में पढ़ने के लिए आते थे। उन छात्रों में से

एक को चोरी करने की बुरी आदत थी। अतः सभी छात्र उससे तंग थे। एक दिन सभी छात्रों ने मिलकर गुरु जी से कहा, "गुरुदेव, या तो आप इस छात्र को आश्रम से निकाल दें, अन्यथा हम सभी आपको छोड़कर अन्यत्र चले जायेंगे।" आचार्य ने कहा, "मैं इस मूर्ख को आश्रम से नहीं निकाल सकता। मुझे आप लोगों की चिन्ता नहीं। आप बुद्धिमान् हैं। आप सर्वत्र निर्वाह कर सकते हैं। सभी छात्र गुरुजी की इस उदारता पर गद्गद् हुए बिना नहीं रह सके और उस चोर विद्यार्थी ने भी अपना कमी महसूस कर ली।

VII

एक सेठ था। उसके पास इतना धन था कि प्रायः गिनती भी नहीं हो सकती थी। लेकिन वह लालची सेठ फिर भी सन्तुष्ट न था। एक दिन उसने अपने सभी मुनीमों को बुलाकर पूछा—"मेरे पास कितना धन है और वह कितने दिन चल सकता है।" मुनीमों ने कहा—"धन बहुत ज्यादा है—आप के पुत्र-पौत्र भी आराम से जीवन-यापन करेंगे।" सेठ ने रोते हुए कहा—"हाय ! मेरे प्रपौत्रों का क्या बनेगा ?" इसी चिन्ता में वह सेठ दिल का रोगी होकर मर गया।

VIII

एक दिन किसी चरवाहे ने जंगल में पड़े हुए सिंह-शिशु को देखा। वह उसका भी अपनी भेड़ों के साथ पालन करने लगा। इस प्रकार वह शेर का बच्चा स्वयं को भेड़ समझने लगा। एक शेर उसे इस अवस्था में देखकर बहुत हैरान हुआ। वह उसे एक तालाब के किनारे ले गया। उस सिंह-शिशु ने अपना प्रतिबिम्ब पानी में देखा। उसे स्वयं के शेर होने का ज्ञान हो गया। अब वह जंगल का बादशाह था। हमें भी आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

IX

स्वर्गलोक में दो देवियाँ निवास करती थीं, एक सत्य की देवी और दूसरी झूठ की। एक दिन वे नहाने के लिए किसी तीर्थ पर गईं। वहाँ वे अपने-अपने कपड़े उतारकर पानी में प्रविष्ट हो गईं। झूठ की देवी शीघ्रतापूर्वक बाहर निकली और सत्य की देवी के कपड़े पहनकर भाग गई। फलस्वरूप सत्य की देवी को विवश होकर झूठ की देवी के कपड़े पहनने पड़े। अभी तक ऐसा ही चला आ रहा है।

X

एक सज्जन व्यक्ति था। वह पगड़ी पहना करता था। उसकी पगड़ी मैली हो गई। वह उसे धोने के लिए नदी पर गया। उसने उसे धोकर नदी के किनारे सूखने के लिए डाल दिया। अचानक एक गधा आया और उस पगड़ी के ऊपर से गुजर गया। उस सज्जन ने दुखी होकर गधे से कहा—"यदि आप मानव होते तो मैं आपको गधा कह देता लेकिन अब मैं आपको क्या कहूँ ?"

नवम अध्याय

लघुनिबन्ध

[MINI-ESSAYS]

निबन्ध-लेखन में लेखक के भाषा पर अधिकार एवं उसके विचारों में व्यवस्था तथा औचित्य का प्रगटीकरण होता है। दशमी कक्षा की परीक्षा में प्रायः वर्णनात्मक विषयों पर निबन्ध पूछे जाते हैं। अतः छात्रों को मम प्रियः कविः, मम प्रियं पुस्तकम्, अस्माकं देशः, अस्माकं विद्यालयः जैसे विषयों पर अपने निबन्ध तैयार करने चाहिएँ। साथ ही प्रमुख ऋतुओं (वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्), मेलों (कुम्भपर्व, सूर्यग्रहणपर्व), मैच (पादकन्तुक-साम्मुख्यम्, क्रिकेट-क्रीडा-साम्मुख्यम्), दीपावली, उत्सवों (वार्षिकोत्सवः, वसन्तोत्सवः, स्वतन्त्रतादिनोत्सवः), यात्रा (पर्वत-यात्रा, विमान-यात्रा, तीर्थ-यात्रा) विभिन्न प्रदर्शनी आदि से सम्बन्धित विषयों पर लघुनिबन्ध पूछे जाते है। इन निबन्धों में लेखक को अपने अनुभव के आधार पर सरल वाक्य बनाकर विषय के विभिन्न पक्षों को अलग-अलग क्रमिक खण्डों या अनुबन्धों में विभाजित कर लेना चाहिए। प्रस्तावना में विषय के सम्बन्ध में सामान्य बातों का उल्लेख करना चाहिए। उपसंहार में विभिन्न अनुबन्धों में आए हुए विचारों को समेट कर रखना चाहिए। जहाँ तक विचारात्मक या भावनात्मक विषयों का सम्बन्ध है, उनमें बौद्धिक चिन्तन की तथा पूर्व अर्जित ज्ञान के समुचित उपयोग की अपेक्षा रहती है। लेखक को सर्वप्रथम इन विषयों के सम्बन्ध में जो विचार वह एकत्र कर सकता है, उन्हें एकत्र करके एक व्यवस्था देनी चाहिए। अपने विचारों की पुष्टि में वह शास्त्रकारों के उद्धरण भी प्रस्तुत कर सकता है। विचारात्मक विषयों में परोपकारः, मित्रता, देशप्रेम, सत्संगतिः, प्रजातन्त्रम्, सत्यम्, विद्या, संस्कृतस्य महत्त्वम् आदि विषय प्रमुख हैं। कभी-कभी इन विषयों से सम्बन्धित उक्तियों पर निबन्ध लिखने के लिए कहा जाता है जैसे सा विद्या या विमुक्तये, परोपकारस्तु पुण्याय पापाय परपीडनम्, सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् इत्यादि। ऐसे विषयों पर निबन्ध लिखते समय लेखक को अपने समस्त विचारों को उक्तिविशेष की सीमाओं में बाँधकर प्रस्तुत करना चाहिए।

आगे के पृष्ठों में गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रायः सभी विषयों को तो लिया ही गया है, इसके अतिरिक्त और भी अनेक सम्भावित विषयों पर लघु निबन्ध प्रस्तुत किए गए हैं। आशा है इनके अभ्यास द्वारा छात्र अपने वाक्य बनाकर इन विषयों को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। वे यदि ऐसा कर पाए तो उन अन्य विषयों पर भी सरलता से निबन्ध लिख सकेंगे जिनका यहाँ संकलन नहीं किया गया है।

1. विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः

अस्माकं विद्यालयः नगरे सुप्रसिद्धः वर्तते। अस्य स्थापना मूर्धन्यैः महानुभावैः कृता। प्रतिवर्षं सितम्बरमासस्य प्रथमदिवसे अस्य वार्षिकोत्सवः भवति। अस्मिन् वर्षे उपायुक्तमहोदयेन उत्सवस्य अध्यक्षता स्वीकृता। तदवसरे विद्यालयस्य महती सज्जा कृता आसीत्। विद्यागृहं सर्वत्र सुधाधवलितं दृश्यते स्म। मार्गम् उभयतः चित्रवर्णाः

ध्वजाः दोधूयन्ते स्म। सर्वे छात्राः प्रसन्नमुखाः आसन्। अध्यापकाः अपि स्वस्वकार्यनिरताः इतस्ततः विचरन्ति स्म।

अध्यक्षागमनम्

निश्चिते काले अध्यक्षमहाभागः तोरणं संप्राप्तः। शंखध्वनिना तस्य स्वागतं जातम्। अनेकैः माल्यैः सः विभूषितः। सर्व जनैः च प्रत्युत्थानेन सम्मतः। आदौ सः हवनयज्ञे आहुतिं दत्तवान्। तदनन्तरं जनान् अभिवाद्य स्वासने उपविष्टः।

कार्यक्रमस्य समारम्भः

सरस्वतीवन्दनाद्वारा कार्यक्रमः समारब्धः। छात्रैः शारीरिकक्रीडा-प्रदर्शने विशेषतः योगचाप-प्रदर्शने, अपूर्वं कौशलं प्रदर्शितम्। सांस्कृतिक-कार्यक्रमे संस्कृत-रूपकं 'दूतवाक्यम्' सर्वेषां मनांसि अहरत्। शिशु-नृत्यं, प्रहसनं, भाणं, संस्कृत-गीतं चापि अतीव रुचिकरणि आसन्।

कार्यक्रमस्य समारोपः

तदनन्तरं प्राचार्यमहोदयेन वार्षिकं विवरणं प्रस्तुतम्। दशम-कक्षायाः परिणामः अतीव उत्साह-वर्धकः आसीत्। अन्ते अध्यक्षमहोदयेन स्वभाषणे प्रशंसा-पराः शब्दाः उक्ताः तेन पञ्चसहस्र-रूप्यकाणि अपि दत्तानि। ततः सर्वेषां धन्यवादात् ऊर्ध्वम् जलपानम् आसीत्। तच्च आदाय सर्वे स्वां स्वां दिशम् अभ्यगच्छन्।

2. विज्ञानस्य चमत्काराः

अशक्यं चमत्कारवर्णनम्

सम्प्रति विज्ञानस्य युगं वर्तते। विज्ञानस्य प्रतिदिनं जायमानं नूतनं चमत्कारं श्रुत्वा वयं चकिताः भवामः। विज्ञानेन मानवानां यः उपकारः कृतः तस्य वर्णनम् सर्वथा अशक्यम्। यत्किञ्चत् वर्णनं शक्यं तदपि अत्र न सर्वंलिखितु पार्यते।

कृषि-गृह-क्षेत्रे सौविध्यम्

अधुना कृषिक्षेत्रे डीजल-चालित-यन्त्रीभिः (Tractors) भूविलेखन-कार्य सकृदेव सुसाध्यं जातम्। अधुना बीजानां वपनम्, कण-वुसयोश्च पृथक्करणं नवैः यन्त्रैः पश्यतामेव सिद्धं वर्तते। पाकशालायां स्टोव-पाचकगैस-साहाय्येन अनायासमेव विधपाक-सिद्धश्च वर्तते। वस्त्र-क्षालन-यन्त्रेण वस्त्राणि सत्वरं क्षालितानि सन्ति। गृह-मार्जनमपि यन्त्रैः कर्तुं शक्यते। कूलर-हीटर-फ्रिजादीनि यन्त्राणि कस्य न सुखावहानि ?

ऊर्जायाः चमत्कारः

विद्युद्-दीपाः सुदूरं प्रकाशं विकिरन्ति। अधुना सूर्य-तापं संगृह्य सर्वविध-कर्मसु तस्य उपयोगः भवेत् इति विचार्यते येन ऊर्जायाः अभावः दूरीकर्तु शक्यते।

यातायातसञ्चारसाधनानि

यातायातम् अत्यन्तं सुकरं अधुना वर्तते। विविधानि जल-स्थलवायु-मार्ग-यानानि पश्यतामेव स्थानात् स्थानं प्लवन्ते, यान्ति उड्डयन्ति च। आकाशवाणी-दूरवीक्षण-छाया-चित्र चित्रपटादीनि मनोरंजन-साधनानि प्राकृतस्यापि हस्तगतानि तिष्ठन्ति। अधुना तु संचार-साधनानाम् कृते उपग्रहाणां प्रयोगोऽपि क्रियते। उपग्रहस्य आविष्कारेण मानवः अन्यग्रहेषु पदं विधातुं कटिबद्धः वर्तते।

नवीना-चिकित्सापद्धतिः

चिकित्साक्षेत्रे विज्ञानद्वारा असाध्यरोगाणाम् उपचारः कर्तुं शक्यते।

विज्ञानस्य संहारकरूपम्

यदा कदा परमाणु-उद्जन-स्फोटाः विज्ञानस्य जनसंहारक-रूपमपि उपस्थापन्ति, परं वस्तुतस्तु मनुष्यस्य बुद्धिवैभवेन आविष्कृतं विज्ञानम् उपकारि, अनुपकारि चाऽपि, तस्यैव सर्वथा अधीनम् वर्तते।

3. यद्यहं भारतस्य प्रधानमन्त्री स्याम्

भारतस्य संविधाने प्रधानमन्त्रिणः पदम् अतीव महत्त्वपूर्णं वर्तते। सः राष्ट्रस्य असिद्धानि कार्याणि साधयितुं प्रभवति। सः प्रमुखदलस्य नेता अस्ति। सः मन्त्रिमण्डलस्यं अध्यक्षः वर्तते। यदि अहं प्रधानमन्त्री स्याम् तदहं राष्ट्रम् उन्नतिपथं नेतुम् अहोरात्रं प्रयतेय।

शुद्धराष्ट्रवादस्य प्रतिष्ठाकरणम्

अस्माकं राष्ट्रे धर्मनिरपेक्षतायाः विकृतस्वरूपः वर्तते। अल्पसंख्यकानां सर्वत्र तुष्टिकरणं भवति। अहम् अल्पसंख्यकैः सह भेदभावं न करिष्यामि किन्तु अल्पसंख्यकवादस्य स्थाने शुद्धराष्ट्रवादं प्रतिष्ठितं कर्तुं यतिष्ये।

मानबिन्दुरक्षणम्

अस्माकं राष्ट्रस्य केचन मानबिन्दवः सन्ति यथा वेदसंगतिः संस्कृतभाषाप्रचारः, गोरक्षा च । तान् प्रति अधुना यावत् यादृशी उपेक्षा वर्तते, न तादृशी-कुत्रापि दृश्यते। यद्यहं प्रधानमंत्री स्याम् तदा वेदमन्दिराणां प्रतिप्रदेशं निर्माणं, निःशुल्क-संस्कृत-शिक्षणस्य व्यवस्थां, गोशालानां च सम्यक् प्रतिष्ठां, मद्यपाननिषेधञ्च विधातुं प्रामुख्येन चेष्टां कुर्याम्। अयोध्यास्थितस्य रामजन्मभूमिमन्दिरस्य पुनरुद्धारोऽपि मया कारयिष्यते।

जनसंख्यासमस्यायाः समाधानम्

अत्र महती जनसंख्या समस्यारूपेण विद्यते। तस्य समाधानार्थम् अहं लघूद्योगानां प्रसाराय यतेय, महोद्योगानाम् उपयोगं सुरक्षा-शास्त्रास्त्र-निर्माणाय कारयेयम्।

निर्वाचन पद्धतौ संशोधनम्

अस्माकं निर्वाचनपद्धतिः अपि दोषपूर्णा वर्तते तत्र संशोधनम् अपेक्षते । मया एतस्मिन् कार्ये वरीयता देया।

अस्माकं शिक्षापद्धतिः अतीव दोषपूर्णा वर्तते। अतोऽहं प्रथमम् एतामेव सन्मार्गम् आनेष्यामि।

4. क्रीडा-प्रतियोगिता

नवम्बरमासे प्रतिवर्ष विद्यालयस्य क्रीडा-दिवसः भवति। तदा विविधानां क्रीडाप्रतियोगितानाम् आयोजनं भवति। गतवर्षे मानितः क्रीडादिवसः अतीव स्मरणीयः आसीत्। तत्र छात्रैः अपूर्वेण उत्साहेन भागो गृहीतः। कबड्डी-प्रतियोगितायां तु सर्वेषां दर्शकानां मनांसि हृतानि। रंजन-धवन-मनोहरादीनां कलात्मकं प्रदर्शनम् अद्भुतम् आसीत्।

प्रधावनप्रतियोगिता

प्रधावन-प्रतियोगितासु त्रिसहस्रकिलोमीटर-प्रधावन-प्रतियोगिता अद्वितीया आसीत्। तत्र भीमसिंहः पूर्वस्थापितान् मानदण्डान् अपास्य नवं मानदण्डन् अस्थापयत्। मल्लयुद्धे विश्वामित्रः निजलाघवान् दर्शयित्वा सर्वेषां प्रशंसापात्रम् अतिष्ठत्।

शाटपुट-भारोत्तोलन-प्रतियोगिता

शाटपुट-प्रतियोगिषु रमेशः लौहगोलम् अतिदूरं प्रक्षिप्य नवीन क्षेपमानम् अस्थापयत्। भारोत्तोलन-प्रतियोगितायां न केनापि उत्साहः प्रदर्शितः, किन्तु मन्दचालप्रतियोगितायां छात्रैः अपूर्वस्य धैर्यस्य प्रदर्शनं कृतम्। द्विचक्रिका-प्रतियोगितायां तु एकः छात्रः मार्गे एव पतितः मुर्च्छितश्च।

कन्यानां योगदानम्

कासुचित् प्रतियोगितासु कन्याभिः अपि भागो गृहीतः फलप्राप्ति-प्रतियोगिनीषु चञ्चला अतीव चञ्चला जाता। तत्र कन्यकाः चलत्सूत्र-फलानि दन्तैः पुनः पुनः ग्रहीतुं चेष्टमानाः अतर्कितं दृश्यम् उपास्थापयन्। मृद्भाण्ड-त्रयं गृहीत्वा धावन्ती लता पूर्वं स्थापितं निजं मानम् अतिलघ्य सर्वेषां प्रशंसा-भाजनं जाता। संगीतमयाऽऽसन-प्रतियोगितायाम् अध्यापकैः अपि भागो गृहीतः। तैः रज्जु-कर्षण-प्रतियोगितायाम् अपि अपूर्वः उत्साहः प्रदर्शितः। तत्र संस्कताध्यापकः प्रथम् स्थानं प्राप्नोत्।

पारितोषिक-वितरणम्

प्रतियोगिता-परिसमाप्तौ अध्यक्षमहाभागैः पारितोषिकानि प्रदत्तानि। इत्थम् अयं प्रतियोगिता-समारोहः सर्वेषां हर्षातिरेकम् अजनयत्।

5. मम प्रियः कविः

(वाल्मीकिः)

[*C.B.S.E. (O) 1992*]

मम प्रियः कवि वाल्मीकिः अस्ति। सः आदिकविः आसीत्। तस्य नाम रत्नाकरः आसीत्। एकदा तपश्चर्यां कुर्वतः तस्य उपरि एकं वल्मीकं (मृद्-आवरणम्) पुत्तिकाभिः कृतम्। तत्पश्चात् लोके अयं वाल्मीकिः इति विश्रुतः अभवत्।

आदिकविः

एकदा तमसा-तीरे भ्रमता अनेन व्याधेन विध्यमानम् एकं क्रौञ्चं दृष्टम्। तत् करुणं दृश्यं दृष्ट्वा अस्य मुखात् देववाण्याम् अयं श्लोकः अनुष्टुभ् छन्दसा आविर्भूतः—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

तत्पश्चात् अयं ब्रह्मणो वचनाद् अस्मिन् छन्दसि रामचरितम् अवर्णयत्। तस्य कृतिः लोके 'रामायणम् आदिकाव्यम इति प्रसिद्धिम् लब्धवती।'

विश्वसाहित्ये रामायणस्य स्थानम्

वाल्मीकि-विरचितं रामायणम् विश्वसाहित्ये अपूर्वं पदम् अलङ्करोति। एतादृशं प्रियं महाकाव्यं जगति अन्यत्र न उपलभ्यते। कश्चित्कविः वाल्मीकिं प्रशसन् इदमाह—

कवीन्दुं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम्।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः॥

वाल्मीकिं वन्दमानः कश्चिद् अन्यः कविः कथयति—

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥

रामायणं नैतिकादर्शानाम् आकरः अस्ति। अस्य भाषा सरला प्राञ्जला च। इदं भारतीयानां मानबिन्दुः अस्ति। वाल्मीकिः तस्य काव्यं च मानवहृदयेषु प्रतिष्ठेते।

सीतायाः संरक्षणम्

वाल्मीकिः निजतपोवने रामेण निर्वासितायै सीतायै संरक्षणम् अयच्छत्। सः तत्रैव उत्पन्नं लवकुशनाम्ना प्रसिद्धं सीतायाः दारकद्वयम् अरक्षत्, तं च युद्धविद्यां रामायणपाठं च अशिक्षयत्।

6. मम प्रियं पुस्तकम्
(रम्या रामायणी कथा)

मम प्रियं पुस्तकम् रामायण् अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे मर्यादापुरुषोत्तमस्य श्रीरामस्य जीवनस्य वृत्तं वर्तते। अस्य लेखकः महर्षिः वाल्मीकिः आसीत्। सः आदिकविः आसीत्, अतः तस्य रचना "आदिकाव्यम्" इति कृत्वा विद्वांसः स्मरन्ति। एतत् काव्यम् अनुष्टुप्-छन्दसि निबद्धम्। अत्र श्लोकानां चतुर्विंशतिसहस्रं वर्तते, तेन रामायणं चतुर्विंशति-साहस्री संहिता इति नाम्ना अपि विद्वद्भिः स्मर्यते। इदं कविना नारदमुनेः प्रेरणया ब्रह्मणः वचनेन च रचितम्।

रा यणस्य काण्डव्यवस्था

रामायणे 'बालकाण्ड-अयोध्याकाण्ड-अरण्यकाण्ड-किष्किन्धाकाण्ड-सुन्दरकाण्ड-युद्धकाण्ड-उत्तरकाण्ड' इति सप्त काण्डानि वर्तन्ते। केचन विद्वांसः बालकाण्डं उत्तरकाण्डं च अवान्तरकालिकं प्रक्षेपं मन्यन्ते। तत्र श्रीरामस्य प्रमुखतः परमेश्वरावताररूपेण वर्णनं वर्तते। प्रक्षिप्तकाण्ड-विषयिकी धारणा न सत्यं प्रतीयते, तथापि बालकाण्ड-उत्तरकाण्डयोः मध्ये केचन श्लोकाः प्रक्षिप्ताः सन्ति इत्यवधारणे न कश्चित् सन्देहोऽस्ति।

रामायणे निरूपिताः जीवनादर्शाः

रामायणे रामराज्ये समाजव्यवस्थायाः विशदं वर्णनम् उपलभ्यते। श्रीरामलक्ष्मणादीनां भ्रातृस्नेहः सत्यम् उदाहर्यः एव। सीता आदर्श-नारीत्वस्य निदर्शनम् अस्ति। प्रजायाः अनुरञ्जनार्थं स्वभार्यामपि परित्यजन् रामः महान्तम् आदर्शम् स्थापितवान्। रामायणं वस्तुतः सरस-संस्कृतेन रचितम् आदर्शानां दर्पणम् इव भासते। इदं सर्वस्य अपि सततं प्रेरणास्रोतः। एभिः अन्यैश्चापि अनेकैः कारणैः रामायणं मम अति प्रियं पुस्तकम् अस्ति। सत्यम् उक्तम् कविना—

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणी कथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

7. मम प्रियं पुस्तकम्

अथवा

श्रीमद्-भगवद्गीता

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेतानां युयुत्सुकानां कौरवाणां पाण्डवानां च मध्ये भगवता कृष्णोनअर्जुनम् अभिलक्ष्य गीता वाणी श्रीमद्भगवद्गीता इति नाम्ना वर्तते। एषा अष्टादश पर्वसु सहस्रश्लोकेषु महर्षिवेदव्यासेन निबद्धा वर्तते। इयं रचना महाभारतस्य मध्यभागे दीपस्तम्भ इव स्थिता प्रतीयते। गीतायाः महिम्नः विषये स्फुटम् अभिव्यक्तम् अस्मिन् श्लोके—

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख-पद्माद्विनिः सृता॥

गीतायाः कर्मयोगः

गीताशास्त्रं कर्तव्याद् विमुखस्य मानवस्य कर्तव्ये कर्मणि प्रयोजकम् वर्तते। अत एव इदं कर्मयोगरहस्यम् इति स्मर्यते। स्वबान्धवान् सम्मुखम् दृष्ट्वा अर्जुनः युद्धाद् विमुखो जात। सः क्लैव्यं कश्मलम् च आप्तवान्। अर्जुनस्य विषादः जीवन-संग्रामात् निवर्तकस्य कस्यापि जनस्य विषादः अस्ति। सः विषादः गीतायाः उपदेशेन भगवत्कृपया च नष्टो भवति। गीतायाः अन्ते अर्जुनः एव स्वीकरोति—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव॥

भगवता कृष्णेन गीतासारतया इदमेव उक्तम्—

असक्तः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय।

तथा च—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भू मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

सर्वोपनिषदां सारः

अनासक्तकर्मयोगस्य अयं सिद्धान्तः अप्रतिमः खलु। अत्र एव सर्वोपनिषदां सारः विद्यते। गीता गोभूतानाम् उपनिषदां दुग्धम्ः—

सर्वा उपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

गीतायां सांख्ययोग-बुद्धियोग-ध्यानयोगःभक्तियोगादीनां ज्ञानं सरलसंस्कृतेन उपलभ्यते।

विश्वभाषासु रूपान्तरम्

संसारस्य सर्वासु भाषासु गीतायाः रूपान्तरम् उपलभ्यते। विश्वविदितोऽयं ग्रन्थः भारतीयमनीषिणां प्रकाशस्तम्भः वर्तते। किम्बहुना, यावत्कालं नरः तापत्रयग्रस्तो भविष्यति, तावत्कालं सः श्रीमद्भगवद्गीताम् आश्रयिष्यति।

8. वसन्तपञ्चमी/होली महोत्सवः

अथवा

वसन्तोत्सवः

अस्माकं देशे वसन्तोत्सवः सोत्साहं मान्यते। वसन्तकाले शीतस्य दुष्प्रभावः नश्यति। अतएव कथ्यते—वसन्ते सम्प्राप्ते किल शीतं ह्यपगतम्।

वसन्तपञ्चमी-महोत्सवः

वसन्तोत्सवः 'वसन्तपञ्चमी' इति नाम्ना अपि प्रसिद्धो वर्तते। माघमासस्य शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ अयम् उत्सवः भवति। अस्मिन् दिने क्षेत्रेषु सर्वत्र पीतम् सर्षपं विकसितं दृश्यते। जनाः पीतवस्त्राणि गृहीत्वा इतस्ततः भ्रमन्ति। विद्यालयेषु छात्राणां अध्ययनं तु न भवति, परम् ते सर्वे समवेताः नगराद् ग्रामाद् वा बहिर् गच्छन्ति। तत्र एकस्मिन् क्रीडाक्षेत्रे विविधासु क्रीडास्पर्धासु रममाणाः भवन्ति। मधुराणि गीतानि गीयन्ते। वीररसपूर्णाः देशभक्तिभावभरिताः देशहिताय बलिदानस्य प्रेरणां सञ्चारयन्त्यः कविताः अपि पठ्यन्ते। वासन्तिक-वर्ण-शोभितम् 'हलुआ' इति मिष्टान्नम् सर्वैः भुज्यते।

होली-पर्वणः महत्त्वम्

एकः अपरः उत्सवः "होलिका दहनपर्व" अथवा 'होली' नाम्ना प्रसिद्धः अस्ति। अयमपि 'वसन्तोत्सवः' इति स्वीक्रियते। अस्मिन् दिने होलिकानाम्ना प्रसिद्धा काचित् राक्षसी प्रभुभक्तं प्रह्लादम् दग्धुकामा सती स्वयमेव दग्धा जाता। तस्याः दहनम् अभिनयन्तः जनाः अग्निं परितः तिष्ठन्ति। अस्मिन् अवसरे गृहेषु अग्निहोत्रम् अपि भवति। अस्मिन् दिने नवधान्यस्य अपि गृहे आगमनम् भवति।

होलीपर्वणः स्वरूपम्

'होली' उत्सवस्य संलग्नः 'होली' अथवा 'फाग' नाम्ना प्रसिद्धः उत्सवः द्वितीये दिने मान्यते। तदा जनाः शुष्कम् 'गुलाल' इति रागम् आदाय अन्योन्यमुखानि लिम्पन्ति। एतानि चित्रितानि मुखानि अतीव हर्षोत्पादकानि सन्ति। केचन जनाः 'पिचकारी' सहयोगेन द्रवं रागम् अन्योन्यस्य उपरि क्षिपन्ति। वसन्तोत्सवे लोकः नृत्यति, गायति, उच्छलति इति विविधाः विनोदपूर्णाः चेष्टाः करोति।

9. दीपावली

दीपावलीनामकं पर्व भारते अतीव महत्त्वम् वहति। श्रूयते यत् अस्मिन् दिने त्रेतायुगे मर्यादापुरुषोत्तमः श्रीरामचन्द्रः पितुः आज्ञां परिपालयन्, चतुर्दशवर्षपर्यन्तं वने उषित्वा राक्षसराजम् रावणं हत्वा तस्य बन्धनात् स्वपत्नीं सीतां च विमोच्य, सीतया लक्ष्मणेन च सहितः अयोध्यां नगरीं निवृत्तः आसीत्। तदा च तस्य स्वागतम् लोकेन रात्रौ दीपमालां कृत्वा कृतम्। ततः प्रभृति सर्वैः भारतीयैः अस्मिन् एव दिने प्रतिवर्षं स्वगृहेषु दीपमाला क्रियते।

लक्ष्मीपूजनम्

दीपावलीमहोत्सवे रात्रौ श्रीमहालक्ष्मीपूजनं क्रियते। स्थाने-स्थाने वैदिकमन्त्रैः हवनयज्ञादिकम् अपि अनुष्ठीयते। बहवो वणिजः अस्माद् दिनाद् "बही-खाता" आरम्भं कुर्वन्ति। कार्तिकमासस्य अमावस्यायां दीपावलीमहोत्सवम् भवति। अस्मिन् दिने गृहाणां विशेषतः शुद्धिः सुधाधवलिता च क्रियते। गृहम् नववधूरिव भासते। यत्र-यत्र शोभा, तत्र-तत्र महालक्ष्मीदेव्याः आगमनम् भवति इति मन्यते।

दीप-प्रकाशः

तैलस्य लघुदीपाः पंक्तिशः प्रकाश्यन्ते। अधुना मोम-वर्तिकानाम् पंक्तिभिः दीपपङ्क्तीनां स्थानं गृह्यते। विविधरागाः विद्युद्-बलभाः विविधान् रागान्

व्यञ्जयन्ति। बालक-बालिकाभिः विविधारूपाः स्फोटाः विस्फोट्यन्ते। दीपानां प्रकाशेन अमावस्यायाः तिमिरम् आच्छाद्यते। गृहलतासु विटपेषु चापि विविधरागदीपाः विलसन्ति। आबालवृद्धाः मिष्टान्नम् मधुरं स्वदन्ते। प्रतिवेशिगृहेषु मिष्टान्न-वण्टनार्थं नवीनाः वध्वः सातिशयं श्रृंङ्गारं कृत्वा गच्छन्ति। स्वमित्र-बान्धवेभ्यः मिष्टान्नम् प्रेष्यते। सर्वे परस्परं मिलित्वा सर्वबन्धूनां मङ्गलकामनां कुर्वन्ति।

10. स्वातन्त्र्यदिवसोत्सवः

महत्त्वम्

प्रतिवर्षं अगस्तमासस्य पञ्चदशतिथौ सम्पूर्णे भारतवर्षे स्वातन्त्र्यदिवसोत्सवः मान्यते। अस्मिन् दिने अस्माकम् राष्ट्रं परकीयाणां बन्धवात् विमुक्तम् आसीत्। 1947 तमे वर्षे अस्मिन् दिने ब्रिटिशशासकैः सुबद्धा भारतमाता श्रृङ्खलां परित्यज्य बन्धनविहीना जाता। दिल्लीनगरे 'लालकिला' दुर्गे प्रधानमन्त्रिमहोदयैः राष्ट्रीय-ध्वजारोहणं सञ्जातम्। तस्मादेव दिनादारम्य महोत्सवोऽयं प्रतिनगरम् प्रतिग्रामम् महता समारोहेण मान्यते भारतवासिभिः।

राष्ट्रीयध्वजारोहणम्

स्वतन्त्रतादिवसे प्रातःकाले एवं नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे राष्ट्रीयध्वजारोहणम् क्रियते। तदनन्तरम् नेतृणां भाषणानि भवन्ति। जनाः स्वगृहेषु कार्यालयेषु च राष्ट्रध्वजान् आरोहयन्ति राष्ट्रोन्नत्यै च शपथं कुर्वन्ति, राष्ट्रभक्तानां वीराणां स्मरणं क्रियते। दूरवीक्षणे दिल्लीनगरस्य स्वतन्त्रतादिवसस्य राष्ट्रीयः कार्यक्रमः दर्श्यते। तत्र प्रधानमन्त्रिणः सन्देशोऽपि श्रुतिगोचरो भवति। तत्र विशालो जनसमूहः एकत्रितो भवति। लालकिलादुर्गस्य उपरि निर्मिते मंचे विशिष्टाः अतिथयः उपविशन्ति। सर्वं दृश्यम् अतिरमणीयम् दर्शनीयं च भवति।

स्वातन्त्र्य-रक्षणम्

नात्र कश्चिदपि सन्देहः यत् अस्माकं पूर्वजाः स्वातन्त्र्यलाभाय स्वरक्तस्य प्रवाहं कर्तुम् सदा तत्पराः आसन्। अस्माकं कुलवध्वः सतीत्वरक्षायै प्रतिक्षणं समुद्यता आसन्। अस्माभिः अपि अधुना स्वातन्त्र्यस्य रक्षणाय सततं जागरूकैः स्थित्वा राष्ट्रसेवा विधेया, स्वार्थः सीमितः करणीयः, परमार्थश्च सम्पादनीयः।

देशरक्षायाः संकल्पः

स्वातन्त्र्यदिवसोत्सवः न केवलम् अस्मान् स्वाधीनतायाः महत्त्वमेव स्मारयति प्रत्युत देशरक्षायै अपि आमन्त्रयति। वस्तुतो महता कष्टेन प्राप्तायाः स्वतन्त्रतायाः संरक्षणाय अस्माभिः सदैव कृतसङ्कल्पैः स्थातव्यम्।

11. गणतन्त्रदिवसः

महत्त्वम्

भारतम् अस्माकं पूर्वजानां महता प्रयत्नेन 1947-तमे ईसवीयाब्दे अगस्तमासस्य पंचदशमे दिनाङ्के स्वतन्त्रम् अभूत्। तदनन्तरं डा. राजेन्द्रप्रसादमहोदयस्य सभापतित्वे संविधानसभा भारतस्य संविधानं निर्मितवती। संविधानस्य आरम्भदिवसः गणतन्त्रदिवसः इत्युच्यते। तस्माद् दिनाद् भारतं पूर्णरूपेण स्वतन्त्रं जातम्। पंचाशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे (1950) ईसवीयाब्दे जनवरी मासस्य षड्विंशतितमे

दिनाङ्के (26 जनवरी) स्वतन्त्रभारतस्य संविधानम् आरब्धम् अभवत्। डा. राजेन्द्रप्रसाद एव स्वतन्त्र-भारतस्य प्रथमो राष्ट्रपति निर्वाचितः अभवत्।

संविधानस्य आरम्भदिवसः

जनवरीमासस्य षड्विंशतितमे दिवसे भारतस्य राष्ट्रियोत्सवः प्रतिवर्षं सम्पद्यते अस्य दिवसस्य इव अस्याः तिथेरपि स्वकीयं महत्त्वं वर्त्तते। स्वतन्त्रतायाः आन्दोलनकाले 1929 तमे ईसवीयाब्दे लवपुरे रावीतटे जवाहरलालनेहरूमहोदयस्य सभापतित्वे कांग्रेसस्य अधिवेशनम् अभवत्। तदा जनवरीमासस्य 26 तमे दिनाङ्के पूर्णस्वतन्त्रतायाः प्राप्तिरेव भारतस्य लक्ष्यं घोषितम् आसीत्। अतः स एव दिवसः संविधानस्य अपि आरम्भदिवसः इति स्वीकृतो नेतृभिः।

राजधान्यां समारोहः

दिल्लीनगरे अयं गणतन्त्रदिवसः विशेषमहोत्सवरूपेण मान्यते। भारतस्य राजधान्याम् अयम् उत्सवः 'इण्डिया गेट' इत्याख्ये स्थाने भवति। अस्य आयोजनं भारतीय नयेन क्रियते। राष्ट्रपतिमहोदयो राजकीयं रथम् आरुह्य विशालजनसमूहस्य मध्ये समायाति राष्ट्रध्वजं च उत्तोलयति। स्थल-नभ-जल-सैनिकाः सैनिकरीत्या तं नमस्कुर्वन्ति। ततः एका शोभायात्रा चलति लालकिला-दुर्गं प्राप्नोति। अस्यां शोभायात्रायां सशस्त्र-सैनिकाः, सैनिकवाद्यानि, टैंक-तोपादि-युद्धास्त्राणि, प्रान्तीयवेषभूषादिसुभूषिताः स्वरूपरचनाः, शारीरिक-प्रदर्शनं कुर्वन्तः, विविधानां विद्यालयानां छात्राः नर्तकाः, गायकादयश्च, सम्मिलन्ति।

विद्युद्-दीप-प्रकाशः

रात्रौ राष्ट्रपतिभवने सचिवालये सार्वजनिकस्थानेषु च विद्युद्दीपानां कान्तः प्रकाशः भवति यो दर्शकानां मनासि हरति। यत्र तत्र अग्निक्रीडायाः प्रदर्शनम् अपि भवति। प्रदेशेषु अपि प्रतिनगरं प्रदर्शनपूर्वकं दिवसोऽयं मान्यते। इमं महोत्सवं द्रष्टु दूरतो जनाः समागच्छन्ति हृदयोल्लासं चानुभवन्ति।

12. मम विद्यालयः

मम विद्यालयः भारतस्य राजधान्यां वर्तते। अयं मम गृहस्य समीपे वर्तते। अत्र सुदूरात् अपि केचित् बालकाः आगच्छन्ति। अस्य प्रधानाचार्यः सुयोग्य अनुशासनप्रियः चास्ति। अन्येऽपि अध्यापकाः स्व-स्व-विषये निष्णाताः। ते छात्रान् स्नेहेन पाठयन्ति।

अध्यापनव्यवस्था

मम विद्यालयस्य परिसरः शान्तिपूर्णः प्रकृत्या मनोहरः चास्ति। अयं विद्यालयः नितरां प्रसिद्धतमः। अस्य परीक्षाफलं प्रशंसनीयं भवति। अत्राध्ययने वयं गौरवम् अनुभवामः।

क्रीडा-व्यवस्था

मम विद्यालये छात्राणां क्रीडार्थम् एकम् अतिविशालं क्रीडाक्षेत्रम् अपि विद्यते। वयं प्रतिदिनं होरापर्यन्तं अत्र क्रीडामः। अत्र समये-समये क्रीडाप्रतियोगिताः अपि भवन्ति। विद्यालये रमणीयम् एकम् उद्यानं विद्यते यत्र वयं प्रातः सायं भ्रमणाय गच्छामः।

तडागः

विद्यालयस्य समीपे एकः तड़ागः अपि वर्तते। प्रतिदिनं जलविहाराय वयं तत्र गच्छामः। चिरं स्नानं कृत्वा आनन्दं चानुभवामः।

विज्ञानप्रयोगशाला

विद्यालये एका महती विज्ञानप्रयोगशाला अपि अस्ति यत्र प्रयोगेण छात्राः विज्ञानसिद्धान्तान् अवगच्छन्ति।

पुस्तकालयः

विद्यालय एकः पुस्तकालयोऽपि विद्यते यत्र छात्राः पठितुं पुस्तकानि समाचार-पत्राणि च लभन्ते। अस्माकं विद्यालयस्य समीपे जलपानगृहस्य अपि व्यवस्था विद्यते यत्र गत्वा छात्राः स्वादूनि वस्तूनि खादन्ति, पेयानि च पिबन्ति।

सदाचार-शिक्षा-व्यवस्था

अस्माकं विद्यालये द्विसहस्रं छात्राः पठन्ति। जनाः निजबालकान् तत्र अहमहमिकया प्रेषयन्ति। अत्र सुपठनस्य यथा प्रबन्धो वर्तते, यथा च सदाचरणशिक्षायाः व्यवस्था विद्यते, न तथा अन्यत्र। अत्र छात्राः विशेषयोग्यतां लब्ध्वा उत्तीर्णा भवन्ति। बहवः छात्राः छात्रवृत्तिं लभन्ते, प्रतियोगि-परीक्षासु प्रवेशं चापि प्राप्नुवन्ति।

छात्रसभा

विद्यालये एका छात्रसभा अपि वर्तते। तस्याः सम्पूर्ण सञ्चालनं छात्रैः एव क्रियते। नैतिकं सांस्कृतिकं च विषयम् आदाय विविधाः मनोरञ्जकाः कार्यक्रमाः अत्र प्रतिसप्ताहं प्रस्तूयन्ते।

संस्कार-व्यवस्था

अस्माकं विद्यालस्य आरम्भकाले वेदमन्त्रैः प्रार्थना क्रियते। वयं निजविद्यालयविषये साभिमानाः तिष्ठामः।

13. श्रीमती इन्दरा गान्धी

जीवन-चर्या

आसीत् श्रीमती इन्दिरा गान्धी भारतस्य तृतीयः प्रधानमन्त्री । सा स्वतन्त्र भारतस्य प्रथम-प्रधानमन्त्रिणः श्री जवाहरलालनेहरूमहोदयस्य दुहिता आसीत्। तस्याः मातुः नाम कमला आसीत्।

शिक्षा

सा स्विट्जरलैण्डदेशे इंग्लैंडदेशस्य चाम्सफोर्डनगरे शिक्षामलभत। भारतवर्षे शान्तिनिकेतनमध्ये 'विश्वभारती' इत्यादिषु केन्द्रेषु चापि तस्याः शिक्षा-दीक्षा अभवत्।

विवाहः, सन्ततिश्च

अस्याः विवाहः 1942 तमे इसवीयवर्षे श्रीफिरोजगान्धी इति ख्यातेन योग्येन लेखकेन सह अभूत्। ततः अस्याः द्वौ पुत्रौ राजीवसंजयनामानौ जातौ।

स्वातन्त्र्ययुद्धे भूमिका

भारतस्य स्वातन्त्र्ययुद्धे इन्दिरायाः भूमिका उल्लेखनीया वर्तते। विवाहानन्तरं 'मुञ्च भारतम्' इत्यान्दोलने द्वावपि दम्पती कारागृहे अगच्छताम्। 1958-तमे ईसवीयाब्दे तस्याः भर्तुः मृत्युरभवत् सा च विधवा सञ्जाता। तदनन्तरं श्रीमती

इन्दिरागान्धी स्वपित्रा सह एवं राजनीतिकार्येषु भाग गृह्णाति स्म। सा श्रीलालबहादुरशास्त्रिणः केन्द्रीयमन्त्रिमण्डले 1964-तमे वर्षे सूचनाप्रसारणविभागस्य मन्त्रित्वं लब्धवती।

प्रधानमन्त्रित्वम्

श्रीशास्त्रिणं निधनात् ऊर्ध्व 1964-तमे वर्षे श्रीमती गान्धी प्रधानमन्त्रिपदत्वं प्राप्तवती। प्रथमावसरे प्रधानमन्त्रिपदं लब्ध्वा सा 'दारिद्रय नाशय' इति घोषम् अघोषयत्। 1971-तमे तस्याः आदेशेन भारतीयसैनिकाः पाकिस्तानं पराजित्य बंगदेशं स्वतन्त्रमकारयन्।

महत्त्वपूर्णानि कार्याणि

प्रधानमन्त्रिणा अन्यान्यपि महत्त्वपूर्णानि कार्याणि कृतानि । एतेषु भारतीयनृपतीनां प्रीवीपर्सस्य समाप्तिः, बैंकानां राष्ट्रीयकरणं बङ्गशरणार्थिनां पुनरावासश्च उल्लेखनीयाः सन्ति।

आपातस्थितिः

1975-तमे वर्षे श्रीमत्या इन्दिरादेव्या विंशतिसूत्रीयः आर्थिकः कार्यक्रमः उद्घोषितः। ततश्च आपातकालिकस्थितिः घोषिता। तदा बहुसंख्यकाः जनाः विरोधिनः राष्ट्रद्रोहिणः इति मत्वा कारासु क्षिप्ताः। 1977-तमे वर्षे निर्वाचनेषु इन्दिरागान्धी सदलं पराजिता बभूव। तस्याः सौभाग्येन च सा जनतादलस्य आन्तरिककलहकारणात् 1980-तमे वर्षे पुनः प्रधानमन्त्रिपदं प्राप्तवती। 1984 तमे वर्षे सा दिवंगता जाता।

भारतीयराजनीतौ स्थानम्

सिद्धान्तरूपेण समाजवादं सफलं कर्तुं कृतसङ्कल्पा आसीत् । सा दीर्घकालं यावत् भारतीयराजनीत्याः गगनं तारकितम् अकरोत्।

14. भारतीया संस्कृतिः

संस्कृतेः स्वरूपम्

का नाम संस्कृतिः ? चेतसः संस्करणं संस्कृतिः इति अभिधीयते। सा नाम संस्कृतिः या मनसः मलं व्यपनयति, चेतसः चाञ्चल्यं दूरीकरोति, आत्मनश्च अज्ञानावरणम् अपसारयति। एषा लोकस्य राष्ट्रस्य संसृतेश्च उपकरोति। अस्मिन् विश्वे सा एव संस्कृतिः उपादेया वर्तते यया सर्वेषां स्वान्तेषु विश्वहितं विश्वबन्धुत्वं च आदर्शत्वेन उररीक्रियते।

भारतीयसंस्कृतेः स्वरूपम्

भारतीयसंस्कृतेः स्वरूपम् अत्र प्रस्तूयते। यथा (1) धर्मप्राधान्यम्—मानवेषु धर्मप्राधान्यमेव तान् पशुभ्यः व्यवच्छेदयति। (2) आध्यात्मिकी भावना—एतत् जीवनम् न केवलं भोगार्थम् एव विद्यते अपितु एतत् आत्मोन्नतेः प्रमुखं साधनं वर्तते। आध्यात्मिकी भावना सर्वेषु जीवेषु एकत्वम् अनुभवति। (3) पारलौकिकी भावना—इदं जगत् विनश्वरं वर्तते। एका कीर्तिः एव अविनाशिनी अस्ति। अतः विषयसखानि अपहाय कर्तव्यमेव प्रमुखं मन्तव्यम्।

आधारभूताः गुणाः, सिद्धान्तानिच

सदाचरपालनं, वर्णाश्रमव्यवस्था, कर्मवादः, पुनर्जन्मवादः, मोक्षावाप्तिः, श्रुतीनां

प्रामाण्यम्, यज्ञस्य महत्त्वं, सत्यपरिपालनम्, अंहिसापरिपालनम्, इत्यादयः भारतीय-संस्कृते आधारभूताः गुणाः सन्ति।

भारतीया संस्कृतिः इदं पुष्णाति यत् परमेश्वरः सर्वव्यापकः, अप्रतिमः सर्वशक्तिमान् अस्ति। सः एकः एव अद्वितीयः वर्तते। सः एव स्तोतव्यः, मन्तव्यः, ध्यातव्यश्च।

भारतीयसंस्कृतिः कर्मसिद्धान्तं प्रतिपादयति। जीवाः कर्मवाशात् विविधाः योनीः लभन्ते। मनुष्ययोनिं लब्ध्वा यदि कश्चित् जीवः धर्मार्थिकामनां सामञ्जस्यं स्थापयित्वा जीवं निर्वहति तदा सः पुनरागमनचक्रात् विमुक्तो भूत्वा मोक्षं लभते।

विश्वसंस्कृतिषु प्राचीनतमा

विश्वस्य सर्वासु अपि संस्कृतिषु भारतीया संस्कृतिः प्राचीनतमा वर्तते। समन्वयात्मकस्वभावात् सहिष्णुताप्रकर्षत्वात् च अनन्तान् भीषणतमान् प्रहारान् सोढ्वा अपि एषा जीवति। भारतीया संस्कृतिः सर्वेषाम् अपि देशानां जातीनां च कल्याणं कर्तुं सक्षमाऽस्ति।

15. ग्राम्यजीवनम्

महत्त्वम्

भारते नगराणाम् अपेक्षया ग्रामाणां संख्या अधिका वर्तते। तस्मात् ग्रामजीवनम् अत्र प्रमुखतां वहति। अस्मिन् देशे ग्राम्यजीवनम् नागरजीवनात् पर्याप्तं भिन्नम् अस्ति। ग्रामोद्धारस्य कृते महान् प्रयासः क्रियते।

प्रमुखो व्यवसायः

ग्राम्यजीवने कृषिः एवं प्रमुखो व्यवसायः। ग्रामेण कुषकाणां समीपं जीवननिर्वाहात् अधिका भूमिः न वर्तते। ते अतिकठिनतया निर्वाहं कुर्वन्ति। तेषां समीपं मृत्-निर्मित-कोष्ठागारा एव भवन्ति। धनाभावात् ते सुबद्धगृहनिर्माणाय न प्रभवन्ति। तेषां समीपं एका लघुशाटिका एव वर्तते।

ग्राम्यजीवनस्य समस्याः

श्रमिकवर्गस्तु अत्यर्थ दारिद्रियं गतः तिष्ठति। सः दिने द्विकृत्वः न उदरपूरं भुङ्क्ते। ईदृशः ग्रामीणजनः अशिक्षितः, रोगबहुलः यथाकथञ्चित् जीवनयात्रां करोति। दारिद्रयोपहतः सः धूम्रपान-मद्यपानादिदुर्गुणैः संवीतः भवति।

दैनिकावश्यकतानां पूर्तिः

ग्रामीणाः दैनिकावश्यकतानां पूर्तिं तु ग्रामादेव कुर्वन्ति। चणकान्, गोधूमान्, तण्डुलान्, शर्करां, दलान्, शाकान् वस्त्राणि च ग्रामादेव लभन्ते। कर्गल-पुस्तकादीनि तु समीपस्थं नगरम् गत्वा एव क्रीणन्ति। उत्पादितम् अधिकम् अन्नं विक्रेतुं समीपस्थां मण्डी नयन्ति। यदि ग्रामे विद्यालयो नास्ति तदा ग्रामवासिनः स्वबालान् पाठनाय नगरेषु प्रेषयन्ति। चित्रपटादिदर्शनार्थम् अपि ग्रामीणाः नगरं गच्छन्ति।

सद्गुणसम्पन्नं जीवनम्

ग्राम्यजीवने धार्मिककृत्यानां महत्त्वं अधिकं वर्तते। ग्रामीणाः प्रायेण भाग्यं परम् मन्यमानाः सन्तोषेण कालं यापयन्ति। प्रायेण ते सात्त्विकवृत्तयः सन्ति। अधुना सुबद्धमार्गप्रसारात्, विद्युत्प्रयोगात्, शिक्षाप्रचारात् च ग्रामवासिनाम् अपि बहुविधंसमृद्धिः न अतिदूरा तिष्ठति।

16. मम प्रियः शिक्षकः

डाक्टरोपाधिभूषितः गुरुः आनन्दस्वरूपः मम प्रियः शिक्षकः अस्ति। सः केवलं इतः पूर्व दश-मासेभ्यः अस्माकं विद्यायेन सह सम्बद्धः जातः। ततः पूर्वम् अपि अनेके शिक्षकाः तत्र आसन् परं यथा गुरुम् आनन्दस्वरूपं मन्येऽहं न तथा अन्यान् गुरुजनान्। न केवलम् अहम् एव तम् अधिकं मन्ये, परम् अन्येषाम् अपि मम सहपाठिनां हृदयेषु तस्य सम्बन्धे अधिका प्रीतिः दृश्यते।

योग्यतमः शिक्षकः

योग्यतमे शिक्षके ये गुणाः तत्त्वतः अपेक्षिताः, ते सर्वे गुणाः प्रायेण श्रीमति आनन्दस्वरूपे दृश्यन्ते। सः स्वविषयं पूर्वतः एव सम्यक् पठित्वा कक्षायाम् आयाति। स्वविषयम् अत्यन्तेन विश्वासेन सह अध्यापयति। कठिनम् अपि विषयम् उदाहरणैः सह सरलीकृत्य उपस्थापयति। तस्य व्याख्यानं छात्रजनः सावधानमनसा श्रृणोति। मन्दबुद्धिः अपि छात्रः सुगमतया विषयम् आकलयति। अध्यापनसमये गुरुमहाभागः पुनः पुनः प्रश्नान् करोति, तेन सर्वेऽपि छात्राः सावधानाः तिष्ठन्ति। छात्राः अपि यान् प्रश्नान् पृच्छन्ति सः तान् सम्यक् समादधते।

छात्रैः सम्बन्धः

अयं शिक्षकमहोदयः प्रतिदिनं छात्राय गृहकार्यम् अपि ददाति। परस्मिन् दिने छात्राणां गृहकार्यं पश्यति। यत्र यत्र प्रमादः वर्तते तत्र तेन निराकरणं क्रियते। छात्राणां पुनः पुनः प्रमादं दृष्ट्वा तस्य मनः खेदं न वहति। यः छात्रः प्रमादं करोति, गुरुवर्यः तं पुनः पुनः बोधयति। तस्य व्यवहारं परिश्रमं च दृष्ट्वा सर्वे छात्राः तस्य आज्ञां परिपालयन्ति।

अध्यापनकौशलम्

गुरुः आनन्दस्वरूपः गणितस्य अध्यापकः अस्ति। अध्यापनकार्ये नैपुण्यं एव सः स्वजीवनस्य साफल्यं मन्यते। समयात् समयं सः छात्राणां गृहमपि गच्छति। तत्र गत्वातान् साहाय्यं यच्छति, सन्मार्गम् उपदिशति च।

अन्यकार्येषु रुचिः

विद्यालयस्य अन्येषु कार्येषु अपि आनन्दस्वरूप-महाभागः परमोत्साहं दर्शयति। यदा तदा कोऽपि वनविहारादिकस्य कार्यक्रमो भवति तस्य भारम् अपि प्रायेण सः एव वहति। शिक्षकवर्गस्य प्रश्नेषु अपि तस्य रुचिः दृश्यते। सः धार्मिकवृत्तिः, उत्साही, प्रमादरहितः, प्रसन्नमुखश्च तिष्ठति। एभिः अन्यैश्च गुणैः सः प्रियः शिक्षकः अस्ति।

17. मम जीवनस्य लक्ष्यम्

मानवमात्रस्य कोऽपि महान् अभिलाषो वर्तते। ममापि कश्चित् मनोरथः अस्ति। अहम् अपि स्वजीवनम् सफलीकर्तुम् इच्छामि।

लक्ष्याणां विविधता

केचित् जनाः धनोपार्जनम् एवं जीवनस्य लक्ष्यं मन्यन्ते। ते सततं तस्मिन् एव दत्तमनसः जायन्ते। केचित् विद्याम् एव पूजायाः करणं मन्यमानाः तत्रैव यतन्ते। केचित् जगति येन केन प्रकारेण प्रसिद्धिम् अधिगन्तुम् इच्छन्ति। केचित् राजनीतिक्षेत्रे ख्याति प्राप्तुम् आकांक्षन्ति। केचित् चलचित्रे अभिनेतृपदम् अभिलषन्ति। केचित् लक्ष्यविहीनाः

एव जीवनं यापयन्ति।

पुष्पाभिलाषवद् मम लक्ष्यम्

मया 'पुष्पस्य अभिलाषः' इति कस्यचित् कवेः कवितां पठित्वा स्वलक्ष्यं निर्धारितम्। एतस्यां कवितायां पुष्पं निजाभिलाषं वर्णयत् कथयति। यत् हे मालाकार, त्वं माम् उत्पाट्य तस्मिन् मार्गे प्रक्षिप यत्र अनेके वीराः मातृभूमेः सम्मानरक्षणार्थं प्राणान् करतलेषु निधाय गच्छन्ति। अधुना मम जीवनस्य लक्ष्यं मातृभूसेवा अस्ति। अहं स्वदेशमानसस्य मराल एव अस्मि—

> **अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम्।**
> **रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना॥**

अस्य देशस्य भारतस्य असंघटितां दशां दृष्ट्वा मम मनः खेदं वहति। राष्ट्रियचारित्र्यस्य अभावं दूरीकर्तुं अहम् अहोरात्रं प्रयतितुं कामये।

18. मम प्रियः नेता

अधुना भारतस्य जीवनमं समस्याग्रस्तम् अस्ति। यः उचितैः उपायैः तत् जीवनं सुख-शान्ति-सम्पन्नं कर्तुम् उत्साहवान् अस्ति सः एव मया नेतृरूपेण ग्रहीतुं शक्यते। 'श्री अटलविहारी वाजपेयी' एव ईदृश नेता अस्ति यस्य अन्तःकरणे दृढ़विश्वासः अस्ति यत् अयं देशः पुनः शक्तिसम्पन्नो भूत्वा निखिलविश्वस्य मार्गदर्शको भविष्यति।

राजनीतौ स्थापितः आदर्शः

वाजपेयीमहाभागः देसाई-मन्त्रिपरिषदि केन्द्रीयसर्वकारे विदेशमन्त्री आसीत्। उच्चपदे हस्तात् नष्टेऽपि न सः मोहग्रस्तः जातः। सर्वविधं प्रलोभनं दृष्ट्वा अपि सः दलपरिवर्तन न चकार।

शिक्षा

ग्वालियरवास्तव्यः वाजपेयी-महोदयः उत्तरप्रदेशविश्वविद्यालयात् राजनीतौ एम० ए० पीरक्षाम् उत्तीर्णवान्। प्रारम्भतः एव सः प्रखरबुद्धिः प्रतिभाशाली च आसीत्। सः स्वभावतः साहित्य-रसज्ञः कविश्चासीत्। तस्य भाषाप्रेम सर्वाति प्रसिद्धम्।

देशभक्तिभावयुतानि गीतानि विरचय्य सः आधुनिक-कवीनां सम्मुखम् आदर्शम् उपस्थापयाति। हिन्दीसाहित्ये प्रवाहितां वीररसधारां दृष्ट्वा कस्य मनः आन्दोलितं न भवति।

प्रभावी वक्ता

वाजपेयीमहोदस्य सम्पर्कः आरम्भतः राष्ट्रीयस्वयंसेवकसंघेन जातः। अद्य यावत् अयं तेन सहं सम्बन्धं निर्वहति। सः अतिलोकप्रियः वक्ता अति। सः न केवलं संसदि, अपितु जन-मञ्चे अपि निजभाषणैः लोकान् व्यामोहयति।

सांसदः

सः भाजपापक्षतः उत्तरप्रदेशे लक्ष्मणपुरात् निर्वाचितौ भूत्वा लोकसभायाः सदस्यो जातः। अयं मम प्रियो नेता युवकानां हृदय-सम्राट् सकुशलं सुचिरं जीव्यात् इति शम्।

19. संस्कृतभाषायाः गौरवम्

संस्कृतं पुरा भारतीयानां लोकप्रिया जनभाषा आसीत्। रामायण-महाभारतकाले संस्कृतम् एवं जनभाषा-रूपेण प्रचलिता आसीत्।

प्रान्तीयभाषाणां जननी

संस्कृतम् एव आधुनिक-प्रान्तीय-भाषाणाम् एकजननी अस्ति। सर्वासु प्रान्तीयभाषासु प्रतिशतकं षष्टिशब्दाः संस्कृतभाषायाः एव सन्ति। साम्प्रतं संस्कृतमेव प्रान्तीयभाषासु जीवनरसं सञ्चारयितुं प्रभवति। संस्कृतस्य ज्ञानादेव प्रान्तीय भाषाणाम् सम्यग् ज्ञानं भवति।

राष्ट्रभाषायाः उन्नतिकारकम्

अधुना हिन्दीभाषा राष्ट्रभाषा सञ्जाता। तस्य समुन्नतिः कथं स्यात् ? संस्कृतमेव एकमात्रं भाषा यस्याः शब्दकोशः विशालः सुसम्पन्नः च अस्ति। अतः संस्कृतमेव हिन्दी भाषां समृद्धं सम्पन्नं च कर्तुं प्रभवति।

अप्रतिमं व्याकरणम्

संस्कृतस्य व्याकरणम् अपि अप्रतिमम् अस्ति। अस्य व्याकरणस्य अपूर्वा शब्दरचनाशक्तिः विद्यते। यथा आङ्ग्लभाषा लेटिनादितः शब्दान् अङ्गीकृत्य आत्मानं भरति, तथैव संस्कृतभाषातः शब्दान् गृहीत्वा हिन्दीभाषा अपि निजशब्दराशिप्रवर्धनेन आत्मानं सम्पन्नं समृद्धं च कर्तुं पारयति।

विविधशास्त्राणांमूलम्

भाषाविज्ञानस्य सम्यग् ज्ञानार्थं संस्कृतस्य ज्ञानम् अनिवार्यम् अस्ति। काव्यशास्त्रस्य नाट्यशास्त्रस्य च अपि विवेचनं संस्कृतस्य ज्ञानं विना न कोऽपि कर्तुं शक्नोति। भारतीय-पुरातत्त्वस्य छात्राणां कृते तु संस्कृतस्य ज्ञानम् अपरिहार्य वर्तते। प्राच्यभारोपीय-भाषाणां सम्यक्परिशीलनाय संस्कृतस्य ज्ञानम् अत्यावश्यकं वर्तते। भारतीयधर्मस्य संस्कृतेः तत्त्वज्ञानस्य च परिशीलनार्थ संस्कृतम् एव एकः आधारः अस्ति।

गौरवम्

पाणिनिव्याकरणस्य अध्ययनात् अयं बोधो जायते यत् परः सहस्रवर्षेभ्यः प्राक् इयं भाषा चरमां समृद्धिम् अभजत्। न केवलं पौराणिकाः धर्मग्रन्थाः एव संस्कृतभाषायां निबद्धाः सन्ति, अपितु बहवः जैनबौद्धग्रन्थाः अपि संस्कृतभाषायाम् निबद्धाः सन्ति। पालि-प्राकृतभाषाणाम् आकलनम् संस्कृतं विना अपूर्णम् एव अस्ति। अतः संस्कृतभाषायां गौरवं महत्त्वं च सर्वविदितम् अस्ति। भारते भातु संस्कृतम्।

20. व्यायामः

महत्त्वम्

शरीरस्य नीरोगतायाः अनेकानि साधनानि सन्ति। तेषु साधनेषु व्यायामस्य महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति। शरीरस्य आरोग्यार्थं प्रतिदिनं यथाविधिः व्यायामः करणीयः। शरीरबलप्राप्तेः प्रधानं साधनम् अपि व्यायाम एव वर्तते। व्यायामशीलो जनः परिश्रमात् न कदापि विरतो भवति। व्यायामस्य प्रभावेण आपत्काले अपि सः साहसं न त्यजति। अपूर्वया प्राणशक्त्या सः आपदः दूरीकरोति।

व्यायामस्य लाभाः

सम्यग् व्यायामेन रुधिरस्य सम्यक् अनिरुद्धश्च सञ्चारो जायते। तेन च सर्वाणि इन्द्रियाणि स्वस्थानि तिष्ठन्ति। कार्ये कुशलता जायते। 'योगः कर्मसु कौशलम्' इति।

बुद्धिः अप्रतिहता तिष्ठति। उदरं न परिवर्धते। परिवृद्धम् उदरं संकोचं गच्छति। उरसि शक्तिः स्फीतता च जायते। स्कन्धद्वयं दृढं पुष्टं सशक्तं च भवति। चक्षु,ः स्फारी भवति। मस्तिष्कम् उर्वरं तिष्ठति।

पौरस्त्याः 'व्यायामाः

कबड्डी, खो-खो, धावनम् मल्लयुद्धम्, मल्लस्तम्भम् दण्डचालनम् इत्यादयः विविधाः पौरस्त्याः व्यायामाः सन्ति। एभिः व्यायामैः विनाधिक व्ययं अधिकाधिकं फलम् अस्ति। योगासनैः प्राणायामैश्च शरीरस्य आमूलचूलं सम्यग् व्यायामो भवति।

पाश्चात्याः व्यायामाः

पाश्चात्याः व्यायामाः क्रिकेट-हाकी-फुटबाल-वालीबाल-बैडमिंटनादयः बहुव्ययसाध्याः सन्ति। तेषु क्रिकेट-हाकी-खेला बहुवारं पारस्परिक-संघर्षस्य कारणानि अपि भवन्ति।

अस्मिन् लोके स्वहितम् इच्छता मनुष्येण निजसामर्थ्यानुसारं वयोऽनुसारं यः कोऽपि व्यायामः करणीयः। शरीरं बिना तु धर्मरक्षा अपि न सम्भवेत् यथा शारीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

21. विजया दशमी

विजयस्य आकाङ्क्षा मानवस्य सर्वप्रिया सामान्या आकाङ्क्षा वर्तते। जीवनस्य विकासे अस्याः आकांक्षायाः महत्त्वं सर्वविदितमेव। भारतीयाः प्रतिवर्षं सीमोल्लंघनं कृत्वा शस्त्रपूजनं च कृत्वा विजयप्राप्तेः स्वाकांक्षां प्रदर्शयन्ति। रामस्य रावणोपरि विजयं मानयितुं रामलीलामहोत्सवं कुर्वन्ति। शुम्भनिशुम्भराक्षसोपरि महादेव्या दुर्गया यस्मिन् द्विवसे विजयो प्राप्तः, असौ दिवसः विजयदशमीदिवसः इति भारतीयैः सौल्लासं मान्यते।

विविधाः समारोहाः

आर्यहिन्दुषु प्रचलित विजयादशमीपर्व सर्वस्मिन् अपि हिन्दुसंसारे ससमारोहं मान्यते। आश्विनमासस्य शुक्लपक्षे या दशमी तिथिः तस्याम् इदं पर्व प्रख्यातम्। क्षत्रिया वर्षाकालानन्तरम् अस्मिन् दिने सीमोल्लंघनकर्म कुर्वन्ति स्म। ते अनार्यप्रदेशान् विजित्य तत्रत्यान् लोकान् आर्यबन्धुतायां निवेशयन्ति स्म। तेषां प्रमाणस्य अयमेव आरम्भदिवसः इति प्रसिद्धम्।

रामलीला

अधुना प्रतिनगरं रामलीलायाः समायोजनं भवति। तत्र पूर्वं रामजीवनं रङ्गमञ्चे प्रदर्श्यते। विजयादशम्याः पूर्वं दशदिनानि यावत् रामजीवनस्य मञ्चनं प्रवर्तते। विजयादशमीदिने मुख्योत्सवः भवति। तत्र रावणस्य कुम्भकर्णादीनां महाकाराणि प्रतिरूपाणि अग्नितीरैः दह्यन्ते। तत्पूर्वं श्रीरामपक्षस्य सुरम्ये रथे शोभायात्रा आयोज्यते। दह्यमानानि रावणादिकस्य प्रतिरूपाणि अवलोक्य लोकाः परां शान्तिं लभन्ते। अयं सर्वः समारोहः वृहद्मेलारूपेण आयोज्यते।

दुर्गापूजनम् रामायण पाठश्च

विजयदशम्याः पूर्वं नवरात्रेषु दुर्गापूजनं विधीयते। बङ्गदेशे तु अयमुत्सवः श्री दुर्गापूजा-रूपे एव मान्यते। नवरात्रस्य आरम्भे गृहेषु यव-वपनं क्रियते। नवरात्रतिथौ च यवानां अंकुराणि यथाविधि सम्मान्यन्ते।

अतः विजयादशमीपर्व अधर्मस्य उपरि धर्मस्य, असत्यस्य उपरि सत्यस्य, धूर्तानां चोपरि सज्जनानां विजयस्य प्रतीकः अस्ति।

22. विद्यालयस्य सांस्कृतिकः कार्यक्रमः

अस्माकं विद्यालये प्रतिवर्षं सांस्कृतिक-समारोहः आयोज्यते। गतवर्षे अयमुत्सवः दिसम्बरमासे आयोजितः बभूव। तत्र उपमण्डलस्य कतिपयैः विद्यालयैः अपि भागो गृहीतः। मण्डलशिक्षाधिकारी तत्र प्रधानपदम् अभूषयत्। आदौ अस्माकं विद्यालयस्य छात्राभिः सरस्वती-वन्दनापरा गीतिका गीता। ततः ऊर्ध्वम् देवदत्तेन वीररसमयः कवितापाठो विहितः। तेन कवितापाठेन सर्वं वातावरणं वीरतामयम् अदृश्यत।

नृत्यं रूपकाभिनयश्च

ततो रामजसोविद्यालयस्य छात्राभिः व्रजमण्डलहोलिकानृत्यं प्रस्तुतम्। एतत् नृत्यं तथा सजीवम् आसीत् यथा साक्षात् होलिकाऽवसर एव अत्र अवतीर्णः। तदनन्तरं जिन्दल-पब्लिक-विद्यालयस्य विद्यार्थिभिः एकं संस्कृतरूपकम् अभिनीतम्। तत् भासप्रणीतम् मध्यमव्योयागम् आश्रित्य अवर्तत। सर्वेषाम् अपि पात्राणाम् अभिनयः कौतुककरः आसीत्। तत्पश्चात् अस्माकं विद्यालयस्य विद्यार्थिभिः अपि चारुदत्तनाटकमाश्रित्य अन्यं रूपकम् अभिनीतम्। अस्मिन् प्रयोगे विदूषकस्य चेष्टाभिः वचनैश्च सर्वेऽपि दर्शकाः हास्यसागरे मग्ना इव अतिष्ठन्। पुनः अस्माकं विद्यालयस्य एकेन छात्रेण मूकाभिनयः प्रस्तुतः। तं वीक्ष्य सर्वेऽपि करतलध्वनिभिः त्सय मुहुर्मुहः प्रशंसाम् अकुर्वन्।

श्लोकोच्चारणम् गीतादिकं च

श्रीमद्भगवद्गीतायाः एकादशं अध्यायम् उपजीव्य कतिपय-श्लोकोच्चारणं श्रीदयानन्द-विद्यालयस्य एकया कन्याया प्रस्तुतम्। तत् श्रुत्वा सर्वेऽपि भावमग्नाः रसमुग्धाश्च जाताः। ततो गीतगोविन्दम् उपजीव्य तत्पद्यपाठानुसारि नृत्यम् अस्माकं विद्यालयस्य छात्राभिः प्रस्तुतम्। तदनन्तरम् एकेन गायकेन वेदमन्त्रम् आश्रित्य तस्य वाद्य-वादनैः समं गानं प्रस्तुतम्। सर्वेऽपि श्रोतारः तस्य कण्ठमाधुर्येण संगीतस्य रम्यप्रवाहेण च आलिखिताः इव स्थिताः। अन्ते च सुचिरं तस्य प्रशंसाम् अकुर्वन्।

पुरस्कार वितरणम्

तदन्तरं निर्णायिकानां निर्णयेषु समुद्घोषितेषु सत्सु मण्डलशिक्षाधिकारी पुरस्कारवितरणम् अकरोत्। पुनश्च प्राचार्येण सर्वेषाम् विशेषतः मण्डलशिक्षाधिकारिणः धन्यवादः कृतः। पश्चाच्च कार्यक्रमः सशान्तिपाठं सम्पन्नोऽभवत्।

23. रूप्यकस्य आत्मकथा

नामकरणम्, आकारश्च

मम नाम रूप्यकम् अस्ति। मम नामकरणे इदं कारणं यत् रजतस्य अपरं नाम रूप्यं रूप्यकम् वा। पूर्वं रजकस्य योगेन मम निष्पत्तिः आसीत्। अधुना तु निक्कलादीनां केषाञ्चिद् धातूनां मिश्रणेन मम निष्पत्तिः भवति। मण्डलाकारस्य मम उभयोरपि पार्श्वयोः किञ्चिद् विशिष्टलेखनं जायते।

निष्पत्तिस्थानम्

सर्वेकारणेण प्रस्थापितासु मुद्रानिर्माण-शालासु एव मम निष्पत्तिः क्रियते। मम जन्म-स्थानम् अतीव रहस्यमयं वर्तते। आज्ञप्ताः कर्मचारिणः एव तत्र प्रवेष्टुम् अर्हन्ति। मम अनुजानाम् अपि जन्मस्थानं तत्रैव वर्तते।

महिमा

अहम् अति शक्तिमान् उपयोगी चास्मि। सर्वेऽपि मा लब्ध्वा आत्मानं धन्यं मन्यन्ते। मदर्जनाय सततं यतन्ते। सुरक्षितेषु स्थानेषु निधाय मम रक्षां कुर्वन्ति। मां विना लोकः आत्मानं दरिद्रं पापात्मानं च मनुते। चौराः ममार्थे प्राणान् अपि अविगणय्य साहसम् अनुतिष्ठन्ति। धनाढ्यो जनः मम महत्त्वं जानाति। बालाः अपि माम् इच्छन्ति। स्त्रियोऽपि मां कामयन्ते। वृद्धो जनः मां प्रति लुब्धदृष्ट्या पश्यति। लोकस्य कोमलहस्ततलेन स्पृष्टोऽहं प्रीतोऽस्मि। मयि बद्धा जनानां स्नेहमयी दृष्टिः मम उत्साहं जनयति।

अन्यः आकारः

मम एकः अन्योऽपि आकारः प्रचालतः दृश्यते। एकस्मिन् षडंगुलदीर्घे त्र्यंगुलायते चित्रिते कर्गले 'एकरूप्यकम्' इति मुद्रयते। तेन तत् कर्गलं तावन्मात्रं मूल्यतां वहति। नाऽत्र तथा भारवत्ता यथा धातुनिर्मिते मम शरीरे। इदं स्थानात् स्थानं वोढुं शक्यते। संकीर्णस्थाने अपि बहुसंख्या समाविशति इति अस्य गुणस्थानम्।

24. स्वप्न-वर्णनम्

मया गत-रात्रौ एकः अद्भुतः स्वप्नः दृष्टः। अस्य वर्णनम् पाठकानां मनोविनोदाय कल्पते इति मे विश्वासः। अयं स्वप्नः मया मध्ये रात्रौ तन्द्रापरवशेन दृष्टः।

स्वप्ने कन्यादर्शनम्

मया स्वप्ने काचन दिव्या कन्यका दृष्टा। सा पर्वत-शिखरात् अवतीर्यमाणा आसीत्। तदा एकाँ वृक्षराजिं प्राप्य सा व्यरमत्। उत्सुकतया सा परितो भूभागम् अपश्यत्। तदा सा दक्षिणतः स्वसखीम् अपश्यत्। परस्परं मूकैः विनौदैः ते कालम् अक्षिपताम्।

कन्यया बोधनम्

ततः तयोः अन्यतरा माम् उपेत्य वदति स्म—किं स्वपिषि? किं त्वं सज्जीभूय त्वां प्रतीक्षमाणां स्वप्रेयसीं न पश्यसि मया पृष्टा—कुत्र मम प्रेयसी तिष्ठति? तदा सा मां निजसखीसमीपं नीत्वा अदृश्या अभवत्। तां दृष्ट्वाऽहं किंकर्तव्यविमूढः स्थितः।

फलभक्षणम्

सा देवकन्यका प्रथमं मह्यं खादितुं उत्तमानि फलानि अददात्। अहमपि "आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्" इति स्मृत्वा विचित्रव्यवहारम् अकरवम्। प्रथमं एकम् फलम् तन्मुखे नीत्वा तदंशम् पुनः स्वयमपि दन्तैः कृत्वा तया सह भक्षणपरः स्थितः।

कन्यायाः अदर्शनम्

तस्या लालित्यं, अंग-मार्दवं, गौर-वर्णता, स्निग्धदृष्टिः च माम् अनिर्वचनीये रागोदधौ अक्षिपन्। तस्याः सखी न तत्र पुनर्दृष्टा। सा च में प्रेयसी अपि 'अहं पुनरपि

कालेन उपस्थिता भविष्यामि' इति प्रतिज्ञाय प्रणष्टा। ततः अकस्मात् निद्राभगात् अहम् अधुना तामेव अनुस्मरन् तिष्ठामि। आशासे सा स्वप्न-सुन्दरी पुनरपि मम स्वप्नमध्ये आयास्यति।

25. वर्षर्तुवर्णनम्

भारते एकस्मिन् वर्षे षट् ऋतवः भवन्ति—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः च। श्रावणे भाद्रपदे वर्षाकालः भवति। वर्षाकालस्य स्वकीयं सौन्दर्यं महत्त्वं चास्ति।

वर्षायाः प्राक् स्थितिः

वर्षाकालात् प्राक् ग्रीष्मर्तुः भवति। तस्मिन् वसुन्धरा प्रचण्डातपेन सन्तप्ता जायते। जीवलोकः खिन्नः वर्तते। सरांसि शुष्कजलानि सन्ति। वनस्पतिवर्गः परिम्लानोऽस्ति। एव सर्वं जगत् दीन-हीनमिव त्राणम् इच्छति।

रमणीयं दृश्यम्

वर्षर्तौ आकाशे श्यामवर्णाः मेघाः गर्जन्ति। मेघेषु विद्युत् विलसति। वर्षाकाले प्रायः सूर्यस्य अपि दर्शनम् दुर्लभम् अस्ति। मेघानां गर्जनम् श्रुत्वा वने मयूराः नृत्यन्ति। गजेन्द्राः, सिंहाः च प्रसन्नाः भवन्ति। वनेषु वृक्षाः पुष्पिताः भवन्ति। तेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति। सरोवराणि जलेन पूर्यन्ते। तेषु कमलानि विकसन्ति। अनेकवर्षाः मण्डूकाः अपि शब्दं कुर्वन्ति। तेषां स्वनैः वायुमण्डलम् आपूर्णं जायते।

मेघवर्षणम्

सूर्यम् आच्छादयन्ती मेघमाला सर्वं लोकं तर्पयति। प्राणिनः अनिमेषं मेघावलीं पश्यन्ति। यथा-यथा घनः वर्षति तथा-तथा भूमिः हर्षाश्रूणि इव मुञ्चन्ती वाष्पं विसृजति। मार्गेषु जलनालिकाः चलन्ति। छदिभ्यः पत्रनालधारासु जलं अधः पतति। सर्व स्थलं जलमयं जायते ।

फलास्वादनम्

अस्मिन् ऋतौ पक्वानि अनेकवर्णानि आम्रफलानि आस्वाद्यन्ते। श्यामवर्णानि जम्बूफलानि स्वादूनि भवन्ति। नारिकेल-दाडिमादीनि अपि वर्षाकाले भवन्ति।

पर्वतानां दृश्यम्

अधिकवर्षाविशात् कदाचित् पर्वतीयप्रदेशेषु शिलाखण्डपातः जायते। मार्गाः पिच्छलाः भवन्ति। यानानि स्खलन्ति। प्राणिनः दुर्घटनाग्रस्तानि जायन्ते। अतिवर्षया सर्वत्र हाहाकारः, त्राहि माम् इति च स्फुरति।

कदाचित् अपकारजनयितुः अपि वर्षाकालस्य काव्येषु रोचकं वर्णनं विद्यते। आदिकविः वाल्मीकिः वर्षाकालस्य वर्णनम् एवम् अकरोत्—

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति
ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः
प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः॥

26. वसन्तर्तुवर्णनम्

[*C.B.S.E. (O), 1992*]

ऋतुराजः

भारते षट् ऋतवः सन्ति। तेषु वसन्तः ऋतुराजः अस्ति। अयं चैत्र-वैशाखयोः आयाति ऋतुराजोऽयं कुसुमाकरः अपि कथ्यते। वसन्तस्य आगमने पुष्पाणां विकासः भवति। सर्वत्र सौरभाणां प्रसरः भवति। आकाशं निर्मलं विद्यते। स्वच्छाः दिशः प्रसन्नाः इव भान्ति। नदीषु सरःसु च विमलं जलं राजते। कमलनानि प्रफुल्लितानि सन्ति।

कुसुमाकरः

वनेषु, वाटकासु, उद्यानेषु नानावर्णानि पुष्पाणि शोभन्ते। पुष्पाणाम् उपरि भ्रमराः गुञ्जन्ति। ते च प्रियाभिः सह सानन्दं मधूनि पिबन्ति। मधुना मत्तः पिकः मधुरं कूजति। वृक्षेषु नवपल्लवाः विराजन्ते। आम्रेषु मञ्जर्यः संलग्नाः। कुसुमितं सहकारम् आश्रित्य लता प्रमुदिता। पक्षिणां कलकूजनम् अपि सर्वेषां सुखदं भवति। सर्षपः पीतं वसनं दधानः वासन्तिक विलास प्रकटयति। पुष्पेभ्यः सौरभं, वारिभ्यः शीतलतां चादाय मन्दः पवनः प्रवाति।

जनानां प्रमोदकः

अस्मिन् समये प्रमुदिताः जनाः प्रकृतिशोभां पश्यन्तः भ्रमन्ति। उद्यानेषु, वाटिकासु, नदीतटेषु च लोकाः गीतानि गायन्ति। पशवः पक्षिणश्चापि मोदं वहन्ति। कोकिलाः मदान्विताः मधुरगीतं गायन्ति।

नातिशीतोष्णम्

वसन्ते नाधिकं शीतं भवति न च उष्णता एव, नाधिका वृष्टिः भवतिः, न हिमपातः एव। हरितक्षेत्राणां शोभा पर्यटकानां चक्षुंषि स्वदिशि आकर्षति।

नूतनः रक्तम्

वसन्ते मानवानां शरीरेषु नूतनं रक्तं संचरति। स्वास्थ्यस्य दृष्ट्वा अयं कालः सर्वोत्तमः कथ्यते। 'वसन्ते भ्रमणं पथ्यम्' इति प्रसिद्धिः। कृषकाः निजक्षेत्राणि, पक्वेन अन्नेन समृद्धानि दृष्ट्वा सोल्लासं नृत्यन्ति। सत्यमेवोक्तं केनचित् कविना—सर्वं सखे चारुतरं वसन्ते !

27. ग्रीष्म-वर्णनम्

भारतदेशे सर्वेऽपि षट् ऋतवः चक्रवत् परिवर्तन्ते। वसन्तकाले समाप्ते ग्रीष्मकालः समायाति। अयं 'मई', 'जून' इति द्वयोः मासयोः प्राधान्येन भवति। ज्येष्ठमासे रविः अतिशयं तपति। ग्रीष्मे रविकराः धरायाम् तिर्यक् न पतन्ति, तेषां सरलावपातेन उष्णता परिवर्धते। उष्णाः रश्मयः वायुमपि उष्णं कुर्वन्ति। तप्तो वायुः परिसर्पन् अग्निः इव सर्वान् तापयति दहति, च।

रात्रौ आनन्दानुभूतिः

ग्रीष्मर्तौ रात्रिः संकुचिता जायते। दिनानि दीर्घाणि भवन्ति। दिने सन्तप्ताः जनाः रात्रौ एव किंचिद् आनन्दं लभन्ते। समर्थाः जनाः दिनेऽपि विद्युद्-व्यजनानि आयोजयन्ति। साधनसम्पन्नानां गृहाणि वातानुकूलितानि भवन्ति। यदि कदाचित् विद्युद्-धारा नायाति, तदा ते अपि ग्रीष्मप्रभावं सहन्ते। केचन जनाः ग्रीष्मकाले

पर्वतीयप्रदेशेषु गच्छन्ति, मन्सूरी, शिमला, नैनीताल आदि नगराणि गच्छन्ति। दरिद्राः साधनहीनाश्च जनाः बहुतरं कष्टं लभन्ते। केचन उष्णवाताभिहताः सन्ति, अन्ये जलम् अलभमानाः प्राणान् सन्त्यजन्ति। अनाहूताः मशकाः कर्णविवरं सम्पतन्ति। ते लोकानां निद्रा-भंग जनयन्ति।

जलस्थितिः

सूर्यस्य तापेन जलाशयाः परिशुष्यन्ति, कूपेषु जलस्य स्तरम् अति नीचैः गच्छति। तापेन पर्वतेषु हिमं गलति।तेन नदीषु जलप्रवाहो वर्धते। वृक्षाणां पल्लवानि प्रायेण शुष्यन्ति। नराणां पशूनां च जीवनं जलाभावात् अति दुर्भरं जायते।

जनरूचिः

ग्रीष्मर्तौ जनानां शीतलपेयेषु रुचिः वर्धते। लोकाः शर्करा-खण्ड-युतं शीतलं जलं पिबन्ति। समर्थः जनः अधुना शीतलजल-लाभाय फ्रिजयन्त्रस्य उपयोगं करोति। अन्ये जनाः घटानाम् उपयोगं कुर्वन्ति। वृक्षाणां छाया अस्मिन् ऋतौ अतीव सुखदायिनी भवति। फलेषु खरबीजफलानि, तरबीजफलानि, कर्कटिकादीनि अस्मिन् ऋतौ एव भवन्ति। आम्रफलानि अपि कदाचित् दृश्यन्ते। तक्रस्य प्रयोगः ग्रीष्मकाले गुणकारी वर्तते। निर्धनाः जनाः ग्रीष्मकाले अधिकं संतोषं प्राप्नुवन्ति यतोहि अल्पाल्प-परिधानेन छदिविरहितावासेन वृक्षछायासु स्थित्वा, आकाशाधस्ताद् वा शयित्वा जीवनं यापयन्ति।

28. विद्या

विद्यायाः महिमा विचित्रो वर्तते। विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् अस्ति। अन्ये सर्वे धनाः तु व्यये कृते क्षीणाः जायन्ते पर विद्याधनं व्यये कृते अपि वर्धते। यदा जनाः विद्यां वितरन्ति, तदा तेषां विद्या वृद्धिं गच्छति। विद्याधनम् ईदृशं धनम् अस्ति यत् न तु चौरः अपहर्तुं शक्यते न च राजशक्त्या तस्य हरणं जायते।

अपूर्वसुखप्राप्तिः

विद्यया जनाः अपूर्व सुखं लभन्ते। विद्या जनेभ्यः विनयं ददाति। तस्मात् विनयात् जनः पात्रत्वम् आप्नोति। पात्रत्वात् सः धनं प्राप्नोति, तदा धनात् धर्मं लभते। धर्मात् नरः सुखी भवति।

विद्यावन्तः पूजार्हाः

विद्यावान् नरः सर्वत्र पूजार्हः भवति। सः स्वदेशे अपि सम्मानं प्राप्नोति, परदेशे अपि सः आदरम् अवाप्नोति। ये कुलीनाः जनाः विद्यारहिताः सन्ति, ते समाजे न तथा सम्मान्यन्ते यथा विद्यावन्तः जनाः पूजार्हाः भवन्ति। ये छात्राः विद्यार्जनं कठोरं श्रमं कुर्वन्ति, ते विद्याव्यसनिनः विद्यार्थिनः उन्नतिपथं प्रसरन्ति। अध्ययने नैपुण्यं प्राप्य एते छात्राः सर्वेषां प्रशंसापात्रं भवन्ति।

द्विविधं स्वरूपम्

विद्यायाः द्विविधं स्वरूपं विद्यते—परा अपरा च। विद्यायाः इत्थं द्विविधं क्षेत्रम् अस्ति यथा भौतिकम् आध्यात्मिकम् च। समस्तं बौद्धिकं ज्ञानं भौतिकविद्या अस्ति यथा कलाः विज्ञानानि च । सा अपरा विद्या इति। सम्पूर्णम् आध्यात्मिकं ज्ञानं परा विद्या इति यया जनः आत्मनः स्वरूपं विज्ञाय परमात्मानम् साक्षात्कर्तुं प्रयतते।

अनुपमः महिमा

विद्या बहुहितकरी यशःसुखकरी च अस्ति। सा तु सर्वाधिकं नरस्य रूपम्। विद्याविहीनः नरः पशुतुल्यः अस्ति। विद्वान् जनः इहलोकं परलोकं च साधयति। अतः विद्यायाः महिमा अनुपमः अस्ति। आत्महिताय नरेण विद्याभ्यासः सततं करणीयः।

29. पर्वत-यात्रा

अथवा

स्मरणीया यात्रा

प्रस्तावना

पर्वतयात्रा लोकेभ्यः अतीव आनन्ददायिनी भवति। ये जनाः पर्वतेषु वासं न कुर्वन्ति तेभ्यः पर्वतयात्रा अत्यधिक-रम्या रुचिकरी चास्ति। ते प्रतिवर्षं अदृष्टपर्वत-स्थानानि द्रष्टुं कामयन्ते। ईदृशी यात्रा स्मरणीया यात्रा भवति।

मंसुरी यात्रा

गतसप्ताह अहमपि चतुर्भिः मित्रैः सह मंसुरीयात्रार्थं गृहात् निर्गतः। देहरादून-नगरं तु वयं बसयानेन प्राप्ताः। ततस्तु मंसूरी प्रति पद्भिः एव वयं प्रस्थिताः। पर्वतमार्गः अतिदुरारोहः आसीत्। पर्वतोपत्यकास्थं राजपुरं नाम उपनगरं प्राप्य वयं विषम-मार्गम् आरोढुं तत्पराः आसन्।

पर्वतारोहणम्

अयं मार्गः प्रतिपदं पाद-स्खलनोन्मुखः आसीत्। अयम् उत्तरोत्तरं आरोहम् एव याति स्म। मध्ये कुत्रापि अवरोहः नासीत्। पादक्षेपे एकस्य अपि पलांशस्य असावधनता। पादभङ्गं जनयेत्। अवपतनात् नासाभंगः, दन्तभंगः, मस्तभंगो वा भवत्। वयम् अतिसावधानतया दीर्घं निःश्वसन्तः शनैः शनैः ऊर्ध्वं गच्छामः स्म। मार्गे क्वचित् होरां यावत् विश्रम्य, स्रोतसा जलं प्रपीय मन्सूरीं प्रविष्टाः।

पर्वतीयदृश्यदर्शनम्

अपरस्मिन् दिने प्रातराशात् निवृत्ताः वयं दृश्यदर्शनहेतुना प्रचलिताः। सौधान् हर्म्यान्, जनाकीर्णहट्टान् उदूढभारान् पर्वतीयान् च पश्यन्तः इतस्ततो विहारम् अकुर्म। प्रदोषकाले पर्वतम् अधस्तात् प्रकाशवर्त्तकाः दूराद् दूरं दीपमालेव अदृश्यन्त।

जलप्रपातदर्शनम्

अन्यस्मिन दिने वयं जलप्रपातं द्रष्टुं चलिताः। जलप्रपात-स्थाने दृश्यम् अतीव आनन्दप्रदम् आसीत्। अधुना अपि स्मर्यमाणाः पर्वताः माम् आह्वयन्तः इव प्रतीयन्ते।

30. रेल-यात्रा

अधुना रेलयात्रा अतीव सामान्या यात्रा जाता। वयं नगरेषु प्रतिदिनं रेलयानस्य गमनागमनम् अवलोकयामः। रेलयात्रां कुर्वन् जनः अधुना कीदृशम् अनुभवति इति ममानुभवेन ज्ञातुं शक्यते।

दिल्लीतः कालिकातां यावत्

गतवर्षे अहं दिल्लीनगरात् कालिकाता-नगरीं यावत् रेलयानेन गतः। दिल्लीनगरात् कालिकातानगरस्य दूरी 1440 किलोमीटर आसीत्। यात्रादिनात् दशदिनपूर्वं मया द्वितीयश्रेण्याम् आरक्षणं कारितम्। सायंकाले पञ्चवादने अहं

दिल्ली-स्थानात् यानम् अगृह्णाम्। यद् रेलयानं निश्चितं लोहमार्ग सम्प्राप्तः तदा भारवाहकाः अन्ये यात्रिणः च दभ्रान् पश्यन्तः स्वस्थानानि ग्रहीतुं चेष्टमानाः आसन्। यत्र तत्र महान् कोलाहलः समारब्धः। मया तु स्वदभ्रं दृष्ट्वा तत्र आसक्तायां सूच्यां स्वनाम पठित्वा स्वस्थानं गृहीतम्।

रेलयानप्रस्थानम्

अर्धहोरानन्तरं रेलयानं ततः प्रस्थितम्। अधुना गन्त्रं (इञ्जन) अतिशयजवेन धावमानम् आसीत्। अस्माकं दभ्रे कश्चन फलविक्रेता अपि प्रविष्टः। सः स्वफलानि विक्रेतुम अयतत परं जनाः तस्मिन् अधिकां रुचिं न प्रादर्शयन। कियत्कालानन्तरं भोजनदभ्रस्य कर्मचारी आगत्य यात्रिणः रात्रिभोजनार्थम् तेषाम् आवश्यकतां लिखित्वा गतः। आरक्षितदभ्रस्य अधिकारी आगत्य माम् चिकिटम् अयाचत् तत्र च स्वाक्षरचिह्नं कृत्वा पुनः मामेव प्रायच्छत्।

गन्तव्यप्राप्तिः

रात्रौ नववादने भोजनं समाप्य अहं स्वशयनस्थाने विष्टरादिकस्य व्यवस्थाम् अकरवम्। प्रातः चतुर्वादने अहं शयनात् उत्थितः स्व-संभारं सम्यक् समवलोक्य मुखधावनम् अकरवम्। पंचवादने तत् यानम् हावड़ा-स्थानं प्राप्तम्। इदमेव मम गन्त-व्यस्थानम् आसीत्। अहं स्वसंभारं भारवाहकस्य शिरसि स्थाप्य द्वारे चिकिटं अधिकारिणे समर्प्य रेलस्थानात् वहिः समागतः। इत्थं मम रेलयात्रा सुखेन सम्पन्ना जाता।

31. प्रिया क्रीडा (कबड्डी)

क्रीडायाः विशेषाः

'कबड्डी' मम प्रिया क्रीडा अस्थि। इयं क्रीडा ग्रामेषु अतीव प्रचलिता अस्ति। अस्याः क्रीडायाः केचन विशेषाः सन्ति। अस्याः प्रथमम् वैशिष्ट्यम् अस्ति यत् अस्याम् क्रीडायां धनस्य व्ययं विना अपि शरीरस्य पूर्णः व्यायामः भवति। अस्या द्वितीयम् वैशिष्ट्यम् अस्ति यद् इयं भारतस्य प्राचीना प्रसिद्धा क्रीडा अस्ति अतः भारतीय वातावरणस्य सर्वथा अनुकूला वर्तते।

क्रीडा-स्वरूपम्

इयं क्रीडा श्वासावरोधक्रीडा वर्तते। क्रीडकाः श्वासावरोधने दक्षाः ते अस्याम् अतीव निपुणाः सन्ति। अस्यां क्रीडायां-दलद्वयम् वर्तते । समस्तं क्रीडाक्षेत्रं द्वयोः समानभागयोः विभक्त वर्तते। तयोः मध्ये स्थिता 'पाला' नाम्नी रेखा वर्तते। प्रत्येकदले प्रायेण नव नव क्रीडकाः सन्ति। कदाचित् एतेषां क्रीडकानां संख्या प्रत्येकभागे एकादश एव वर्तते।

क्रीडाविधिः

क्रीडारम्भे एकभागस्य एकः क्रीडकः द्वितीयभागस्य क्रीडाकानाम् अग्रे 'कबड्डी-कबड्डी' इति वदन् गच्छति। स एकम् एकाधिकं वा क्रीडकं स्पृष्ट्वा श्वासग्रहणं विनैव मध्यरेखां यावत् प्रत्यागच्छति। द्वितीयभागस्य क्रीडकाः तं ग्रहीतुं यतन्ते परं सः

तेभ्यः आत्मानं रक्षित्वा स्वदलं प्रत्यावर्तते। सः यान् यान् स्पृशति ते उपविशन्ति, तत्कारणात् च तेषां अकह्यानिः अपि भवति। एवं निश्चितकालावधि क्रीडन्तः यस्य पक्षस्य क्रीडकाः अधिकम् अंकं प्राप्नुवन्ति असौ पक्षः विजयी भवति।

क्रीडा-महत्त्वम्

भारतीयक्रीडासु 'कबड्डी' क्रीडायाः महत्त्वपूर्ण स्थानं वर्तते। विद्यालयेषु अस्यां क्रीडायां छात्राः अनायासमेव लभ्यन्ते। ग्रामेषु नगरेषु च समायोजितेषु सम्मेलनेषु अस्याः क्रीडायाः प्रतियोगिताः प्रायेण आयोज्यन्ते। तत्र च दर्शकानां महती संख्या भवति।

32. गृहोद्यानम्

स्थितिः

मम गृहस्य पृष्ठभागे एकम् रम्यम् उद्यानम् अस्ति। स्थानस्य न्यूनता-वशात् तत् लघु एव। अनेन उद्यानेन गृहस्य समीपे हारित्यं, पुष्पाणां सौन्दर्य च सदैव अस्माकं चक्षुषि समाविशति। मनः उल्लसितं भवति। अपरा उपयोगिता गृहोद्यनस्य इयं वर्तते यत् किंचित् ऋत्वनुकूल शाकादिकं फलादिकं च लब्धं स्यात्। ग्रीष्मे आतपवारिणी सुखदायिनी छाया लभ्यते। प्रातः सायं च हरिते सस्ये नग्नपादैः विहारः कृतः स्यात्। गृहोद्यानस्य रक्षणे गृहस्वामिनः तस्य परिवारस्य च कश्विद् व्यायामोऽपि स्वतः जायते, वनस्पतिशास्त्र-विषयिकी ज्ञान-वृद्धिरपि शनैः शनैः भवति।

उद्यान-कार्याणि

अहं क्षुरप्रेण कदाचित् प्रातः, कदाचित् सायं, अनध्ययनदिवसे तु प्रायेण सर्वं दिनमपि, भूमिं म्रदयामि खनामि च। कदाचित् तत्र लघु केदारान् करोमि, यथर्तुं गृञ्जनं, मूलिकां, पालकं, मरिचं, गोजिह्वं, कर्कटिकादीन् च तत्र उत्पादयामि। प्रथमं तेषां बीजानि वपामि, काले च जलेन पादपान् सिञ्चामि, पक्वानि फलानि च आहर .।

फलिनः वृक्षाः

मार्गम् अभितः मम गृहोद्याने केचन छायावन्तः पुष्पफलवन्तश्च वृक्षाः सन्ति। आम्रेषु अपि फलम् जायते। अमरूदवृक्षाः अपि फलन्ति। जम्भीरं सर्वमपि वर्षं फलाति।

पुष्पिताः पादपाः

गृहोद्यानिकोणेषु रजनीगन्धायाः विटपो विराजते। विविधवर्णाः पाटलाः आमोदपूर्णः सुपुष्पैः बालात् दर्शकानां चक्षूंषि आकर्षन्ति। पुष्पाणां प्रयोगः यदा कदाचित् मालाग्रथनाय अपि जायते। अधुना सर्वेषा कार्यस्य आधिक्यात् सुदूरं प्रकृतेः शोभां द्रष्टुं समयस्य अभावः वर्तते। गृहोद्यानं तस्य अभावस्य पूर्ति करोति। कार्यात् श्रान्तस्य अनायासमेव विश्रामो जायते। पुष्पाणाम् आमोदेन अपारा तृप्तिः इव अनुभूयते। यत् किंचित् शारीरिकं स्यात् तेन स्वास्थ्यं वर्धते। श्रमस्य गौरवस्य साक्षात् दर्शनं जायते। अहं निजगृहोद्यानम् इन्द्रस्य लघु नन्दनवनम् इव मत्वा हृष्यामि।

33. अनुशासनम्

विनयस्य महिमा

प्राचीन-संस्कृत-साहित्ये विनयस्य महिमा बहुशः वर्णितः दृश्यते। विनयमधुरः स्वभावः सर्वप्रियः वर्तते। विनयात् जनः पात्रतां याति। अयं विनयः एव अधुना अनुशासन-पदेन कथ्यते।

अनुशासनस्य स्वरूपम्

किमिदम् अनुशासनम् इति। शासन-पदास्य अर्थः 'आज्ञा' इति। अनुशासनपदस्य अर्थः 'आज्ञा-पालनम्' इति। आज्ञापालनम्, स्वयं स्वीकृतं नियम-पालनम् इत्यादयः गुणाः अनुशासने समायान्ति।

राष्ट्रजीवने अनुशासनम्

वयं भारतीयाः स्वतन्त्र-राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म। अस्माकम् एकं संविधानम् अस्ति। तत्र नागरिकैः अनुवर्तनीयाः बहवः नियमाः सन्ति। अनुशासितनागरिकस्य इदं कर्तव्यम् अस्ति यत् सः स्व-संविधान-स्वीकृतान् नियमान् पालयतु। यदि सः तथा करोति तदा तस्य देशः समुन्नतिं करोति। यदि सः अनुशासन-हीनतां प्रदर्शयति, तदता राष्ट्रजीवनम् संकटोपपन्नं जायते।

विद्या ददाति विनयम्

अधुना गुरुकुलेषु विश्वविद्यालयेषु छात्राः विद्यां तु लभन्ते परं विनयं न प्राप्नुवन्ति। आधुनिकी शिक्षा वस्तुतस्तु शिक्षा एव व वर्तते यतः कविनोक्तम् यत् 'विद्या ददाति विनयम्'। या विनयं न ददाति सा कीदृशी विद्या? अनुशासनस्य शिक्षां विना कीदृशी विद्या?

छात्रजीवने अनुशासनस्य शिक्षणम्

नागरिकाः अनुशासनस्य शिक्षां बाल्यावस्थायां, विशेषतः छात्रावस्थायामेव, ग्रहीतुं पारयन्ति। यदि शासनं स्वदलस्य मोहं परित्यज्य विद्यार्थिनां सम्मुखं स्वकर्तव्यरायणतायाः आदर्शं समुपस्थापयेत् तदैव छात्राणां अनुशासनस्य शिक्षा प्रदेया भविष्यति, राष्ट्रं च परं वैभवं गमिष्यति।

34. पर्यटनम्

देशाद् देशम् अटनं 'पर्यटनम्' इति कथ्यते। पर्यटनम् अतीव रुचिकरं शिक्षाप्रदं साधनम् अस्ति। इदं न केवल ज्ञानवर्धनम् अस्ति अपितु स्वास्थ्यकरं मनोरञ्जकं चापि वर्तते। पर्यटनस्य विविधाः रूपाः सन्ति। केचन पद्भ्यामेव पर्यटन कुर्वन्ति। ईदृशे पर्यटने सूक्ष्मं स्थान-निरीक्षण वस्तु-निरीक्षणं प्रकृतिदर्शनं च कर्तुं शक्यते परम् आधुनिके वैज्ञानिके युगे ईदृशं पर्यटनं जनाः नाधिकं मानयन्ति। अस्मिन् युगे तु द्रुतगामि-यानैः एवं पर्यटनम् अतीव लाभकरं मन्यते।

चित्तौडगढवर्णनम्

मया गतवर्षे चित्तौडगढनाम्ना प्रख्यातं नगरं पर्यटनाय गतम्। प्रथमं मया तत्र रेल-अवरोध-स्थानस्य समीपस्थं आर्यगुरुकुलं दृष्टम्। तद् दृष्ट्वा अहम् एकं मार्गदर्शकं पुरस्कृत्य चित्रकूट-दुर्गं द्रष्टुं प्रचलितः। इदं तद् दुर्गं यत्र पद्मिनी जीविता एव अग्निम्

संधुक्ष्य अन्यैः राजपुत्रमहिलाभिः सहिता हविः इव पतिता। कष्ट-प्रवेश्यम् इदं दुर्गम् अत्यन्तवक्रमार्गम् अभेद्य-कपाटञ्च। अधस्तात् भूमौ मुस्लिमर्-सेनाः अन्तः प्रवेशाय कृतारोहाः अतिष्ठन्। दुर्गस्य मध्यस्थिताः राजपुत्राः यवनाक्रमणं निरोधाय प्रचण्डपराक्रमाः अतिष्ठन्। तीव्र-शंकु-खचितानि कपाटानि हस्तिभिः अपि अभेद्यानि दृष्टानि। अधित्यकासु दुर्गस्यभवनानि रहस्यमयगमनागम-मार्गश्च अदृश्यन्त।

दर्शनीयानि स्थानानि

तत्र एकतः देवीमन्दिरं, यत्र भक्तिनी मीरा होराः यावत् स्थित्वा भक्तिमयैः गीतैः उपासनां करोति स्म। अन्यतो दर्शनीयं जैनमन्दिरं यत्र जैनलोकः आगत्य प्रणमति। क्वचित् दीर्घाः जलापूर्णाः तडागाः यत्र गजाः जलक्रीडापुरस्सरं स्नान्ति स्म। एकस्मिन् पार्श्वे तत् स्थानम् यत्र पद्मिनी अपरागारवर्ति-काचादर्श-बिम्बात् धर्मसंकटवशात् आत्मानं यवनाधिपं दर्शयितुं स्थिताऽभवत्।

कीर्तिस्तम्भः

अन्यत्र आकाशचुम्बी कीर्तिस्तम्भः आसीत् यत्र आरुह्य परितः सर्व दृग्गोचरं जायते। अत्र पतनभयात् हृदयं सुतमां कम्पेत। ततः उद्यानानां शोभां वीक्ष्य अहं परस्मिन् दिने ततोऽन्यत्र प्रस्थितः।

35. परोपकारः

[*C.B.S.E. (O), 1992*]

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुमिर्भूमिविलम्बिनो धनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष। परोपकारिणाम्॥

अन्यस्य जनस्य हिताय यत् कार्यं चिन्तनं वा तदेव परोपकारः। मनुष्यस्य मध्ये प्रवृत्तिद्वयं दृश्यते, एका स्वार्थस्य, अपरा परोपकारस्य।केचन तादृशाः अपि सन्ति, ये न स्वार्थं समीहन्ते, न च परोपकारं कुर्वन्ति। ते जनाः अतीव अधन्याः समाजाय च अभिशापरूपाः एव।

परोपकारिणः वृत्तिः

यस्य केवला स्वार्थबुद्धिः सः राक्षसः इव सततम् आचरति। ततः वरतराः ते जनाः ये यद्यपि सर्वात्माना आत्मंभरयः, परं ते परमुखापेक्षिणः न तिष्ठन्ति। यः खलु स्वार्थं सेवमानः परमार्थम् अपि चिन्तयति, करोति च यथाशक्ति, सः एव पुरुषः प्रशस्यः।

परोपकारिणः मानसिकता

परमार्थबुद्धिः मनुष्यस्य यशसे कल्पमाना तस्मिन् औदार्य निवेशयति। तादृशः नरः सर्वेषां हृदयसम्राट् इव विराजते। सः हि क्षुधितस्य क्षुधां शमयति, दरिद्रस्य कामान् अपि दोग्धि। तेन लोकः तृप्तः इव आत्मानम् अनुभवति।

सज्जनानां जीवने

सज्जनानामिह भूतले आगमनं परोपकाराय एव भवति। नहि सामान्यजनानां इव तेषां जीवनस्य लक्ष्यं स्वार्थसाधनम्। अद्यत्वे सर्वत्र स्वार्थान्धकारस्य साम्राज्यम् वर्तते।

केचन सन्तः एव परोपकार-प्रकाशेन तद् अन्धकारं दूरीकृत्य संसारम् आनन्दयन्ति यदि सन्तः स्वजन्मना इमां पृथ्वीं न पावयेयुः तदा इयं पृथ्वी नरकतुल्या भवेत्। दुर्लभाः खलु सन्तः, तेषां निकषोऽपि कठिनः। कविभर्तृहरेः शब्देषु यथा—

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

येषां जन्म जगतः कल्याणकामनायै भवति, ते एव सज्जनाः। महापुरुषः खलु प्रच्छाय-तरुः इव भवति यः—

सहति च किल मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥

परोपकारे रतानां सज्जनानां मनांसि न तथा निजदुःखेषु द्रवन्ति यथा परविपत्तिषु। संसारस्य उपकारः तेषां जीवनस्य चरम् लक्ष्यम् अस्ति।

36. कुम्भपर्व

अहं कुम्भपर्वणि एकदा हरिद्वारम् उपागतः। तत्र दश-लक्ष-संख्यकानां जनानां संकुलः जातः। ईदृशं कुम्भ-पर्व भारतवर्षे हरिद्वारनगरे, प्रयागनगरे, उज्जयिन्यां, नासिकनगरे च प्रतिद्वा दशवर्षं समायोज्यते।

धर्मशालायां निवासः

अहं वाष्पयानेन हरिद्वार-रेल-यानावसथं (रलवे स्टेशन): सम्प्राप्तः, ततो मुनिहरमिलापीधर्मशालायाम् एकं कोष्ठ लब्धवान्। तत्र स्ववस्तूनि तालकान्तः निधाय तीर्थस्थलानां पर्यवेक्षणाय प्रचलितः। तत्पश्चाद् अहं ज्वालापुरगुरुकुलं परिभ्रम्य दक्ष-प्रजापति-मन्दिरं च पश्यन् "हर की पौड़ी" इत्यभिधं लोकविश्रुतं स्थानं प्राप्तः।

कुम्भपर्वणि स्नानम्

अस्मिन् स्नाने स्नानार्थम् सहस्रशः जनाः पंक्तिबद्धाः एकैकशः कृत्वा शनैः शनैः अग्रे गच्छन्तः प्रसिद्धां गंगामन्दिरनिकटस्थां स्नानभूमिं गच्छन्ति स्म। अहमपि होरामनन्तरं तत्स्थानं गतः। अत्र श्रद्धालवः पूजा-पिण्डदान-स्नान-मन्त्रपाठादिषु धार्मिक-कृत्येष व्यापृताः तिष्ठन्तः कुम्भपर्वणः पुण्यम् अर्जयन्ति स्म। मयाऽत्र पञ्चदशपलभ्यो वेदपाठं विधाय स्नानं कृतम्।

तीर्थस्नानानां दर्शनम्

ततोऽहं 'सप्तर्षिमन्दिरम्' इति स्थानम् उपगम्य ऋषीणां मूर्तिदर्शनं कुर्वन् भित्तिषु लिखितान् श्लोकान् मन्त्रांश्च पठन् अभिनन्दन् च गीतामन्दिरम् उपागतः। तत्पश्चादहं नृसिंहमन्दिरं प्रयातः। अत्र नृसिंहावतारस्य विशालं चित्रं तद्विषयकी कला च भित्तिषु अंकिता दृष्टा। गंगामन्दिरे श्रीगंगामातुः धवलधारं चित्रम् अतीव रम्यम् आसीत्। अत्रापि गंगालहरी इत्याख्या स्तुतिः मन्दिरभित्तिषु लब्धा। अन्यानि अपि तीर्थस्थलानि मन्दिराणि च मया दृष्टानि। तेषु परमार्थ-निकेतनं, भारतमातुः मन्दिरं च विशेषतः उल्लेखनीयं स्तः। सर्वत्र यात्रिणां पवित्रभावान् दृष्ट्वा मम मनः पुलकितं जातम्।

सम्मेलनानि

अस्मिन् अवसरे विविधाभिः सामाजिक-धार्मिक-संस्थाभिः सम्मेलनानि अपि

समायोजितानि। विशेषेण समुल्लेखनीयं सम्मेलनं विश्वहिन्दुपरिषदा समायोजितम्। अत्र मया पूज्यपाद-शंकराचार्य-महाभागानाम् अपि पुण्यदर्शनम् कृतम्।

37. हिमालयः

नगाधिराजः हिमालयः भारतस्य उत्तरस्यां दिशि विराजते। सः प्रहरी इव भारतं रक्षति। सः भारतमातुः शिरसि मुकुटः इव शोभते। अस्य गोरीशंकरो नाम शिखरं संसारस्य समस्तेष्वपि शिखरेषु उच्चतमम् अस्ति। सत्यमुक्तम् महाकविना कालिदासेन कुमारसम्भवे—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीऽवगाह्य
स्थितः पृथिव्यामिव मानदण्डः॥

अद्वितीयः महिमा

हिमालयस्य महिमा अद्वितीयः वर्तते। अयं परमौषधीनां रत्नानाम् च महान् आकरोऽस्ति। गंगा-यमुना-प्रभृतयः प्रमुखाः नद्यः हिमवतः एव प्रभवन्ति। एताः सरितः भारतस्य कृषिसेचनाय भूमिं च शस्यश्यामलां करणाय साधनभूताः तिष्ठन्ति।

देवतात्मा

हिमालयः देवतात्मा अस्ति। अत्र देवतानां निवासः वर्तते। महादेवः सपरिवारः अत्रैव तिष्ठति। पार्वती अत्रैव तपः तप्त्वा शिवं लब्धवती। भारतीयानां नैकानि तीर्थानि हिमालये एव सन्ति। तपस्विनः हिमाद्रेः गृहासु निविश्य तपस्यां कुर्वन्ति।

पर्यटकानाम्

शान्ताः तपस्विनः, विश्रामेच्छुकाः गृहस्थाः, पर्यटकाः पर्वतशिखराणि आरुह्य हिमालयं गच्छन्ति। तत्र गत्वा यथेष्टं विहरन्ति निजाभीष्टं च लभन्ते। औषधीनाम् अन्वेषकाः नराः अत्र आगत्य जीवनदायिनीः औषधीः आप्नुवन्ति। कलकलं नदन्त्यः निर्झरिण्यः, रम्याः निर्झराः, शोभनाः सरोवराः, फलिनः वृक्षाः, पुष्पिताः लताः सर्वाः एव यात्रीणां मनोविनोदं कुर्वन्ति।

एवं हिमालयः भारतवर्षाय वरदानस्वरूपः अस्ति। अयं भारतस्य पितृवत् परिपालकः आस्ति। पुराकाले शत्रवः एनम् उल्लङ्घ्य भारतं प्रवेष्टुं न प्राभवन्। हिमालये स्थितं त्रिविष्टपदेशं पुरातनैः मनीषिभिः स्वर्गम् इति अमन्यत। अधुना तद् देशं चीनराज्यान्तर्गतं वर्तते। चीनस्य आक्रमणेन अस्माकं नेत्रोन्मीलनं जातम् । यतः अधुना भारतीय-सैनिकाः प्रतिक्षणं सन्नद्धाः भूत्वा संचरन्ति।

38. गंगा

पुण्यतमा नदी

भारतं पृथिव्याः स्वर्गः कथ्यते। अत्र गंगासदृश्यः नद्यः प्रवहन्ति यासां पीयूषतुल्यं जलम् अस्य भूमिं सिञ्चति। गङ्गाजलं विषये कविनोक्तम्—

गांगं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्। गंगाजलं पापहारि वर्तते। गंगा नदी भारतस्य सर्वासु नदीषु पुण्यतमा मन्यते।

गङ्गास्नानस्य महत्त्वम्

भारतीयानाम् विश्वासः यत् अस्यां स्नात्वा नरः पापाद् विमुच्यते। दैहिकतापाः तु सद्यः एव शान्ताः भवन्ति। मनसि अपि पवित्रभावानां सञ्चारः भवति। अत एव जनाः स्नानपुण्यलाभाय गंगायाः तीरे निवसन्ति।

पौराणिकवर्णनम्

गंगायाः बहूनि नामानि सन्ति यथा जाह्नवी, भागीरथी, हैमवती, सुरसरित्। पौराणिकवर्णनानुसारं गंगा विष्णोः पादाङ्गुष्ठात् निःसृता जायते। पुरा एषा स्वर्गे प्रवहति स्म। महाराजः भगीरथः स्वपूर्वजानाम् उद्धाराय गंगा स्वर्गात् पृथिव्याम् आनयति स्म। इयं शिवस्य जटासु प्रवहन्ती पृथिव्याम् अवतीर्णा।

भौगोलिकवर्णनम्

भौगोलिकदृष्ट्या इयं हिमालयस्य 'गंगोत्तरी' इति स्थानाद् उद्गच्छति। गंगासागर-संगम-नाम्नि स्थाने गंगासागरे च समायाति। गंगोत्तरी गंगासागरसंगमश्च पवित्रौ तीर्थौ स्तः।

गंगातटस्थितानि नगराणि

गंगायाः तटे भूयांसि समृद्धानि नगराणि विद्यन्ते यथा हरिद्वारम्, प्रयागः, कर्णपूरम्, वाराणसी, पाटलिपुत्रम्, कालिकाता इति। हरिद्वारे पर्वताद् अवतीर्य इयं नदी समतलभूमिं प्रविशति। प्रयागे गंगा-यमुना-सरस्वतीनां संगमो वर्तते। भगवतः विश्वनाथस्य 'काशी' धाम गंगातटे एव वर्तते।

गंगायाः जलशुद्धिः

अधुना यत्र तत्र नगराणां दूषितजलेन गङ्गायाः जलमपि दूषितं भवति। भारत-सर्वकारेण गङ्गा-जल-शुद्धिम् अभिलक्ष्य प्रयत्नोऽपि कतिपयवर्षेभ्यः प्रारब्धः।

गंगाजलस्य उपयोगः हिन्दूभिः धार्मिककृत्येषु क्रियते। मृत्युशय्यायाम् अपि गङ्गाजलस्य उपयोगः क्रियते। किंबहुना—

> **नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।**
> **मुक्तिञ्च मुक्तिञ्च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्॥**

39. यमुना

भारतस्य राजधानी यमुनातटे स्थिता वर्तते। यमुनायाः कालिन्दी, सूर्यसुता, यमभगिनीप्रभृतीनि नामानि सन्ति। प्रयागतीर्थे यमुना नदी गंगासरस्वतीभ्यां सम्मिल्य त्रिवेणी-रूपमाकलयति। तदनन्तरं आत्मानं पवित्रतमायां गङ्गायां विलीय स्वयमपि पवित्रतमा जायते।

यमुनायाः यात्रा

यमुना हिमालस्य 'यमुनोत्तरी' नामकात् स्थानात् निर्गच्छति। ततो निर्गत्य सा हिमाचलप्रदेशस्य हरियाणाप्रदेशस्य च भूभागान् सिञ्चन्ती दिल्लीनगरं प्राप्नोति। तदनन्तरं मथुरा-वृन्दावनयोः तीर्थयात्रिकेभ्यः जलनिमज्जनसुखम् उपजनयति। आगरानगरे जगतः सप्तमाश्चर्यभूतस्य 'ताजमहल' इत्याख्यस्य शोभां संवर्धमाना सा विन्ध्यप्रदेशं प्राप्नोति। तदनन्तरं सा चम्बल-सिन्धु-वेत्रवतीत्यादीनां नदीनां जलेन वर्धितपयःपूरा प्रयागम् आयाति।

यमुनायाः महत्त्वम्

यमुनायाः महत्त्वं निगमागमपुराणादिषु ग्रन्थेषु वर्णितमस्ति। पौराणिक्यः गाथाः विशेषतः श्रीमद्भागवतमहापुराणवर्णिताः, भगवतः श्रीकृष्णस्य बाल्यजीवनेन विशेषेण सम्बद्धाः दृश्यन्ते।

यमुनानद्याः लाभाः

भौगोलिक-दृष्ट्या नदीनाम् बहवः लाभाः सन्ति भारतभूम्यै। यमुनायाः अपि तिस्रः महाकुल्याः निस्सारिताः सन्ति। ताभिः हरियाणा-राज्यस्य उत्तरप्रदेशस्य च विस्तृतो भूभागः सिञ्च्यते। अमूल्यकाष्ठं यमुनायाः तटे जगाधरीनगरे नदीजलाद् बहिः निःसार्यते। अधुना विद्युदादिकोत्पादिकाः योजनाः अपि भारतसर्वकारेण विचार्यन्ते।

यमस्वसृरूपता

कदाचित् यमुना यमस्वसा इव आचरति। गतवर्षे यमुनामध्ये यः औघः उद्भुतः सः सर्वनाशस्य अग्रदूतः अतिष्ठत्। यमुना अकस्मादेव जलापूर्णा जाता। अद्यापि यमुनायाः जलाप्लावकृतं दुर्दृश्यं चिन्तयित्वा कस्य न वेपते हृदयम्?

40. भारतस्य राजधानी

अथवा

कापि महानगरी

[C.B.S.E. (O), 1992]

भारतस्य राष्ट्रीया राजधानी देहली इति ख्याता। अस्याः प्राचीनतम् नाम इन्द्रप्रस्थम् इति आसीत्। यथा शरीरस्य मध्यभागे हृदये आत्मा तिष्ठति तथैव भारतदेशस्य मध्यमो भागः स एव यत्र देहली इति नाम्ना ख्याता विशाला नगरी वर्तते। देहली इति नाम ढिल्लिका इति नाम्नः अपभ्रंशरूपः वर्तते। देहली-नगरे भारतस्य विविध-प्रदेश-वास्तव्याः जनाः सुगमतया द्रष्टुं शक्यन्ते। अत्र चाणक्यपुर्यां अन्येषामपि राष्ट्राणां राजदूतनिवासाः सन्ति।

केन्द्रीशासनस्य कार्यालयाः

देहलीमध्ये सर्वकारस्य केन्द्रीयशासनस्य अनेके कार्यालयाः तिष्ठन्ति। तत्र बहुभूमिकानि भवनानि सत्यमेव दर्शनीयानि। एतुषु भवनेषु लोकसभा-भवनम्, राज्यसभा-भवनम् राष्ट्रपतिनिवासश्च दर्शनीयानि सन्ति। भारतस्य प्रधानमंत्री अन्ये च केन्द्रीय-मन्त्रिणः अपि अस्मिन् नगरे वसन्ति। देहली प्रदेशस्य अधुना पृथक् विधानससभाऽपि निर्वाचिता वर्तते।

देहलीनगरस्य शोभा

देहलीनगरस्य शोभा एशियाड-82 समायोजनाद् अतीव वृद्धिं गता। विविधानि विशालक्रीडागंणानि नेहरू-नेशनल-स्टेडियंमादीनि अत्र निर्मितानि। उच्चैः पारगमनपथाः (फ्लाई-ओवर) अतीव रमणीयाः सन्ति। नूत्नदेहलीमध्ये मार्गाः विस्तृताः सुबद्धाः स्वच्छाश्च। रात्रौ तेषां मध्ये प्रकाशदण्डाः अतीव आनन्ददायिनः सुखप्रदाश्च. अत्र विविधानां यानानां सुमहान् सम्पातः वर्तते।

दर्शनीयस्थानानि

देहलीनगरस्थेषु दर्शनीयस्थानेषु सर्वोच्चन्यायालयः, अद्भूतालयः, जन्तुगृहम्, वायुयान-आस्थानम् वर्तन्ते। अद्भूतालये सङ्ग्रहालये वा जनानां प्रदर्शनार्थं विविधानां दर्शनीयवस्तूनां संग्रहः विद्यते। जन्तुगृहे च सिंह-गज-वानर-भल्लूकादयः वन्यजीवाः संगृहीताः तिष्ठन्ति।

देहलीनगरे देहलीविश्वविद्यालयः, जवाहरलालनेहरू-विश्वविद्यालयः, केन्द्रीयसंस्कृत-विद्यापीठश्च सन्ति। अत्र रक्तदुर्गः (लालकिला), बिरलामन्दिरम्, मिहिरपुरी (मेहरौली), लौह-स्तम्भश्च सर्वस्यापि जनस्य आकर्षणकारणनि सन्ति।

आकर्षणकेन्द्रम्

राजधानीति प्रसिद्धिकारणात् देहली सर्वस्यापि आकर्षणकेन्द्रम् अस्ति। अत्र दूरवीक्षणस्य अपि केन्द्रम् अस्ति ! अधुनां संसारे या प्रगतिः दृश्यते तस्याः यत्किञ्चिद् दिग्दर्शनं देहलीनगरे एव भवति।

41. महाकविः कालिदासः

सर्वश्रेष्ठः कविः

महाकविः कालिदासः संस्कृत-भाषायाः सर्वश्रेष्ठः कविः अस्ति। असौ नाटककारः, महाकाव्यनिर्माता गीतिकाव्यकर्ता च आसीत्। तस्य प्रमुखाः ग्रन्थाः सन्ति यथा (क) त्रीणि नाटकानि—मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलं च; (ख) महाकाव्यद्वयम्—कुमारसम्भवम्, रघुवंशम् च; (ग) गीतिकाव्यद्वयम्—ऋतुसंहारम्, मेघदूतं च। कालिदासः वैदर्भी-रीत्याः सर्वोत्तमः कविः आसीत्। तस्य नवनवोन्मेष-शालिनी प्रतिभा सर्वतोमुखी आसीत्।

विक्रमस्य सभाकविः

कालिदासः महाराजस्य विक्रमादित्यस्य सभाकविः आसीत्। तस्य राजधानी उज्जयिनी आसीत्। मेघदूते उज्जयिन्याः भव्यं वर्णनं विद्यते। विक्रमादित्यस्य सभायां कालिदासस्य नाटककानां प्रयोगः सञ्जातः। विक्रमोर्वशीयनाम्नि, कालिदासः विक्रमादित्यस्य कीर्तिं चिरस्थायिनीं चकार।

काव्य-सौष्ठवम्

कालिदासस्य कृतिषु प्रसाद-माधुर्य-गुणयोः अपूर्वं सम्मिश्रणं वर्तते। तत्र कृत्रिमतायाः क्लिष्टतायाश्च अभावोऽस्ति। तस्य काव्येषु उच्चकोट्याः व्यञ्जकता दृश्यते। रस-परिपाकोऽपि उत्तमरीत्या अभवत्। कालिदासः नीरसं कथानकमपि सरसं मनोरमं च करोति।

लोकप्रियतायाः कारणम्

कालिदासस्य लोकप्रियतायाः कारणं तस्य प्रसादगुणयुता ललिता परिष्कृता शैली अस्ति। शब्दलाघवः कालिदासस्य कलात्मकरुचेः परिचायकः अस्ति। अलंकारेषु उपमायाः प्रयोगः अद्वितीयः अस्ति। चरित्रचित्रणे कालिदासः अतीव पटुः अस्ति। भाषा भावश्च पात्रानुकूलौ तिष्ठतः। कालिदासस्य प्रकृतिचित्रणं अतीव रम्यम् अस्ति। कालिदास—मतेन तपसा प्रेम निर्मलं पुष्टं च भवति। कालिदासस्य उपमाप्रयोगे प्रसिद्धः अस्ति यथा उपमा कालिदासस्य।

42. स्मरणीया काऽपि घटना

अथवा

जलौघः

मया स्वजीवने काचिद् ईदृशी घटना अनुभूता या न कदापि विस्मर्तुं पार्यते। 1980 तमे ख्रीष्टाब्दे यमुनामध्ये यः जलौघः उद्भूतः सः सर्वनाशस्य अग्रदूतः अतिष्ठत्। यमुना अकस्मादेव जलापूर्णा जाता।

वृष्टि-बाहुल्यम्

वर्षाणां बाहुल्येन सर्वत्राऽपि स्थलं जलमयं जातम्। भवनानां छदयः जलस्पृष्टाः अभवन्। ततश्च जलं भित्तिषु अपि प्रविष्टम्। छदिभ्यो जलं स्रवति स्म। लोकाः गृहं त्यक्त्वा वहिरपि गन्तुं न शक्ताः। एकतः भवनानि भूमिसात् जायन्ते स्म; अपरतः मार्गाः जलापूर्णाः आसन्।

भयावहा स्थितिः

गृहान् परितः सर्वत्र जलमेव जलम् आसीत्। न अन्तः प्रवेशाय न च बहिर्गमनाय कोऽपि अलम् आसीत्। बहिर्गन्तुं नौकाः अपि न आसन्। भीताः जनाः अनाथाः असहायाः भूत्वा कालं नयन्ति स्म। न केवलं गृहाणि एव, अपितु ग्रामाश्चापि जलौघेन परिवृताः आसन्।

सहायताकार्याणि

अस्माभिः तु गृहस्य अनिवार्यः संभारः भवनस्य तृतीयायां भूमौ आनीतः। सैनिकाः जनानां सहायतां कुर्वन्ति स्म। ते लघ्वीषु नौकासु आरुह्य भोजन-पानवस्त्रादीनि वस्तूनि वितरन्ति स्म। जनैः उपकारिसंस्थाभिश्च पक्वा मण्डा आलुकानां स्यन्दितानाञ्च आपूर्णानि भाण्डानि च प्रेषितानि। राष्ट्रीय-स्वयंसेवक-संघस्य स्वयंसेवकाः अहोरात्रं साहाय्यं प्रदातुम् अग्रसराः अभवन्। जलाप्लावस्य अनन्तरं तैः लोकानां कृते भवनानि अपि निर्मितानि।

स्मरणीया घटना

यदा कदाचित् महती वृष्टिः जायते अहम् इमां घटनां स्मरामि। अद्यापि तत् दुर्दृश्यं चिन्तयित्वा मम् हृदयम् अतीव वेपते।

43. सत्संगतिः

प्रस्तावना

सज्जनानां सम्पर्कः सत्संगतिः भवति। अस्मिन् संसारे सज्जनाः अपि दुर्जनाः चापि भवन्ति। दुर्जस्य संगतिः दुस्संगतिः भवति। मनुष्यः संगतिं विना न तिष्ठति। या काऽपि संगतिः भवेत् इति अनिवार्यम्, परम् उभयोः संगत्योः महत् अन्तरम्। सत्संगतिः पोषिका, दुस्संगतिश्च नाशिका इति भेदः। कोऽपि विचारवान् नाशं न इच्छति, पोषं तु इच्छति, तेन सत्संगतिः एव वरतरा।

सत्संगत्या गुणस्पृहा

सज्जनपुरुषाः कैश्चिद्-गुणैः सज्जनाः भवन्ति नाऽन्यथा। तस्मात् सज्जनसंगत्या मनुष्ये गुणानां कृते स्पृहा वर्धते। ते गुणान् अभिनन्दन्ति। तेन च शनैः शनैः सत्संगत्या मनुष्ये गुणाः निविशन्ति दुर्गुणाश्च एकैकं बहिः गच्छन्ति। सद्गुणसम्पन्नो नरः

शरीरेण, मनसा, बुद्ध्या इन्द्रियैश्च स्वस्थतरो जायते। तेन च तस्य आयुष्यं वर्धते। तस्य यशः उत्तरोत्तरं वर्धते। सत्संगेन प्रपुष्टो जनः शनैः शनैः लोकनेता जायते। कथितं च—सत्सङ्गजा दोषगुणा भवन्ति।

संगस्य प्रभावः

संगस्य महान् प्रभावः। यदि कश्चिद् दुर्जनः सज्जनानां सहवासं करोति तत् स सज्जन एव मन्यते। परं यदि सज्जनः दुर्जनसंगे तिष्ठति तत् स दुर्जन एव मन्यते। इत्थं यशः उपचीयते वा अपचीयते वा। यदि कश्चन मद्यपः दुग्धस्य भाण्डं हस्ते धारयति तत् तद् दुग्धमपि मद्यं मन्यते लोकेन। यदि तु सज्जनोऽपि मद्यं हस्ते नयति तत् कोऽपि तत् मद्यं न विचारयति। अत्र च संगतिः एव कारणम्।

सत्संगतेः प्रभावः

सत्संगतिप्रभावेण बहु अन्तरम् आगच्छति। वाल्मीकिः मुनिः दस्युभावं त्यक्त्वा न केवल भारते, सम्पूर्णे अपि विश्वे इति ख्यातः। एकदा भगवान् नारदः ऋषिः ब्रह्मा च तेन निगृहीतौ, परं तयोः कल्याणमयं वाङ्मयं श्रुत्वा शनैः शनैः तस्य पुण्योदयो जातः। दैविकप्रसादेन स रामायणम् अरचयत्। अयं सत्संगस्य एव सुप्रभावः। अतः नरेण सत्संग एव करणीयः, दुस्संगश्च सर्वथा त्याज्यः।

44. सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्

प्रस्तावना, सत्यस्य स्वरूपम्

अयम् संसारः सत्ये प्रतिष्ठितः। यद् यथा तस्य चिन्तनं, कथनं, आचरणं च सत्यम् इति भवति। यत्तु इतो विपरीतं तत् असत्यम् भवति। सत्यं नरस्य सामान्या प्रवृत्तिः। असत्यं तु असामान्य निन्द्या च प्रवृत्तिः।

सत्यं सामान्या प्रवृतिः

सत्यं सामान्या प्रवृत्तिः इति। अस्य तु प्रमाणं बालाः, सत्त्वगुणप्रधाना मुग्धमुग्धा ग्रामीणाः, पर्वतीयाश्च जनाः। बालः यद् यथा चिन्तयति, पश्यति करोति च, तत् तत् तथैव पृष्टो वा अपृष्टो वा अन्यं कथयति। न तत्र असत्यं वदति। इत्थमेव सत्त्वप्रधानो ग्रामीणो जनः अपि आचरति।

अप्रियं सत्यं नोचितम्

केचन अन्येऽपि सत्यवादिनो नरा अत्र दृश्यन्ते ये सत्यं तु वदन्ति परं तत् सर्वथा अभद्रम् अमंगलं च कृत्वा वदन्ति। तेन च लोको विषीदति सर्वोऽपि च तस्य तस्य जनस्य शत्रुः इव जायते। अन्धं जनं कश्चित्, भो अन्ध ! इति एवं संबोधयति यदि तत् तेन सत्येन अपि स अन्धः दूयते। यदि तु, भोः 'प्रज्ञाचक्षु' इति संबोधयति तत् स आत्मानं आदृतं मन्यते।

सत्यं प्रियं कृत्वा वदेत्

समाजस्य जनेभ्यो दुर्गुणानां वारणाय सत्यभाषणस्य महती आवश्यकता। परं तत् सत्यं प्रियं कृत्वा वदेत् इति बहु आवश्यकम्। न ततो अन्या गतिः। बालस्य ज्वरौषधं कटु अपि सितासंवलितं दत्तं ज्वरवारकं रोचकञ्च तिष्ठति। केवलं कटुं औषधं कः सेविष्यते? इत्थमेव सत्यं वक्तव्यं परं प्रियं कृत्वा एव, नान्यथा इति।

45. ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः

प्रस्तावना

"ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः" अस्य अयं अर्थः यत् यावत् कालं ज्ञानं न सिध्यति तावत् कालं मुक्तिः अपि न सिध्यति। अत्र इदं ज्ञातव्यं भवति यत् ज्ञानं किं, कथं च तत् उपकरोति? मुक्तिः इति अस्य कः अर्थः किं च तया साध्यते?

ज्ञानं किं भवति?

ज्ञानम्, अयं शब्दः ज्ञा अवबोधने इति धातोः सिध्यति। इदं किं, तत् किं, इतीदृशाः प्रश्नाः मनस्विनं परितः तिष्ठन्ति। स च ज्ञानेन साधनेन सम्पन्नो भूत्वा निजबुद्ध्या यद् यत् चिन्तयति तत् तदेव परिचिनोति। जलं दृष्ट्वा इदं किं कथञ्च इत्येवं रूपा जिज्ञासा मनस्विनो जायते। अग्नि दृष्ट्वा इदं किं कथञ्च इत्येवं मनसि जायते। मेघं दृष्ट्वा अस्य केन प्रकारेण जन्म, पृथिवीं दृष्ट्वा इदं किंरूपं इदं भूतं, वायुं दृष्ट्वा कोऽयं वायुः इत्येवं रूपा विचारणा विदुषो जायते।

सत्यस्य प्रकटीकरणम् एव ज्ञानम्

इन्द्रियाणि किंरूपाणि, कर्म कीदृशं, आत्मा किंरूपः, परमात्मा अस्ति चेत् कीदृशः, इतीत्थं सर्वमं किंचिद् दृष्ट्वा-दृष्ट्वा बालस्येव उत्कटी जिज्ञासा मनसि जायते। तत ऊर्ध्वं समाहितैः विचारैः चिन्तनैः तत् तद् विषये ज्ञानं जायते तस्य तस्य विषयस्य सत्यता च पुरस्तात् प्रकटी-भवति।

ज्ञानात् मुक्तिः

ज्ञानेन सर्वं सत्यरूपं बुद्ध्वा पुनस्तस्य पाशात् मनस्वी मुच्यते। संसारस्य ग्राहरूपस्य सम्यग् ज्ञानेन मनुष्य ततो मुच्यते, तस्मिन् अनासक्तो जायते। कर्माणि निःसंगानि कुर्वन परम् तत्त्वं परमात्मानं सततं चिन्तयन् कर्मपाशात् मुच्यते। जन्ममरणबन्धनात् रक्षितश्च जायते। मुक्तिं प्राप्नोति। परम् इदं सर्वं ज्ञानाद् विना न सम्भवम्। अतः यथार्थम् एवमुच्यते—"ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" इति।

46. प्रजातन्त्रम्

प्रजातन्त्रस्य स्वरूपम्

अस्माकं भारतवर्षे शासनस्य या पद्धतिः साम्प्रतं दृश्यते सा प्रजातन्त्रीया शासनपद्धतिः इति सर्वत्र विश्रुता। प्रजायाः तन्त्रम्, प्रजाभ्यः तन्त्रम् इति। यत् तन्त्र 'प्रजा' इति उपादानकारणेन भवति, प्रजानां हिताय च भवति, तत् प्रजातन्त्रं भवति। प्रजाभिः स्वशासनाय कृतः यः विस्तरः लोकव्यवहारणां तदेव प्रजातन्त्रम् इति कथ्यते।

प्रजातन्त्रस्य लाभाः

अधिनायकवादप्रमुखे देशे एक एव सर्वप्रमुखः तस्यैव वचनम् आदेशाश्च प्रभवन्ति। परं प्रजातन्त्रात्मके देशे स्थानात् स्थानं प्रजाप्रतिनिधय एव निर्वाचनेन सम्मताः भूत्वा शासनस्य कार्यं निर्वाहयन्ति। देशस्य सर्वप्रमुखो राष्ट्रपतिरपि प्रजाभ्यो निर्वाचित एव पुरुषो भवति नान्यः, तेन शासनस्य निम्नतमात् स्तरात् आदाय ऊर्ध्वतम् स्तरं यावत् सर्वेऽपि निर्वाचने सफला एव जनाः कार्यस्य धुरं वहन्ति। यावन्मात्रं तेषु योग्यता क्षमता च भवति तावन्मात्रं प्रजातन्त्रीयशासनं प्रजानां हिताय कल्पते वा न वा।

प्रजातन्त्रस्य दुर्विकाराः

प्रजातन्त्रीयशासनं कूर्मस्येव मन्दसंचारं भवति। कार्याणि भवन्ति परं गतिः अतिमन्दा प्रायेण दृश्यते। अतिमन्दता च गत्याः मनोग्लानिं जनयति। केचन प्राभिशंसनैः उपदानेन वा कार्यं साधयन्ति। परं ये अभावग्रस्ता दरिद्राश्च तेषां कार्यसिद्धिः कदाचिदेव भवति।

दुर्विकाराणाम् दूरीकरणम्

यदि प्रजातन्त्रस्य शकटस्य नायकभूता जनाः स्वार्थान् उपेक्ष्य परमार्थदृष्ट्या अधिकाधिकं सेवाकार्यं कुर्युः, तत् प्रजातन्त्रं सर्वस्यापि आशुलाभाय महते लाभाय च कल्पेत। तेन च अस्य वरतमत्वं अपि प्रतिष्ठितं भवेत्।

47. नौका-विहारः

चण्डीगढ़े सुखना-सरोवरः

अहं ग्रीष्मावकाशेषु निजैः पुत्रैः पत्न्या च सह चण्डीगढं प्रयातः। चिरान् मनसि उत्कटः अभिलाषः आसीत् यत् सर्वैः सह नौकाविहारः कृतः स्यात्। तस्मात् वयं सर्वे सुखना (सुक्षणः सरोवरः) सरोवरं प्राप्ताः।

नौकाचालनम्

वयं शीघ्रमेव नौका-आस्थानं प्राप्ताः। ततः आस्थाननिर्देशकस्य आज्ञया पंचरूप्यकमितं धनं शुल्करूपेण दत्त्वा एक नौकाचालकं सहैव आदाय सुपुष्टायां नौकायां मन्दं मन्दं गत्वा स्थिताः। अस्मासु कोऽपि भयं न धारयति स्म। प्रत्युत महता उत्साहेन सर्वेऽपि नौकाचालनाय अरित्रग्रहणाय उन्मुखा अतिष्ठन्। एकस्मिन् अरित्रे कुशलो युवा चालकः, अन्यस्मिन् अहं, अन्ययोः द्वयोः उपरि च मम द्वो पुत्रौ स्थितौ। नौकाचालकस्य नेतृत्वे तस्य संकेतानुसारम् अस्माभिरपि चालनं आरब्धम्।

नौकायां मनोरञ्जनम्

मम पत्नी चित्रपटगायिकेव एकं सहगानम् आरब्धवती। वयमपि ताम् अनु अगायाम। तेन गानेन अस्माकं श्रमो विनष्टः, स्फूर्तिश्च गात्रेषु पदं न्यदधात्। वयं सर्वे वाग्भिः विविधाभिः मनोविनोदं कुर्मः स्म। इदानीं वयं तटभूमेः सामीप्यं प्राप्ताः। दशरूपप्यकाणि चालकाय दत्त्वा नगरं विवृत्ताः। इदानीम् अपि वयं बहुवारं नौकाविहारं स्मृत्वा-स्मृत्वा प्रसन्नाः भवामः।

48. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य

प्रस्तावना-बलं

बलं अत्र द्विविधम्, शारीरिकं बौद्धिकञ्च। केचन शारीरिकं बलम् उत्कृष्टतरं मन्यन्ते अपरे च बौद्धिकं बलम्। परम् उपर्युक्तशीर्षकस्य अयम् अभिप्रायः यत् बौद्धिकं बलं उत्कृष्टतरम्।

सिंह-शशक-कथा

अस्मिन् प्रसंगे एका कथाऽतीव प्रसिद्धा। एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म। स तत्रत्यान् वनजन्तून् प्रतिदिनं तुदति स्म। अनेकात् क्षतविक्षतान् कृत्वा मृत्युलोकं प्रापयति स्म। कांश्चित् च भक्षयति स्म। एकदा तैः प्रार्थितम्—भो वनराज! अस्माकं मध्ये प्रतिदिनं क्रमशः एकैकः जन्तुः भवत्पार्श्वे भोजनाय आयास्यति तेन भवान् तृप्तिं

करोतु। स तथास्तु इति स्वीकृतवान्। ततः प्रतिदिनं एकैको भोजनाय तस्य पार्श्वे गच्छति स्म।

एकदा एकस्य शशकस्य वारः समायातः। सिंहस्य मारणोपायं अचिन्तयत्। स तस्य पार्श्वे चिरात् प्राप्तः। बुभुक्षितः सिंहस्तं विलम्बस्य कारणम् अपृच्छत्। स आह-मार्गे अपरः सिंहः मां रोधयित्वाऽपृच्छत्—कुत्र यासीति। अहम् आह—स्वामिसमीपं गच्छामि। स आह—नान्यो मत्तः अपरः अत्र स्वामी। तेन तं दृष्ट्वा शीघ्रं मम पार्श्वे निवर्त्तस्व इति। तच्छ्रुत्वा कुपितः सिंहः तामादाय तद् दर्शितं कूपं प्राप्तः। तत्र जले निजछायां सिंह मत्वा तस्य वधाय स कूपे अवपपात्, मृतश्च। एवं शशकेन निजबुद्धिबलेन सिंहोऽपि व्यापादितः। तेन सत्यमेव उक्तम्—बुद्धिर्यस्य बलं तस्य इति।

बौद्धिकबलस्य महिमा

शारीरिकबलेन तु मनुष्यः कांश्चिदेव शत्रून् हन्ति परं बौद्धिकबलेन शरीरबलात् हीनोऽपि जन्तुः अनेकानि हन्ति। यदा दण्डैः परस्परं युद्धं भवति, खड्गैः मुष्टिभिर्वा, तदा बहुप्राणहानिः न भवति। परं बुद्धया येषां अस्त्रशस्त्राणाम् आविष्कारो भवति तैः संख्यातीतान् शत्रुन् एकोऽपि योद्धा क्षणे एव हन्ति इति को न जानाति। परमाणुबम, हाईड्रोजन बम, विषाक्तवायुः इति अनेकविधानि अस्त्राणि विज्ञानेन आविष्कृतानि सन्ति यैः हीरोशिमादिषु जापानस्थेषु प्रदेशेषु महान् जनसंहारः क्षणेनैव जातः।

49. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

प्रस्तावना

अस्याः सूक्तेः अयम् अर्थः यत् जननी-माता, जन्मभूमिश्च स्वर्गस्थानादपि गुरुतरा भवति। लोके इदं विश्रुतं वर्तते यत् स्वर्गलोके सर्वेषां दुःखानां निराकरणं जायते, सुखानाञ्च सर्वेषाम् उद्भवो जायते। दुःखस्थानं नरकं विहाय सर्वोऽपि सुखस्य परमोच्चं स्थानं स्वर्गं कामयते। परम् अत्र अन्यदेव प्रतिपादितम्।

जननी अपत्यरक्षणव्रत धारिणी

गर्भकाले नव दश मासेभ्यः निजे गर्भे संतानं धृत्वा प्राक् तत्रत्यं सततं पोषयति। स्वयं सर्वविधं कष्टं सहते, गर्भस्यञ्च सर्वथा रक्षति। ततः प्रसवादूर्ध्वं जननी निजम् अपत्यं दिवारात्रं एकमनसा रक्षति। तस्य दुःखानि अपोहति सुखानाञ्च संचारं करोति। स्वयं तदर्थं सर्वविधानि कष्टानि सहते। दिवाऽपि रात्रौ अपि सहिष्णुतया स्नेहेन अपूर्वेण तं पोषयति। तस्य दुःखे दुःखं, सुखे च आत्मनः सुखं मन्यते।

जन्मभूमिः उत्कृष्टतरा

जन्मभूमिरपि जननीव उत्कृष्टतरा। जन्मभूमिः लोकस्य शरणदायिनी, विविधखाद्यपदार्थप्रदायिनी, लीलाभूमिः सर्वव्यवहाराणां तिष्ठति।

विदेशेषु जन्मभूमिस्मरणम्

विदेशं गतो जनः सौख्यं लभमानोऽपि जन्मभूमिं पुनः पुनः स्मरति। तदेव उक्तं केनऽपि अन्योक्ति-रूपेण—

रसयन् गोस्तनीकन्दं स्थितोऽपि स्वर्णपंजरे।
स्वदेशस्य वियोगेन दह्यते एव कोकिलः॥

स्वर्गादपि गरीयसी

स्वर्गलोकस्य सुखम् अभूतपूर्वं कथ्यते। परं जननीवत् जन्मभूमिवच्च तस्मात् न

कस्यापि पोषः। तत्कथं स जननीं जन्मभूमिं च अतिरिच्य तिष्ठेत्. तेनैव हेतुना इदं विश्रुतं यत्—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

50. स्त्री-शिक्षा

प्रस्तावना

स्त्री पुरुषस्य अर्धांगिनी इतीदं वैदिकसंस्कृतौ प्रसिद्धम्। येन यथैव पुरुषाणां कृते शिक्षा अनिवार्या तथैव स्त्रीणां कृतेऽपि परमावश्यका एव। यथा एकेन चक्रेण रथस्य गतिर्न भवेत् तथैव केवलेन पुरुषेण मनुष्यसमाजस्य रथस्य गतिर्न सम्भवा। शिक्षितः पुरुषः अशिक्षिता मूढा च नारी इति युगलं न रुचिकरम्। सर्वथा वैरस्यं एव जायते। कदाचिदपि पुरुषशिक्षा इत्ययं शब्दो न श्रुतिपथं गतः परं स्त्रीशिक्षा इत्ययं शब्दस्तु सामान्य एव मनीषिणां च बुद्धेः आन्दोलकः प्रथितः।

वेदेषु स्त्री-शिक्षा

वेदेषु मन्त्रद्रष्टारो यथा पुरुषा आसन् तदैव काश्चन नार्योऽपि अभवन्। ब्रह्मवादिन्यः मैत्रेयीगार्गीसमाः अनेकाः स्त्रियो भारतेऽभवन्। मण्डनमिश्रस्य पत्नी स्वयं परमविदुषी आसीत्। कालिदासस्य पत्नी विद्योत्तमा पण्डिता इति प्रसिद्धमेव। अतो भारतस्य वैदिकपरम्पराम् अनुरुध्य स्त्रीशिक्षा पुरुषशिक्षेव अनिवार्या।

नारीपूजास्थानेषु देवतानां वासः

नारीशिक्षा नारीपूजैव। यत्र च नारीपूजा तत्र देवतानां वास इति इदं "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" इत्यनेन श्लोकखण्डेन सुतमां प्रतिपादितम्। शिक्षिता नारी शिक्षिता माता, भगिनी, पुत्री च, सा च स्वपरिवारस्य महते कल्याणाय यथा कल्पते न तथा अशिक्षिता नारी । सा हि शिक्षितपुरुषस्येव समाजस्यापि अलक्रिया।

नारीशिक्षया समाजोन्नतिः

शिक्षितया स्त्रिया समाजः स्वस्थः पुष्टः विकासोन्मुखश्च जायते। तस्मात् निजस्त्रीधनस्य रक्षापराः तिष्ठन्तो वयं तासां शिक्षाविषये अपि अप्रमत्ताः तिष्ठेम इत्येव साधुः।

51. सहशिक्षा

सहशिक्षायाः स्वरूपम्

सहशिक्षा इत्ययं शब्दः बालबालिकयोः सहैव एकस्मिन् विद्यालये शिक्षां बोधयति। अयं शब्दः अर्वाचीनः आंगलदेशीयप्रभावाच्च अस्य उद्भवः। यद्यपि प्राचीनभारतेऽपि आश्रमेषु तापसयुवानो युवत्यश्च सहैव उषन्त्यः शिक्षां गृह्णन्ति स्म परं तत्र धर्मस्य, नैतिकतायाः अनुशासनस्य च महान् अंकुशः आसीत्। सततं मनसा वाचा कर्मणा संस्काराणां प्रदानं भवति स्म। तेन च कामुकतायाः उपद्रवो न भवति स्म। अतः आधुनिकी सहशिक्षा प्राचीना च सहशिक्षा परस्परं महदन्तरं भजेते। तस्मिन् काले सा समस्या न आसीत्। साम्प्रतं तु सा गंभीरा समस्या भूत्वा पुरस्तात् तिष्ठति। अतएव विचारस्य अवसरः।

सहशिक्षायाः लाभाः

केचन सहशिक्षायाः समर्थकाः अस्माकं देशे। तदनुसारं सहशिक्षा आवश्यकी यतोहि सहवासेन बालः बालिकानां प्रवृत्तीः चेष्टाश्च बुध्यते। तद् बुद्ध्वा च स भविष्यजीवने

गृहस्थाश्रमे यथावत् चेष्टते। तदभावे स स्त्रीप्रकृतिम् अबुद्ध्वा कुशलो गृहस्थो न स्यात्। अथ च शिक्षा बहुधनम् अपेक्षते। भारतशासनम् आर्थिक सहायतां ददाति विद्याशालाभ्यः। पर कोशे तावद्धनं न भवति यत् बालानां बालिकानाञ्च कृते पृथक्-पृथक् विद्याशालाः प्रयोगशालाश्च स्थापिताः स्युः। तस्मात् एकस्यां विद्याशालायाम् उभयोरपि सहशिक्षा भवितुं शक्नोति अल्पेनाऽपि व्ययेन। इतरथा तु द्विगुणो व्ययो भवति। न च तावान् अर्थभारो भारतशासनेन सोढुं शक्यः। तेन सहशिक्षैव सर्वत्र चलतु इति तन्मतम्।

सहशिक्षायाः दोषाः

सहशिक्षायाः विरोधिनस्तु एवं प्रतिपादयन्ति—

सहशिक्षा नास्त्युचिता यदो हि तेन विविधाः बालाः कामवासनाग्रस्ताः अकाले एव जायन्ते। तेन च ब्रह्मचर्याभावः अनुशासनहीनता च वर्धते। तत् कुतः शिक्षा? योरोपदेशष्वपि यौनदोषाः अनेन कारणेन एव।

नोचिता सहशिक्षा

तस्मात् पृथक् व्यवस्थाया स्वास्थ्यरक्षा, सर्वकारस्य धनरक्षा च। चस्य धनस्य कश्चिदंशः पृथक् व्यवस्थाकृते कल्पेत एव। अतो नोचिता सहशिक्षा।

52. वाष्पयान-दुर्घटना

वाष्पयानस्य स्तब्धता

अहं गते मासे केनचित् प्रयोजनेन वाष्पयानेन देहलीं प्रति प्रस्थितः। यदा रेलयानं सोनीपततः किञ्चिद् दूरं यातः तदा अकस्मादेव महान् हाहाकारो जातः। यानस्य प्राक् गन्त्रं (इंजन) लोहमार्गम् अधः स्खलितम्। ततश्च अनुवर्तीनि दभ्राणि (डब्बे) एकैकशः लोहमार्गात् स्खलिताः।

गन्त्रं स्वत एव स्तब्धं जातम्। दभ्राणि चैवापि असहायानीव स्तब्धानि। सर्वे अत्यन्तं विस्मिताः किंकर्त्तव्यविमूढाश्च भयाक्रान्ताश्च अतिष्ठन्।

जनहानिः

अधस्तात् पतित्वा जनाः क्षतविक्षताः जाताः। कतिपये मृताः अपि। ये केचन अक्षताः ते परं भयाकुलाः जाताः। दभ्रेभ्यो निःसृत्य "कुत्राऽसौ मे बन्धुः, कुत्रासौ मे बन्धुः" इति सचीत्कारम् आक्रोशन्त। क्षतविक्षताः जनाः सहायतालाभाय अत्युत्सुकाः अतिष्ठन्।

चिकित्सा-प्रबन्धाः

एकहोरा-ऊर्ध्वं एकं चिकित्सायानं तत्र सम्प्राप्तम्। अनेके कुशलाः चिकित्सकाः जः सहायै, पट्टैः, औषधैः, रोगवाहनशिविकाभिश्च संवृताः तत्र उपागच्छन् सहायताकार्यं च समारभन्त। अनतिचिरं सर्वेऽपि क्षतविक्षताः प्राथमिकम् उपचारं लम्भिताः। कतिपये मृताः उत्तोल्य समीपस्थसोनीपतचिकित्सालयं प्रापिताः।

लोकानां सहयोगः

पार्श्ववर्तिग्रामेभ्यः अनेके बालाः पुरुषाः स्त्रियश्च दुर्घटनाक्षेत्रदर्शनाय उपस्थिताः तेषां बहवः समीपस्थान् निजान् ग्रामान् गत्वा जल-दुग्ध-चायदिकं सज्जं कृत्वा समानीय यात्रिभ्यः अयच्छन् तेषां कष्टञ्च अलघयन्।

53. लघूद्योग-प्रदर्शनी-पर्यवेक्षणम्

गतेषु एव दिवसेषु अहं लघुद्योगप्रदर्शनीपर्यवेक्षणार्थं राजधानीं देहलीं गतः आसम्।तत्र प्रातः नववादनात् आरभ्य रात्रौ दशवादनं यावत् विस्तीर्णायां प्रदर्शनीभूमौ विविधेषु कक्षेषु आयोजिता लघूद्योगप्रदर्शनीं सुचिरम् अपश्यम्।

प्रदर्शन्याः प्रयोजनम्

अस्याः प्रदर्शन्याः इदं प्रयोजनं आसीत् यत् प्रदेशे प्रदेशे येऽपि लघुद्योगाः प्रचलिताः सन्ति तेषां प्रदर्शनेन जनमानसेषु लघुद्योगेभ्यः रुचिः जनिता भवेत्

प्रदर्शन्याः विभागाः

तत्र प्रदर्शन्यां पञ्चदश प्रमुखाः कक्षाः आसन् तान् च अन्तरान्तरा अनेके लघुलघुकक्षाः अतिष्ठन्। एते प्रमुखाः कक्षाः भारतीयप्रदेशानां प्रतिनिधयः कक्षाः आसन्।

हरयानाकक्षः

अस्मिन् कक्षे हरयानामध्ये उद्गतानाम् उद्योगानां प्रदर्शनम् आसीत्। एकस्मिन् कक्षे शोधकस्य विविधताः प्रदर्शिताः। अन्यत्र कर्गलनिर्माणस्य प्रदर्शनम् आसीत्। सिता-बुरा-आदिकस्य अपि विविधताः प्रदर्शिताः अभवन्। चर्मकार्य विविधाः उपानहश्च आकर्षका आसन्।

उत्तरप्रदेशकक्षः

अत्र उत्तरप्रदेशीयलघूद्योगानां प्रदर्शनम् अभवत्। मृत्तिकाभ्यः कुम्भकारैः निर्मितानि मृद्भाण्डानि हृदयावर्जकानि अतिष्ठन्। खड्डी-उद्योगस्यापि तन्निर्मितदरीआदीनाञ्च विस्तरेण प्रदर्शनानि अतिष्ठन्। मोमवर्त्तिका-उद्योगः नितराम् आकर्षकः आसीत्। काष्ठासननिर्माणस्य उद्योगः लोकस्य परमोत्साहकोऽभवत्।

हिमाचलकक्षः

अस्मिन् कक्षे और्णयवस्त्रनिर्माणोद्योगः, फलरक्षणोद्योगश्च प्रख्यातः अतिष्ठत्।

इत्थमेव विभिन्नान् प्रदेशकक्षान् दृष्ट्वा लघुद्योगान् साक्षात्कृत्य अनेकविधं ज्ञानं लब्ध्वा प्रेरणामादाय वयं ततो रात्रौ दश-नादे निवृत्ताः।

54. सदाचारः

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

प्रस्तावना

श्रेष्ठजनानाम् आचरणमेव सदाचारः कथ्यते। सतां (सज्जनानाम्) आचारः (आचरणम्) एव सदाचारः भवति। सत्पुरुषाः यथा प्रशस्तं कार्य कुर्वते, इतरे जनाः तदेव अनुसरन्ति। महाजनो येन गतः, सः पन्थाः इति सत्यम् अभिहितम्।

आचारः परमोधर्मः

जीवने सदाचारस्य अतीव महिमा वर्तते। 'आचारः परमो धर्मः' इति शास्त्रज्ञानां मतम्। शीलम् एव जीवस्य परमं भूषणम् अस्ति।

सदाचारस्य महिमा

सदाचारेण जनः शिष्टः, सभ्यः, विनीतः, विनम्रश्च भवति। असौ एव नरः परदारेषु मातृवद् आचरति परद्रव्ये च लोष्ठवद् व्यवहरति। सः कामक्रोधादीन् विकारान् निगृह्य

संयतः इव कर्मसु प्रवर्तते। मर्यादापुरुषोत्तमः भगवान् श्रीरामचन्द्रः सदाचारस्य आदर्शः पुरुषः आसीत्। इति सद्व्यवहारस्य एव परिणामः आसीत्।

सदाचारी पुरुषः लक्षणहीनोऽपि शतं वर्षाणि जीवति यथा—

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति॥

सदाचारविरहितस्य पतनम्

किन्तु यो नरः आचारहीनः अस्ति स तु पतितो भवति। धनाभावेन जनः पतितो न भवति यथा साधूक्तम्—

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्तः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

55. प्रातःकालवर्णनम्

मनोहारिणी वेला

रात्रिः गच्छति, अन्धकारः प्रणश्यति सुप्रभात प्रभाति । इयं ब्रह्मणः वेला। अस्मिन् ब्रह्ममुहूर्ते जनाः ईश्वरं ध्यायन्ति, पक्षिणश्च कलरवमाध्यमेन ब्रह्मणः गीतानि गायन्ति। नित्यम् आगच्छति स्वनियतकाले इयं मनोहारिणी वेला।

प्रातःकालस्य कर्माणि

भूतानि जाग्रति, निद्रां परित्यजन्ति, आलस्यं परिहरन्ति कर्मणि च प्रवर्तन्ते। चन्द्रमाः अस्ताचलं गच्छति, तारकाः निस्तेजाः जायन्ते, निशादेव्याः प्रस्थानकाले अतिदूरं गच्छति अन्धकारोऽपि। यदा उषः समायाति, प्राच्यां दिशि लालिमा प्रस्फुटति। शनैः-शनैः सूर्योदयो भवति। जनाः उदितं सूर्यं प्रमणन्ति।

प्रातरुत्थाय सर्वप्रथमं करदर्शनं करणीयम्। कराभ्यामेव कर्मसु प्रवृतिः भवति कथितं च—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्॥

प्रातः स्मरणीयान् निज-निज-पूर्वजान् स्मरन्तः जना यदा तेषां गुणानां स्मरणं कुर्वन्ति तदा तेषां मनसि सङ्कल्पः उदेति यत् तेषां जीवनमपि तत्तद्गुणैर्युक्त भवेत्।

प्रातःकाले छात्राः वेदाध्ययनं कुर्वन्ति स्वपाठान् कण्ठस्थीकुर्वन्ति। अस्मिन्नवसरे मनः एकाग्रं जायते।

प्राकृतिकसौन्दर्यम्

उषसि मनोमुग्धकारी छटा वर्तते सरोवरेषु कमलानि विकसन्ति पुष्पेषु द्विरेफाः गुञ्जारं कुर्वन्ति मधुकरीभिः सह मधुरसं च पीत्वा मुग्धाः प्रमत्ताश्च इतस्ततः परिभ्रमन्ति। धेनवः स्ववत्सान् आह्वयन्ति। कृषकाः हलान् बलीवर्दान् च गृहीत्वा क्षेत्राणि प्रतिगच्छन्ति। कपयः वृक्षेषु कूर्दन्ति। एतद् दृश्यम् अवलोक्य कवीनां चेतः अपि नवोद्भावनां करोति।

56. बालोत्सववर्णनम्

बालोत्सवस्य निमित्तम्

प्रतिवर्षं नवम्बरमास्य चतुर्दश्यां तारिकायां बालदिवसः सम्पूर्णे भारतदेशे सोत्साहम्

उत्सवरूपेण मान्यते। एतस्यां तिथौ स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमप्रधानमन्त्रिणः श्रीजवाहरलालनेहरोः जन्मदिवसः वर्तते। श्रीनेहरूमहाभागः शिशुषु बालेषु च भृशं स्नेहं करोति स्म। स्वतंत्र भारतराष्ट्रस्य पुनर्निर्माणार्थं यत्र अन्येषु क्षेत्रेषु अपि विविधाः योजनाः निर्मिताः तत्र बालकानां शिशूनां विकासाय अपि अनेकाः कार्यक्रमाः विरचिताः।

नेहरूचरितविषयकाः कार्यक्रमाः

बालदिवसे विद्यालयेषु छात्राः नेहरूमहाभागस्य जीवनचरितम् आदाय अनेकान् कार्यक्रमान् आयोजयन्ति। तस्य जीवनस्य विविधपक्षान् स्मृतिगतान् कृत्वा चित्रप्रतियोगिताः आयोज्यन्ते। आलेख्यरचनासु बालकानां सहजप्रवृतिः वर्तते। नानाविधानां गीत-कविता-नाटकादिभिः सर्वेषां मनोरंजनं क्रियते। बालकानां भाषण-प्रतियोगिताः वाद-विवाद-प्रतियोगिताः अपि आयोज्यन्ते।

'चाचा नेहरूः चिर जीवेत्' इति उद्घोषेण गगनं भिद्यते।

छात्र-सम्मेलनानि

दिल्लीनगरस्य विविधविद्यालयानां छात्राणां सम्मेलनानि जायन्ते। एतेषु उत्सवेषु बालकाः स्वजीवने नेहरूमहोदयस्य आदर्शान् ग्रहीतुं शपन्ति। विद्यालयेषु बालैः खाद्य-भोज्य-लेह्य-चौष्यादिसर्वविध-सुस्वादुपदार्थानां विविधाः आपणाः अपि आयोज्यन्ते। एतेषां विक्रयेण यः आर्थिकलाभो भवति स दरिद्रछात्राणा उपयुज्यते।

दिल्लीमहानगरस्य नेशनलस्टेडियमक्षेत्रे बालदिवसावसरे लक्षाधिसंख्यकाः जनाः एकत्रिताः भवन्ति। तत्र विविधविद्यालयानां छात्राः क्रीडानां सांस्कृतिकार्यक्रमाणा चाद्भुतं प्रदर्शन कुर्वन्ति। अत्र अध्यक्षमहोदयः मुख्यकार्यकारीपार्षदः शिक्षामन्त्रिमहोदयः च समागत्य बालोत्साहं वर्धयन्ति।

विद्याभारत्या आयोजनम्

आपातस्थित्युपरान्तं विद्याभारतीपक्षतः भारतस्य विविधेभ्यः नगरेभ्यः समागतानां शिशूनाम् एकम् अपूर्वं त्रिदिवसकालिकम् शिविरम् आयोजितम् आसीत्। तदायोजनं दृष्ट्वा दर्शकानां भारतस्य भविष्यं प्रति आस्था दृढीभूता। तत्र सामूहिक-कार्यक्रमाणाम् अद्भुतछटाम् अवलोक्य जनाः चकिताः आसन्। एतादृशाः कार्यक्रमाः तया संस्थया तदुपरान्तमपि भारतस्य अन्येषु नगरेषु संयोजिताः। बालकानां विकासः राष्ट्रविकासस्य मुख्यः आधारो वर्तते।

57. दूरदर्शनयन्त्रम्

विज्ञानस्य चमत्कारान् को न विजानाति? अस्माकं शताब्दी विज्ञानयुगः एव वर्तते। विविधेषु आविष्कारेषु अधुना प्रतिगृहं प्रचलितं दूरदर्शनयन्त्रम् अस्ति।

दूरदर्शनस्य स्वरूपम्

दूरदर्शनमाध्यमेन दविष्ठाः पदार्थाः निजगृहस्थिताः इव तृष्टाः जायन्ते। वयं निजगृहेषु विद्यमानाः एवं दूरवर्तिनः पदार्थन्, दूरघटितान् कार्यक्रमान्, दूरस्थितान् जनान् वा द्रष्टुं पारयामः।

दूरदर्शनस्य मूलसिद्धान्तः

अस्य यन्त्रस्य मूलसिद्धान्तः अयम् अस्ति यत् ऊर्जायाः एकस्मात् रूपात् अन्यस्मिन् रूपे परिवर्तनं भवति। दूरदर्शनकेन्द्रे प्रकाशतरंगाः ध्वनितरंगाश्च विद्युत्तरङ्गेषु परिवर्तिताः जायन्ते। एताः परिवर्तिताः विद्युत्तरङ्गाः वातावरणे गत्वा विविधेषु स्थानेषु

परिभ्रमन्ति। तत्पश्चात् दूरदर्शनयन्त्रम् तान् तरङ्गान् पुनः प्रकाश-तंरगेषु ध्वनितरंगेषु च परिवर्तितान् कृत्वा अस्माकं समक्षं दृश्यम् उपस्थापयितुं शक्नोति।

दूरदर्शनस्य कार्यक्रमाः

दूरदर्शने प्रतिदिनं नित्यनूतनसमाचारः दर्श्यन्ते श्राव्यन्ते च। तदतिरिक्तं विविधाः मनोरंजकाः सांस्कृतिकाः कार्यक्रमाः प्रस्तूयन्ते यथा चित्रहारः, चलचित्रम्, योगाभ्यासः शास्त्रीयसंगीतम्, सुगमसंगीतम्, पाश्चात्यसंगीतम्, नाटकानि, कृषिदर्शनम्, बालसभाः, लघुकथाः, नृत्यानि, प्रश्नोत्तराणि इति। विविनधकक्षानां पाठानाम् अपि दूरदर्शनेन पाठयितुम् आयोजनं क्रियते।

दूरदर्शने क्रीडा-प्रदर्शनम्

दूरदर्शने क्रीडाप्रतियोगिता-प्रदर्शनम् अतीव लोकप्रियं अस्ति। क्रीडकानां क्रिकेट-हॉकी-फुटबाल-क्रीडाः इत्थम् विलसन्ति यथा दर्शकाः एताः स्वसमक्षं वास्तविकरूपेण क्षेत्रेषु क्रीड्यमानाः पश्यन्ति।

58. पुस्तकालयः

स्वाध्यायस्य महत्त्वम्

स्वाध्यायात् न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायी जनः आत्मशुद्धेः मार्गम् अनुसरति। ज्ञानार्जनस्य बहवः उपायाः सन्ति। तेषु उपायेषु पुस्तकालयः सर्वोत्तमः यतः स्वरुच्यनुसारं तस्मात् स्थानात् पुस्तकानि प्राप्यन्ते।

पुस्तकालयानां स्वरूपम्

पुस्तकानाम् आलयः इति पुस्तकालयः, ग्रन्थानाम् आलयः इति ग्रन्थालयः इत्यादयः शब्दाः तत्स्थानं बोधयन्ति यत्र सर्वविषयकानि पुस्तकानि पत्रिकाः समाचारपत्राणि च निधीयन्ते संगृह्यन्ते। नराः च स्वरुच्यनुसारं पुस्तकानि गृहीत्वा प्रत्यावर्तयन्ति, तानि एव पुस्तकानि अन्य अपि जनाः पठन्ति ज्ञानवृद्धिं च कुर्वन्ति।

पुस्तकालयानां लाभाः

पुस्तकालयानां नैकाः लाभाः सन्ति। महज्जनानां कृतीनां माध्यमेन वयं तेषां महापुरुषाणां सत्कारमेव कुर्वन्ति। दिवंगताः अपि ते लोकहितकर्तारः निजादर्शरचनाभिः अहोरात्रं प्रेरयन्ति। सहस्रवर्षपूर्वजातानां पुरुषाणाम् अपि परिचयः तेषां पुस्तकानां माध्यमेन सरलतया प्राप्तुं शक्यते।

इच्छा-पूर्तिः

पुस्तकानां माध्यमेन जनः सर्वविदां समृद्धिं कर्तुं पारयति। यदि जनः निजव्यवसाये वृद्धिं कर्तुमिच्छति तदा तादृग्विषयप्रबोधिनीं पुस्तिकां पठित्वा निजाभिलाषं पूरयति। भिन्नरुचिर्हि लोकः। यदा जनः मनोरञ्जनम् इच्छति तदा तादृशं पुस्तकं पुस्तकालयात् लब्धुं शक्यते।

शोधकार्ये सहयोगः

शोधकार्याय, उच्चस्तरीयाध्ययनाय च छात्राः साधनाभावेन बहुमूल्यपुस्तकानि क्रेतुं न समर्थः। तेभ्यः छात्रेभ्यः सन्दर्भपुस्तकानि प्रदाय पुस्तकालयाः तेषां महदुपकारं कुर्वन्ति।

यदि वयं समयस्य सुदपयोगं वाञ्छामः तदा स्वातिरिक्तकाल पुस्तकालयेषु एव यापयेम तेन जीवने महती उन्नतिः भविष्यति।

59. होलिकोत्सवः

प्रस्तावना

अयम् उत्सवः प्रतिवर्षं फाल्गुणमासस्य पूर्णिमायां भवति। भारतराष्ट्रे प्रतिप्रदेशम् अयम् उत्सवः हास-परिहास-कार्यक्रमरूपतया मान्यते। अस्मिन् दिने रङ्गक्षेपण-गुलाल-प्रक्षेपणादिभिः आबालवृद्धाः परस्परं मनोरञ्जयन्ति। सन्ध्याकाले हास्यात्मक-साहित्य-कार्याक्रमाणां आयोजनं भवति। कुत्रचित् गानस्य वादनस्य च व्यवस्था क्रियते।

बालकाः बालिकाः सप्ताहपूर्वमेव रङ्गक्रीडाम् आरभन्ते। होलिकायाः पूजनपूर्वकम् अग्निसात्करणम् पूर्वरात्रौ भवति। अग्निं परितः जनाः नार्यः च सम्मिलन्ति, परिक्रमन्ते, नानागानादिकं च कुर्वन्ति।

मनोरञ्जकत्वम्

जनाः स्वमित्राणां बन्धूनां गृहं यान्ति। तत्र मिष्टान्नादिकस्य आदान-प्रदानं भवति। नानावर्णगुलालं मुखोपरि प्रक्षिपन्ति।

मदोन्मत्तानां क्रीडाः

आपणेषु रथ्यासु च सर्वत्र मदोन्मत्ताः जनाः कूर्दन्ति, उच्छलन्ति च मध्याह्नकालपर्यन्तं सर्वत्र ईदृशी क्रीडा प्रवर्तते। तदुपरान्तं जनाः स्नानं कुर्वन्ति। रात्रौ यत्र कुत्रापि कविसम्मेलनानि आयोज्यन्ते।

होलिका-दहन-कथा

होलिकोत्सवस्य सम्बन्धे एका किम्वदन्ती प्रचलिता वर्तते। हिरण्यकशिपोः नास्तिकस्य असुरराजस्य गृहे तस्य भगिनी होलिका नाम्ना आसीत्। तस्यै वरदानमासीत् यत्नाऽग्नौ न धक्ष्यति। हिरण्यकशिपोः पुत्रः प्रह्लादः ईश्वरभक्तः आसीत्। होलिका प्रह्लादम् अङ्के निधाय अग्नौ प्राविशत् येन प्रह्लादः भस्मसात् भवेत्। परं भगवत्कृपया प्रह्लादो भस्मसात् नाभवत्। होलिका अग्नौ दग्धा। तत्स्मृतौ अस्मिन् पर्वणि होलिका दहनम् आयोज्यते।

60. संघे शक्तिः कलौ युगे

अद्यत्वे संसारे यस्मिन् राष्ट्रे ऐक्यम् अस्ति,स प्रभुतासम्पन्नः अस्ति। विश्वगुरुः भारतदेशः ऐक्याभावात् परतन्त्रतापाशबद्धो जातः। परं यदा एकतायाः सूत्रमलभत तदा भारतीयाः स्वाधीनतामपि अलभन्त। अतः एवोच्यते—संघे शक्तिः कलौ युगे।

शक्त्या मूलकेन्द्रम् सङ्घः

बहुधा मन्यते यत् शक्तिः सैन्ये भवति, केचन शस्त्रास्त्रेषु शक्तिं मन्यन्ते। एतत्सत्यमस्ति। परं संघे यादृशी शक्तिरस्ति न तादृशी शक्तिः अन्यत्र वर्तते।

ऋग्वेदस्य उदाहरणम्

ऋग्वेदस्य अन्तिमसूक्ते एकतायाः महत्त्वं प्रतिपादितम् अस्ति। यथा

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ॥1॥
समानो मन्त्रः समिति, समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः। समानमेनं वो हविषा जुहोमि॥2॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

संघनिर्माणस्य विधिः

संघस्य निर्माणे त्यागभावनायाः अनुशासनस्य च अतीव महत्त्वम् अस्ति। नतृवर्गे, लक्ष्ये च दृढ़ा निष्ठा संघ-निर्माणं पुष्णाति। वैयक्तिक-सुखं परित्यज्य अपि समष्टिहितस्य चिन्ता संघस्य घटकानां कृते अतीव अर्पक्षते। सुख-शान्ति-समृद्धिलाभाय एकता करणीया, धरणीया च। भिन्नः जनाः न सुखं प्राप्नुवन्ति, न धर्मं चरन्ति, न च गौरव लभन्ते। अतः 'संघेः शक्तिः कलौ युगे' इति सर्वथा सत्यमुक्त केनचित् कविना।

अभ्यास

एषु कमपि एक विषयमवलम्ब्य संस्कृतभाषाया पञ्चविंशत्यधिक शतशब्द-मितः प्रबन्धः विरच्यताम्—

इनमें से किसी एक विषय पर संस्कृत में 125 शब्दों का निबन्ध लिखिए—

Write an essay in Sanskrit in 125 words on any one of the following :

1. (*i*) विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः (*ii*) विज्ञानस्य चमत्काराः
   (*iii*) यद्यहं भारत-प्रधानमन्त्री स्याम् (*iv*) क्रीडा-प्रतियोगिता
   (*v*) प्रियः कवि।
2. (*i*) सत्संगति (*ii*) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
   (*iii*) मम महत्त्वाकांक्षा (*iv*) मम प्रियः संस्कृतकविः
   (*v*) दीपमाला।
3. (*i*) वसन्तोत्सवः (*ii*) संस्कृतिः संस्कृताश्रिता
   (*iii*) कुम्भपर्वः (*iv*) पर्वतयात्रा
   (*v*) प्रियः नेता।
4. (*i*) श्रीजवाहरलालनेहरूः (*ii*) भारतीया संस्कृति
   (*iii*) श्रीमद्भगवद्गीता (*iv*) विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः।
5. (*i*) विद्यालयस्य सांस्कृतिककार्यकलापः (*ii*) विज्ञानं ब्रह्म विजानीयात्
   (*iii*) कालिदास्य आत्मकथा (*iv*) वसन्तवर्णनम्
   (*v*) काऽपि यात्रा।
6. (*i*) कालिदासः (*ii*) संस्कृत-भाषायाः गौरवम्
   (*iii*) मम प्रियं पुस्तकम् (*iv*) परोपकारः।
7. (*i*) वाद-विवाद-प्रतियोगिता (*ii*) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
   (*iii*) मुद्रिकायाः आत्मकथा (*iv*) ग्रीष्मवर्णनम्
   (*v*) स्वप्नवर्णनम्।
8. (*i*) काऽपि रेलयात्रा (*ii*) पर्यटनम्
   (*iii*) स्वतन्त्रता-दिवसोत्सवः।

9. (*i*) अस्माकं विद्यालयः (*ii*) अनुशासनं
(*iii*) वर्षा-ऋतुः (*iv*) प्रियः शिक्षकः
(*v*) गृहोद्यानम्।

10. (*i*) उद्योगप्रदर्शनी (*ii*) जन्तुशाला-भ्रमणम्
(*iii*) अस्माकम् देशः।

11. (*i*) बालोत्सववर्णनम् (*ii*) दूरदर्शनयन्त्रम्
(*iii*) विद्यालयः।

12. (*i*) मम प्रियः राष्ट्रनेता (*ii*) कोऽपि महाकविः
(*iii*) भारतवर्षम् (*iv*) ग्रीष्मर्तुः
(*v*) कापि क्रीडा।

13. (*i*) होलिकोत्सवः ; (*ii*) प्रियः नेता ;
(*iii*) सदाचारः ; (*iv*) क्रीडा-प्रतिस्पर्धा ;
(*v*) विद्या ददाति विनयम्।

□